SUCHANA PATRIKA

1966 G. K. U.

सूचना पत्रिका

जर्मन
जनवादी
के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

२
वर्ष ११
फरवरी
१९६६

वर्ष ११ | २० फरवरी, १९६६
अंक २

संकेत

मुख पृष्ठ : हिम का शीतल सौन्दर्य

अंतिम पृष्ठ : ज.ज.ग. के नये फैशन

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये मति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, बहादुर शाह ज़फर मार्ग नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित। संपादक : ब्रूनो मे

ज. ज. ग. और ताशकन्द घोषणा

१० जनवरी, सन् १९६६ के दिन से लेकर आज तक भारत के प्रधान मन्त्री, श्री लालबहादुर शास्त्री, और पाकिस्तान के राष्ट्रपति, श्री अयूब खां द्वारा हस्ताक्षरित ऐतिहासिक **ताशकन्द घोषणा** की प्रतिध्वनि जर्मन जनवादी गणतंत्र में लगातार सुनाई दे रही है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के सभी दैनिक अखबारों ने ताशकन्द समझौते को अपने पहले पृष्ठों में मोटी सुर्खियों में छापा। कुछ सुर्खियां ये थीं: "ताशकन्द शान्ति एवं समझदारी की महान विजय है", "ताशकन्द में शांति की विजय हुई", "सह-अस्तित्व की विजय" इत्यादि। ज.ज.ग के तमाम अखबारों और टेलिविजन तथा रेडियों केन्द्रों ने "ताशकन्द घोषणा" का मुक्त हृदय से स्वागत किया, और इसको एक ऐसे महत्वपूर्ण राजनीतिक दस्तावेज की संज्ञा दी जो यह सिद्ध करता है कि कठिन से कठिन अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं को भी शान्तिपूर्ण बातचीत से हल किया जा सकता है। इन अखबारों, रेडियो, एवं टेलिविजन स्टेशनों आदि ने श्री लालबहादुर शास्त्री तथा श्री अयूब खां की बुद्धिमत्ता तथा राज-मर्मज्ञता की, और सोवियत संघ की सरकार, विशेषकर प्रधान मन्त्री कोसिगिन की, भूरि भूरि प्रशंसा की। ज.ज.ग. के प्रमुख राजनीतिज्ञों और अधिकारियों ने, "ताशकन्द घोषणा" के सम्बन्ध में विशेष बयान और इन्टरव्यू दिये। इनमें दो उल्लेखनीय अधिकारी हैं राज्य परिषद के उपाध्यक्ष, श्री गेराल्ड गोयटिन्ग, और उप विदेशमन्त्री, डा. वोल्फगांग कीज़ेवेट्टर (इनका प्रेस-इन्टरव्यू इसी अंक में दूसरी जगह प्रकाशित किया गया है––सं०)।

जर्मनी के लिये महत्वपूर्ण

ज.ज.ग. में सभी लोग इस विचार से सहमत थे कि "ताशकन्द घोषणा" जर्मनी के लिये सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया कि ताशकन्द बैठक के पीछे वैसी ही सद्भावना और सूझ-बूझ की प्रेरणा रही है, जैसी दो जर्मन राज्यों के आपसी रिश्तों को सामान्य बनाने के लिये ज. ज.ग. द्वारा समय समय पर पेश किये गये सुझावों के पीछे रही है।

सुप्रसिद्ध दैनिक **नुइस दोइत्शलैण्ड** ने १२ जनवरी के अपने संपादकीय में संक्षेपरूप में उन परिस्थितियों को प्रस्तुत किया जिनके कारण पिछले साल सितम्बर मास में भारत तथा पाकिस्तान के बीच लड़ाई छिड़ गई, और बाद में ताशकन्द की शिखर वार्ता हुई। ताशकन्द की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि **"पहली बार, भारत-पाक झगड़े को साम्राज्यवादी कूटनीति के चंगुल से बाहर निकाल लाया गया है। यह तथ्य, जनता के साम्राज्य विरोधी संयुक्त मोर्चे के हितों की एक विजय है।** "अपने संपादकीय में, इस अखबार ने ताशकन्द वार्ता को खतम करने के साम्राज्यवादी प्रयत्नों का भी उल्लेख किया: "पश्चिमी जर्मनी की सरकार ने, वियतनाम की समस्या की तरह, इस बार भी तनाव में किसी तरह की कमी करने का डट कर विरोध किया क्योंकि बात चीत द्वारा झगड़ों के शान्तिपूर्ण हल के उदाहरण से यह (प० जर्मन सरकार––स०) बहुत डरती है।" अन्तमें सम्पादकीय में लिखा गया है "विश्व की समस्त शान्तिकामी जनता के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र, भारत एवं पाकिस्तान की जनता, और सोवियत संघ की सरकार को इस महान सफलता के लिये बधाई देती है। **भारत-पाक झगड़े का ऐसा आदर्श हल प्रस्तुत किये जाने के बाद अब यूरोप में खतरे के प्रमुख केन्द्र की ओर ध्यान देना और भी आवश्यक हो गया है। खतरे का यह केन्द्र है पश्चिमी जर्मनी की प्रतिशोधकवादी और अणुशस्त्रीकरण की नीति। बोन सरकार की महत्वाकांक्षाओं के परिणाम स्वरूप विशाक्त हुये यूरोप के विषैले वातावरण को साफ करने के लिये प्रत्येक अवसर और क्षण का इस्तेमाल किया जाना चाहिये।** ज.ज.ग. को ताशकन्द वार्ता की सफलता से, तनाव को कम करने के अपने निर्धारित रास्ते पर लगातार और दृढ़ता से आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहन मिला है। यह वह रास्ता है जो ज.ज.ग. की राज्य परिषद् के अध्यक्ष ने अपने नव वर्ष सन्देश में प्रस्तावित किया है। यह सन्देश भी ताशकन्द भावना से भरा हुआ है। यह रास्ता दो जर्मन राज्यों के बीच बात चीत, सद्भावना और सामान्य सम्बन्ध स्थापित करने का रास्ता है, और यह रास्ता अणु शस्त्रीकरण तथा प्रतिशोध के परित्याग एवं शान्तिपूर्ण भविष्य का रास्ता है।..."

पश्चिमी जर्मनी की बौखलाहट

जर्मन जनवादी गणतंत्र के अखबारों ने, ताशकन्द घोषणा की विश्व व्यापी प्रतिक्रिया से अपने पाठकों को बहुत अच्छी तरह अवगत करा दिया है। सामान्यत: यह प्रतिक्रिया काफी अनुकूल रही है। लेकिन पश्चिमी जर्मनी के कुछ अखबार इसका अपवाद हैं। उदाहरण के लिये **डी वेल्ट** ने लिखा कि "ताशकन्द घोषणा पर भी अन्य कई (रद्दी) कागजों की तरह धूल जम जायेगी।" इसी प्रकार, पश्चिमी जर्मनी के एक और अखबार **फ्रांकफूरटेर आलगेमाइने** ने अपने एक लेख "साधारण परिणाम" में लिखा कि: "भारत पाक झगड़े के मोर्चे यथावत अपने अपने स्थानों पर जम कर रह गये हैं। ताशकन्द घोषणा के ९ सूत्रों का सम्बन्ध बहुत छोटी तथा सामान्य बातों से है। .... और सोवियत मेजबानों द्वारा पेश की गई सद्भावनापूर्ण मध्यस्थता लगभग छिन्न भिन्न सी हो गई।"

पश्चिमी जर्मनी के अखबारों में, आम तौर से, ताशकन्द समझौते के महत्व को बहुत कम करके दिखाने के प्रयत्न साफ तौर से देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिये इन अखबारों ने, "छोटे मोटे आंशिक नतीजे", "कुल मिलाकर अन्तिम परिणाम बहुत साधारण हैं", अथवा "ताशकन्द की भावना केवल एक अस्थाई, अलग घटना है"

आदि जैसे वाक्यों को बार बार दोहराया है। यह अन्तिम वाक्य इस लिये गढ़ा गया है ताकि पश्चिमी जर्मनी की जनता यह मांग न कर सके कि ताशकन्द भावना के आधार पर दो जर्मन राज्य भी आपस के कटु सम्बन्ध मित्रता में बदल दें।

आजकल की दुनिया में, सभी उलझी समस्यायें केवल शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व और बात चीत के सिद्धान्त पर ही सुलझाई जा सकती हैं।...पश्चिमी जर्मनी के अखबारों के गले में यह कटु सत्य बड़ी मुश्किल से उतरता नजर आता है कि सोवियत सरकारकी सद्भावना-पूर्ण मध्यस्थता ने भारत और पाकिस्तान की गोलमेज़ बातचीत को संभव बनाया, और उनको आपसी मतभेदों पर विचार करने एवं अपने अपने भावी रिश्तों को सुधारने में मदद दी। यह तथ्य इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है कि सोवियत संघ ईमानदारी से विश्व में शान्ति और सद्-पड़ोसी सम्बन्ध कायम करने का ज़बरदस्त इच्छुक है। इसके अलावा इस तथ्य ने, पश्चिमी जर्मनी के इस झूठे प्रचार की भी धज्जियां बिखेर के रख दीं हैं कि सोवियत संघ शान्ति में दिलचस्पी नहीं रखता। इसलिये, भारत तथा पाकिस्तान द्वारा हस्ताक्षरित "ताशकन्द घोषणा" अनिवार्यतः सम्पूर्ण जर्मनी में वैसा ही प्रभाव पैदा करेगी जैसा कि इसने अन्य देशों में पैदा किया है।

तमाम शान्तिप्रिय जर्मन लोग अपने आपसे यह प्रश्न पूछे बिना नहीं रह सकते: जर्मनी के लिये भी वही बात क्यों संभव नही हो सकती जो भारत और पाकिस्तान के लिये संभव हुई?

ताशकन्द वार्ता की महान सफलता के उल्लास पर, श्री लाल बहादुर शास्त्री के आकस्मिक तथा दुखद निधन से विषाद की कालिमा छा गई। लेकिन श्री शास्त्री का यह अन्तिम कार्य, शान्तिकामी मानवता की स्मृति में एक अमर कीर्तिस्तम्भ के रूप में खड़ा रहेगा।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त; प्रधान मंत्री, श्री विल्ली स्टोप और अन्य वरिष्ठ राजनीतिज्ञों एवं नेताओं ने भारतीय जनता की इस ज़बरदस्त क्षति पर अपना गहरा शोक और सहानुभूति व्यक्त की। ज.ज.ग. के सभी अखबारों ने दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। राजधानी बर्लिन और अन्य बड़े नगरों में शोक सभायें आयोजित हुई जिनमें ज.ज.ग. के प्रतिनिधियों और वहां रहने वाले भारतीय नागरिकों ने अपने शोक संतप्त उद्गार व्यक्त किये। सभी वक्ता इस बात पर एकमत थे कि भारत-पाक संबन्धों को अच्छा बनाने में और विश्व-शान्ति में स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री ने बहुमूल्य देन दी है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी को बधाई

ज.ज.ग. की जनता ने भारत के नये प्रधानमन्त्री के निर्वाचन में काफी दिलचस्पी दिखाई, और श्रीमती इन्दिरा गांधी के चुनाव का स्वागत किया। इस अवसर पर, ज.ज.ग. के प्रधान मन्त्री, श्री विल्ली स्टोप ने अपने बधाई सन्देश में लिखा: **"मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि भारत की जनता और सरकार अपने राष्ट्रीय निर्माण में और भी सफलता पायेगी, और पूर्ववत विश्वशान्ति की सुरक्षा में अपना योगदान देती रहेगी। ताशकन्द वार्ता की सफलता ने सारी दुनिया के सामने यह बात प्रमाणित कर दी है कि कठिन से कठिन**

(शेष पृष्ठ १८ पर)

एक शोक सभा में, बर्लिन के ओरियन्टल अध्ययन संस्थान के उप महा-निदेशक, डा. क्रूगर, स्व. लाल बहादुर शास्त्री को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। दायें चित्र में बर्लिन के भारतीय विद्यार्थी और उनके जर्मन बन्धु, एक मिनट के मौन में खड़े होकर अपनी श्रद्धांजलि पेश कर रहे हैं

डा० कीज़ेवेट्टर की घोषणा :

जर्मन समस्या के लिये ताशकन्द एक आदर्श है

जर्मन जनवादी गणतंत्र के उपविदेश मंत्री, डा० कीजेवेट्टर ने, जनवरी के दूसरे सप्ताह में, वहां की प्रमुख समाचार एजेन्सी ए.डी.एन. को एक विशेष इन्टरव्यू दिया, जो इस प्रकार है :

"जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता और सरकार, उस सफल बातचीत एवं समझौते का हार्दिक स्वागत करती है जो भारत के प्रधान मंत्री, श्री लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति, श्री अयूब खां के बीच, सोवियत संघ की सरकार के सद्-प्रयत्नों द्वारा, ताशकन्द में सम्पन्न हुआ ।

"ताशकन्द घोषणा, राजनैतिक महत्व का एक महान दस्तावेज़ है, जो यह सिद्ध करता है कि कठिन अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों को भी, शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों और राष्ट्र संघ प्रपत्र के आधार पर हल किया जा सकता है ।

"हमारी यह प्रबल इच्छा है कि शांति और सद्भावना के जिस वातावरण और भावना ने ताशकन्द में जन्म लिया, वह हमारे दो जर्मन राज्यों के आपसी सम्बंधों को भी प्रभावित करे । इस सिलसिले में अपनी राष्ट्रीय समस्याओं के दृष्टिकोण से भी हम ताशकन्द घोषणा को एक आदर्श और राजनैतिक महत्व का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ मानते हैं । इस संदर्भ में, ज.ज.ग. की राज्य परिषद के अध्यक्ष वाल्टर उल्ब्रिख्त का नव वर्ष संदेश भी स्मरणीय है, जिसमें अन्य बातों के अलावा उन्होंने इस बात पर ज़ोर डाला है कि सन् १९६६ में कई प्रश्नों पर मतभेद होने के बावजूद---ज.ज.ग., पश्चिमी जर्मनी एवं पश्चिम बर्लिन के लोगों को, शांति को बनाये रखने और सुरक्षित करने के लिये, मिलजुल कर पहल करनी चाहिये, ताकि यूरोप में एक दृढ़ व्यवस्था कायम हो सके ।

"ताशकन्द घोषणा ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि दोनों ओर के राजनीतिज्ञ, शांति स्थापना के लिये कमर कस लें और सहज बुद्धि का आश्रय लें, तो समस्याओं का हल अवश्य निकल आता है । पश्चिम जर्मन संसद को हमने जो ६ सूत्री प्रस्ताव पेश किया है, वह जर्मनी और यूरोप में संयुक्त प्रयत्नों द्वारा शान्ति कायम करने की दिशा में बढ़ने का हमारा कार्यक्रम है । अब समय आ ग ा है कि पश्चिम जर्मन सरकार भी अपनी जिम्मेदारी निभाये और हमारी राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने के लिये सद्भावना एवं बुद्धिम ाा से काम ले ।

ताशकन्द घोषणा में समस्याओं को हल करने में बलप्रयोग न करना, ऊंचे स्तर पर बातचीत करना, संयुक्त भारत पाक आयोग स्थापित करना इत्यादि ऐसे अनेक उपाय बताये गये हैं जो जर्मनी से सम्बंधित कई प्रश्नों को हल करने के लिये हमारे स मने आदर्श प्रस्तुत करते हैं, और इन .र तुरन्त अमल किया जा सकता है । ये उपाय जो ज.ज.ग. की सरकार द्वारा जर्मन समस्या के शांतिपूर्ण हल के लिये बार बार पेश किये गये प्रस्तावों के बिलकुल अनुरूप भी हैं ।

श्रीमती इन्द्रा गांधी को ज. ज. ग. के प्रधान मंत्री की बधाई

जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री, श्री विल्ली स्टोप ने, श्रीमती इन्द्रा गांधी को, भारत का प्रधान मंत्री चुने जाने पर बधाई और शुभकामनायें भेजी हैं, इस संदेश में श्री स्टोप ने कहा है : "मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि आपके नेतृत्व में, भारत की जनता तथा सरकार, अपने राष्ट्रीय अर्थतंत्र के निर्माण में और अधिक सफलता प्राप्त करेगी, और विश्व शांति की सुरक्षा में पूर्ववत अपनी देन जारी रखेगी । ताशकन्द वार्ता की सफलता ने, सारी दुनिया के सामने इस बात को साबित कर दिया है कि विकट से विकट अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को भी, शांति तथा समझदारी की भावना से हल किया जा कता है ।..."

श्री स्टोप ने यह आशा व्यक्त की है कि "भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच मित्रता के सम्बंध न केवल मजबूत ही होंगे, बल्कि और गहरे तथा विकसित भी होंगे ।"

वाल्टर उल्ब्रिख्त :

जर्मन जनवादी गणतंत्र जनवाद, शान्ति और प्रगति के पथ का पथिक है

गत वर्ष १५ से १८ दिसम्बर तक, 'जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी' की केन्द्रीय कमेटी की बैठक हुई। इस बैठक में आर्थिकी की सभी शाखाओं, वैज्ञानिकों एवं सांस्कृतिक क्षेत्र, और सरकार तथा पार्टी के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

'पार्टी' के पोलिटिकल व्यूरो की रिपोर्ट श्री एरिक होनेकर ने पेश की। 'समाजवादी एकता पार्टी' की केन्द्रीय कमेटी के प्रथम सचिव श्री वाल्टर उलब्रिख्त, "सन् १९७० तक की दीर्घकालीन योजना से संबन्धित समस्यायें" के विषय पर बोले। 'पार्टी' के पोलिटिकल व्यूरो के सदस्य और "राष्ट्रीय आर्थिक परिषद" के अध्यक्ष, श्री एलफ्रड न्यूमान्न ने १९६६ की राष्ट्रीय आर्थिक योजना के मसौदे पर भाषण दिया, और जर्मन जनवादी गणतंत्र के वित्त मंत्री श्री विल्ली रूम्फ ने १९६६ के बजट का मसौदा पेश किया।

केन्द्रीय कमेटी ने उक्त दोनों मसौदों का अनुमोदन किया। अब इन मसौदों को ज. ज. ग. की मन्त्रि-परिषद्, राज्य परिषद्, और लोक सभा (पीपुल्स चैम्बर) में बहस तथा पास करने के लिए पेश किया जाएगा।

१९७० तक की दीर्घकालीन योजना की समस्याओं का उल्लेख करते हुये, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने नवार्जित ज्ञान तथा अनेक नये अनुभवों पर प्रकाश डाला, और राष्ट्रीय अर्थतन्त्र एवं सामाजिक जीवन को अधिकाधिक विकसित करने के लिये कुछ नये सुझाव पेश किये। --इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि आयोजना को अधिक अच्छा और सादा बना देना, समाजवादी अर्थतन्त्र को विस्तृत करने एवं मज़बूत बनाने में एक महत्वपूर्ण देन है। इस सिलसिले में उन्होंने यह सुझाव पेश किया कि 'राष्ट्रीय आर्थिक परिषद' के मौजूदा औद्योगिक विभागों को आठ मन्त्रालयों में बदल देना चाहिये, और राष्ट्रीय स्वामित्व वाले उद्यमों एवं संस्थाओं को अधिक ज़िम्मेदारी सौंपी जानी चाहिये।

समान साझेदार

श्री उल्ब्रिख्त ने अपने भाषण में, अन्य देशों के साथ आर्थिक एवं व्यापारिक संबन्धों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा "सोवियत संघ के साथ, हाल ही में की गई दीर्घावधि व्यापार संधि, हमारे आर्थिक विकास की गारण्टी है। दूसरे शब्दों में इस संधि का यह अर्थ है कि पश्चिमी जर्मनी और अन्य पूंजीवादी देशों के साथ बातचीत करने में हमें काफी सुविधा होगी, और हम इन देशों के साथ, समानता एवं पारस्परिक लाभ के आधार पर, आर्थिक तथा व्यापारिक बात चीत कर सकेंगे।

"यूरोप के राज्यों के आपसी रिश्तों को बढ़ाने के लिये यह बहुत आवश्यक है। जर्मन जनवादी गणतंत्र का राजनीति और आर्थिक दृष्टि से मजबूत होने का अर्थ यह है कि वह यूरोप के अन्य राज्यों के साथ समानता के आधार पर, पश्चिमी यूरोप के देशों तथा ज. ज. ग. के बीच, सामान्य संबन्ध स्थापित करने और यूरोप की सुरक्षा के लिये अन्य यूरोपीय देशों के साथ बात चीत चला सकेगा।

"इस सिलसिले में यह बात कहने में हमें कोई संकोच नहीं है कि हम उन औद्योगिक पूंजीवादी देशों के साथ अपने अनुभवों का विनिमय करने के लिये तैयार हैं जिन्होंने अमरीका तथा पश्चिमी जर्मनी के

इजारेदार पूंजीपतियों की आक्रामक नीति से अपने राष्ट्रीय अर्थतंत्र एवं प्रभुसत्ता को बचाने और मजबूत बनाने के लिये, आयोजन को पहले विकसित और बाद में परिमार्जित किया ।--"

जीवन अवस्था में उन्नति

ज. ज. ग. में लोगों के रहने सहने, खाने पीने की अवस्था में उन्नति का उल्लेख करते हुये श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने कहा कि "यहां की आर्थिक प्रगति का ही यह सत्परिणाम है कि हम जनता के जीवन स्तर और जीवन यापन की अवस्था को उन्नत करने एवं सुधारने में समर्थ हो सके। इस संबन्ध में हमने ये कदम उठाये हैं :

---महीने के हर दूसरे और चौथे हफ्ते में केवल पांच दिन काम करना होगा। दूसरे शब्दों में काम करने के घण्टे ४८ प्रति सप्ताह से घट कर ४५ घण्टे हो गये।

---जो लोग दो या तीन पाली व्यवस्था में काम करते हैं उनको एक हफ्ते में केवल ४४ [illegible] काम करना पडेगा।

---वर्ष के अन्त पर भत्ता मिला करेगा।

---ये कदम उठाने से वर्तमान मज़दूरी की दरों और वेतनों पर कोई असर नहीं पड़ेगा।..."

श्री उल्ब्रिख्त ने कहा: "समाजवाद, पूंजीवाद से इसलिय श्रेष्ठ है क्योंकि समाजवाद में उत्पादन के साधन मज़दूर और किसान के हाथ में होते हैं।..."

सामाजिक न्याय : शोषण से मुक्ति

अपने भाषण को जारी रखते हुये श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने कहा : "ज.ज.ग. के श्रमिक वर्ग ने, युद्धोत्तर वर्षों में, ऐसी भंयकर कठिनाइयों का सामना किया, जिनके चक्कर में पड़ कर बूर्जुवा वर्ग डांवाडोल हो जाता।--अब हमने एक मजबूत समाजवादी अर्थतंत्र को जन्म दिया है, और हम निरन्तर विकास और प्रगति के लिये जरूरी, सभी आवश्यकताओं को पैदा करने में लगे हुए हैं। हमारी समाजवादी व्यवस्था, श्रमिक जनता को रोटी तथा रोज़ी, और एक सुरक्षित भविष्य की गारण्टी ही नहीं देता। यह व्यवस्था उनको आर्थिक संकटों से बचने और उनके जीवन स्तर को निरन्तर ऊंचा उठाने की ही गारण्टी नहीं देता। हमारी समाजवादी व्यवस्था यह सब तो देती ही है, लेकिन सबसे आवश्यक और सर्वप्रथम यह व्यवस्था जर्मन जनता को सामाजिक न्याय और हर प्रकार के शोषण से मुक्ति भी प्रदान करती है।...

संबन्धों को सामान्य बनाने की संभावनायें

दो जर्मन राज्यों के आपसी रिश्तों का उल्लेख करते हुए, श्री उल्ब्रिख्त बोले: "पश्चिमी जर्मनी के बुण्डस्टाग (संसद) में हुई बहस और वहां की सरकार के नीति वक्तव्य में कोई भी संतोषजनक बात सामने नहीं आई। लेकिन जहां तक ज. ज. ग. का ताल्लुक है, हम पश्चिमी जर्मनी और दूसरे पूंजीवादी देशों के प्रति शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति पर चलते रहेंगे। हम दो जर्मन राज्यों के बीच सामान्य संबन्ध कायम करने के इच्छुक हैं। इस सिलसिले में मैं इतना जरूर कहूंगा कि सामान्य संबन्ध स्थापित करने के लिये दोनों राज्यों के प्रतिनिधियों में बात चीत की अनेक संभावनायें मौजूद हैं।

"ज. ज. ग. की सरकार ने सभी जर्मन प्रश्नों का एक सचिवालय कायम किया है। इस से, पश्चिम जर्मन सरकार के साथ सीधे संबन्ध स्थापित करने की संभावनायें बढ़ गई हैं। यह सर्वविदित बात है कि जर्मन समस्या के शान्तिपूर्ण हल के लिये हम सभी यूरोपीय राज्यों में यूरोप की सुरक्षा संबन्धी समझौते को, दो जर्मन राज्यों के बीच सामान्य संबन्धों को और इनके निरस्त्रीकरण को, अनिवार्य समझते हैं। ज. ज. ग. शांतिप्रिय जर्मन राज्य है। इसलिये हमारे ऊपर काफी गंभीर जिम्मेदारियां हैं शान्ति को सुरक्षित करने के लिये।---"

"जर्मन जनवादी गणतंत्र में, लोग लोकतंत्र, प्रगति और शान्ति का राजमार्ग तैयार करने में लगे हैं। यही एक मार्ग है जो अन्त में विभाजित जर्मनी को एक कर सकता है। भविष्य, उनका है जो जनवाद, शान्ति और प्रगति के इच्छुक हैं और जो इनके लिये मेहनत करते हैं।..."

* * * *

ज. ज. ग. की प्रगति कितनी तेज़ी से हो रही है, इसका एक प्रमाण है नये रहायशी फ्लैटों की ये कतारें
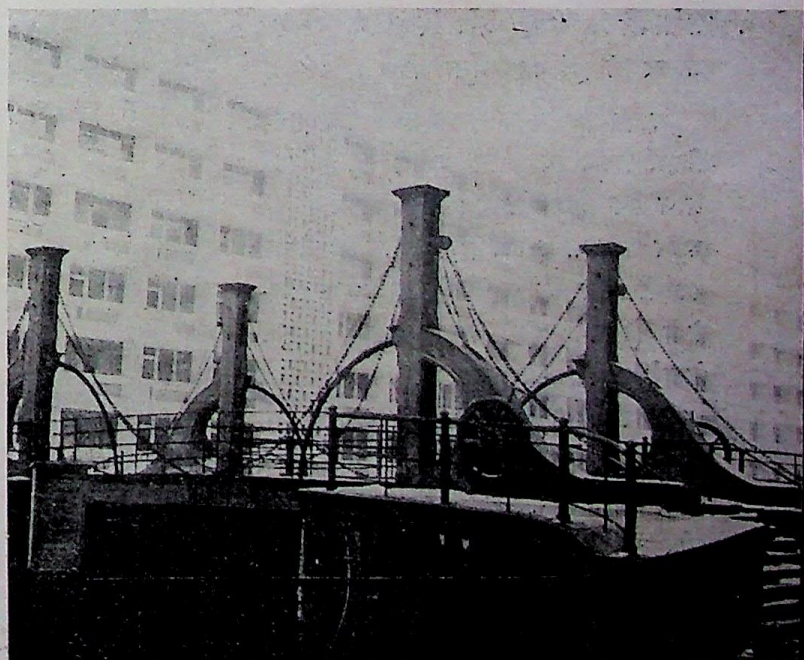
मेरी जर्मन यात्रा . . .

डा. जगदीश चन्द्र जैन

जर्मन जनवादी गणतंत्र में 'जर्मन-दक्षिण पूर्व एशिया संघ' के मंत्री ने मुझे, ज.ज.ग. यात्रा का निमंत्रण दिया, सोवियत संघ की मेरी यात्रा करने के बाद। . . . बर्लिन में मेरे आगमन के बाद ही, मेरे लिये आइज़ेन-हुट्टेन -- इस्पात नगरी को देखने का प्रबन्ध किया गया। इस नगरी का निर्माण हुआ सन् १९५१ में, और इस निर्माण पर चार सौ इक्यावन मिलियन मार्क (१ मिलियन=१० लाख--सं.) की धन-राशि खर्च की गई। राज्य के नियोजित विनिधान पर नगर पालिका का बजट आधारित होता है। इसके अलावा, नगर के पास आमदनी के अपने भी साधन होते हैं। इसके परिणाम-स्वरूप नगर को, अपने विभिन्न खर्च पूरे करने के लिये कर्ज नहीं लेना पड़ता।

मैंने शानदार लूनिक होटल भी देखा। इस होटल का पूरा प्रबन्ध औरतों के हाथ में है। सुन्दर परिचारिकाओं की सेवा बहुत सन्तोषजनक थी, और स्वादिष्ट भोजन खाकर तो हमें बहुत मज़ा आया।

आइज़ेनहुट्टेन में चमक दमक वाले अनेक डिपार्टमेण्ट-स्टोर और दुकानें हैं, जिनमें आज तक राज्य ने २२ मिलियन मार्क की रकम लगा दी है। कई दुकानों में हर प्रकार की चीजें मिलती हैं, और उनमें से कुछ स्वयं-सेवी (दुकानें) हैं। नगर पालिका भी कुछ सेवायें लोगों को उपलब्ध करती है। इनमें उल्लेखनीय हैं: दो लाण्डरियां, सड़कें साफ करने तथा गन्दगी उठाने की सेवा, बिजली मरम्मत करने की संस्था, और मशीनें, सफाई एवं घरेलू सुविधायें उपलब्ध करने के विभिन्न विभाग।

यहां के सांस्कृतिक जीवन की हलचल का केन्द्र है यहा की भव्य 'फ्रीडरिख वोल्फ रंग-शाला' जिसमें ७८० व्यक्तियों के बैठने की जगह है। समय समय पर, विश्व के प्रसिद्ध नाट्यदल यहां आकर अपने अभिनय प्रस्तुत करते रहते हैं।

इस जगह की एक विशेष वस्तु है बच्चों के लिये यहां के किण्डरगार्टेन स्कूल जिनके साथ तैराकी का तालाब सोने में सुहागे का काम करता है। इन स्कूलों में, ४ से ६ साल तक के लगभग ६० प्रतिशत बच्चे शिक्षा पाते हैं। राज्य, प्रति बच्चे पर वार्षिक लगभग ७०८ मार्क खर्च करता है। अभिभावक को अपने बच्चे के खाने पीने पर केवल ३५ फेनिक (४२ पैसे) खर्च करना पड़ता है। एक ऐसे अनोखे स्कूल को देखना मेरे लिये सचमुच उत्साह-वर्द्धक था।

बर्लिन लौटने के बाद मैं हुमबोल्ट विश्व-विद्यालय का **भारत-विद्या विभाग** देखने गया, जो जर्मन जनवादी गणतंत्र में इस तरह का एक सबसे बड़ा विभाग है। भारत विद्या के अन्य ऐसे विभाग हैं लाइपज़िग के कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय और ड्रेस्ड्रेन के टेनकिकल विश्वविद्यालय में। स्व. हेरमन याकोबी के विद्वान शिष्य, डा. वाल्टर रुबेन, **कालिदास** पर अपने अनुसन्धान कार्य के लिये सुप्रसिद्ध हैं। आजकल वह **प्राचीन भारत में उत्पादन** विषय पर कार्य कर रहे हैं। डा. हैलमूट नेज़पिटाल एक भाषाविद् हैं, और आप इसी विश्वविद्यालय (हुम्बोल्ट) में **हिन्दी** तथा **उर्दू** पढ़ाते हैं। इन्होंने अपनी डाक्टरेट की उपाधि प्राग विश्वविद्यालय से ली है जहां वे डा. विनसेन्क पोरिज़का के निर्देशन में काम कर रहे थे। आजकल आप **हिन्दी व्याकरण** पर काम कर रहे हैं जिसमें इनकी विशेष रुचि है।

डा. नेज़पिटाल, जर्मन जनवादी गणतंत्र की पूरी यात्रा में मेरे साथ रहे, और मेरे दुभाषिये का काम भी उन्होंने ही किया।

ज.ज.ग. के एक किण्डरगार्टेन स्कूल में मिट्टी शिल्प की शिक्षा

यहां कई अन्य ऐसे व्यक्ति हैं जो भारतीय साहित्य के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर रहे हैं । श्रीमती अनसारी को, हाल ही में, उनके **हिन्दी का नया कथा साहित्य** नामक शोध प्रबन्ध पर पी.एच.डी. की उपाधि दी गई है । एक और शोधार्थी **अर्थशास्त्र** के लेखक, **कौटिल्य** पर और दूसरा शोधार्थी **स्वामी विवेकानन्द** के दर्शन पर अनुसन्धान कर रहा है ।

डा. एच. मोडे, हाल्ले के मार्टिन लूथर विश्वविद्यालय में, वास्तुकला के आचार्य हैं । इन्होंने बंगाल के **शांति निकेतन** में **पालि एवं बौद्ध धर्म** का अध्ययन किया है । इनका यह विश्वास है कि संभवतः विश्व शांति के लिये बौद्ध धर्म सहायक सिद्ध हो । डा. मोडे, उस नव-बौद्ध आन्दोलन में बहुत दिलचस्पी रखते हैं जिसके प्रवर्तक **स्व. अम्बेड-कर** थे ।

मैंने जर्मन जनवादी गणतंत्र के कुछ प्रकाशन घर भी देखे । यहां के कुछ प्रकाशन-घर आधुनिक भारतीय भाषाओं की रचनाओं को जर्मन भाषा में अनुदित करने के इच्छुक हैं । एक ऐसे प्रकाशक से भी मेरी मुलाकात हुई जिसने **रवि ठाकुर** की कहानियों और अन्य रचनाओं को जर्मन भाषा में प्रकाशित किया है । इन प्रकाशनों में **पांच नदियों की धरती** नामक एक संग्रह भी शामिल है जिसमें हिन्दी तथा उर्दू कहानीकारों की कहानियां हैं ।

हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के सांस्कृतिक मंत्रालय ने, श्री यूरगेन ग्रूनर को इस काम के लिये नियुक्त किया है कि वह **भारतीय प्रकाशकों के सहयोग से, भारतीय लेखकों की कृतियों के जर्मन अनुवाद और जर्मन लेखकों के भारतीय भाषाओं में अनुवाद छापने की संभावनाओं की खोज करें ।** इस कार्य के लिये श्री ग्रूनर, कुछ दिनों के लिये भारत आये भी थे । जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, प्राचीन संस्कृत के अध्ययन की अपेक्षा, आधुनिक भारतीय भाषाओं के अध्ययन में अधिक रुचि रखती है । भूतकाल में संस्कृत का काफी गहन अध्ययन हो ही चुका है । . . . मैंने, ऐतिहासिक नगर वाइमर की भी यात्रा की, जहां महाकवि गोइटे ने, सन् १७८२ से ८६ तक और सन् १७९२ से १८३२ में अपने देहान्त तक, अर्थात् अपना अधिकांश जीवन बिताया । कवि होने के अतिरिक्त वह वैज्ञानिक, नाट्य निर्देशक और कला-समालोचक भी थे । कला की कुछ प्राचीन तथा अमूल्य वस्तुओं का जो संग्रह उन्होंने स्वयं किया था वह अपने मन-बहलाने के लिये नहीं बल्कि कला और विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिये किया था । यह संग्रह वाइमर-भवन में आज सुरक्षित रखा गया है । इस संग्रह के दिलचस्प प्रदर्शनों में गोइटे की वह कुर्सी भी है जिस पर बैठे-बैठे ही वह मौत की नींद सोये थे ।

वाइमर में हमने उस शिल्लर-भवन का दर्शन भी किया जहां सन् १८०५ में उनका देहान्त हुआ था । इस नगर के मध्य में, गोइटे और शिल्लर की मूर्तियां, एक प्रेरणा-दायक स्मारक के रूप में खड़ी हैं ।

वाइमर की दुकानें विभिन्न वस्तुओं से भरी हुई थीं और इनमें ग्राहकों की भीड़ लगी हुई थी । डिपार्टमेन्ट-स्टोर भी यथावत ग्राहकों से खचाखच भरे हुये थे, और हर जगह औरतें हमेशा की तरह सक्रिय नजर आती थीं । मैं एक किताबों की दुकान में चला गया जहां विभिन्न विषयों पर, भिन्न भाषाओं में अनेक पुस्तकें थीं । यहां, कुछ भारतीय लेखकों की पुस्तकें भी मैंने देखीं ।

वाइमर से ड्रेसडेन की यात्रा काफी सुखद थी । ड्रेसडेन, कला और संस्कृति का केन्द्र है । यह नगर दूसरे महायुद्ध में ऐंग्लो-अमरीका की ज़बरदस्त बम वर्षा का शिकार हुआ, जिसके परिणामस्वरूप ३५ हज़ार से अधिक लोग मारे गये और सम्पत्ति को भारी क्षति पहुंची ।

भारत के लिये यहां के लोगों में काफी सहानुभूति है । वे सोचते हैं कि चूंकि भारत एक शांति प्रिय देश है, इसलिये विश्व में शांति बनाये रखने के लिये उसको एक महत्वपूर्ण रोल अदा करना है । यहां के लोग यह भी महसूस करते हैं कि साम्राज्यवादियों ने भारत और पाकिस्तान को उसी तरह विभाजित किया है जिस तरह उन्होंने वियतनाम, कोरिया और जर्मनी को किया है । जर्मन जनवादी गणतंत्र के लोग एवं सरकार, भारत के साथ अपने सांस्कृतिक तथा व्यापार सम्बंध बढ़ाने के बहुत इच्छुक हैं, लेकिन यह दुख की बात है कि भारत सरकार ने अभी जर्मन जनवादी गणतंत्र को राजनयिक मान्यता प्रदान नहीं की है । नई दिल्ली में, जर्मन जनवादी गणतंत्र का व्यापार-दूतावास तो है, लेकिन पूर्वी जर्मनी (ज.ज.ग.—सं) में अभी हमारा कोई प्रतिनिधि नहीं है । ज.ज.ग. के लोग शांति के लिये हर प्रकार से प्रयत्नशील हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है । इसलिये वे हमारी ओर से मान्यता, सहानुभूति और सद्भावना प्राप्त करने के हकदार हैं । . . .

'सूचना पत्रिका'

जो पाठक, मासिक **सूचना पत्रिका** को प्राप्त करना चाहते हों, वे **दो रुपये** वार्षिक चन्दा भेज दें । इसके बाद **पत्रिका** नियमित रूप से उनको मिलती रहेगी चन्दे की दर इस प्रकार है :

वार्षिक	:	२)
अर्ध वार्षिक	:	१)

पश्चिम जर्मन संसद को भेजा गया

छः सूत्रीय कार्यक्रम

जर्मन जनवादी गणतंत्र में नया साल, जर्मन समस्या हल करने और यूरोप में स्थाई शांति कायम करने से सम्बन्धित नये सुझावों तथा नई हलचल से शुरू हुआ ।

इस नई हलचल का श्रीगणेश, ज. ज. ग. की राज्य परिषद् के अध्यक्ष श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त के उस नव-वर्ष सन्देश से हुआ, जिसमें उन्होंने पश्चिम जर्मन संसद को, छः सूत्रों पर आधारित एक सुझाव पेश किया । इस सुझाव के छः सूत्र ये हैं :

१. दोनों जर्मन राज्य अणु-शस्त्रीकरण और अणु-आयुधों के निर्माण को त्याग दें,
२. दोनों जर्मन राज्य यूरोप की वर्तमान सीमाओं को स्वीकार करें,
३. दोनों जर्मन राज्य नाटो और वारसा संधि के सदस्य राज्यों के साथ राजनयिक सम्बन्ध जोड़ दें,
४. दोनों जर्मन राज्य जर्मनी के निरस्त्रीकरण पर बातचीत आरंभ करें,
५. दोनों जर्मन राज्य ऐसे तमाम नियम, कानून तथा कायदे खत्म करें जो जर्मनी के एकीकरण में बाधक हों, और
६. दोनों जर्मन राज्य आपसी सम्बंधों को सामान्य बनाने के लिये बातचीत शुरू करें ।

सारी दुनिया में उस खतरे को अब अधिकाधिक महसूस किया जाने लगा है जो पश्चिमी जर्मनी द्वारा अणु-शस्त्रों को किसी भी तरह पाने के लिये किये जा रहे ज़बरदस्त प्रयत्नों में छिपा है । एक ओर जहां नाभि-कीय शस्त्रास्त्रों के प्रसार को रोकने के लिये प्रयत्न किये जा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर पश्चिमी जर्मनी का शासक-वर्ग इन भंयकर विनाशकारी शस्त्रों पर कब्ज़ा करने के लिये एड़ी चोटी का जोर लगा रहा है । यूरोप के लोगों ने दो-दो महायुद्धों की तबाही देखी है, और इन दोनों युद्धों को जन्म देने वाले हैं जर्मन साम्राज्यवादी तथा सैन्यवादी । यदि इन्हीं लोगों के हाथों में अब अणु-शस्त्रास्त्र दिये जायें तो समस्त विश्व की शांति और सुरक्षा ज़बरदस्त खतरे में पड़ जायेगी ।

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि आज पश्चिमी जर्मनी ही मात्र ऐसा राज्य है जो यूरोप के अन्य राज्यों के क्षेत्रों को अपना जताता है । दूसरे महायुद्ध में फास्सितवाद की पराजय के बाद यूरोप में खींची गई सीमा रेखाओं को वह स्वीकार नहीं करता । इसके विपरीत, जर्मन जनवादी गणतंत्र स्पष्ट रूप में घोषणा करता है कि दोनों जर्मन राज्यों को यूरोप की वर्तमान सीमा रेखायें स्वीकार करनी चाहियें । समस्त शांतिप्रिय राष्ट्र ज. ज. ग. की इस घोषणा का समर्थन करते हैं । इस संदर्भ में **स्व. जवाहर लाल नेहरू** जैसे महान राजनीतिज्ञ के ये शब्द स्मरणीय हैं जो उन्होंने भारत की **लोकसभा** में, १९६१ में कहे थे :

"कुछ देशों ने इन सीमा रेखाओं को स्वीकार नहीं किया है—विशेषकर पश्चिमी जर्मनी ने । . . . इन सीमाओं में तबदीली लाने का कोई भी प्रयत्न युद्ध की ज्वालायें भड़कायेगा । . . . इसलिये मेरी समझ में यह नहीं आता कि इन सीमाओं को साफ साफ क्यों नहीं स्वीकार किया जाता" । स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू ने यह भी कहा था : "पूर्वी यूरोप के सभी देश जर्मन सैन्यवाद के पुनरूत्थान से भयाकुल हैं । यदि उनका यह भय दूर किया जायेगा तो (यूरोप की) स्थिति में काफी परिवर्तन होगा ।—लेकिन यदि किसी तरह पश्चिमी जर्मनी अणुशस्त्र प्राप्त करेगा, मेरी राय में उसके पास आज भी किसी प्रकार के अणु-आयुध हैं, तो इसका नतीजा यही निकलेगा कि पूर्वी जर्मनी की सेना को भी अणु आयुध उपलब्ध किये जायेंगे । और इस तरह हम महानाश के निकटतर होते जायेंगे" ।

स्व. प्रधान मन्त्री जवाहर लाल नेहरू के ये वक्तव्य १९६१ के हैं । यह तथ्य, कि ये समस्यायें आज पांच वर्षों के बाद भी यथावत हैं, हमें और भी बाध्य करता है कि हम जल्द से जल्द इनको हल करें । इसी उदेद्श्य से प्रेरित होकर जर्मन जनवादी गणतंत्र ने अणु-शस्त्रीकरण के परित्याग, और यूरोप के वर्तमान सीमाओं को स्वीकार करने का सुझाव पेश किया है ।

उल्लिखित छःसूत्रीय कार्यक्रम में, यूरोप में असामान्य स्थिति को सुधारने एवं सामान्य स्तर पर लाने के लिये, तमाम यूरोपीय देशों में राजनयिक संबन्ध स्थापित करने का अनुरोध भी किया गया है ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की हमेशा से यही राय रही है कि दोनों जर्मन राज्यों —अर्थात् पश्चिम जर्मन फेडरल गणराण्य और जर्मन जनवादी गणतंत्र को, विश्व के निरस्त्रीकरण के लिये एक आदर्श कायम करना चाहिये । इस लक्ष्य को सामने रखकर, दोनों जर्मन राज्यों को सम्पूर्ण जर्मनी के निरस्त्रीकरण पर आपस में बातचीत शुरू करनी चाहिये ।

दो जर्मन राज्यों को एक दूसरे से दूर करने वाले सभी कदमों, नियमों और कानूनों को खत्म करने की भी छः सूत्री सुझाव में उल्लेख है । इस सिलसिले में यह कहा गया है कि पश्चिमी जर्मनी द्वारा अणु-शस्त्रों को हस्तगत करने के प्रयत्न, और वातावरण को दूषित करने वाले उसके आपत्कालीन कानून आदि दो जर्मन राज्यों के बीच सन्देह और अविश्-वास की खाई को पाटने की बजाय और भी चौड़ा करते हैं ।

छः सूत्रीय कार्यक्रम के अन्त पर इस बात पर बल दिया गया है कि दोनों जर्मन राज्यों को, आपसी संबन्ध सामान्य कर देने चाहिये । पश्चिमी जर्मनी और ज. ज. ग. के दरमियान सामान्य संबन्भ जुड़ जाना दोनों जर्मन राज्यों की जनता के हित में है । इस से विभिन्न क्षेत्रों में आदान प्रदान बढ़ेगा, और सद्भावना एवं सहयोग की शीतल धारा से भूत की कटुतायें तथा घृणा का कलुष धुल जायेगा ।

श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त के नव वर्ष सन्देश में उल्लिखित छहों सूत्र, ऐसे कदम हैं जिनके उठाने से दो जर्मन राज्य एक दूसरे के बहुत निकट आ जायेंगे, और अन्त में विभाजित जर्मनी का पुनः एकीकरण होगा ।

विश्व के अनेक देशों में ज. ज. ग. के उक्त छः सूत्रीय कार्यक्रम का

स्वागत किया गया है। पश्चिमी जर्मनी के लोगों ने भी इसका स्वागत किया है।...इराक के प्रधान मंत्री, डा. बज़ाज़ ने, १२ जनवरी की अपनी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस कांफ्रेन्स में कहा:

"श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त द्वारा पश्चिम जर्मन संसद को पेश किये गये उस छः सूत्रीय कार्याक्रम का हम स्वागत करते हैं जिसमें दोनों जर्मन राज्यों द्वारा अणु-शस्त्रों को किसी भी रूप में प्राप्त करने के प्रयत्नों और अणु-शस्त्रीकरण को त्याग देने का सुझाव दिया गया है। हम आशा करते हैं कि पश्चिमी जर्मनी इस सुझाव को मान लेगा।—हम निश्चित रूप से पश्चिमी जर्मनी को अणु-शस्त्रों से लैस करने के खिलाफ हैं, और हमारा विश्वास है कि दुनिया की समस्त शांतिपूर्ण शक्तियां इस सवाल पर हमारे साथ है।..."

सभी जर्मन सवालों का हल

जर्मन समस्या के हल को जर्मन जनवादी गणतंत्र ने हमेशा पहला स्थान दिया है। इस सिलसिले में, हाल ही में यहां कायम किया गया 'समस्त जर्मन प्रश्नों का राज्य सेक्रिटेरियेट' जर्मनी से संबन्धित सभी सवालों, सुझावों और घटनाओं को अपने हाथ में लेगा। गत मास (जनवरी) में 'समस्त जर्मन प्रश्नों का राज्य सेक्रिटेरियेट' के सचिव, श्री योआखीम हरमान्न ने अपने प्रथम साक्षात्कार में कहा; "ज. ज. ग. की सरकार, किसी भी समय किसी भी स्थान पर, समानता के आधार पर, ऐसी बात चीत करने को तैयार है जिस से दो जर्मन राज्य एक दूसरे के निकट आ जायें एवं उनमें सामान्य संबन्ध कायम हो जायें, और इस प्रकार जर्मन समस्या के शान्तिपूर्ण हल के लिये रास्ता तैयार हो जाये।

—अपना बयान जारी रखते हुये श्री हरमान्न ने यह भी कहा: "हाल ही के उन संकेतों के बावजूद कि पश्चिमी जर्मनी के शासक वर्तमान स्थिति में अपनी नीतियों के द्वारा और तनाव पैदा करना चाहता है, हम उन नई प्रवृत्तियों को भी नज़र अन्दाज़ नहीं करते जो पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य में धीरे धीरे पनप रही हैं। ऐसे उपाय और साधन मौजूद हैं जिनके द्वारा पश्चिम जर्मन सरकार के साथ सीधे सम्बन्ध जोड़े जा सकते हैं।..."

विभाजित जर्मनी के पुर्नएकीकरण का उल्लेख करते हुए, श्री योआखीम हरमान्न बोले: "किसी दूसरे, तीसरे या चौथे राज्य के द्वारा विभाजित जर्मनी को एक नहीं किया जा सकता है। जर्मन जनता अपने आप ऐसा कर सकती है। और इस प्रयास में, हम अपने अन्य बन्धुओं तथा शुभचिन्तकों द्वारा दिया गया सहयोग एवं सहायता अवश्य स्वीकार करेंगे। लेकिन इतना स्पष्ट होना चाहिये कि जर्मन समस्या को केवल जर्मन जन ही हल कर सकते हैं।"

दो जर्मन राज्यों के आपसी रिश्तों को अच्छा और मैत्रीपूर्ण बनाने के लिये पश्चिमी जर्मनी के कई सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञों के दिलचस्प और बुद्धिमत्तापूर्ण विचारों का उल्लेख करते हुये राज्य सचिव ने कहा: "हम उन सभी लोगों के समर्थक हैं जो समझदारी की बात करते हैं। हम इस बात से बहुत खुशी होगी यदि पश्चिमी जर्मनी में ये महानुभाव अपने इस विचारों और सुझावों पर अमल कराने में सफल होंगे। ज. ज. ग. ऐसे किसी भी सुझाव को तुरन्त स्वीकार करने को तैयार है जो जर्मनी के विभाजन को समाप्त करने और तनावपूर्ण स्थिति में राहत पहुंचाने के लिये पेश किया जायेगा।"

भारत और ज. ज. ग. की नारियों के समान उद्देश्य

जर्मन जनवादी गणतंत्र 'जनवादी महिला फेडरेशन' की मंत्री श्रीमती योहान्ना बुलेखा, 'भारतीय महिलाओं की राष्ट्रीय फेडरेशन' के निमन्त्रण पर भारत आई थीं। उन्होंने 'भारतीय महिला फेडरेशन' के अखिल भारतीय सम्मेलन में भाग लिया, औरइस के बाद उन्होंने भारत के तीन राज्यों की यात्रा की।

सूचना पत्रिका को दिये गये एक विशेष प्रेस-साक्षात्कार में, श्रीमती बुलेखा ने अपने भारत सम्बन्धी प्रभावों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा:

"भारतीय महिलाओं की राष्ट्रीय फेडरेशन के सम्मेलन में भाग लेना मेरे लिये सौभाग्य और खुशी की बात थी। भारत की औरतें शांति और प्रगति के लिये जो संघर्ष कर रही हैं, मैं उसके गहरे प्रभाव लेकर स्वदेश लौट रही हूं।

"ज.ज.ग. और भारत की औरतें कई समान कार्यों के उद्देश्य से बन्धी हुई हैं। ये कार्य हैं: शांति का समर्थन तथा अणु-शस्त्रों का विरोध करना, और अपने बच्चों एवं परिवारों की सुख-समृद्धि के लिये लगातार काम करना। शांति समर्थक शक्तियों की निरन्तर बढ़ती हुई ताकत का एक और ज्वलन्त प्रमाण है ताशकन्द घोषणा। ज.ज.ग. की औरतों ने इस घोषणा का हार्दिक स्वागत किया है।

"हम यह आशा करते हैं कि वियतनाम के युद्ध की समाप्ति के लिये, और अन्य ज्वलन्त समस्याओं——जिनमें जर्मन समस्या भी शामिल है——के हल के लिये ताशकन्द घोषणा एक आदर्श बन जायेगी।... ज.ज.ग. की औरतें अपनी भारतीय बहनों की इस मांग से सहमत हैं कि वियतनाम में युद्ध तुरन्त बन्द किया जाये। सम्मेलन में इस आशय का एक प्रस्ताव पास किया गया।...

"मुझे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान की दो सप्ताह यात्रा का भी सुअवसर मिला। इस यात्रा के दौरान मुझे सामान्य भारतीय जन जीवन से परिचित होने का मौका मिला। स्वदेश लौटकर वहां की औरतों को भारतीय नारियों के जीवन से अवगत कराने में मैं समर्थ हो सकूंगी।

"पुरानी दिल्ली में मैंने दस्तकारों के हस्त-कौशल को भी देखा, जिनके कुशल हाथ, कला की सुन्दर वस्तुओं का निर्माण करते हैं। लेकिन उनके इस सौन्दर्य सृजन, और उनके अत्यन्त साधारण जीवन यापन में कोई तुलना नहीं।

"चांदनी चौक में, मैं एक स्कूल भी देखने गई और वहां की प्रिंसिपल, श्रीमती बेनजामिन से मेरी काफी दिलचस्प बातचीत हुई। इस बातचीत में स्कूल की अन्य अध्यापिकाओं ने भी भाग लिया। हमारी वातचीत का विषय था बच्चों को शांति की भावना में शिक्षा देना। इसके अतिरिक्त नारी के मातृ-रूप और उसके जीवन की रक्षाकर्त्री के रोल पर भी वार्ता हुई।

"अन्त में मैं, अपने मेजबानों और उन भारतवासियों को उनके स्नेह एवं आतिथ्य के लिये धन्यवाद देना चाहती हूं, जिनके संपर्क में मैं आई। भारत में अर्जित अपने अनुभव और प्रभाव, मुझे बहुत समय तक याद रहेंगे।..."

१९६६ का वसन्त व्यापार

मार्च ६ से १५ मार्च तक विश्व व्यापार के केन्द्र लाइपज़िग में, सन् १९६६ का वसन्तकालीन अन्तर्राष्ट्रीय लाइपज़िग मेले का आयोजन हो रहा है। अनुमान है कि इस व्यापार मेले में ७५ देशों के लगभग १०,००० प्रदर्शक और ९० देशों के लाखों दर्शक आयेंगे। लाइपज़िग में इस मेले के स्थान पर १७ भवन हैं जिनमें ५० हाल और मण्डप हैं। इसके अलावा, एक तकनीकी मेला मैदान भी है जिसका कुल क्षेत्रफल ३,७१०,००० वर्ग फुट है। इस वसन्त मेले में, इंजीनियरी उद्योग और उपभोक्ता सामान उद्योग की, विश्व स्तर की उच्च कोटि वाली चीज़ें प्रदर्शित की जायेंगी।

उक्त मेले में, विशेष रूप से इंजीनियरी का सामान प्रदर्शित किया जायेगा। इस उद्योग की वस्तुयें, प्रदर्शन-क्षेत्र का लगभग दो तिहाई भाग घेर लेंगी और दुनिया भर की सुप्रसिद्ध फर्में अपनी वस्तुऐं प्रदर्शित करेंगी। उदाहरण के लिये २० यूरोपीय और गैर यूरोपीय देश अपने मशीनी औज़ार, देश रासायनिक संयन्त्र, और रासायन एवं विद्युत इंजीनियरी की वस्तुऐं प्रदर्शित करेंगे। इसी प्रकार, अन्य १५ देशोंके प्रदर्शक इलेक्ट्रानिक सामान और स्वचालन तकनीक, धातु विज्ञान, भारी इंजीनियरी तथा उपकरणनिर्माण की वस्तुओं का प्रदर्शन करेंगे।

१९६६ के उक्त वसन्तकालीन-लाइपज़िग मेले में अन्य वस्तुओं के अलावा, विभिन्न उद्योगों की निम्न वस्तुऐं भी प्रदर्शित होंगी। यन्त्र एवं उपकरण
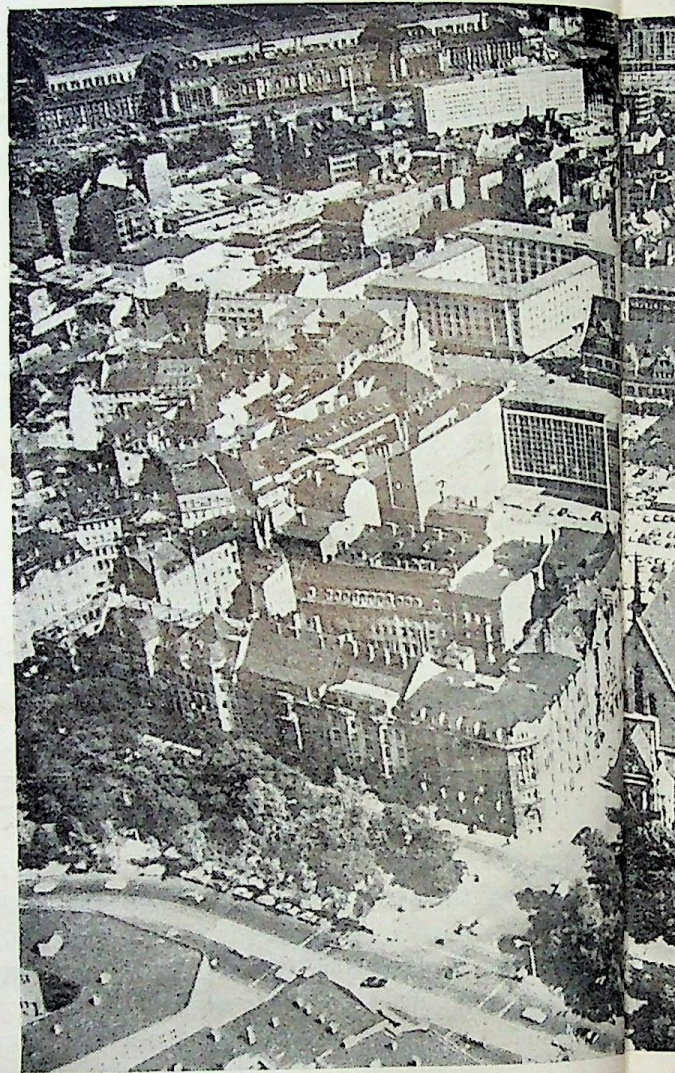
निर्माण की सभी शाखाओं के उत्पादन, विद्युत इंजीनियरी तथा इलेक्ट्रानिक की वस्तुऐं, गाड़ियां, भारी रसायन उद्योग का सामान, और सूक्ष्म औज़ार।

पिछले मेलों की तरह इस मेले में भी जर्मन जनवादी गणतंत्र सबसे बड़ा प्रदर्शक होगा, और अपनी वस्तुओं के प्रदर्शन द्वारा यह तथ्य साबित करेगा कि दुनिया के सबसे बड़े औद्योगिक देशों में इसका आठवां स्थान है।

लाइपज़िग पहुंचने के सुगम मार्ग

व्यापार मेलों का यह नगर लाइपज़िग, यूरोप के बीच में स्थित है, और यहां सड़क, रेल और हवाई मार्ग से आसानी से पहुंचा जा सकता है।

मेला : ७५ देश भाग लेंगे

हवाई मार्ग से जाने वाले यात्री उन सभी वायु-सेवाओं के यानों से लाइपज़िग जा सकते हैं जो बर्लिन, प्राग, वियाना, कोपेनहागन, एम्स्टरडाम और ब्रसल्स से हो कर जाते हैं। इसके अलावा, मेले के दिनों में लाइपज़िग के लिये यूरोप की विभिन्न राजधानियों से विशेष वायु-सेवाओं का प्रबन्ध किया जाता है।

रेलगाड़ी से सफर करने वाले यात्री यूरोप में पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण जाने आने वाली गाड़ियों द्वारा यहां पहुंच सकते हैं। अनेक रेलगाड़ियां, लाइपज़िग को पश्चिमी जर्मनी के नगरों से मिला देती हैं। इसी प्रकार, चार विशेष रेलगाड़ियां, हर रोज़, पश्चिम बर्लिन और लाइपज़िग के बीच चलती हैं।

मोटर कारों से संबन्धित सूचना साहित्य और समय सारणियां 'लाइपज़िग मेला दफ्तर' और अन्य देशों में स्थित इसकी प्रतिनिधि-एजेन्सियों से प्राप्त किया जा सकता है।

तोकियो और न्यूयार्क में प्रतिनिधित्व

हाल ही में, लाइपज़िग मेला के दो और प्रतिनिधित्व, तोकियो और न्यूयार्क में भी कायम किये गये हैं। इस प्रकार, अन्य देशों में लाइपज़िग मेले की प्रतिनिधि एजेन्सियों की संख्या ८५ तक पहुंच चुकी है।

लाइपज़िग विश्व मेला फिल्म

पिछले वर्ष के शरद् लाइपज़िग मेले के अवसर पर ओरवो के रंगों में तैयार की गई 'लाइपज़िग विश्व मेला' नामक रंगीन फिल्म दिखाई गई। इस फिल्म में, लाइपज़िग मेले की ८००वीं जयन्ती का सजीव चित्रण हुआ है। इसका निर्माता स्वयं लाइपज़िग मेला दफ्तर है।

यह फिल्म जर्मन, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, चेक, पोलिश, हंगरी, अरबी, स्पेनी, पोर्तगीज़ और यूनानी भाषाओं में भी डब की गई है और ३० मिनट तक चलती है।

'लाइपज़िग मेला दफ्तर' की प्रतिनिधि एजेन्सियां, अधिक और नये ग्राहकों एवं प्रदर्शकों को आकर्षित करने के लिये, ५० देशों में यह फिल्म आजकल दिखा रही हैं।

विकासशील देशों के साथ बढ़ता हुआ व्यापार

जर्मन जनवादी गणतंत्र लगातार, अफ्रीका और निकट पूर्व के विकासशील राज्यों के साथ अपने आर्थिक संबंध बढ़ाता जा रहा है। इन देशों के प्रतिनिधियों ने, ज.ज.ग. के प्रतिनिधियों के साथ, वाणिज्य तथा व्यापार के अनेक नये समझौते किये हैं। यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि हमारा गणतंत्र, व्यापार में एक विश्वस्त एवं आकर्षक साझीदार है जिसके पास एक समर्थ निर्यात उद्योग और विश्वसनीय मण्डी है।

उक्त व्यापार करारों की नामावली में सबसे पहला नाम आता है **संयुक्त अरब गणराज्य** का। इन करारों पर श्री वाल्टर उलब्रिख्त ने काहिरा में उस समय दस्तखत किये, जब वह संयुक्त अरब गणराज्य की मैत्री-यात्रा पर गये थे। इन करारों ने दोनों देशों के दीर्घकालीन सहयोग को एक ऊंचे स्तर पर पहुंचा दिया। इसके फलस्वरूप ज.ज.ग. ने स.अ.ग. को दीर्घकालीन अवधि का कर्जा दिया। इस कर्ज के आधार पर, ज.ज.ग., अरब गणराज्य को, मूलतः पूरे एवं तैयार संयंत्र और अन्य औद्योगिक यन्त्र सप्लाई करेगा जो संयुक्त अरब गणराज्य को अपने औद्योगीकरण के लिए बहुत जरूरी है।

इस वर्ष दोनों देशों के बीच सामान एवं माल के विनिमय में, सन १९६५ की तुलना में, ४० प्रतिशत की वृद्धि होगी। १९६६ की यह माल-विनिमय संबंधी करार, जो बर्लिन में मध्य सितंबर (१९६५) में हस्ताक्षरित हुई, १९६६–१९७० की दीर्घकालीन व्यापार संधि का एक अंग है। माल-विनिमय करार के अनुसार, संयुक्त अरब गणराज्य, ज.ज.ग. को कपास, चावल, नीबू, फल आदि जैसी अपनी पारंपरिक वस्तुएं और तैयार औद्योगिक चीजें एवं अर्द्ध तैयार उत्पादन निर्यात करेगा। . . . इन वस्तुओं के बदले, ज.ज.ग. संयुक्त अरब गणराज्य को (सन् १९६६ में) संयंत्र, मशीनें, रसायन और औद्योगिक वस्तुएँ निर्यात करेगा।

इसी प्रकार, अगस्त १९६५ में, ज.ज.ग. के विदेश एवं अन्तर जर्मन व्यापार मंत्री श्री होरस्ट ज़ोल्ले और **शाम (सीरिया)** के अर्थ मंत्री, श्री इब्राहीम बितार ने, चार दीर्घ-कालीन करारों पर दमिश्क में दस्तखत किये। इन करारों ने, शाम और ज.ज.ग. के बीच आर्थिक सहयोग की संभावनाओं को बहुत विकसित करने के लिए रास्ता तैयार किया।

उक्त चार करारों का संबंध है भुगतान, वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहयोग, जहाज़-रानी और व्यापार के विस्तार से। व्यापार करार के माल विनिमय के अनुसार ज.ज.ग. सीरिया (शाम) को मशीनें, संयंत्र, रासायनिक उत्पादन, इंजीनियरी के सूक्ष्म औज़ार एवं प्रकाशीय उपकरण, और हल्के उद्योग के उत्पादन निर्यात करेगा। इनके बदले शाम, ज.ज.ग. को कपास, अनाज, चारा और अपने हल्के उद्योग की तैयार तथा अर्ध-तैयार चीजें निर्यात करेगा।

उक्त चार करारों पर हस्ताक्षर होने के कुछ ही मास बाद एक और संधि पर दस्तखत हुए। इस संधि के अनुसार शाम की पंच-वर्षीय योजना की कई प्रायोजनाओं में ज.ज.ग हिस्सा लेगा। शाम के योजना मंत्री ने इस नई संधि को, दो देशों के सहयोग की दिशा में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम बताया।

इराक और ज.ज.ग. के बीच, सन् १९६६ के लिए माल-विनिमय संधि पर मध्य नवंबर (१९६५) में, बग़दाद में हस्ताक्षर हुए। यह करार दोनों देशों के निर्यात को बढ़ावा देने में काफी सहायक होगी।

पश्चिमी अफ्रीका में, गिनी और घाना, ज.ज.ग. के अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यापार-साझीदार हैं।

१० दिसंबर १९६५ के दिन बर्लिन में ज.ज.ग. और **गिनी** ने, एक दीर्घकालीन व्यापार एवं भुगतान संधि पर दस्तखत किये। इस संधि के अनुसार, सन् १९६० तक, दानों देशों के पारस्परिक माल विनिमय में, महत्वपूर्ण वृद्धि होगी। १९६६ का विनिमय लगभग दुगुना हो जायेगा सन् १९६५ की तुलना में।

पिछले १२ महीनों, **घाना** के साथ ज.ज.ग. के व्यापार में निरंतर वृद्धि हुई है। गत वर्ष के जुलाई मास में, ज.ज.ग. के उप विदेश-व्यापार मंत्री श्री एरिख वाखटर, और घाना के वित्त मंत्री, श्री अमोआका आता ने, आकारा में, आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग के लिए संधि पर हस्ताक्षर किए।

इस संधि के अनुसार ज.ज.ग., घाना को, मशीनें, कागज बनाने की एक फैक्ट्री, एक डामर (बटूमन) संयंत्र सप्लाई करेगा। इसके अलावा वह निकट भविष्य में वहां इमारती लकड़ी का कारखाना भी खड़ा करेगा। इसके बदले ज.ज.ग., घाना से वहां की स्थानीय वस्तुओं का आयात करेगा। दोनों देशों ने, आपस के वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग को अधिकाधिक विस्तृत करना भी मान लिया है।

माली और ज.ज.ग. के सहयोग में भी काफी वृद्धि होगी। दोनों देश, एक दीर्घ-कालीन व्यापार संधि के आधार पर, अपने पारस्परिक व्यापार को विस्तृत करेंगे। तकनीकी और वैज्ञानिक सहयोग के लिए दोनों देशों ने, नवंबर (१९६५) में एक क़रार पर दस्तखत किए।

भारत और ज.ज.ग. का आपसी व्यापार सन १९६४ में २१.५ करोड़ रुपयों से बढ़कर सन १९६५ में २६.३ करोड़ रुपयों तक पहुंच गया—अर्थात् २२.३ प्रतिशत बढ़ गया।

१९६५ की आर्थिक प्रगति :

सन् १९६६ के लिये एक शुभ लक्षण

जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता एक बार फिर एक ऐसा आर्थिक संतुलन हासिल कर सकी है जो अगले वर्ष की खुशहाली का शुभ संकेत है। यह तथ्य ज.ज.ग. के केन्द्रीय सांख्यिकी प्रशासन द्वारा १९६५ की राष्ट्रीय आर्थिक योजना के पूरी होने की घोषणा से प्रकट होता है।

१९६५ में आर्थिक नियोजन और प्रशासन की जो नयी पद्धति शुरू की गयी उसके अंतर्गत ज.ज.ग. की मेहनतकश जनता ने न सिर्फ उत्पादन के परिणाम में वृद्धि की, वरन उत्पादित वस्तुओं की क्वालिटी भी बढ़ाई और श्रम के आर्थिक प्रभाव को बढ़ाने के साथ साथ राष्ट्रीय आय में भी वृद्धि की।

सबसे महत्वपूर्ण परिणाम थे निम्नलिखित क्षेत्रों में वृद्धि :

	प्रतिशत वृद्धि
राष्ट्रीय आय	४.७
औद्योगिक उत्पादन	६.१
भवन निर्माण	४.६
बाजारों में जाने वाले कृषि उत्पादन	८.५
विनियोग राशि	७.५
जनसंख्या की नकद आय	४.१
फुटकर व्यापार से लाभ	४.०
शिक्षा, सांस्कृतिक कार्यों, स्वास्थ्य और समाज—कल्याण पर व्यय	४.०

कई नयी परियोजनाएं विशेष रूप से रसायन, बिजली और मेटलर्जी के क्षेत्रों में शुरू की गयीं।

विद्युत शक्ति पैदा करने में १९६५ में विकास की वार्षिक दर अब तक सबसे अधिक, १०६३ मेगावाट रही।

उद्योगों में लाभ की जो योजना बनायी गयी वह लक्ष्य से अधिक रही। औद्योगिक उत्पादन में पर्याप्त गुणात्मक विकास हुआ। गत वर्ष औद्योगिक उत्पादन के ११.६ प्रतिशत माल को अच्छाई का सर्वश्रेष्ठ चिन्ह 'क्यू' और ७३.६ प्रतिशत माल को प्रथम कोटि माल का प्रमाण पत्र मिला।

ज.ज.ग. के कुल विदेशी व्यापार के परिमाण में ५ प्रतिशत की वृद्धि हुई। मशीनरी और उनके उपकरणों के निर्यात में ९ प्रतिशत की वृद्धि हुई। समाजवादी देशों के साथ व्यापार के योजनाबद्ध विकास के अतिरिक्त नव-स्थापित राष्ट्रों के साथ वस्तुओं के विनिमय में अत्यधिक अनुकूल वृद्धि (२० प्रतिशत) हुई। संयुक्त अरब गणराज्य, घाना और सीरियाई अरब गणराज्य के साथ हमारे व्यापार में विशेष महत्वपूर्ण विकास हुआ।

यूरोप के पूंजीवादी देशों को किया जाने वाला निर्यात १२ प्रतिशत बढ़ा। ज.ज.ग. के वैदेशिक व्यापार की बढ़ती हुई गति विधियां विशेष रूप से लाइपज़िग के ८००वें व्यापार मेले में और गत वर्ष २५१ अंतर्राष्ट्रीय मेलों और प्रदर्शनियों में, जिनमें ज.ज.ग. ने भाग लिया, प्रकट हुई।

जनता को आधुनिक सुविधाओं से युक्त ७० हज़ार आरामदेह फ्लैट दिये गये। इनमें से ९० प्रतिशत से अधिक फ्लैट औद्योगिक भवन पद्धति से निर्मित किये गये।

ज.ज.ग. की ग्रामीण जनता भी सच्चे अर्थों में महान उपलब्धियों का गर्व कर सकती है। उन्होंने पशुओं से होने वाले उत्पादनों और अन्न, तिलहन, दालों और आलू के उत्पादन में न सिर्फ योजना में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा किया, वरन् आबादी की खपत के लिए उससे कहीं अधिक उत्पादन किया। यह उपलब्धि इसलिए और भी प्रशंसनीय है कि गत वर्ष मौसम भी कृषि के लिए प्रतिकूल रहा।

इस उत्पादन वृद्धि के फलस्वरूप आवश्यक खाद्य पदार्थों जैसे गोश्त और मक्खन के आयात में क्रमशः २.१ और ५.८ प्रतिशत की कमी हुई। स्थानीय उत्पादन से हम गोश्त की ९६.६ प्रतिशत और मक्खन की ९०.३ प्रतिशत आवश्यकताएं पूरी कर लेते हैं।

निम्नलिखित अन्य वृद्धियां उल्लेखनीय हैं :

	वृद्धि
मांस के लिए पशु	१०.८ प्रतिशत
मुर्गे-मुर्गियां	१४.२ "
दूध	१२.० "
अंडे	९.१ "

भूमि की उर्वरता बढ़ाने की ओर काफी ध्यान दिया गया जिसके फलस्वरूप प्रति हेक्टर पैदावार में वृद्धि (दाशमिक टनों में) इस प्रकार हुई :

	१९६४	१९६५
अन्न	२७.०	२९.२
तिलहन	१४.३	१८.४
आलू	१७२.८	१७७.२
चुकन्दर	२६१.३	२७६.१

प्रति हेक्टर भूमि में पहले से अधिक उर्वरक डाले गये जो (केवल पौष्टिक तत्वों के हिसाब से) इस प्रकार था :

	१९६४	१९६५
नाइट्रोजन	५३.१ कि.ग्रा.	६५.१ कि.ग्रा.
फासफोरिक अम्ल	४९.० कि.ग्रा.	४९.२ कि.ग्रा.
पोटाश	८५.२ कि.ग्रा.	९२.१ कि.ग्रा.
कैलशियम	१९९.३ कि.ग्रा.	२१२.१ कि.ग्रा.

ज.ज.ग. के व्यापारिक जहाज़ी बेड़े को १९६५ में १७ नये जहाज़ मिले। कुल मिला कर उसमें अब १२७ जहाज़ हैं जिनकी भारवाही क्षमता ८ लाख टन की है। १९६५ में ज.ज.ग. के बंदरगाहों पर ८९ लाख टन सामान उतारा चढ़ाया गया।

ज.ज.ग. की विमान यात्रा कम्पनी इन्टरफ्लुग से गत वर्ष ४ लाख १९ हज़ार यात्रियों ने यात्राएं कीं।

गत वर्ष विश्वविद्यालयों और टेकनिकल स्कूलों के ५४ हज़ार स्नातक शिक्षा पूरी कर उत्पादन-कार्यों में लगे।

१९६४ के मुकाबले इस वर्ष ९ हजार अधिक विद्यार्थी विश्वविद्यालयों में दाखिल हुए। १२ हजार से अधिक व्यक्तियों ने सीधे प्राविधिक विषयों का अध्ययन किया।

२ लाख ३ हज़ार व्यक्तियों ने (अर्थात् १९६४ के मुकाबले ४५ हज़ार अधिक) दक्षता संबंधी प्रशिक्षण समाप्त किया।

१ लाख ८३ हजार एप्रेन्टिसों ने विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्राप्त करना शुरू किया।

जनता की नकद आय में योजना के अनुसार जितना समझा गया था उससे अधिक ४.१ प्रतिशत की वृद्धि हुई। प्रति व्यक्ति बचत में २५० मार्क की वृद्धि हुई।

वस्तुओं की बिक्री में और वृद्धि हुई जो इस प्रकार है :

	प्रतिशत वृद्धि
रेडीमेड कपड़े	७.३
बच्चों के पकड़े	१३.८
चमड़े के जूते	७.६
चमड़े के अन्य सामान	७.६
बिजली के घरेलू सामान तथा हीटर इत्यादि	११.३
फोटो तथा सिनेमा के सामान	१५.०
फर्नीचर	३.६

ज.ज.ग. की जनता ने सुख-सुविधा के भी अधिक सामान खरीदे। अब प्रति १०० परिवारों पर निम्नलिखित वस्तुएं इस प्रकार हैं :

	१९६४	१९६५
टेलीविजन सेट	४२	४८
रेफ्रीजरेटर	२०	२६
कपड़ा धोनेवाली मशीनें	२२	२८

१९६५ में प्रति १ लाख आबादी पर ११५ डाक्टर और ३६ दन्त चिकित्सक थे।

१९६४ में प्रति १० हज़ार नवजात शिशुओं में २९५ शिशु मृत्युएं होती थीं, १९६५ में यह संख्या २५० रह गयी।

किंडरगार्टनों में स्थानों की संख्या में १७ हज़ार की वृद्धि हुई। अब उनमें कुल ४ लाख ३१ हजार जगहें हैं। इसी तरह शिशु शालाओं और बाल होस्टलों में ८ हज़ार और जगहें बढ़ायी गयीं जिससे अब उनमें कुल १ लाख ४३ हज़ार जगहें हैं।

ट्रेड यूनियनों की छुट्टियों की सेवा ने १९६५ में १३ लाख अन्तर्देशीय और ६ लाख ७० हज़ार विदेश यात्राओं की व्यवस्था की। १९६४ के मुकाबले इस वर्ष १ लाख ४० हज़ार अधिक विदेश यात्राएं की गयीं।

अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक गतिविधियों में भी ज.ज.ग. के सुयश में बहुत वृद्धि हुई। उदाहरण के लिए बर्लिन के कांमिक आपेरा ने मास्को, वेनिस और स्टाकहोम में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। ब्रेख्त द्वारा संस्थापित बर्लिनेर एनसेम्बल ने लन्दन, बुडापेस्ट और प्राग में कार्यक्रम प्रदर्शित किये, बर्लिन के ड्यूटरो थियेटर ने हैम्बर्ग (पश्चिमी जर्मनी), बियेना और दूसरे स्थानों में नाटक अभिनीत किये। ड्रेसडेन स्टेट वाद्यवृन्द ने आस्ट्रिया के साल्जबर्ग समारोह में अपनी कला का सफल प्रदर्शन किया, लाइपज़िग के बाख वाद्यवृन्द ने एथेन्स में ग्रीस के समारोह में कार्यक्रम दिया और लाइपज़िग गेवाण्डहूस वाद्य वृन्द ने लन्दन तथा ब्रिटेन के दूसरे नगरों में कान्सर्ट दिये।

ज. ज. ग. का प्लेनेटा मुद्रण यन्त्र कारखाना। इस कारखाने का ९० प्रतिशत उत्पादन निर्यात होता है, जिसमें भारत भी शामिल है।
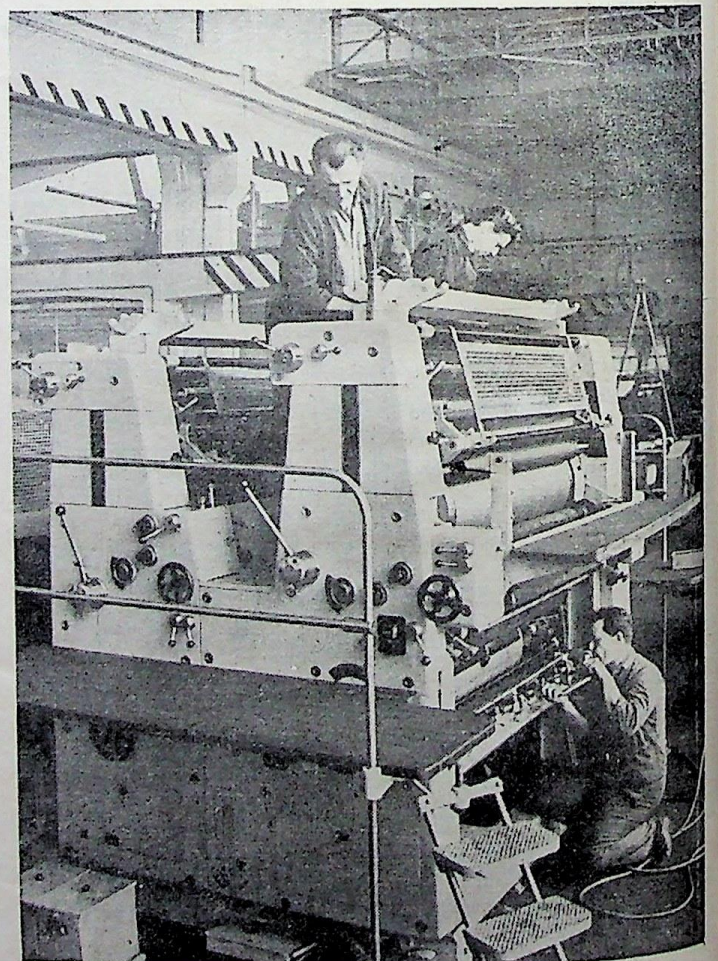
यूरोपीय सुरक्षा के लिये सहयोग आवश्यक है

जर्मन जनवादी गणतन्त्र की सरकार ने, यूरोप की सुरक्षा के लिए, यूरोप के सभी राज्यों को नये सुझाव भेज दिये हैं। इन सुझावों की भूमिका प्रस्तुत करते हुये इस तथ्य को एक बार फिर दोहराया गया है कि वर्तमान शताब्दी में यूरोप, दो महासमरों के संहार का स्थल बना, जिनके कारण यूरोप की जनता, अकथनीय पीड़ा और क्षति का शिकार हुई। सुझाओं की उक्त भूमिका में कहा गया है कि, "....(दो जर्मन राज्यों में से--सं.) जर्मन जमनवादी गणतन्त्र एक ऐसा जर्मन राज्य है जिसने विश्व युद्ध के कारणों को समझा है, और जिसने इनसे सबक सीखे हैं। इसलिए, जर्मन जनवादी गणतन्त्र अपनी विदेश नीति का यह सबसे अहम कर्तव्य समझता है कि वह अपने सारे प्रयत्न एवं शक्ति इस बात पर लगाये कि जर्मन भूमि से, भविष्य में, कभी भी कोई युद्ध शुरू न हो। जर्मन जनवादी गणतन्त्र की सरकार का यह दृढ़ विश्वास तथा मत है कि इस प्रकार की शान्तिपूर्ण नीति समस्त यूरोपीय जनता के हितों के अनुकूल है, जिसकी सबसे बड़ी इच्छा है कि शान्ति और सुरक्षा का जीवन व्यतीत करना।"

ज.ज.ग. के विदेश मंत्री, श्री ओटो विन्ज़र, बर्लिन में, एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस कानफ्रेंस में सुझावों पर प्रकाश डाल रहे हैं

"यूरोप की जनता, और उसके कई राजनीतिज्ञ, यूरोप की वर्तमान स्थिति से बहुत चिन्तित हैं। कई ऐसी समस्याएँ हैं जो अभी तक हल नहीं हो सकी हैं। और इनके तनाव से यूरोपीय राज्यों के आपसी रिश्ते विषाक्त हुए हैं। यूरोप के क्षितिज पर कई नये गंभीर खतरे मंडराने लगे हैं। ऐसे कई तत्व और शक्तियां सक्रिय हैं, जो यूरोप के वर्तमान विभाजन और तनावों को और गहरा करना तथा बढ़ाना चाहते हैं।

"इस खतरनाक स्थिति में भी यूरोप के कुछ एक राज्यों को, (जिनके पास अणु-शस्त्र नहीं हैं) किसी न किसी तरह से इन अणु-शस्त्रों पर नियंत्रण कराने, अथवा उनको अपने अणु शस्त्र बनवाने की चालें चलाई जाती हैं।...." सुझाव में कहा गया है कि ऐसी चालें तथा प्रयत्न, यूरोप की जनता एवं राज्यों में वर्तमान खाई को और चौड़ा करेंगे। इसलिए "...यूरोप को अपने मसले स्वयं तय करने चाहियें, और इसको ऐसी सभी बाधाओं को अलग करना चाहिए जो आपसी मेल-मिलाप सद्भावना और सहयोग का मार्ग रोकती हों।

"राजनीतिक वातावरण में वर्तमान तनाव में कमी, और यूरोप के सभी राज्यों का आपसी सहयोग--एक ऐसे सम्मेलन का आयोजन संभव बना देगा जो यूरोप में स्थाई सुरक्षा की गारंटी दे सकेगा। यूरोप के कुछ राज्य और कई राजनीतिज्ञ, इस प्रकार के सम्मेलन को आज एक अहम आवश्यकता मान रहे हैं। ....राजनीतिक और वैचारिक मतभेद यूरोप की जनता और सरकारों के लिए, यथार्थता को स्वीकार करने और इसके आधार पर यूरोप में शान्ति एवं सहयोग के लिए रास्ता तैयार करने में बाधक नहीं बनने चाहियें।

"यूरोपीय राज्यों के बीच यह विश्वासपूर्ण सहयोग दो जर्मन राज्यों के बीच शान्ति और समझदारी से जर्मन सहमस्या को हल करने के लिए भी एक अनुकूल वातावरण तैयार करेगा। दो जर्मन राज्यों का यूरोप के अन्य राज्यों के साथ सामान्य संबंध स्थापित होना भी इस उद्देश्य में काफी सहायक सिद्ध हो सकता है। इससे, पश्चिमी और पूर्वी यूरोप के राज्य एक दूसरे के निकट आ सकेंगे और उनके आपसी संबंध सामान्य हो जायेंगे।

"यूरोप के जिम्मेदार राजनीतिज्ञ और वहां की जनता के सच्चे प्रतिनिधि इस एक बात पर सहमत हैं कि यूरोप के राज्यों के आपसी झगड़ों और समसयओं को हल करने में युद्ध एवं बल प्रयोग के साधन का परित्याग करके शान्तिपूर्ण तरीकों को अपनाना चाहिए, और घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करने के सिद्धांत का कड़ा पालन करना चाहिए।"

इन ही विचारों तथा भावनाओं से प्रेरित होकर, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, समस्याओं के हल के लिये निम्न सुझाव देती है:

१. यूरोप में तनाव को कम करने के लिये शस्त्रों की मात्रा को परिसीमित, और उन सभी यूरोपीय राज्यों द्वारा जिनके पास अणु-शस्त्र नहीं हैं, किसी भी प्रकार के अणु-शस्त्रों को हासिल करने के प्रयत्नों का परित्याग करने के सम्बन्ध में एक समझौता करना चाहिये ।

२. वर्तमान सीमाओं को स्वीकार करना चाहिये, और उनको बदलने के लिये कदापि बलप्रयोग नहीं करना चाहिये ।

३. यूरोप के सभी राज्यों के बीच आपसी सम्बन्धों को सामान्य करना चाहिये । इसमें दो जर्मन राज्यों के यूरोपीय राज्यों के साथ सम्बन्ध भी शामिल हैं ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार द्वारा, यूरोप के विभिन्न राज्यों को भेजे गये, उल्लिखित सुझावों की भूमिका का अन्त इन शब्दों से किया गया है : "कई प्रश्नों को लेकर यूरोपीय राज्यों में मतभेद हैं, लेकिन यूरोप की सुरक्षा और तनाव को कम करने के अहम सवाल पर उनको, इस मतभेद के बावजूद, एक दूसरे से सहमत होना चाहिये । ज. ज. ग. की सरकार, यूरोप के राज्यों के बीच द्विपक्षीय अथवा बहुपक्षीय संपर्कों और समझौतों को, यूरोप में धीरे धीरे तनाव कम करने का एक सही रास्ता समझती है । और वह यूरोप में शांति स्थापित करने एवं यूरोपीय राज्यों के बीच लाभदायक सहयोग बढ़ाने के लिये प्रत्येक कदम उठाने के लिये तैयार है ।"

ज.ज.ग. और ताशकन्द घोषणा

(पृष्ठ ४ का शेष)

समस्याओं को भी सद्भावना और समझदारी के वातावरण में हल करना संभव है ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, श्रीमती इन्दिरा गांधी के इस आश्वासन का स्वागत किया है कि ताशकन्द घोषणा पर पूरी तरह अमल किया जायेगा । इस सिलसिले में दोनों देशों ने जो कदम उठाये हैं, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने उनका भी स्वागत किया है ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र, भारत और पाकिस्तान के बीच ताशकन्द समझौते को काफी महत्व देता है, क्योंकि इस समझौते ने एक ऐसा रास्ता दिखाया है जिस पर चलने से यूरोप की जटिल समस्यायें भी आसानी से हल हो सकती हैं । इस मान्यता को २२ जनवरी के दिन ज.ज.ग. के विदेशमन्त्री, श्री ओटो विन्ज़र ने अपनी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस-कान्फ्रेंस में पुष्ट किया । इस प्रेस-कान्फ्रेंस में उन्होंने ज.ज.ग. की सरकार के यूरोपीय सुरक्षा सम्बन्धी उन नये सुझावों पर सविस्तार प्रकाश डाला जो यूरोप की सभी सरकारों को भेज दिये गये हैं । इन नये सुझावों का प्रेरणा स्रोत ताशकन्द भावना ही है, और यदि इस पर गंभीरता से विचार किया जायेगा तो यूरोप की स्थिति बहुत सुधर जायेगी । ये सुझाव, ताशकन्द के महान सन्देश की रचनात्मक और ठोस प्रतिक्रिया है ।

समाचार

चार दिन में ८४ शरणार्थी

पश्चिमी जर्मनी तथा पश्चिमी बर्लिन के ३९ शरणार्थियों और ४५ ऐसे व्यक्तियों ने, जो पहले पश्चिमी जर्मनी चले गये थे और अब घर वापिस आ रहे हैं, ९ से ११ जनवरी तक अर्थात् ३ दिनों के दौरान राजनीतिक अथवा आर्थिक कारणों से, ज.ज.ग. में शरण मांग ली है ।

इन शरणार्थियों में ८ बच्चे तथा १९ से २५ वर्ष की अवस्था वाले २६ युवकों सहित ६ परिवार भी शामिल हैं । इन वापिस लौटने वाले शरणार्थियों में ३६ कुशल श्रमिक भी हैं ।

इराकी प्रधान मन्त्री द्वारा ज. ज. ग. प्रस्ताव का स्वागत

इराक के प्रधान मंत्री एवं विदेश मंत्री, डा. बज्जाज़ ने यहां एक अंतर्राष्ट्रीय पत्रकार सम्मेलन में कहा : "हम वाल्टर उल्ब्रिख्त द्वारा पश्चिमी जर्मनी की संसद को भेजे गये उस प्रस्ताव का स्वागत करते हैं, जिसमें कहा गया है कि दोनों जर्मन राज्य अणु-शस्त्रीकरण का त्याग करें और किसी भी प्रकार के आणविक-शस्त्रों के प्राप्त करने के प्रयास छोड़ दें । हमें आशा है कि पश्चिमी जर्मनी इस अपील को स्वीकार करेगा ।" ए. डी. एन. संवाददाता के प्रश्नों का उत्तर देते हुए, प्रधान मंत्री ने कहा : "हम वास्तव में पश्चिमी जर्मनी के आणविक शस्त्रीकरण के विरुद्ध हैं और हमें विश्वास है कि सभी शान्तिप्रिय शक्तियां भी हमारे साथ हैं ।"

पश्चिमी जर्मनी वियतनाम युद्ध में

पश्चिमी जर्मनी में एक ऊँचे पैमाने पर वियतनाम के युद्ध के लिए भर्ती अभियान प्रारम्भ हो गया है, और पश्चिमी जर्मनी के प्रतिरक्षा मंत्री श्री वान हासेल ने कहा है कि "स्वतन्त्र विश्व की प्रतिरक्षा अविभाज्य है ।"

सरकारी तौर पर इस बात की घोषणा की जा चुकी है कि अब तक पश्चिमी जर्मन सरकार ने, दक्षिण-वियतनामी जनता के विरुद्ध लड़े जा रहे आक्रामक युद्ध में आज तक १२८ मिलियन मार्क (१ मिलियन = १० लाख) की रकम खर्च की है ।

अमेरिकी अखबार 'टाइम', और पश्चिमी जर्मनी के समाचार पत्रों ने यह समाचार दिया है कि फरवरी से अप्रैल १९६५ तक दक्षिण वियतनाम के युद्ध में, पश्चिमी जर्मनी के ६ वायु सेना आधिकारियों की भी मृत्यु हो गई है ।

ओरवो प्रदर्शनी

२५ जनवरी के दिन, भारत सरकार के विधि-मंत्रालय में राज्य मंत्री, श्री सी. आर. पट्टाभिरामण ने, एक ओरवो (ORWO) प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी का आयोजन किया था भारत में ओरवो फिल्मों के वितरकों ने। इन फिल्मों का उत्पादन जर्मन जनवादी गणतंत्र के "वैब फिल्मफाबरिक वोलफेन" नामक सुप्रसिद्ध कारखाने मे होता है।

अपने उद्घाटन-भाषण में मंत्रि महोदय ने इस तथ्य की सराहना की कि 'ओरवो' के उत्पादन भारत में रुपयों में दाम देकर बेचे जाते हैं। इस से भारत की बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की बचत होती है। यहां इस महत्वपूर्ण तथ्य का उल्लेख करना भी अनुचित न होगा कि भारत के फिल्म उद्योग में इस्तेमाल होने वाली कुल कच्ची फिल्म का ५० प्रतिशत से अधिक भाग, जर्मन जनवादी गणतंत्र सप्लाइ करता है।

उक्त 'ओरवो' प्रदर्शनी में प्रदर्शित बड़े-बड़े रंगीन और श्वेत श्याम फोटो भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के जन जीवन की कतिपय झांकियां प्रस्तुत करते थे। इस प्रदर्शनी में एक फोटो-पहेली भी पेश की गई थी। यह पूछा गया था कि प्रदर्शित तीन बहुत बड़े चित्रों में क्या दोष हैं।

उद्धाटन समारोह का समापन दो छोटी रंगीन फिल्मों और हिन्दी फिल्म "काजल" के एक दृश्य के प्रदर्शन द्वारा किया गया।

ओरवो संबंधी तथ्य

ओरवो फिल्म सामग्री तैयार करने वाला कारखाना, 'वैब फिल्मफाबरिक वोल्फेन' ---यूरोप का, इस प्रकार का सबसे बड़ा कारखाना है। यह ६० वर्ष पुराना है, और उसमें १४,००० मजदूर, तकनीशन तथा वैज्ञानिक काम करते हैं। यह कारखाना श्वेत-श्याम तथा रंगीन फिलम, एक्स-रे फिलम, और हर प्रकार की फोटोग्राफी का सामान, फोटो रसायन आदि तैयार करता है। 'वैब फिलमफाबरिक वोलफेन' फोटो तकनालोजी विषयक अनुसन्धान पर विशेष बल देता है। इसी अनुसन्धान के परिणाम-स्वरूप, कई वर्ष पहले, इसने पहली बार श्वेत-श्याम फाइन ग्रेन फिल्म बाज़ार में लाई। इसी प्रकार ,तीव्र-गति फिल्मों के उत्पादन में जिस स्वर्ण-द्रुतग्राहीकरण (गोल्ड सेनसिटाइजेशन) विधि का विश्व-व्यापी इस्तेमाल हो रहा है, वह खोज भी इसी कारखाने की देन है। सार्वभौमरूप से स्वीकृत प्रथम रंगीन फिल्म भी वोलफेन में ही बनी। ये कतिपय तथ्य ही इस बात को स्पष्ट करते हैं कि 'वैब फिलमफाबरिक वोलफेन' के ग्राहक दुनिया के ८५ देशों में फैले हुये हैं।

सन् १९६३ के प्रारंभ में, उक्त कारखाने ने अपना ट्रेड मार्क ओरवो (ORWO) धारण कर लिया। दो तीन ही वर्षों में यह नाम विश्व-प्रसिद्धि पा चुका है। दुनिया के विभिन्न देशों में ओरवो-फिल्म के ८८ प्रतिनिधित्व इन देशों की फिल्म आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। भारत में इसकी दो प्रतिनिधि फर्में हैं। इनके नाम हैं: ओरवो प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई-नई दिल्ली, और ओरवो फिल्म ईस्टर्न यूनिट, मद्रास-कलकत्ता।

विश्व स्तर की मांग को पूरा करने के लिये रंगीन फिल्म उत्पादन पर विशेष बल दिया जा रहा है। 'वैब फिल्मफाबरिक वोल्फेन' ने भारत में रंगीन फिल्म उत्पादन की सुविधायें--प्रयोगशालायें, यन्त्र आदि, उपलब्ध की हैं। भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के तकनीशन, मिलजुल कर, इस क्षेत्र में अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिये प्रयत्न कर रहे हैं।

विधि मंत्रालय में राज्य मंत्री, श्री पट्टाभिरामण, ओरवो प्रदर्शनी में प्रदर्शित चित्रों को देख रहे हैं
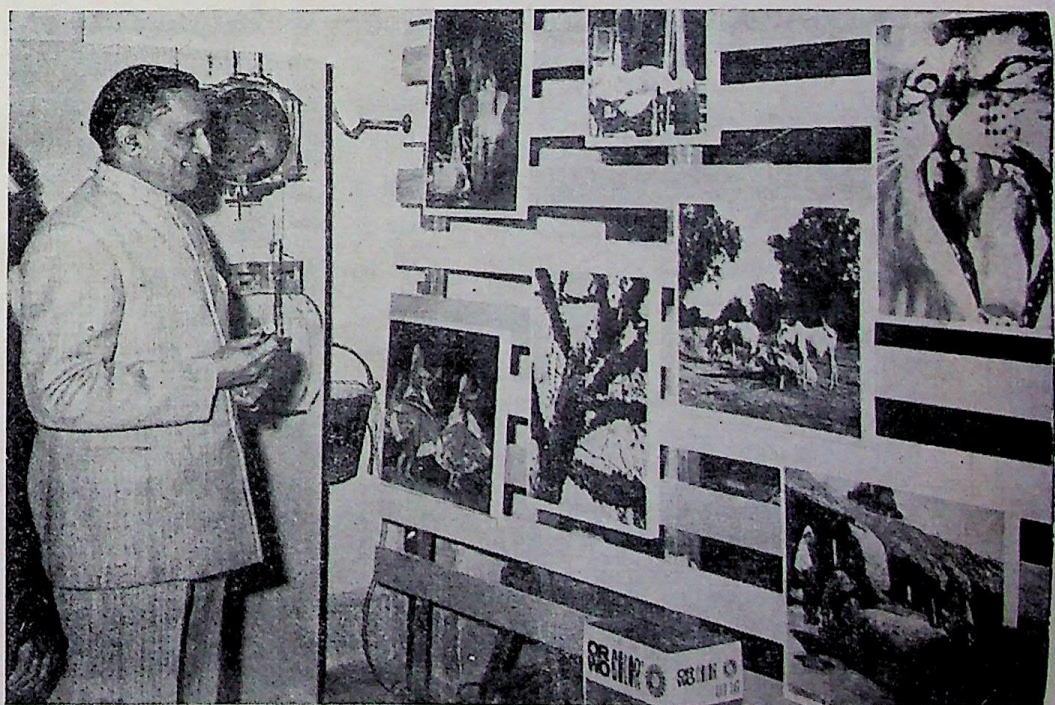
चिट्ठी पत्री

आदरणीय महोदय,

अचानक **सूचना पत्रिका** देखने को मिली। भारतीय और जर्मन एक्य पर आधारित सामग्री से भरी पूरी यह 'पत्रिका' निसंदेह गरिमामय मित्र-भावना का प्रतीक है।

मेरा गांव आपकी इस 'पत्रिका' का आदर करता है। कृपया नियमित रूप से पत्रिका भिजवाकर अनुगृहीत करें।

भवदीय
नारायण लाल परमार
रायपुर (म. प्र.)

प्रिय महोदय,

मैं **सूचना पत्रिका** का एक स्थायी पाठक होना चाहता हूं। इसलिये आप कृपया मेरे नाम पर इसका एक नमूना भेज दीजिये। कोई खास निबन्धन हो तो लिख भेजिये। मेरा पता नीचे लिखा है।

आपका
रामचन्द्र
एटूमनूर (**केरल**)

महोदय,

सेवा में, नम्र निवेदन है कि मैं विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, से Role of Jawaharlal Nehru in Indian politics विषय पर रिसर्च कर रहा हूं। ज्ञात हुआ हुआ कि पं. नेहरू तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र का काफी अच्छा सम्बन्ध रहा है। मैं अपने शोध कार्य में उक्त सम्बन्ध का उल्लेख करना चाहता हूं।

अतः आप से अनुरोध है कि उक्त विषय से संबन्धित चित्र, संस्मरण, प्रकाशित या अप्रकाशित साहित्य या अन्य सामग्री जो भी उपलब्ध हो भेजने की कृपा करें धन्यवाद

आपका मंगलाकांक्षी
केदार बंसल
उज्जैन (**म. प्र.**)

सम्पादक जी,

आपकी **सूचना पत्रिका** यथासमय प्राप्त होती रहती है, और आशा है कि भविष्य में भी इसी प्रकार निरन्तर मिलती रहेगी। 'पत्रिका' के सभी पृष्टों की सामग्री काफी रूचिपूर्ण होती है।

'पत्रिका' के संकलित लेख, जर्मन जनवादी गणतंत्र के बारे में रोचक तथय उद्घाटन करते हैं। जिस से हमें बहुत बड़ी शिक्षा मिलती है। निस्सन्देह यह पत्रिका भारत जर्मन जनवादी गणतंत्र की मैत्री में सुदृढ़ योगदान देगी।

यही मेरी शुभ कामना है।

आपका
वीरेन्द्रसिंह नेगी
व्यवस्थापक
सिने सावित्री
लखनऊ (उ. प्र.)

प्रिय सम्पादक,

हर्ष का विषय है कि मुझे आपकी **सूचना पत्रिका** देखने का मौका मिला। 'पत्रिका' को देखते ही एका एक मेरा ध्यान पत्रिका की ओर आकर्षित हो गया। मैं अपने करों में लेकर उलटने लगा। 'पत्रिका' के विभिन्न चित्रों और लेखों को देख कर अपार हर्ष हुआ। और हर्ष ही नहीं साथ–साथ आश्चर्य भी कम नहीं हुआ, क्योंकि इस छोटी सी 'पत्रिका' के अन्दर इतनी बातों का समावेश किस कलात्मक ढंग से किया गया है। इस 'पत्रिका' के कलाकार धन्यवाद के पात्र हैं और वे किसी भी व्यक्ति के अन्दर अपना स्थान बनाये रखने की क्षमता रखते हैं। यद्यपि मैं कोई पढ़ा लिखा आदमी नहीं हूं फिर भी 'पत्रिका' की रूप रेखा देखकर सहसा मेरे मन में आया कि इस 'पत्रिका' को किसी ढंग से मंगाया जाय। फिर देर क्यों ? मेरे पास तो पोस्ट कार्ड था ही। पत्र व्यवहार करने की तीव्र आकांक्षा हुई। किन्तु मुझे यह जानकारी नहीं हो पायी कि उसका मंगाने का नियम क्या है। मुझे बहुत जल्द इसे प्राप्त करने की इच्छा है। मेरे यहां एक छोटा सा पुस्तकालय भी है। अतः पत्र भेजने का निश्चय ही प्रयास करें। इसके लिये मैं सर्वदा के लिये आपका आभारी बना रहूंगा।

आपका
मुहम्मद जमीरउद्दीन
धरतीथान (**बिहार**)

मान्यवर महोदय,

मुझे आपकी **सूचना पत्रिका** निर्बाध रूप से हर महीने प्राप्त हो रही है। 'पत्रिका' की सामग्री इतनी रोचक होती है कि इसे ४-५ दिन में ही पढ़ डालता हूं। और फिर अगले महीने की २५ तारीख का इंतजार करता हूं।

आपने लगभग १ या डेढ़ वर्ष पहले **रसधारा** स्तम्भ निकाला था जिसे मैं 'पत्रिका' मिलने पर सर्वप्रथम पढ़ता था, किन्तु अब आपने न जाने क्यों इसे बंद कर दिया। यदि पुनः आरंभ कर सकें तो बहुत कृपा होगी। पहले आप जर्मन (डेफा) फिल्म जगत के बारे में भी रोचक सामग्री देते थे, किन्तु इसे भी बन्द कर दिया। मेरा आग्रह है कि इन स्तम्भों को पुनः चालू किया जाय। इसमें हम जर्मनी के सामाजिक जीवन को गहराई से समझेंगे तथा हमारे देशों की राजनैतिक सबंन्धों के साथ साथ सांस्कृतिक संबन्ध भी और दृढ़ होंगे। ज. ज. ग. के वैज्ञानिकों के बारे में भी कभी कभी कुछ सामग्री दें। 'पत्रिका' में इससे चार चांद लग जयेंगे। इस समय भी यह 'पत्रिका' कम आकर्षक नहीं है। इसके पढ़ने से "जर्मन समस्या" का वास्तविक कारण मुझे समझ में आया। मैं ३-४ वर्षों से इसका पाठक रहा हूं, और इस दौरान इस 'पत्रिका' ने इतना प्रभावित किया है कि मुझे जर्मन लोगों के बारे में बहुत कुछ जानने की इच्छा है। अब मैं स्वयं जर्मन भाषा सीख रहा हूं। यदि आप मुझे इस बारे में सहायता करें तो आपका कृतज्ञ हूंगा।

आपका
भारतभूषण
वारणसी (उ. प्र.)

समाचार

कृषि के लिए आधुनिक यंत्र

मास्को में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय कृषि प्रदर्शनी में आलू बोने तथा काटने के लिये नई मशीनों का प्रदर्शन किया जायेगा।

इस कारखाने ने, कृषि के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली अत्याधुनिक मशीनों के लिये विश्व के अनेक देशों में काफी ख्याति प्राप्त कर ली है। ज.ज.ग. के समाजवादी कृषि फार्मों के अतिरिक्त, यह कारखाना संसार के लगभग २५ देशों को अपने आलू काटने वाले यंत्र और यातायात एवं कृषि उत्पादन से संबन्धित मशीनें भी निर्यात करता है।

यह कारखाना १९५२ से ही प्रत्येक प्रकार के कृषि यंत्र बनाने में विशिष्टता प्राप्त कर रहा है। अब तक यहां से ६,६०० कम्बाइन हारवेस्टर (जो अब दूसरी फैक्टरी में भी बनाये जाते हैं,) ३०,००० से अधिक आलू की फसल काटने वाले हारवेस्टर और लगभग २०,००० परिवहन यंत्र तैयार होकर निकले हैं। इसके अलावा यह कारखाना अतिरिक्त कल-पुर्जे भी सप्लाइ करता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के २६,००० कृषि उत्पादन सहकारी संघ एवं ६०० राष्ट्रीय फार्म लगभग १८,००० ट्रैक्टरों, २१,००० से अधिक ट्रकों, १५०,००० ट्रेलरों, लगभग २४,००० कम्बाइन हारवेस्टरों, ६,६०० से अधिक आलू की फसल काटने वाले हारवेस्टरों, ज़मीन साफ करने वाली १२,००० मशीनों और ५००० हारवेस्टरों का उपयोग करते हैं।

९००० अधिक ट्रैक्टर और २,००० अतिरिक्त ट्रक सन् १९६६ में उपलब्ध हो सकेंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में अनाज का ६.७ प्रतिशत भाग आलू की फसल कटाई का २९ प्रतिशत भाग और चुकन्दर की फसल कटाई का ८३ प्रतिशत भाग का यन्त्रीकरण हो चुका है।

प्रति ३६ घन्टों में एक जहाज़

सन् १९६५ में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के पोत निर्माण उद्योग ने अपने ग्राहकों को प्रत्येक ३६ घन्टों में एक जहाज़ सप्लाइ किया। ज.ज.ग. के १२ पोत निर्माण कारखानों में, स्वदेश और सोवियत संघ, ट्यूनिशिया, तन्जानिया, चीन, नार्वे, पोलैण्ड, स्वीडन, डेनमार्क तथा आइसलैण्ड के लिये २४३ जहाज़ों का निर्माण किया गया।

गत वर्ष की तुलना में जहाज़-निर्माण में ५६ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इनमें सबसे बड़ा जहाज़ विज़मार पोत निर्माण कारखाने में बनाया गया। २९,००० टन वज़न वाला 'अलेक्ज़ेण्डर पुश्किन' नामक यात्री पोत था।

भारत के लिये ढाई लाख टन उर्वरक

आगामी तीन वर्षों में, जर्मन जनवादी गणतंत्र, भारत को, ढाई लाख टन (२५०,०००) पोटाश उर्वरक भेज देगा। २९ जनवरी के दिन नई दिल्ली में इस आशय के एक समझौते पर राज्य व्यापार निगम (एस.टी.सी.) के अध्यक्ष, श्री बी. पी. पटेल और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बर्गबाउ हाण्डेल नामक विदेश व्यापार संगठन के महा निदेशक, डा. एल्स्टनर ने दस्तखत किये। उर्वरक की यह मात्रा, भारत के पोटाश उर्वरक के कुल आयात का आधे से अधिक हिस्सा है, और इसके लिये भारत को अपनी मुद्रा—अर्थात् रुपयों में भुगतान करना है।

अनुबन्ध पर दस्तखत करने के अवसर पर बोलते हुये, डा. एल्स्टनर ने कहा कि पोटाश, खेतों की उर्वरता को काफी बढ़ाता है। उन्होंने कहा: "एक (१) किलो ग्राम पोटाश-खाद डालने से चार (४) किलो ग्रा. अनाज पैदा किया जा सकता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र का स्थान, सबसे महत्वपूर्ण पोटाश उत्पादक देशों में हैं, और यह सारी दुनिया में सबसे अधिक पोटाश निर्यात करने वाला देश है। इसका उत्पादन सुनियोजित ढंग से बढ़ाया जा रहा है, और सन् १९७० तक जर्मन जनवादी गणतंत्र में पोटाश का उत्पादन लगभग २२ लाख टन तक पहुंच जायेगा।" डा. एल्स्टनर ने कहा कि जर्मन जनवादी गणतंत्र यह तथ्य पूरी तरह जानता है कि भारत सरकार का सर्वप्रथम उद्देश्य है खाद्य उत्पादन को अधिक से अधिक बढ़ाना। इस उद्देश्य को सफल बनाने के लिये जर्मन जनवादी गणतंत्र, दीर्घकालीन आधार पर और भारतीय मुद्रा (रुपयों) में भुगतान स्वीकार करके भारत को पोटाश उर्वरक सप्लाइ कर सकता है।

भारत राज्य के व्यापार निगम और बर्गबाउ-हाण्डेल की जर्मन फर्म के बीच जो अनुबन्ध हुआ, उसके अनुसार जर्मन जनवादी गणतंत्र आगामी तीन वर्षों में, भारत को ढाई लाख टन पोटाश उर्वरक सप्लाई करेगा।

डा. एल्स्टनर ने यह भी कहा कि वह और उनके दल के अन्य सदस्य, कृषि विशेषज्ञों और किसानों से भी मिले। इन मुलाकातों में बहुमूल्य अनुभवों एवं विचारों का आदान-प्रदान भी हुआ।

अपने भाषण का अन्त करते हुये उन्होंने कहा: "यहां आकर हम को इस बात का भी पता चला कि भारतीय कृषि के विकास में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के सहयोग की अनेक संभावनायें मौजूद हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र एक काफी विकसित औद्योगिक देश है। इसलिये वह भारत को अन्य सामान के अतिरिक्त, आधुनिक कृषि यन्त्र, ट्रैक्टर, कृमि नाशक पदार्थ आदि भी निर्यात कर सकता है। हमें आशा है इन संभावनाओं को हाथ से जाने नहीं दिया जायेगा।..."

रोस्टोक के नेपचून तथा वारनाऊ के पोत-निर्माण कारखानों में, १२,६०० टन के २९ माल वाहक पोतों का निर्माण भी किया गया।

५. जर्मन वैज्ञानिक का मत

पश्चिमी जर्मनी के एक सुप्रसिद्ध आणविक-भौतिकविद्, प्रोफेसर कार्ल फ्रीडरिख वान वाइज़ेकर, चांसलर एरहार्ड के प्रशासन द्वारा अणुशस्त्रों की लालसा के निर्णय के विरुद्ध खड़े हो गये हैं।

हामबुर्ग ओवरसीज़ क्लब में एक भाषण के दौरान उन्होंने कहा कि "पश्चिमी जर्मनी का अणुशस्त्रों में हिस्सा लेना अनावश्यक है। और न ही नाटो-मित्र राष्ट्रों को जर्मनी की अणु-सैन्य शक्ति के संबन्धित नीति अथवा जर्मन आणविक शस्त्रों की आवश्यकता है।..."

ज.ज.ग. के कैमरे २५ देशों में

ज.ज.ग. में ड्रेसडन स्थित पेन्टाकोन कैमरा वर्कस, ९१६५ की अपेक्षा १९६६ में कैमरों तथा सिनेमा कैमरों का निर्यात ८० प्रतिशत अधिक बढ़ा देगा। प्रत्येक ९० सैकिण्ड में 'प्रेक्तिका मेटे' नामक रिफ्लैक्स कैमरे तैयार हो कर निकलते हैं। इसके प्रमख ग्राहक स्वीडन, ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, आस्ट्रेलिया, और लेटिन अमेरिका तथा मध्य पूर्वी देश हैं।

ड्रेसडन, जर्मन जनवादी गणतंत्र के कैमरों तथा चलचित्र (सिनेमाटोग्राफिक) यंत्रों के उद्योग का केन्द्र है। पेन्टाकोन उद्योग के अतिरिक्त, ६ अन्य संस्थान भी शौकिया तथा व्यवसायिक फोटोग्राफरों, कलात्मक एवं वैज्ञानिक उपयोगों के लिये सभी प्रकार के कैमरों का निर्माण करते हैं। यह उत्पादन लगभग ८५ देशों को नियात किया जाता है।

एक भारतीय इंजीनियर, श्री रमेश बाहरी, लाइपजिग में मुद्रण तकनालोजी में ट्रेनिंग ले रहे हैं। चित्र में वह अपने वरिष्ठ तकनालोजिस्ट, श्री फीडलर से किसी नुक्ते पर बात कर रहे हैं

१९६६ की आर्थिक योजना

जर्मन जनवादी गणतंत्र की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) ने २२ जनवरी के दिन, १९६६ के चालू वर्ष के लिये राष्ट्रीय आर्थिक योजना को स्वीकृति दे दी। नीचे, विभिन्न मदों में वृद्धि के आंकड़े प्रस्तुत किये जा रहे हैं, जो इस वर्ष की योजना में निर्धारित किये गये हैं:

	अपेक्षित वृद्धि
राष्ट्रीय आय	५ प्रतिशत
औद्योगिक वस्तु उत्पादन	५ ,,
निवेश	१० ,,
विदेश व्यापार	५ ,,
राष्ट्रीय स्वामित्व वाले क्षेत्र के उद्योगों में मुनाफा	२० ,,
विद्युत शक्ति	६.९ ,,
खनिज तेल शोधन	२५.७ ,,
रासायनिक संयन्त्र उत्पादन	५५.० ,,
निर्माण कार्य	६.० ,,
विज्ञान तथा तकनालोजी पर खर्च	२४.० ,,
कृषि उत्पादन	३.० ,,
फुटकर व्यापार	३.० ,,

१९६६ की आर्थिक योजना में ज.ज.ग., कृषि में २,७०० मिलियन मार्क (१ मिलियन =१० लाख) की रकम लगायेगा। इस रकम में से १,६०० मिलियन मार्क, यहां के कृषि सहकारी संघ देंगे। ९,००० से अधिक ट्रैक्टर और १,००० से अधिक लारियां सहकारी फार्मों को बेची जायेंगी। सन् १९६६ के अन्त पर:

प्रति १०० घरो पर ५६ टेलिविजन सेट

प्रति १०० घरों पर ३१ कपड़े धोने की मशीनें

और प्रति १०० घरों पर ३० रेफ्रिजिरेटर होंगे।

नये रिहायशी फ्लैट तामीर करने में, चालू वर्ष की योजना में ३,४०० मिलियन मार्क खर्च किये जायेंगे।

बाईं ओर : दमा और चरम रोग के ४६६ रोगी समुद्र की सैर करके या तो बिलकुल स्वस्थ या आंशिक रूप में ठीक होकर लौटे । यह सैर उनको मुफ्त करायी गयी । . . . दाईं ओर : बर्लिन क्लब में आयोजित एक पेंटिंग प्रतियोगिता में एक बाल कलाकार अपनी कला में व्यस्त है ।

सचित्र समाचार

दिसम्बर-जनवरी में, ज. ज. ग. व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री हरबर्ट फिशर उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश के दौरे पर गये थे, जहां उन्होंने वहां के मुख्य मंत्रियों, तथा अनेक महानुभावों से मुलाकातें कीं । जर्मन समस्या और ज. ज. ग. के संबन्धों पर उन्होंने कई जगहों पर व्याख्यान किये ।

ओरवो प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के लिये जब राज्य मंत्री, श्री पट्टाभिरामण (बीच में) पधारे तो ओरवो प्राइवेट, लिमिटेड, बम्बई के श्री पटेल ने उनका स्वागत किया

रजि० नं० डी०-१३३०
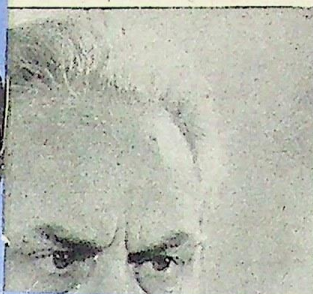
निरस्त्रीकरण

राष्ट्र संघ की निरस्त्रीकरण समिति में ज. ज. ग. का प्रस्ताव

इतिहास के कटु अनुभवों को देखते हुए, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार का यह मत है कि दो जर्मन राज्यों पर परमाणविक शस्त्रास्त्रों

जर्मन
जनवादी
गणतंत्र

के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

३ वर्ष ११
मार्च
१९६६

मार्च, १९६६

पृष्ठ

ट्रेड रिप्रज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

१/३६ कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली
पोस्ट बाक्स ३२०

फोन : ३४२०६, केबल्स : हावदिन, नयी दिल्ली
टेलेक्स : हावदिन, नई दिल्ली, २४५

★

शाखायें :

मिस्त्री भवन,
१२२, दिनशा वाचा रोड, बम्बई

फोन : २४५०५१/२ २४५०५२ केबल्स : हावदिन, बम्बई

★

फ़ेराडे हाउस
पो-१७, मिशन रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन : २३८५३१ केबल्स कलहावदिन

★

१/१ कोदमबक्कम हाइ रोड,
नूनगमबक्कम, मद्रास-३४

फोन: ८७६१५ केबल्स : हावजर्मन

मुख पृष्ठ : गाब्रियेल सेफर्ट (बायें) ने यूरोपीय और विश्व की स्केटिंग प्रतियोगिता में रजत पदक जीता। चित्र में गेब्रियेल यूरोपियन प्रतियोगिता में स्वर्ण तथा कांस्य पदक प्राप्त करने वाली युवतियों के साथ दिखाई गयी है

अंतिम पृष्ठ : फरवरी का महीना बहार और मौज मस्ती का महीना होता है। इस महीने में मौजी विचित्र और रंगबिरंगे परिधान धारण करते हैं। चित्र में दिखाई गयी नन्हीं बालिका ने अपनी किंडगार्टन कक्षा में अपने वेश के लिये प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये मति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, बहादुर शाह जफर मार्ग, नयी दिल्ली, द्वारा मुद्रित। **संपादक : ब्रूनो मे**

निरस्त्रीकरण

राष्ट्र संघ की निरस्त्रीकरण समिति में ज. ज. ग. का प्रस्ताव

७ फरवरी के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र के उप विदेश मन्त्री, श्री गोश्रार्ग श्टिबी ने, १८ राष्ट्रों की जनेवा निरस्त्रीकरण समिति के सह-अध्यक्षों--श्री ज़रापकिन तथा श्री फोस्टर को, अपनी सरकार की ओर से एक घोषणा पेश की। इस घोषणा को, सोवियत संघ के प्रतिनिधि श्री ज़रापकिन ने १८ राष्ट्र निरस्त्रीकरण समिति के सामने पढ़ कर सुनाया। घोषणा में, ज.ज.ग. की सरकार ने समिति द्वारा परमाणुविक शस्त्रास्त्रों के प्रसार को रोकने और इस संदर्भ में इन शस्त्रों के और प्रसार पर पाबन्दी लगाने सम्बन्धित एक अन्तर्राष्ट्रीय संधि करने के बारे में सोच विचार करने के फैसले का स्वागत किया था।...इस घोषणा के कुछ अंश नीचे उद्धृत किये जाते हैं:

"जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार का यह निश्चित मत है कि परमाणुविक शस्त्रास्त्रों के और प्रसार पर पाबन्दी लगाने से संबंधित एक अन्तर्राष्ट्रीय संधि--जिसमें कोई खामी या प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से परमाणु शस्त्रों के प्रसार की गुंजाईश न हो--तमाम शान्ति कामी लोगों की स्थाई सुरक्षा कामना के बिल्कुल अनुकूल होगी।....."

इस उद्देश्य की पूर्ति में रुकावटों का उल्लेख करते हुए, घोषणा में कहा गया है: "पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य की सरकार की परमाणु शस्त्रों के इस्तेमाल करने के फैसले में हिस्सा लेने की, और नाटो परमाणविक शक्ति में साझीदार बनने की मांगों ने दुनिया के लोगों को न केवल गहरी चिन्ता में डाल दिया है, बल्कि ये मांगें परमाणु शस्त्रास्त्रों के और प्रसार पर पाबन्दी लगाने से संबंधित अन्तर्राष्ट्रीय संधि पर दस्तखत करने में बड़ी रुकावटें हैं।...:"

"ये मांगें चिन्ता को इस लिये और भी गहरी बनाती हैं क्योंकि पश्चिमी जर्मन सरकार यूरोप की एकमात्र ऐसी सरकार है जो, दो विश्व युद्धों को जन्म देने वाले जर्मन सैन्यवादियों की तरह, आज फिर दूसरे राज्यों की सीमाओं पर अपना अधिकार जताती है।"

इतिहास के कटु अनुभवों को देखते हुए, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार का यह मत है कि दो जर्मन राज्यों पर, परमाणविक शस्त्रास्त्रों के प्रसार को रोकने से संबन्धित तमाम आवश्यक कदम उठाने की विशेष जिम्मेदारी है। इसलिये... "जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य की सरकार को निम्न सुझाव भेज दिये हैं:

--जर्मनवासी होने के नाते हम, परमाणविक शस्त्रास्त्रों को रखने और दोनों जर्मन राज्यों में किसी भी रूप में उनके इस्तेमाल का परित्याग करें।

--जर्मन होने के नाते हम मिल जुल कर ऐसे प्रयत्न करें जिनसे परमाणुविक शस्त्रास्त्रों के प्रसार पर रोक लगाने की अन्तर्राष्ट्रीय संधि में आने वाली बाधायें दूर हों।

--विभाजित जर्मनी को पुनः एक करने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, और दोनों जर्मन राज्यों के बीच सद्भावना को बढ़ाने के लिये, संयुक्त रूप से निरस्त्रीकरण की दिशा में--परमाणुविक शस्त्रास्त्रों के परित्याग द्वारा--पहला क़दम उठायें।

--जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार १८ राष्ट्र निरस्त्रीकरण समिति के सामने तहेदिल से यह घोषणा करती है कि वह परमाणुविक शस्त्रों को त्याग देने के लिये तैयार है, बशर्ते पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य भी ऐसा करने को तैयार हो।

--इस संदर्भ में, ज.ज.ग. की सरकार, पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य से, १८ राष्ट्र निरस्त्रीकरण समिति के सामने, ऐसी ही एक घोषणा करने के लिये कहती है। इससे परमाणु शस्त्रों के अधिक प्रसार पर पाबन्दी लगाने की अन्तर्राष्ट्रीय संधि के मार्ग की एक बड़ी रुकावट दूर हो जायेगी।

--पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य की सरकार को ये सुझाव पेश करते हुए, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, साथ ही साथ, उन परमाणुविक शक्तियों से, जिन्होंने जर्मन भूमि पर परमाणु शस्त्र रखे हैं, जर्मन सीमाओं से ये भयंकर शस्त्र हटाने और भविष्य में भी जर्मनी को इन शस्त्रास्त्रों से विहीन रखने की अपील करती है।

--जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार यह आशा व्यक्त करती है कि यदि दो जर्मन राज्य परमाणु शस्त्रों का परित्याग करें, और यदि जर्मन सीमाओं से ये शस्त्रास्त्र हटायें जायें, तब १८ राष्ट्रों की निरस्त्रीकरण समिति, और संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा इस बात की वकालत करेगी कि सभी परमाणुविक शक्तियां जर्मन जनता को इस बात की दृढ़ एवं स्थाई गारण्टी दें कि जर्मनी के नगर तथा गांव अर्थात सारा जर्मनी कदापि परमाणु हमले का शिकार नहीं होगा ---"

लोइना – २ कारखाने का प्रथम भाग

पुराने लोइना कारखाने के दक्षिण की ओर २०० हेक्टर का क्षेत्र अब केवल एक निर्माण स्थल नहीं रह गया है। पाइपों की कतार, टंकियां, शोधन संयंत्र और बड़े-बड़े भवन, विशाल रासायनिक कारखाने लोइना-२ के निर्माणका प्रथम चरण पूरा हो जाने की सूचना देते हैं। इस वर्ष ३१ जनवरी से ७०० मज़दूरों ने वहां स्थाई उत्पादन प्रारम्भ कर दिया। अर्थात कारखाना और भवन निर्माण कार्यक्रम के अनुसार ही पूरा हो गया।

लोइना-२ के निर्माण और केमिकल मजदूरों की एक सभा में समाजवादी एकता पार्टी की राजनीतिक ब्यूरो के सदस्य एरिक होंनेकर ने पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और मंत्रि-मण्डल की ओर से मजदूरों को बधाई दी। उन्होंने स्मरण दिलाया कि थोड़े ही दिनों पहले कुछ शक्की लोग लोइना-२ प्रायोजना को एक 'काल्पनिक योजना' कहते थे। लेकिन यहां उन्हीं के सामने ज.ज.ग. के प्रथम पेट्रोरसायन कारखाने का पहला भाग बनकर खड़ा है।

लोइना-२ में उत्पादित कच्चे प्लास्टिक-- उच्च दाब वाली पाली एथिलीन से भरी हुई पहली दो विषेश लारियां गोएलसाउ के नव निर्मित प्लास्टिक प्रोसेसिंग कारखाने के लिए रवाना हुई जहां उनके फायल और पाइप बनाये जायेंगे।

४५ मीटर ऊंचा बेनजाइन पृथक करने का संयंत्र जहां उत्पादन प्रक्रिया शुरू होती है, काफी दूर से दिखाई देता है। यहां ज.ज.ग. के दूसरे केमिकल कारखानों से जिनमें श्वेड्ट भी है, प्राप्त खनिज तेल विभिन्न गैसों के मिश्रण में बदल दिया जाता है। उसके बाद गैसों को पृथक करने वाले एक भारी संयंत्र में उस मिश्रण की विभिन्न गैसें अलग कर ली जाती हैं।

इस तरह उपलब्ध की गयी एक बहुत महत्वपूर्ण गैस है एथिलीन। उच्च दाब वाले पाली एथिलीन प्लांट में यह प्लास्टिक के विभिन्न उत्पादनों के लिये प्रथम आवश्यक वस्तु बन जाती है।

२४ हज़ार टन पाली-एथिलीन

उच्च दाब वाले पाली-एथीलीन प्लांट के प्रथम उत्पादन केन्द्र में जिसका शुभारम्भ ३१ जनवरी को हुआ, प्रतिवर्ष प्लास्टिक बनाने का ८ हजार टन कच्चा माल पैदा किया जायगा। इसी वर्ष मार्च के अंत तक इतनी ही उत्पादन क्षमता वाले २ और केन्द्र शुरू किये जा रहे हैं। इससे प्रतिवर्ष २४ हजार टन पाली-एथीलीन का उत्पादन होने लगेगा।

एथिलीन का उत्पादन अपने आप में ज.ज.ग. में कोई नयी बात नहीं है। लेकिन अब बात यह है कि यह गैस सिर्फ—कारबाइट से ही नहीं पैदा की जाती। अब यह खनिज तेल के एक उत्पादन बेनज़ाइन से भी पेट्रो-रासायनिक ढंग से तैयार की जाती है। आर्थिक रूप से यह अत्यधिक लाभप्रद है, क्योंकि कारबाइड की अपेक्षा इस खनिज तेल से कहीं अधिक मात्रा में एथिलीन पैदा की जा सकती है।

छः गुनी श्रम-उत्पादकता

लोइना-२ लगभग ८५ करोड़ मार्क की लागत से बनाया जा रहा है जो कुछ ही दिन में वसूल हो जायगी। आधुनिक साधनों की सहायता से रसायन कारखाने के मजदूरों की उत्पादन क्षमता पुराने लोइना कारखाने की अपेक्षा ६ या ७ गुना अधिक रहेगी। दाम के रूप में इसका अर्थ हुआ प्रति व्यक्ति ४ लाख, १६ हजार मार्क के मूल्य का वार्षिक उत्पादन।

कारखाने का प्रथम भाग प्लास्टिक बनाने के लिए प्रति दिन १५ लाख मार्क के मूल्य का आवश्यक कच्चा माल बनायेगा। इस कच्चे माल से १ करोड़ मार्क का तैयार माल बनेगा। इस प्रकार लोइना-२ नयी टेकनालाजी से होने वाले लाभों को स्पष्ट दर्शाता है।
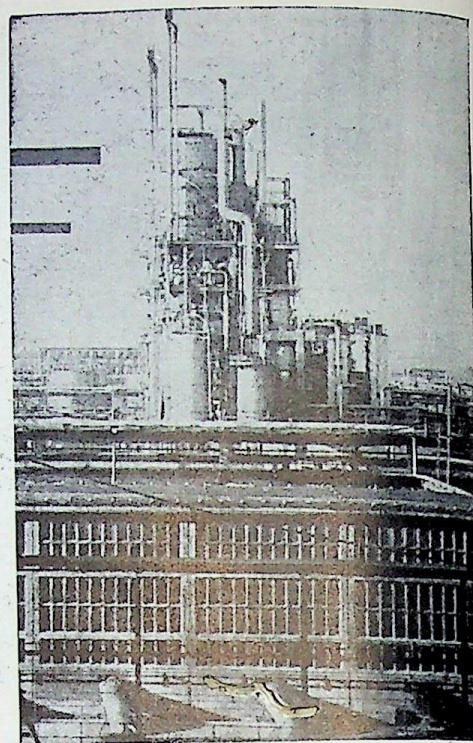
लोइना-२ का पेट्रोल क्रेकिंग प्लांट

ज. ज. ग. की सबसे बड़ी टंकी

लोइना-२ के पेट्रो रसायन प्रोसेसिंग संयंत्र के अतिरिक्त कई और निर्माण पूरे कर लिये गये हैं। उदाहरण के लिए औद्योगिक विद्युत केन्द्र जहां से लोइना-२ को वाष्प और विद्युत शक्ति मिलती है, दूर से ही इसकी १५० मीटर ऊंची चिमनी दिखाई पड़ती है। टैंक डिपो में ज.ज.ग. की सबसे बड़ी टंकी है, जिसकी क्षमता ३० हजार घन मीटर है। उसके वाटर वर्क्स में १० हज़ार घन मीटर पानी प्रति घंटे केमिकल प्लांट के लिए तैयार किया जाता है और वहां से ज़ाले नदी में बहकर जाने वाला पानी जो रासायनिक मिश्रणों से दूषित हो जाता है, उसे साफ भी किया जाता है।

मजदूरों को सुविधाएँ

इस नये कारखाने में एक मरम्मत करने वाला कारखाना, वायु-दाबक उत्पादनों का एक संयंत्र, प्रयोगशालाएं और प्रशासकीय कार्यालयों के भवन आदि हैं। केमिकल मजदूरों को आधुनिकतम डाइनिंग हाल और जीवन सम्बंधी दूसरी सुविधाएं दी गयी हैं।

(शेष पृष्ठ २२ पर)

लाइपज़िग का ऊष्ण-कटिबन्धीय कृषि-संस्थान

गुंटर बुरुकर

कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय, लाइपज़िग के ऊष्ण तथा अर्ध ऊष्ण कटिबंधीय कृषि संस्थान में इस समय २८ देशों के ७० विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। इस संस्थान के विज्ञान अध्यापकों ने गर्म देशों में पौद संरक्षण पर पहली पाठ्य पुस्तक तैयार की है। इस इन्स्टीच्यूट ने कोको, केला और नारंगी की फसल में लगने वाली कृमियों के विनाश के जो उपाय बताये उन्हें इनकी खेती करने वाले देशों की सरकारों के कृषि अधिकारियों ने लागू किया जिससे हजारों टन फसल बचायी जा सकी।

यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि ज.ज.ग. में ऐसे देशमें जहां की जलवायु समशीतोष्ण है, ऐसा संस्थान क्यों खोला गया और उसके सफलतापूर्वक कार्य की क्या संभावनाएं हैं ? ज.ज.ग. के कृषि-वैज्ञानिकों ने इस मामले में एक अच्छी परम्परा छोड़ी है और उसके परिणाम भी अच्छे रहे हैं। ज.ज.ग. के कृषि विज्ञान की कार्य पद्धति और उसका प्रभाव देखकर अपना अनुभव तथा ज्ञान बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक लोग यहां आ चुके हैं। लाइपज़िग का कृषि संस्थान ऊष्ण तथा अर्ध ऊष्ण कटिबंधीय देशों की तात्कालिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए खोला गया। पहले बागवानी का एक संस्थान, प्रशिक्षण तथा शोध का एक केन्द्र बन गया है। व्यावहारिक परीक्षणों के लिए ऊष्ण और अर्ध ऊष्ण देशों की उपयोगी फसलों के लिए एक विशाल प्रयोगशाला का निर्माण किया गया और उसके लिए एक ४० मीटर लम्बा कृषि मण्डप बनाया गया जिसमें खेतों में बोई जाने वाली तथा जमीन पर फैलने वाली फसलों के लिए एक शीतगृह तथा एक ऊष्म-गृह भी बनाये गये हैं। रासायनिक तथा भौतिक प्रयोग, इन्स्टीच्यूट की केन्द्रीय प्रयोगशाला में किये जाते हैं। लाइपजिंग इन्स्टीच्यूट के विशेषज्ञों ने भारत, लंका, गायना, वियतनाम, साइप्रस, संयुक्त अरब गणराज्य, लेबनान, सूडान, तन्जानिया, सेनेगल, माली, ब्राजील और क्यूबामें कुछ दिन रह कर खेती के बारे में उपयोगी सलाहें दीं और उपज बढ़ाने के तरीके सुझाये।

वियतनाम में लाइपजिग इन्स्टीच्यूट के विशेषज्ञों ने काफी बोने वाली नर्सरियों के पौधों में पौष्टिक तत्वोंके अभाव में ऐसे रोग पाये जो कृषि क्षेत्रों का तेजी से विस्तार करने में गंभीर बाधाएं उत्पन्न करते हैं। दूसरे अनेक देश हाल तक उर्वरकों के मामले में पुराने पौधों पर किये गये प्रयोगों से प्राप्त नतीजों पर आधारित नियमों का पालन करते रहे हैं।

इसलिए स्वदेश लौटने के बाद लाइपज़िग इंस्टीच्यूट के विशेषज्ञों ने इस बात पर शोध करना प्रारम्भ किया कि बोने के पहले नये पौधों के लिए किस तरह के उर्वरक और कौन से पौष्टिक तत्व उपयोगी होंगे। तीन वर्ष से अधिक के प्रयोगों का यह दिलचस्प नतीजा निकला कि प्रारम्भिक अवस्था में काफी के पौधों के लिए पोटाश की अधिक मात्रा की जरूरत होती है। और बढ़ी हुई अवस्था में—लगभग १५ माह की अवस्था तक—उसकी कम मात्रा—आवश्यक होती है। बाद में वह मात्रा फिर बढ़ जाती है। गायना में इसी तरह केले की खेती में लगने वाले रोग का अधिक प्रभावशाली नियंत्रण संभव हो सका जिससे एक बड़ी आर्थिक क्षति बचायी जा सकी। उसके पहले केले की खेती पर वर्ष भर में १७ बार छिड़काव करना पड़ता था। लाइपजिग के विशेषज्ञों को पता चला कि केले में रोग का प्रमुख कारण एक विशेष प्रकार की फुनगी थी। विशेषज्ञों ने एक ऐसा समय निर्धारित किया जब छिड़काव करने से इस फुनगी को अधिक प्रभावशाली ढंग से नष्ट किया जा सकता था। इस तरह छिड़काव की संख्याके साथ-साथ उसमें होने वाले भारी खर्च में भी कमी हो गयी।

गायना का एक छात्र तथा एक जर्मन सहायिका कपास के पौधों पर परीक्षण कर रहें हैं

"ब्राउन बुक"

पश्चिम जर्मनी में नाज़ी और युद्ध अपराधियों का लेखा

गत वर्ष की २ जुलाई को, प्रोफेसर अलबर्ट नार्डेन ने बर्लिन की एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस कानफ्रेन्स में दुनिया के लोगों की जानकारी के लिये **ब्राउन बुक** (भूरी पुस्तक) पेश की। इस पुस्तक में, पश्चिमी जर्मनी के युद्ध और नाज़ी अपराधियों की काली करतूतों का कच्चा चिट्ठा है। अब इस **ब्राउन बुक** का अंग्रेजी संस्करण भी उपलब्ध है।

ब्राउन बुक का इतिहास काफी रोचक है। जर्मनी के फासिस्त विरोधियों ने, सक्रिय अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग से, सन् १९३३ में पहली बार '**ब्राउन बुक**' प्रकाशित की थी। उन दिनों अनेकानेक लोग, हिटलर द्वारा सत्ता हथियाने के खतरों से अनभिज्ञ थे। इस पुस्तक का प्रकाशन पेरिस में हुआ था, और इसमें हिटलर तथा उसके फासिस्त अनुयायियों के क्रूर अत्याचारों को नंगा किया गया था। इस संदर्भ में प्रोफेसर नार्डेन ने प्रेस कानफ्रेन्स में बताया:—"यह पहली **ब्राउन बुक** तब प्रकाशित की गई थी जब (फासिस्तों ने स्वयं) राइख़स्टाग (जर्मन संसद भवन—स०) को आग लगा दी थी। ये आग की लपटें सम्पूर्ण जर्मनी में हिटलरी दरिन्दों के बर्बर दमन की कहानी सुना रही थीं, और नाज़ियों की गन्दी युद्ध-योजनाओं को प्रकाश में ला रही थीं।—लेकिन आज हमने यह दूसरी **ब्राउन बुक** जर्मन साम्राज्यवादियों की योजनायें सफल होने से पहले ही प्रकाशित की है।..."

ब्राउन बुक में पश्चिमी जर्मनी में उन लोगों की पहली नामावली दी गई है जिन्होंने हिटलरशाही को सक्रिय सहयोग प्रदान किया था और जो अब पश्चिमी जर्मनी के उच्च पदों पर आसीन हैं। इनमें उल्लेखनीय हैं :

——(पश्चिमी जर्मनी) फेडरल गणराज्य के २१ मन्त्री और राज्य सचिव,

——हिटलर की सेना 'बुण्डेज़वर' के १०० जनरल और एडमिरल,

——८२८ न्यायिक अधिकारी, सरकारी वकील और न्यायाधीश,

——विदेश सेवा के २४५ मुख्य अधिकारी राजदूत और कोंसूल,

——पुलिस एवं तथाकथित 'संविधान सुरक्षा दफ्तर' के १९७ उच्चाधिकारी।

नामावली की यह सूची अभी अधूरी ही है, इस तथ्य का प्रमाण उच्च पदों पर आसीन उन गुप्त नाज़ियों पर चलाये गये मुकदमें हैं जो हाल ही में प्रकाश में लाये गये।

ब्राउन बुक के पृष्ठ २४३ पर एक शीर्षक है : "(प० जर्मनी के) विदेश मन्त्रालय में ५२० नाज़ी कूटनीतिज्ञ हैं"। इसके अन्तर्गत निम्न तथ्य दिये गये हैं :

चाहिये तो यह था कि इन भूतपूर्व नाज़ी अपराधियों को नागरिक सेवाओं से मुअत्तिल किया जाता और उनको उचित दण्ड दिया जाता। लेकिन ऐसा न करके हिटलर के विदेशमन्त्री, युद्ध अपराधी रिबेनट्राप के इन साथियों को पश्चिम जर्मन सरकार ने अपने विदेश मन्त्रालय के नीति-निर्धारण करने वाले विभागों में ऊंचे तथा महत्वपूर्ण पदों पर बिठा दिया है।

अभिलेखागारों में सुरक्षित सैंकड़ों हज़ारों दस्तावेज़ों में कुछ एक के अध्ययन करने से ५२० भूतपूर्व नाज़ी कूटनीतिज्ञों के रिकार्ड मिल गये हैं जिनको अब बोन (पश्चिम जर्मनी) के विदेश मंत्रालय में ऊंचे ऊंचे पदों पर नियुक्त किया गया है। इनमें ऐसे ३० कूटनीतिज्ञ भी शामिल हैं जो रिबेनट्राप के निकट संपर्क में अथवा उच्च नाज़ी अधिकारी रहे हैं, लेकिन आज ये पश्चिम जर्मनी के विदेश मन्त्रालय के विभिन्न विभागों तथा अनुभागों के प्रमुख या उपप्रमुख हैं।

पश्चिम जर्मन विदेश मन्त्रालय में, सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्तियों में एक हैं भूतपूर्व नाज़ी रोल्फ लार, जो इस समय राज्य सचिव के महत्वपूर्ण पद पर आसीन हैं। लार, जो अप्रैल १९३३ से नाज़ी पार्टी का सदस्य था, सन् १९३४ से लेकर दूसरे महायुद्ध की समाप्ति तक हिटलर की फासिस्त राइख (सरकार) के आर्थिक मामलों के मन्त्रालय में सरकारी सलाहकार था। इस रूप में इसने हिटलर द्वारा अधिकृत देशों हंगरी और इटली का फासिस्त युद्ध के लिये उत्पादन बढ़ाने के लिये बुरी तरह शोषण किया।

हिटलर के विदेश मन्त्रालय के आर्थिक नीति विभाग के सहयोग से उसने सन् १९४१-४२ में हंगरी की सरकार को, नाम मात्र का दाम देकर फासिस्त युद्ध के लिये बाक्साइट बेचने पर मजबूर किया (जर्मन केन्द्रीय अभिलेखागार, पॉट्सडम, दस्तावेज़ न. ६७,९१६)। **रोल्फ लार** उन नाज़ी विशेषज्ञों में भी एक था जिन्होंने इराक की आर्थिक लूट की योजना और अरब देशों को अधिकृत करके फासिस्त जर्मनी के उपनिवेश बनाने की योजना तैयार की थी। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि लार के उन दिनों के "अनुभव" ने आज उसको बोन सरकार (पश्चिम जर्मन सरकार—स.) की वर्तमान नवउपनिवेशवादी "विकास नीति" का प्रबल प्रवक्ता बना दिया है।

पश्चिम जर्मनी के ऐसे नाज़ी कूटनीतिज्ञों में एक और नाम है **डा. हांस हरवार्थ बोन बिट्टेनफेल्ड**। १९४१ तक यह हिटलर के विदेश मन्त्री रिबेनट्राप के लिये एक कूटनीतिज्ञ के रूप में काम करता रहा। इसके बाद यह हिटलर की कुख्यात व्लसोफ सेना में एक प्रशिक्षण अधिकारी बना।

इस सेना के साथ रहकर इसने सोवियत संघ के अधिकृत क्षेत्रों में बर्बर कुकृत्य किये और सोवियत सेना के युद्धबन्दी कैदियों की हत्यायें कीं। आज यही अपराधी, इटली में पश्चिम जर्मनी का राजदूत है।...सन् १९५० में श्री बिट्टेनफेल्ड को बोन के विदेश मंत्रालय में निदेशक के पद पर नियुक्त किया गया। इस अहम पद से उसने अनेक नाज़ियों को इस मंत्रालय के विभिन्न पदों पर बिठा दिया।

ये पश्चिम जर्मनी के प्रतिनिध हैं :

ब्राउन बुक में एक अन्य शीर्षक है : "वे अन्य देशों में बोन के प्रतिनिधि हैं" (पृष्ठ : २४६) । इस शीर्षक के अन्तर्गत कम से कम ६० ऐसे असाधारण और पूर्णाधिकारी राजदूतों की सूची दी गई है जो भूतपूर्व नाजी कूटनीतिज्ञ रहे हैं ।

एशियाई देशों में पश्चिमी जर्मनी के २५ दूतावासों में १५ पूर्णाधिकारी और असाधारण राजदूत ऐसे हैं जो हिटलर के शासन के विश्वस्त अधिकारी थे । उनमें हैं इण्डोनेशियामें वर्तमान राजदूत डाक्टर लुइ टपोल्ड वर्ज, दक्षिणी कोरिया स्थित राजदूत फेरिंग, मलेयशिया स्थित राजदूत डाक्टर बोहलिंग, अब तक लेबनान में पश्चिमी जर्मनी के राजदूत डाक्टर मुन्जेल और भूतपूर्व नाजी अधिकारी डाक्टर श्मिड्ट होरिक्स जो अब तक इराक में पश्चिम जर्मनी के राजदूत रहे हैं ।

लैटिन अमरीका में पश्चिमी जर्मनी के २१ दूतावासों में १६ राजदूत भूतपूर्व नाज़ी कूटनीतिज्ञ हैं ।

अब तक की खोज के अनुसार अफ्रीका में १० भूतपूर्व नाजी कूटनीतिज्ञ अफ्रीका में कूटनीतिक पदों पर हैं । अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में भी बोन सरकार भूतपूर्व नाज़ी कूटनीतिज्ञों को ही प्रतिनिधि के रूप में भेजती है । उदाहरण के लिए राष्ट्र संघ में सिगिस्मण्ड वान ब्रान को, राष्ट्रसंघ के यूरोप स्थित ब्यूरो में डाक्टर रूपरेख्त वान केलर को, और डाक्टर ग्रयू (जो १९४५ टक 'पूर्वी शोध' में सक्रिय रहे) तथा डाक्टर साहम को नाटो में प्रतिनिधि बना कर भेजा गया है ।

यदि राजदूतों के साथ दूतावासों के सर्वोच्च अधिकारियों, जैसे दूतावासों के उप प्रधानों, महत्वपूर्ण अताशियों और प्रथम सचिवों को भी जोड़ा जाय तो विदेशों में पश्चिमी जर्मनी के ४० अन्य प्रतिनिधिमण्डलों में भूतपूर्व नाजी कूटनीतिज्ञ महत्वपूर्ण पदों पर मिलेंगे ।

विदेशों में पश्चिमी जर्मनी के कुल १२० प्रतिनिधिमण्डलों में मुश्किल से एक दर्जन दूतावास ऐसे होंगे जो नाजी कूटनीतिज्ञों के प्रभाव से मुक्त हैं ।
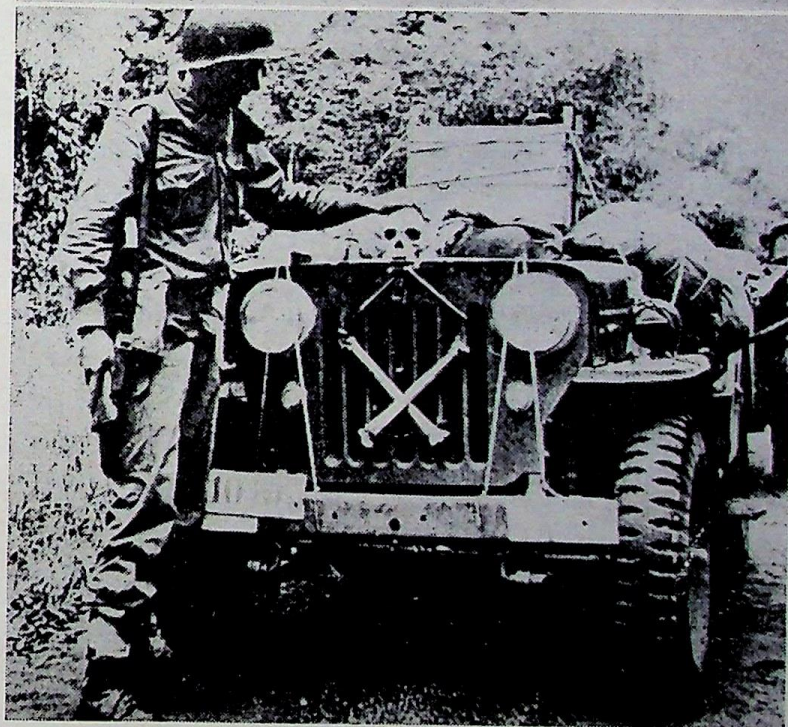
ज.ज.ग. में, ९ फरवरी को, टेलिविजन पर एक दस्तावेज़ी फिल्म दिखाई गई, जिसका नाम था : "यह मुस्कराता आदमी : एक कातिल की स्वीकारोक्तियां" । इस आदमी का नाम है सीगफ्रीड म्यूल्लर, जो पश्चिम जर्मन सेना का एक मेजर है । इसका दूसरा नाम "कांगो म्यूलर" भी है । इस हत्यारे ने कांगो के मुक्ति संग्राम को कुचलने में बर्बर रोल अदा किया । ज.ज.ग. के दो पत्रकारों को एक इण्टरव्यू में इस हंसमुख हत्यारे ने कहा कि "मैं अपनी सेवायें हर उस देश को पेश कर सकता हूं जो पश्चिम का हमदर्द होगा । . . ."

भारतीय-विद्या का महत्वपूर्ण केन्द्र

आलोक गुहा
(फोटो पत्रकार)

हाल ही में, कलकत्ता के एक प्रेस छायाकार श्री आलोक गुहा को, ज.ज.ग. जाने का और वहां हाल्ले में विश्व-प्रसिद्ध भारत-विद्या-विद् डा. मोडे से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आचार्य मोडे के अपरिचित निजी संग्रहों और मार्टिन लूथर विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग के संग्रहों से श्री गुहा इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने कतिपय संग्रहीत वस्तुओं के फोटो उतारे और उनको अपने साथ भारत लाये। ये वस्तुयें, भारत और जर्मनी के २०० वर्ष पुराने संबन्धों पर--विशेषकर बंगाल के साथ--प्रकाश डालती हैं। इन पृष्ठों पर हम, श्री गुहा की डा. मोडे के साथ मुलाकात के कुछ संस्मरण छाप रहे हैं।

हाल्ले के मार्टिन लूथर विश्वविद्यालय में एक सुव्यवस्थित भारत-विद्या विभाग है जिसके तीन अनुभाग हैं। ये हैं: भारत-विद्या, आध्यात्मिक अध्ययन और पुरातत्त्व। आचार्य मोडे, पुरातत्व विभाग के प्रधानाचार्य हैं। वह शान्ति निकेतन में १९३४ में रहे हैं और आज तक उन्होंने भारत की कई यात्रायें की हैं।

हाल्ले विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व विभाग के संग्रहालय में रखी गयी कुछ भारतीय वस्तुएं

हाल्ले में प्रोफेसर मोडे से मेरी मुलाकात आश्चर्य दायक और सुखद रही। जर्मन जनवादी गणतंत्र का यह नगर, हाल्ले (प्रान्तका नामकरण भी इसी पर आधारित है--स०) विश्व में एक ऐसा महत्वपूर्ण केन्द्र है जहां भारत-विद्या का अध्ययन उच्च स्तर पर पहुंच गया है। प्रोफेसर मोडे से साक्षात्कार और यहां के मार्टिन लूथर विश्वविद्यालय का पुरातत्व-विभाग देखने के बाद मुझे, हाल्ले और भारत के साथ इसके प्राचीन संबन्धों का ज्ञान हुआ।

सन् १६९८ में, हाल्ले में, वाइज़ेन-हाउस नाम से एक अनाथाश्रम की स्थापना हुई। जब हम फ्रांकेशे स्टिफटुंग प्रतिष्ठान में श्री स्टॉस से मिले तो उन्होंने हमको इस ऐतिहासिक प्रतिष्ठान के कुछ अमूल्य संग्रह दिखाये। १७वीं शताब्दी के प्रारम्भ में प्रतिष्ठान के पादरियों ने ट्रावनकोर (भारत)

...war, wandring on yet farther in my
His good Pleasure, and in hopes of
... and fellow labourer such me by
..., under whose Care I may leave my
... Shall be pleased to call me from
... myself to the Continuance of the Hon.
Prayers and Kindness, and am
...
Reverend Sir
Your Most H. Servt
John Zach Kiernander

Duplicate
Calcutta January 19. 1772
To the Reverend Mr. Thomas Broughton
Reverend Sir
34
Having wrote what was most necessary Novemb. 18. with the ... & December 31. 1771. with the Africa, I now can inform You, that another Roman Catholick Priest & Missionary Francis Joseph Hanson, came here from ... about a Month ago, who on the 1st inst. abjured Popery, and was received into our Church, as You'll please to see by the accompanying. After the morning Prayer was ended, I gave notice to the Congregation, upon which he publickly before the whole Congregation and with a loud & Audible Voice made his abjuration, which he afterwards delivered me, and having received him, concluded with Prayer & Singing the 100. Psalm. Then the Sermon was preached on Revel: 18, 4.5. and

१९ जनवरी, १७७२ को कलकत्ता से भेजा गया जॉन कीरनाण्डर का एक पत्र
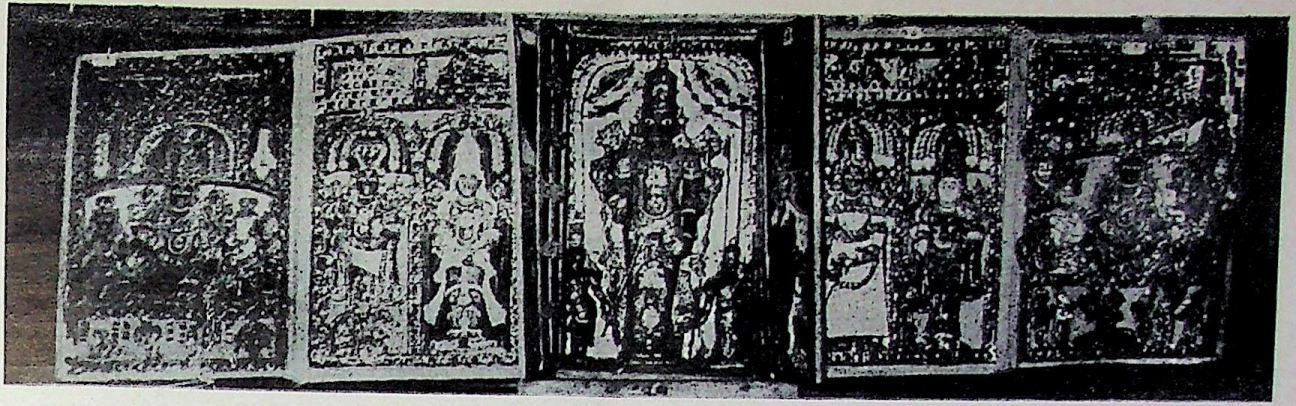
उड़ीसा के काष्ठ पट्टों पर चित्रित भगवान विष्णु का जीवन वृत

को अपना सबसे बड़ा प्रोटेस्टेण्ट मिशन भेजा। भारत से स्वदेश लौटने पर इस मिशन के प्रचारक अपने साथ भारतीय हस्तकला की कई वस्तुऐं--जैसे चित्रकारी किये हुये बादाम के पत्तों के पूंखे, भगवान् विष्णु तथा अन्य देवताओं के जीवन को चित्रित करने वाला काष्ठ पट्ट आदि लाये। अन्य देशों से लाये गये इन संग्रहों का विशेष महत्व था। प्रचारक ऐसी सामग्री को, प्रतिष्ठान के अनाथ बच्चों की शिक्षा के लिये इस्तेमाल करते थे, ताकि उन देशों के लोगों से एवं उनके जीवन क्रम से वे अच्छी तरह से परिचित हों।

उक्त प्रतिष्ठान ने अपना **पहला प्रचारक** जो भारत भेजा उसका नाम था साइगेनबाल्ग। इन्होंने हाल्ले में, **तामिल व्याकरण** और **तामिल धर्म** पर पुस्तकें प्रकाशित कीं। ये पुस्तकें यूरोप में भारत से संबन्धित प्रथम प्रकाशनों में से हैं। साइगेनबाल्ग के बाद जान कीरनानडर प्रचारक के रूप में हाल्ले से भारत में आ गये। यह सन् १७५८–८६ तक बंगाल में रहे। प्रतिष्ठान के अभिलेखागार में से डा. मोडे ने कुछ मौलिक एवं दिलचस्प दस्तावेज़ खोज निकाले। इनमें कीरनाण्डर द्वारा सन् १७७२ में लिखी गई चिट्ठियां, और मौसम, वनस्पति शास्त्र तथा भूगोल से संबन्धित **१८वीं शती भारत** के कुछ आंकड़े एवं विवरण भी शामिल हैं। अभिलेखागार के संग्रहाध्यक्ष (क्यूरेटर) ने हमको यह सूचना दी कि उनके अभिलेखागार में लगभग २ लाख पत्र और विवरण हैं, जिनमें से लगभग ६०हज़ार इण्डोआ–अर्थात **भारत** से संबन्धित हैं। उनके पास बादाम के पत्तों पर लिखी गयी २४०–५० पाण्डुलिपियां भी हैं।

कलकत्ता में आने के बाद प्रचारक कीरनाण्डर ने ८०,००० पौंड की लागत से बंगाल में एक गिरजा तामीर कराया। कहा जाता है कि तीस साल तक यह बंगाल में एक मात्र ईसाई चर्च था। इस चर्च का मौलिक नक्शा आज भी हाल्लेके अभिलेखागार में सुरक्षित है। ...कीरनाण्डर के अन्तिम दिन बहुत करूणाजनक एवं दुखद थे। उसके अय्याश बेटे ने इतना पैसा फूंक दिया कि अन्त में चर्च को ज़ब्त किया गया। यद्यपि कीरनानडर ने एक उदार दिल अंग्रेज श्री चार्लेर्स ग्रांट की सहायता से गिरजा ज़ब्त होने से बचा लिया, लेकिन इस घटना से उनके दिल को इतना सदमा पहुंचा कि वह अधिक दिन जीवित न रह सके। आखिर प० बंगाल के चिनसुरा नामक स्थान पर उनकी मृत्यु हुई।

प्रोफेसर मोडे और उनके स्नेहशील परिवार में जितने दिन मैंने गुज़ारे, वह मेरे लिये एक सुखद स्मृति है। इन महान भारतविद्याविद् के निजी वृहत् संग्रहों को देखने और उनके सिलसिले में बातचीत करने में सभी दिन हम व्यस्त रहे। इनको महान कहना ही काफी नहीं। डा० मोडे आजकल के महानतम भारत विद्याविदों में से एक हैं। **कलकता संस्कृत कालेज** ने भी इस विद्वान को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। **शान्ति निकेतन** में आवास के दिनों में लिखी गई उनकी कृतियां और मोहनजोदाड़ो सभ्यता संबन्धी अन्य विषयों से संबन्धित उन का नवीन शोधकार्य उन की प्रकाण्ड विद्वत्ता तथा महानता का द्योतक है। हाल ही में, श्री अरूण राय के साथ उन्होंने बंगाल की **बृतकथायें** नामक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। आजकल वह **बंगाल की लोक कथायें** और **भारत की चित्रकला** से संबन्धित पुस्तकें प्रकाशित करने की तैयारी में लगे हुये हैं। जिन दिनों मैं हाल्ले में था एक शोधार्थी,

(शेष पृष्ठ २२ पर)

प्रोफेसर हाइंज मोड़े अपने अध्ययन कक्ष के "बंगला कार्नर" में अध्ययन-रत हैं

लाइनेफेल्डे | यूरोप की अत्याधुनिक सूती मिल

जर्मन जनवादी गणतंत्र का सुन्दर आइख्स्फेल्ड-क्षेत्र टूरिनजिया के जंगलों और हार्ज पर्वतों के बीच फैला हुआ है। जंगल की ढलानों पे छोटे छोटे, साफ सुथरे गांव बिखरे बिखरे से पड़े लगते हैं। इस क्षेत्र का प्रमुख कस्बा लाइनेफेल्डे--युद्ध के पहले जिसकी आबादी केवल २,५०० थी--विद्युत बुनाई करघे की ईजाद से पहले चहल-पहल से भरा हुआ था। शायद ही कोई ऐसा घर था जहां तकलियों एवं हाथ करघों की खटखटा-हट सुनाई नहीं देती थी। यहां के हाथ करघों से बुने हुये सूती कपड़ों की उन दिनों की बहुत मांग थी।

विद्युत (मेकनीकी) बुनाई करघा आइख्स्फेल्ड के लिये अभिशाप सा बनकर आया। इसने हाथ करघे को पदच्युत कर के लोगों को बेकार और निर्धन कर दिया। इस निर्धनता के कारण ही आइख्स्फेल्ड का नाम "यूरोप का निर्धन घर" पड़ा। जबरदस्त बेरोजगारी के कारण यहां के पुरुष रोज़ी की तलाश में अन्य औद्योगिक केन्द्रों और दूसरे क्षेत्रों में चले गये। औरतें और बच्चे यहीं रहे और वे खेतों पर काम कर के किसी तरह से अपना पेट पालने लगे। जर्मनी के महाकवि गोइटे ने १८०१ में अपनी डायरीमें इस दारूण स्थिति के बारे में ये शब्द दर्ज किये हैं: "ज्यों ही हम आइख्स्फेल्ड क्षेत्र में दाखिल हुए, हमने भिखारी बच्चों की भीड़ देखी।... ऐसा लगता था जैसे यह क्षेत्र हमेशा के लिये गरीबी की दलदल में फंस कर दम तोड़ देगा।..."

लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इस क्षेत्र के दुर्भाग्य में, सन् १९६१ में, सहसा परिवर्तन हुआ। जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने रेलों और सड़कों के जंकशन, लाइनेफेल्डे नामक स्थान पर, यूरोप की आधुनिकतम सूती कपड़ा मिल को कायम कर देने का निश्चय किया।

ज.ज.ग. के तामीराती मज़दूरों ने, मुख्य संयन्त्र और इससे सम्बद्ध प्रशासन, आवास तथा अन्य कामों के लिये इमारतें--जो ८०,००० घन मीटर के क्षेत्रफल में फैली हुई हैं --निर्धारित समय से पहले ही खड़ी कर दीं। ऐसा करके उन्होंने अमरीका के,

४८० मीटर लम्बे तथा २०० मीटर चौड़े प्रोडक्शन हाल में खिड़कियाँ नहीं हैं, पर उसमें आधुनिक यंत्रों से रोशनी की जाती है और १९ स्वचालित शीत-ताप नियंत्रण संयंत्रों द्वारा उचित तापमान और नमी कायम रखी जाती है। नीचे: यहाँ २५ वर्ष से कम आयु की १ हजार महिलाएँ काम करती हैं। २ महिला फोरमैन रिंग स्पिनिंग फ्रेम पर काम काम कर रही हैं
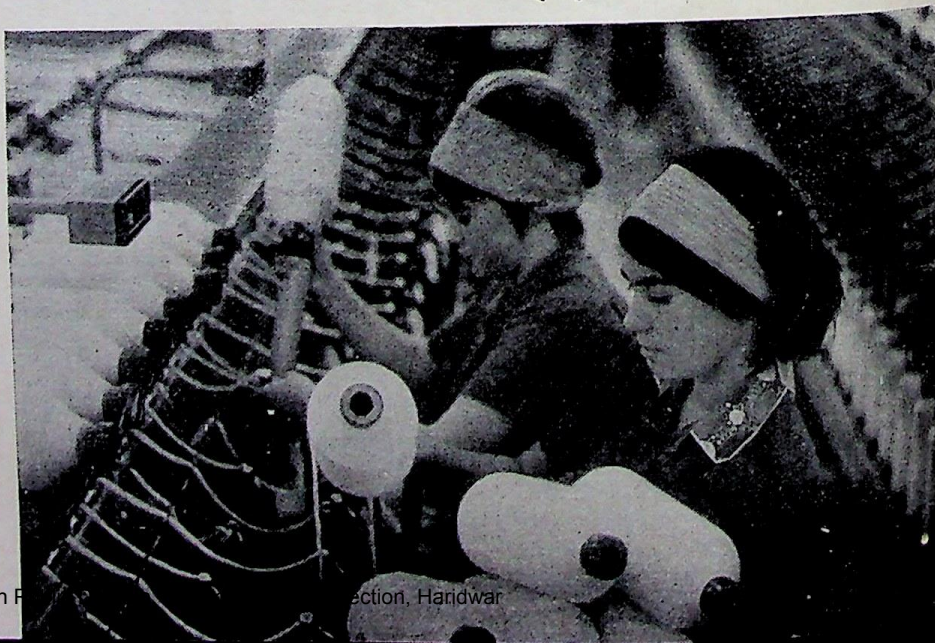
इस क्षेत्र विशेष के रिकार्ड को तोड़ दिया । अमरीका के तामीराती मज़दूर में जहां एक पारी में १३० टन तामीराती सामान को असम्बल करने की क्षमता है, वहां ज.ज.ग के मज़दूरों ने इस क्षमता को १६० टन तक बढ़ा दिया। प्रिफैब मकानों के निर्माण में ज.ज.ग. के तामीराती मज़दूरों ने विश्व रिकार्ड कायम किया है।——लाइनेफेल्डे में इस दैत्याकार रचना (सूती मिल) को प्रिफैब मकानों के केवल सात बुनियादी अंगों से स्थापित किया गया, नक्शों के अनुसार जिनको बदला जा सकता था।

दोनों युवतियां, सुख सुविधा के आधुनिक सामानों से सज्जित, दो कमरों वाले एक ही फ्लैट में रहती हैं

दो युवतियां जिनके नाम संयोग से क्रिस्टा ही हैं, धागे की मज़बूती की जांच कर रही हैं

लाइनेफेल्डे सूती मिल का दैनिक उत्पादन ३२ टन सूत का तार है । सन् १९६५ के प्रथम छः महीनों में इस कारखाने में काम करने वाले २,००० मज़दूरों और १०५,००० तकलियों ने, निर्धारित लक्ष्य से ४०० टन अधिक सूत बुना ।

आज स्थिति यह है कि "यूरोपका निर्धन धर" भूतकाल की एक याद मात्र है । लाइनेफेल्डे की यह सूती मिल आज यहां सीना ताने खड़ी है और जर्मन जनवादी गणतन्त्रके भव्य समाजवादी विकास की गवाही दे रही है । मिल के आस पास ६,००० लोगों के लिये रहायशी फ्लैट तामीर किये गये हैं । अनुमान है कि १९७० तक यहां आबाद होने वाले लोगोंकी संख्या १०,००० तक पहुंच जायेगी । आज बेरोज़गारी के कारण कोई भी व्यक्ति आइख्स्फेल्ड छोड़ कर नहीं जाना चाहता है । इसके विपरीत मिल के प्रबन्धक और नगरपालिका के अधिकारी इसको सजाने संवारने में लगे हैं और इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि नये नये मज़दूर यहां आ जायें और उत्पादन में हाथ बटायें ।

लाइनेफेल्डे के आवास क्षेत्र का एक भाग
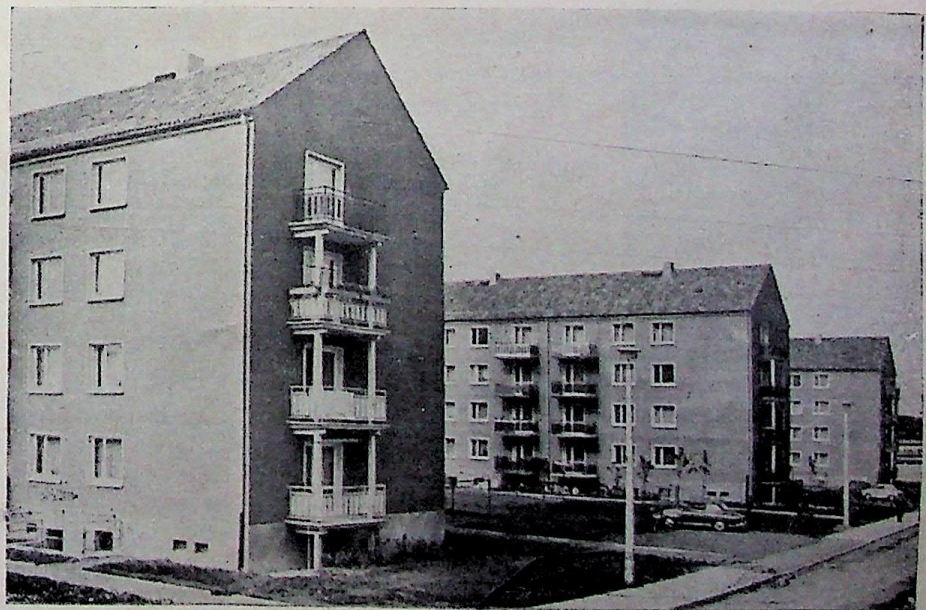
भारत - ज.ज.ग.

निर्माण के सहयोगी

a Mohamedaner leben
dlich nebeneinander

◀भारत जर्मन मैत्री सप्ताह का शुभारम्भ ६ जनवरी को ग्रन्नाबर्ग, ज.ज.ग. में लाइपजिग विश्वविद्यालय के पूर्वी एशिया इंस्टीच्यूट के निदेशक प्रो. शूबर्ट ने किया। सप्ताह के दौरान भारत के अतीत और वर्तमान से संबंधित एक प्रदर्शनी, फिल्म-शो और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। चित्र में प्रो. शूबर्ट (आगे) प्रदर्शित वस्तुएं देख रहे हैं

लाइपजिग में अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक कला प्रदर्शनी में भारत ने दो पुरस्कार, एक स्वर्ण तथा एक रजत पदक जीते। चित्र में हमारे बम्बई कार्यालय के श्री कावरेटस्के से रजत पदक विजेता प्रद्युम्न ताना के पिता अपने पुत्र के लिए पदक तथा प्रमाणपत्र प्राप्त कर रहे हैं▼

डा. लांगर और श्री श्रेडर ने हाल में ही स्कूटर पर भारत का भ्रमण किया। डा. लांगर ने हमें कोचीन का यह स्केच भेजा है। अब दोनों ही व्यक्ति जर्मनी लौट गये हैं
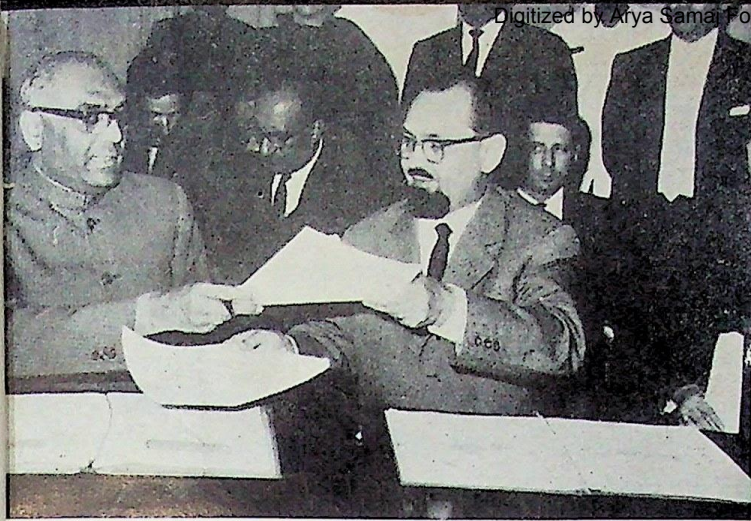
◀भारत को खाद्य-उत्पादन बढ़ाने में सहायता के लिए ज. ज. ग. की तत्परता की अभिव्यक्ति जनवरी और फरवरी में सम्पन्न दो चार समझौतों में हुई जिनके अनुसार ज. ज. ग. भारत को ढ़ाई लाख टन पोटाश और ४२ हज़ार टन अामोनियम सल्फेट देगा। यह करार भारत के राज्य व्यापार निगम और ज. ज. ग. के वर्गबाउ हैण्डल ट्रेडिंग कारपोरेशन के बीच हुआ। चित्र में व्यापार निगम के अध्यक्ष श्री बी. पी. पटेल और बर्गबाउ हैण्डल के महा-निदेशक डा. अलएतटनर करार संबंधी कागज़ात का आदान प्रदान कर रहे हैं।।

इण्डो-यूरोपियन मशीनरी, बम्बई, के निदेशक श्री सुराना, हाइडेनाउ ज. ज. ग. का विक्टोरिया प्रिंटिंग मशीनरी वर्क्स देखने गये। उन्होंने कारखाने के टेकनिकल डाइरेक्टर श्री गेयर (बायें) और सेल्सडाइरेक्टर फाल्ट्से से बातचीत की। ▼
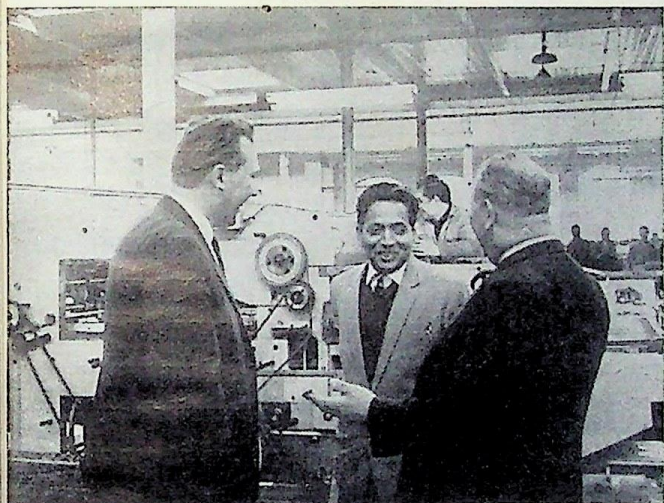
ज. ज. ग. ने हाल में ही हिन्दुस्तान मशीन टूल्स से ५ लाख रुपये के मूल्य के १२ मशीनी औज़ार खरीदे। ज. ज. ग. की औज़ार खरीदने वाली फर्म के श्री फ्रेंकल और श्री बी. पी. पटेल कारर पर हस्ताक्षर करने क बाद हाथ मिला रहे हैं। बीच में ज. ज. ग. के व्यापार दूतावास की श्रीमती मार्क्स खड़ी हैं।

गत माह बम्बई के रीगल सिनेमा में लाइपज़िग व्यापार मेले से संबंधित एक फिल्म प्रदर्शित की गयी जिसमें नगर के गणमान्य लोगों के अतिरिक्त, ज. ज. ग. के व्यापार दूतावास के प्रमुख, श्री फिशर (पिछली पंक्ति में बायें से दूसरे) भी उपस्थित थे ▼

ज. ज. ग. व्यापार-दूतावास की बम्बई शाखा की ओर से लाइपज़िग मेले के बारे में एक प्रेस कानफ्रेंस आयोजित की गयी। क्षेत्रीय व्यापार प्रतिनिधि श्री साखसे पत्रकारों के समक्ष भाषण करते हुए।

१९६६ में जर्मन सेना

'दूसरी जर्मन सेना' के साथ तीन दिन

★ डब्लू डोरे

तीन दिनों तक मैं जर्मन जनवादी गणतंत्र की राष्ट्रीय जन सेना की एक पैदल टुकड़ी का, जो बर्लिन के उत्तर में तैनात थी मेहमान रहा ।

सेना के लोगों के साथ तीन दिनों तक बात-चीत, उनकी प्रशिक्षण-कक्षाओं में बैठना और उनके कार्यकलाप का निरीक्षण । क्या इतना समय इस 'दूसरी जर्मन सेना' के बारे में कोई धारणा बना लेने के लिए काफी है ? जी हां । इस संगठन की एक तस्वीर समझने भर को, इसकी प्रवृत्ति और स्वभाव की रूपरेखा समझने भर को इतना समय काफी है . . .।

टैंक रेजिमेंट के सदस्य, एक सैनिक समस्या पर विचार विमर्श कर रहे हैं

कम्पनी कमाण्डर

चौथी कम्पनी के कमाण्डर से मेरे प्रदर्शक ने कहा, "कामरेड कप्तान । पत्रकार महोदय आ गये हैं . . .।"

सम्बोधन का यह ढंग -- "कामरेड" और उसके साथ पद, आज तक जर्मनी की सशस्त्र सेना में कभी नहीं इस्मेमाल किया गया था । यहां से कम्पनी कमाण्डर से मेरी अत्यन्त रोचक और ज्ञानवर्धक बातचीत शुरू हुई । लेकिन इसके पहले कि मैं इस बातचीत की तफसील बताऊं पाठकों को कुछ जरूरी बातें जिन्हें मैंनें बाद में जाना बता देना जरूरी है । इन विवरणों को जान लेने से सेना के बारे में सारी बातें आसानी से समझी जा सकेंगी ।

३१ वर्षीय कपतान लोथर र्‌यूथर, जो पेशे से डाक विभाग के कर्मचारी हैं, इस कम्पनी के कमाण्डर हैं । यह कम्पनी जल और स्थल दोनों में काम आने वाली बख़्तरबंद मोटरों, आधुनिक हथियारों और स्वचालित बंदूकों से सज्जित है और इसकी मारक शक्ति द्वितीय महायुद्ध के दौरान नाजी सेना की किसी भी पैदल टुकड़ी से ७ गुनी अधिक है । कैप्टन र्‌यूथर ने ५ वर्ष पहले सशस्त्र जर्मन सेना को स्वेच्छया अपनी सेवाएं अर्पित कीं । उस समय वह सेना गठित की जा रही थी । यह सर्वविदित है कि १९५६ से १९६१ तक राष्ट्रीय जन सेना केवल स्वयंसेवकों की ही बनी थी और सेना में युवकों की अनिवार्य भर्ती इस अवधि के बाद ही शुरू हुई ।

कपतान र्‌यूथर ने मुझे विश्वास दिलाया कि उनकी सैनिक सेवा उनके अन्य साथी अफसरों के ही समान रही है । तीन वर्ष तक उन्होंने सेनाधिकारियों के एक कालेज में प्रशिक्षण प्राप्त किया, उसके बाद वे प्लाटून कमाण्डर बनाये गये और अब दो वर्ष से अपनी कम्पनी के कमाण्डर हैं । उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि पांच वर्ष पहले प्लाटून कमाण्डर के ही रूप में उन्होंने जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की । इस व्यक्ति से दस मिनट तक बातचीत करने के बाद मुझे लगा कि इसमें शिक्षा देने की भी क्षमता है, क्योंकि दस मिनट में ही उसने मुझे कुछ सिखा दिया था और मुझे पता भी नहीं चला कि मुझे शिक्षा दी जा रही है ।

मैंने क्या सीखा ?

मैंनें पहले ही कहा कि हमारी बातचीत सम्बोधन के असामान्य ढंग से शुरू हुई । मैंनें कहा कि संभवत यह तरीका सोवियत सशस्त्र सेनाओं से ग्रहण किया गया है । कम्पनी कमाण्डर ने मेरा प्रतिवाद नहीं किया । उन्होंने सिर्फ कहा कि एक ही प्रकार के सामाजिक ढांचे वाले देशों की मित्रवत सेनाओं में ऐसी समानता स्वाभाविक है, लेकिन यह भी कहा कि जहां तक सम्बोधन के ढंग का प्रश्न है ज. ज. ग. की राष्ट्रीय जनसेना अपनी राष्ट्रीय परम्परा का पालन करती है । उन्होंने ऐतिहासिक उदाहरण दिये कि क्रांतिकारी सशस्त्र सेना, जिसने १९२० में रूहर की लड़ाई में

हिस्सा लिया और स्पेनिश अन्तर्राष्ट्रीय ब्रिगेड दोनों में सभी अधिकारियों तथा सैनिकों को 'कामरेड' कह कर बुलाने की प्रथा थी।

(उसके बाद मैं कम्पनी के क्लब गृह में गया जहां मैंने दीवारों पर चिपकायी हुई वे बुलेटिनें देखीं जिनमें सेना के लोगों के द्वारा स्पेनिश अन्तर्राष्ट्रीय ब्रिगेड के बारे में एकत्र की गयी सूचनाएं दर्ज थीं। उनसे मुझे मालूम हुआ कि ज. ज. ग. के वर्तमान प्रतिरक्षामंत्री हेन्ज हाफमैन ने, जो सेना के जनरल भी हैं, फ्रैंको के खिलाफ अन्तर्राष्ट्रीय ब्रिगेड की ओर से लड़ाई में हिस्सा लिया था।)

अब राष्ट्रीय जन सेना की राष्ट्रीय चेतना के बारे में कुछ बतलाना उचित होगा। जब भी मैंनें किसी अधिकारी अथवा सैनिक से बात की मेरी यह धारणा बनी कि इस सेना में एक स्वस्थ्य राष्ट्रीय चेतना विकसित हो चुकी है, जो सैनिक दृष्टि से भी स्वस्थ है, क्योंकि वह सेना अतीत के उन कलंकों से मुक्त है, जिन्हें प्रतिक्रियावादी परम्पराओं का पालन करती हुई पश्चिमी जर्मनी की 'बुण्डेस्वेहर' (सेना) आज भी ढो रही है। जिनसे भी मैंने बात की उन्होंने बार-बार मुझ से यही कहा। अपनी सेना के राष्ट्रीय कर्तव्य के बारे में सभी की एक जैसी समझ है और इसके प्रति सभी के हृदय में सच्ची भावना है। संक्षेप में वह समझदारी यह है कि वे ज. ज. ग. का शांतिपूर्ण अस्तित्व सुनिश्चित बनाना अपना कर्तव्य समझते हैं, ताकि वह पुनः एकीकृत जनतांत्रिक जर्मनी के लिये एक आदर्श बन सके। इसमें युवकों की अनिवार्य भर्ती १८ माह के लिए की जाती है और उनकी बातें सुनते हुए ऐसा अनुभव नहीं होता कि वे रटें हुए राजनीतिक सिद्धान्त मात्र दुहरा रहे हैं। इसके विपरित, लगता है सेना इस सिद्धान्त का पूरी तरह पालन करती है कि चिंतन, राजनीतिक चिंतन, किसी नागरिक का प्रथम कर्तव्य है।

अवकाश के क्षण

प्रशिक्षण के समय किसी संगठन के स्वभाव को समझना असंभव होता है। प्राविधिक प्रशिक्षण सारे संसार में प्राविधिक प्रशिक्षण ही होता है।

इसलिए मैंनें सोचा कि यह पता लगाना अधिक महत्वपूर्ण होगा कि सैनिक अपने अवकाश के क्षण कैसे व्यतीत करते हैं। जब ये ड्यूटी पर नहीं रहते तो अपने अधिकारियों से उनके संबंध कैसे रहते हैं? वे कमो-वेश संगठित कार्यों में ही शामिल होने के लिए बाध्य किये जाते हैं या स्थिति इसके एकदम विपरीत है, क्या वे बहुत ऊबते हैं?

ज.ज.ग. की राष्ट्रीय जन सेना के सुदुर-नियंत्रित टैंक भेदी राकेट

जहां तक आखिरी सवालों का संबंध है उनमें से कोई भी सही नहीं है। जिस चीज ने मुझे प्रभावित किया वह यह थी कि सेना के लिए शिक्षण और पुस्तकें दोनों प्रिय हैं। बहुत से सैनिकों ने अपनी पढ़ी हुई पुस्तकों के वाक्य बातचीत के दौरान उदघत किये। और उनके ये उद्धरण सर्वथा स्वाभाविक थे।

मैंने ब्रिगेड़ के पुस्तकालय का निरीक्षण किया (हर ब्रिगेड में एक पुस्तकालय है।) पुस्तकालय के कथा साहित्य विभाग में जर्मन तथा फ्रेंच क्लासिक लेखकों, तथा कामू, हरमन कान्ट, स्टिटमेटर, बोएल, हेमिंग्वे, सिमोनोव, रूसी तथा सोवियत लेखकों तथा जासूसी उपन्यासों की करीब ७ हजार पुस्तकें हैं। सामान्य पुस्तकों के विभाग में १५०० पुस्तकें हैं। पुस्तकालय की व्यवस्था पूर्ण-समय की एक पुस्तकालयाध्यक्ष करती हैं। उन्होंने मुझे पाठकों की अनुक्रमणिका दिखायी जिससे पता चला कि सेना के ७० प्रतिशत सैनिक नियमित पाठक हैं।

सप्ताह में कई बार फिल्में दिखायी जाती हैं और सैनिकों को संगीत कार्यक्रमों तथा अन्य प्रदर्शनों में जाने की पूरी छूट है। हर कम्पनी के पास एक टेलीविजन सेट है। लेकिन पुस्तकें, और प्राविधिक तथा सांस्कृतिक विषयों पर पढ़ने की आदत हल्के मनोरंजनों की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय हैं। फिर भी सैना यहां भी उसी तरह का प्रोत्साहन देती है जिस तरह जर्मन अर्थ-व्यवस्था में आर्थिक प्रोत्साहन दिये जाते हैं। इसके सैनिक प्राविधिक अध्ययन ग्रुप बना दिये गये हैं और जब भी कोई सैनिक अपने प्रशिक्षण के विशेष क्षेत्र में कोई परीक्षा पास करता है तो उसे 'दक्षतारोध' से पुरस्कृत किया जाता है। ये पुरस्कार विभिन्न स्तरों पर दिये जाते हैं और उन्हें पाने वालों को अपने वेतन के अतिरिक्त एक और पूरक वेतन मिलता है।

(शेष पृष्ठ २२ पर)
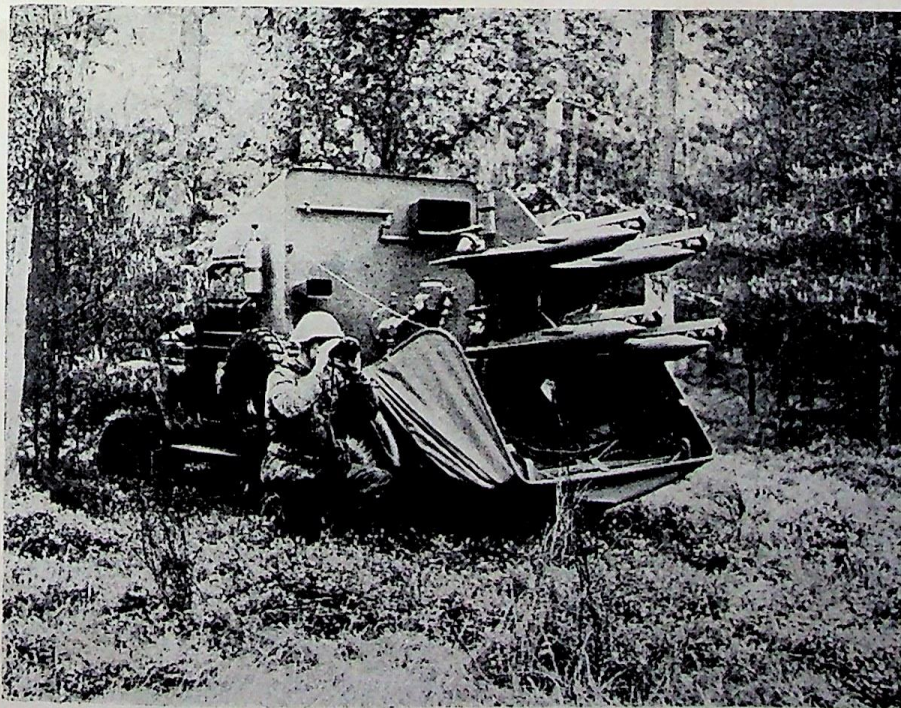
"आपके लिए" जर्मन जनवादी गणतंत्र की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला-पत्रिका

रूडाल्फ रोयरर

महिला साप्ताहिक का एक मुख पृष्ठ

प्रत्येक सप्ताह जर्मन जनवादी गणतंत्र की हजारों औरतें और लड़कियां बेसब्री से 'आपके लिए' के अगले अंक का इंतजार करती हैं। अगरचे महिलाओं के इस सचित्र साप्ताहिक का प्रकाशन अभी हाल में ही शुरू किया गया है लेकिन इसका व्यापक प्रसार बहुत ही थोड़े समय में हो गया। इस तात्कालिक लोकप्रियता का प्रमुख कारण यह है कि महिलाएं कानून द्वारा सुरक्षित अपनी समानता को व्यवहारिक रूप देने में इस पत्रिका को अपना सहायक और साथी मानती हैं। हमारे समाज में 'आपके लिए' उन व्यवहार और धारणाओं के विरूद्ध स्त्रियों का साथ देती है जो नये वातावरण के अनुकूल नहीं पड़ती।

महिलाओं की इस पत्रिका की अपूर्व लोकप्रियता का दूसरा कारण यह है कि पढ़ने में बहुत दिलचस्प होती है। प्रत्येक सप्ताह इसके ४८ पृष्ठों में नवीनतम घटनाओं,

प्राकृतिक सौंदर्य ही सर्वश्रेष्ठ सौंदर्य है

तथ्यों और जानने योग्य विकास-कार्यों की सूचना होती है तथा इसमें शिक्षाप्रद और मनोविनोद पूर्ण सामग्री भी रहती है। 'आप-के लिए' में स्त्रियों द्वारा अपने कार्यों में दक्षता प्राप्त करने, विदेशों में औरतों की जिन्दगी और संसार में अपने बच्चों की प्रसन्नता और शांति के लिए उनके संघर्ष के विषय में सूचनाएं होती हैं। पांच पृष्ठों में आधुनिक और उप-योगी ढंग से वेश-भूषा के सुझाव होते हैं तथा अन्य नियमित स्तम्भों में प्रसाधन कला के किसी विशेषज्ञ का सौन्दर्य सेवा पर लेख होता है। प्रत्येक अंक में डाक्टर का पृष्ठ होता है जिसमें स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवन के विषय में सुझाव होते हैं। आधुनिक और आरामदेह जिन्दगी, अंदरूनी सजावट और फर्नीचर के बारे में लेख भी बहुत लोकप्रिय

'आपके लिए' घरों की आधुनिक फर्निशिंग के बारे में सुझाव देती है

रहते हैं। कला संबंधी ग्रौर सांस्कृतिक घट-नाग्रों के विषय में पाठकों की जानकारी बढ़ाने में संपादक मंडल खास.दिलचस्पी रखता है। प्राचीन ग्रौर समसामयिक महान चित्रकारों का परिचय उनके पुनःप्रकाशित रंगीन चित्रों के माध्यम से दिया जाता है। थियेटर की गतिविधियों की सूचना, फिल्म-समीक्षा, उपन्यासों के ग्रंश, कहानियां वगैरह इस महिला-पत्रिका को बहुत दिलचस्प ग्रौर पठनीय बना देती हैं। बच्चों के पालन-पोषण के विषय में सुझाव देने के कारण इस साप्ताहिक की प्रतीक्षा माताएं भी करती हैं ग्रौर इसे ग्रपना सच्चा सहायक मानती हैं।

यह युवती ग्राल्टेनबुर्ग के ताश कारखाने में काम करती है

'ग्रापके लिए' पारिवारिक संबंधों को बहुत महत्व देता है। १९६५ के बसन्त में जब जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिकों के सामने विचार-विमर्श के लिए नये परिवार कानून का प्रारूप प्रस्तुत किया गया तो इस पत्रिका के पृष्ठ इस विधेयक पर विचार-विनिमय के मंच बन गये।

प्रत्येक मास संपादक के पास ३००० पत्र ग्राते हैं। प्रतिदिन के जीवन से संपादक का निकट संबंध केवल इसी बात तक सीमित नहीं रहता कि वह इन पत्रों का जवाब दे देता है बल्कि पाठकों की समस्याग्रों पर विचार विमर्श करने के लिए उनसे मिलता है! नियमित रूप से महीने में दो बार इस तरह की मुलाकातें होती हैं जिनमें संपादक पाठकों के प्रश्नों का उत्तर देते ग्रौर पत्रिका की सामग्री, व्यक्तिगत लेखों तथा पत्रिका की रूप रेखा संबंधी उनके सुझावों पर विचार करते हैं।

'ग्रापके लिए' के संपादक मंडल में ग्रनुभवी पत्रकार काम करते हैं ग्रौर यह कहने की जरूरत नहीं है कि उसमें महिलाग्रों की संख्या पुरुषों से ग्रधिक है। इनमें से ग्रधिकांश महिलाग्रों के ग्रपने बच्चे हैं जिनसे उन्हें स्त्रियों ग्रौर माताग्रों की खास समस्याग्रों की प्रत्यक्ष जानकारी है।

ज.ज.ग. की सूती मिलों में महिला कर्मचारी ग्रधिक हैं। सजावट के इस सामान को डिजाइन बिर्गिट ने तैयार की है। नीचे: बालों का नया फैशन 'टोपाश'

बेनो बेसों
नाट्य कला का एक जादूगर

होरस्ट हाइटसेन रोइटर

बर्तोल्त ब्रेख्त की ही भांति बेनो बेसों के नाम के भी प्रथम अक्षर ब. ब. हैं। वे ब्रेख्त के शिष्य हैं और बर्लिन के जर्मन थियेटर से उनका सम्बंध पिछले तीन वर्षों से है।

फ्रांसीसी स्विटजरलैण्ड का यह मजबूत आदमी देखने में बुद्धिजीवी और खिलाड़ी लगता है। इस निर्माता को काम का नशा रहता है। बेसों, पक्के मार्क्सवादी ब्रेख्त के निपुण अनुयायी और दर्शन में पक्का विश्वास रखने वाले हैं। वे ऐसे व्यक्ति हैं जो अपना काम वैज्ञानिक सुनिश्चितता के साथ करते हैं। यह ठीक है कि उन्होंने ब्रेख्त से बहुत कुछ सीखा है लेकिन वे ब्रेख्त के अनुयायी मात्र नहीं हैं।

ब्रेख्त ने, जिन्होंने इस नौजवान को 'बर्लिनेर एनसैम्बल' के लिए मोलिरे के 'दान जुआन' के निर्माण का काम सौंपा, इसके बारे में कहा "जर्मन थियेटर के लिए यह अच्छी बात थी कि बेसों फ्रांसीसी स्टेज की अमूल्य परम्परा का उपयोग करना जानते हैं। जनता मोलिरे की प्रतिभा में निहित उस उदारता से परिचित हो गई जो अत्यन्त गूढ़ और मृदु व्यंग्य तथा बीच बीच में अपूर्व सुन्दर, छोटे छोटे और गम्भीर गद्यांशों से युक्त भरपूर हास-विनोद का मिश्रण है।"

फ्रेड डूरेन, 'शांति' में ट्रिगेंयास की भूमिका में

जब ब्रेख्त निष्कासन के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका से ज्यूरिख लौटे तो उनका ध्यान इस नौजवान ने अपनी ओर खींचा जो थियेटर मंडली के साथ चारों ओर जाता था। १९४९ में उन्होंने बेसों को बर्लिन आने के लिये तैयार कर लिया। अन्ना सेगर के रेडियो नाटक '१४३१ में रुएन में जोन आफ आर्क का मुकदमा' को बेसों ने रंगमंच पर प्रस्तुत किया जिसने लोगों को काफी आकृष्ट किया। लेकिन चोटी के निर्माता के रूप में उनकी ख्याति 'दान जुआन' से हुई। यद्यपि फर्कुहर की कामेडी 'ड्रम्स एन्ड ट्रमपेट्स' और ब्रैख्त के 'जेहुआन की भली औरत' में भी उन्हें सफलता मिली, लेकिन अपने चुने हुए देश के प्रमुख रंगमंचीय निर्माताओं में उनका निश्चित स्थान कुछ वर्षों के बाद बना।

'बर्लिनेर एनसैम्बल' छोड़ने के बाद अस्थायी तौर पर बेसों ने दोनों जर्मन राज्यों के थियेटरों में काम किया। उन्होंने ब्रेख्त का "आदमी आदमी है" रोस्टोक में, शैक्सपियर का 'रोना के दो भले आदमी' फ्रेंकफुर्ट मेन में, और इर्विन स्ट्रिटमेटर 'डच की दूल्हन' बर्लिन के जर्मन थियेटर में प्रस्तुत किया। अन्तिम नाटक की जो व्याख्या वेसोन ने की थी उसका प्रभाव दर्शकों पर पृथक्कारी पड़ा। तीन साल पहले जब उन्होंने जर्मन थियेटर के मंच पर 'वेरोना के दो भले आदमी' पुनः प्रस्तुत किया तो उनकी फिर यही आलोचना की गई। उनकी व्याख्या ने दर्शकों को अलग और अनावश्यक तौर पर दूर रखा था।

बेसों को इन दो पेशकशों के अनुभवों का गहरा मूल्य चुकाना पड़ा। लेकिन वे एक के बाद दूसरा नाटक प्रस्तुत करते गए जिनमें उनका उत्कृष्ट कौशल सामने आया। इस के साथ साथ उन्होंने कई थियेटरों में काम भी किया। उन्होंने स्टुटगर्ट में ब्रेख्त का 'स्टाकयार्ड का संत जोन' प्रस्तुत किया जिसे अत्यधिक सफलता मिली। अरिस्तोफेन के 'शांति' में, जिसे पीटर हेक्स ने रंगमंच के लिए तैयार किया था और जो जर्मन थियेटर में खेला गया, बेसों को अगली विजय प्राप्त हुई।

उदाहरण के लिये 'हम्बर्गर आबेन्डब्लाट' पत्र ने टिप्पणी लिखी कि

"पेशकश निर्दोष और पूर्ण है, इसके व्यंग्य में मान्यता छिपी है। सचमुच यह जर्मन थियेटर के लिए बहुत बड़ी घटना है। रंगमंच कला के आदर्श के रूप में इसे पूरे जर्मनी में दिखाया जाना चाहिए। नाटकीय कला की पिछड़ी हुई कसौटी के बदले यह एक नया प्रतिमान स्थापित कर सकता है।" बेसों की देखरेख में अभिनय का अभ्यास प्रकट करता है कि तीव्रता और प्रयोग के बावजूद वे रंगमंच के अभिनय के आनन्द में निमग्न रहते हैं। वे अभिनेता की व्यक्तिगत शैली का ध्यान रखते हैं और अक्सर उसकी राय से संशोधन कर लेते हैं। अपनी कार्य-विधि के विषय में बेसों ने एक बार बताया कि "प्रत्येक अभिनेता को अपनी शक्ति को प्रकट करने और अपने काम का आनन्द लेने का अवसर मिलना चाहिए, उदाहरण के लिए एरस्तोफेन के 'शांति' में ट्रिगेयास की दो बड़ी लड़कियों को अपने गद्यांश को 'कोरस' में बोलना होता है। उनमें से एक लड़की का अभिनय एक अधिक उम्रवाली और शरारती-सी अभिनेत्री को करना था। किसी दूसरी लड़की के साथ साथ बोलने के विचार मात्र से उसे दौरे पड़ने लगते थे। पूर्वाभ्यास में उसने पूरी कोशिश की कि वह भूमिका किसी और को देनी पड़े। उसकी साथी जिन शब्दों को कुशलतापूर्व बोलती थी उनका उच्चारण वह कांपती हुई, चीखकर और परेशानी के साथ इस ढंग से करती थी कि वे ठीक ठीक सुनाई ही न पड़ें। अपनी भली बहन के उच्चारण का अनुकरण करने की उसकी इस अयोग्यता से परिहास का जो असर हुआ उसे युवकोचित अकौशल के रूप में ग्रहण करके लोगों ने उसके अभिनय को स्वभाविक माना। इस तरह एक अभिनेत्री के नकली अभिनय से व्यंग्य का प्रभाव उत्पन्न हो गया।
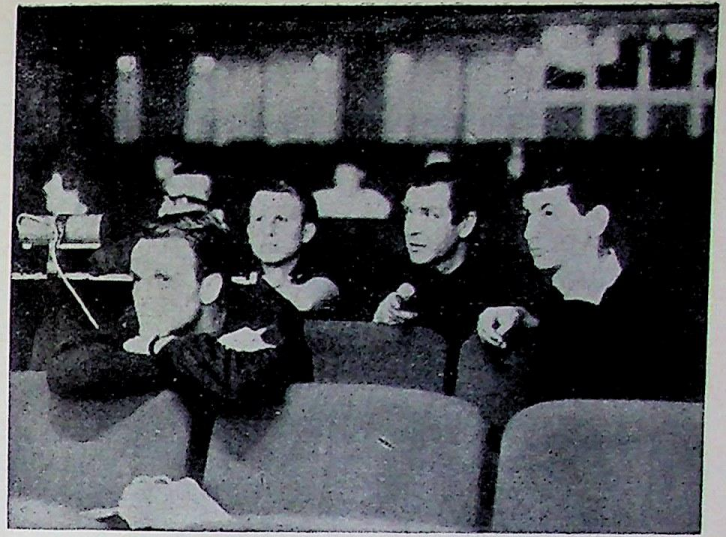
बेनो बेसों (दाहिने से दूसरे) एक पूर्वाभ्यास में

'अजगर' नामक परीकथा कामेडी के एक दृश्य में एबर्हर्ड एस्चे, अजगर को मारने वाले लानसेलोट की भूमिका में

बेसों को अगली महान सफलता मोलिरे के 'तारतुफे' में मिली। उसका नवीन अनुवाद स्वयं उन्होंने और हर्मन लांग ने किया था। यद्यपि अनुवाद मूल का पूर्ण रूप से अनुसरण करता था, फिर भी नाटक का गहरा प्रभाव बेसों की तटस्थ व्याख्या और उस पैरोडी का पड़ा जिसे समसामयिक दर्शक बेसोन की व्याख्या के बिना समझने में कामयाब न होते। आफेनबाख के 'सुन्दर हेलेना' को जिसका नया पाठ पीटर हैक्स ने तैयार किया था और जिसे 'अभिनेताओं का आपेरा' उपशीर्षक दिया था, बेसों ने उत्कृष्ट, प्रेरणामय और सुनिश्चित रूप में प्रस्तुत किया। इसने जर्मन थियेटर के कैमर्स्पील नामक स्थान पर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर लिया। येवगेनी श्वार्ज की 'अजगर' नामक परीकथा कामेडी बहुत दिन तक बाक्स आफिस हिट रही। इसमें बेसों के उद्घाटित किन्तु नियंत्रित नाटकीय कौशल का परिचय मिलता है। उन्होंने परीकथा की आधुनिक व्याख्या प्रहसनात्मक रूपक के माध्यम से की है। उसमें प्रमख अभिनेताओं की नई और अप्रत्याशित क्षमताएं सामने आती हैं।

आलोचकों ने बेसों को थियेटर का जादूगर कहा है। जहां तक दर्शक-वृन्द का प्रश्न है, उनके प्रतिनिधि और अन्तर्राष्ट्रीय दर्शक वृन्द उत्कंठापूर्वक बेसों की अगली पेशकशों की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

विश्व की जनता के स्वास्थ्य के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र का सहयोग

जर्मन जनवादी गणतंत्र १९६४ में पर्याप्त रूप से चिकित्सा विज्ञान और स्वास्थ्य सुरक्षा के क्षेत्र में अपने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों को विकसित और गहरे करने में समर्थ रहा।

योगोस्लाविया, कोरियाई जनवादी गणतंत्र मंगोलिया और जनवादी वियतनाम से स्वास्थ्य समझौते किये गये। इसका अर्थ है कि समस्त समाजवादी देशों से विशिष्ट स्वास्थ्य समझौते किये जा चुके हैं। वे जन स्वास्थ्य क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग के लिये अनुकूल स्थितियों की व्यवस्था करते हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र और बिरादराना समाजवादी राष्ट्रों के बीच का सहयोग उन प्रत्यक्ष सम्बन्धों को, जो वैज्ञानिक संस्थानों के द्वारा स्थापित किये जा चुके हैं, बढ़ावा देता है। जर्मन जनवादी गणतंत्र और सोवियत संघ के २५ वैज्ञानिक चिकित्सा संस्थान अब तक सीधे संबंध बना चुके हैं।

नवोदित राष्ट्रों को सहायता :

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने १९६५ तक नवोदित राष्ट्रों को जन-स्वास्थ्य सेवाओं की स्थापना में सहायता देने के कार्य को काफी आगे बढ़ा दिया है। उसका यह सहयोग सांस्कृतिक, चिकित्सा और सामाजिक क्षेत्र में इन देशों को उपनिवेशी उतराधिकार में मिली कठिनाइयों को दूर करने की दिशा में सहायता प्रदान करता है।

१९६४ में जर्मन जनवादी गणतंत्र द्वारा जैंजीबर में बनाये गये चिकित्सा विद्यालय और सामान्य उपचार गृह के कर्मचारियों को सहायता के लिए और अधिक चिकित्सक, नर्सें और शिक्षक भेजे गये। डाक्टरों और नर्सों का एक दल बर्मा गया जहां वह चार माह तक रह कर राष्ट्र-व्यापी ट्रेमोका (रोहा) विरोधी अभियान में सहायता देता रहा।

क्यूबा की जन-क्रान्ति में अनेक जख़मी योद्धाओं को ज.ज.ग. में पुनः स्वस्थ किया गया

लाम्बेरन अस्पताल को सहायता

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने काहिरा में एक जिला-स्तरीय यक्ष्मा चिकित्सा केन्द्र को साज-सामान से सज्जित किया है जो निकट भविष्य में ही अपना कार्य करना प्रारम्भ कर देगा।

१९६५ में यमनी अरब गणतंत्र के साथ इस उद्देश्य के साथ समझौता किया गया कि इस नवोदित राष्ट्र के स्वास्थ्य सुरक्षा उपायों में उसकी सहायता की जाय।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में अनेक गम्भीर रूप से घायल साइप्रसों का सफल इलाज किया गया।

अरब अफ्रिका तथा पूर्व-एशिया के देशों से जर्मन जनवादी गणतंत्र के विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए आने वाले छात्रों का २० प्रतिशत भाग १९६५ में चिकित्सा विभाग से स्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त इन देशों के एक सौ से अधिक युवक नर्सों, चिकित्सा-प्राविधिक सहायक, सहायक चिकित्सक, दांत-यांत्रिकी तथा अन्य इसी तरह के चिकित्सा-कार्यों का प्रशिक्षण पा रहे हैं।

इस समय, नवोदित स्वाधीन राज्यों के ४० से अधिक युवा डाक्टर हमारे गणतंत्र के प्रमुख चिकित्सा केन्द्रों और संस्थानों में कार्य कर रहे हैं जहां पर उनको चिकित्सा की विभिन्न शाखाओं में उन्नत प्रशिक्षण दिया जाता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की अलबर्ट श्वाइटज़र समिति ने सहायता की सातवीं खेप लम्बेरन (गेबन) के अस्पताल को भेज दी है। स्वर्गीय अल्बर्ट श्वाइटजर के इच्छानुसार इस सहायता में दवाइयां, मरहम पट्टी का सामान और कपड़े शामिल हैं। जहाज द्वारा भेजी गई इस सामग्री की ५० पेटियां हैं जिनकी कीमत ४०,००० मार्क हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र रेड क्रास समिति की अल्बर्ट श्वाइटज़र समिति द्वारा प्रसारित एक विज्ञप्ति के अनुसार, डा. श्वाइटज़र की मृत्यु के बाद भी अस्पताल, के लिए सहायता जारी है।

समाचार

ज.ज.ग. की बालिका को रजत पदक

ज.ज.ग. की १७ वर्षीया बालिका गैब्रियल सेफर्ट ने हाल में ही स्केटिंग की यूरोपियन तथा विश्व चैम्पियनशिप प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त कर रजत पदक जीता।

गैब्रियल ने ४ वर्ष की ही अवस्था से स्केटिंग शुरू कर दिया था। १२ वर्ष की अवस्था में उसने पहली बार जर्मन चैम्पियनशिप जीती। तब से अब तक इस सम्मान को वही जीतती आ रही है।

यूरोपियन चैम्पियनशिप प्रतियोगिता में उसकी प्रगति इस प्रकार रही: १९६१ में २१वां स्थान, १९६२ में १२वां, १९६३ में १०वां, १९६४ में ग्रीनोबुल का वीसा न मिल पाने के कारण वह प्रतियोगिता में भाग न ले सकी, १९६५ में ५वां और १९६६ में २रा स्थान।

गर्मियों के मौसम में उसे टेनिस खेलने का शौक है।

लोइना के नये निदेशक

३७ वर्षीय डाक्टर हैन्ज़ म्युलर ज.ज.ग. के सबसे बड़े औद्योगिक कारखाने लोइना केमिकल वर्क्स के नये महानिदेशक नियुक्त किये गये हैं। डाक्टर म्युलर हाले के एक मजदूर परिवार के हैं और लोइना वर्क्स में १९५७ से काम कर रहे हैं। उन्हें डाक्टर साइगबर्ट लोशाऊ के स्थान पर नियुक्त किया गया है, जो पिछले दिसंबर में ज.ज.ग. के रासायनिक उद्योग मंत्री नियुक्त किये गये हैं।

धूम्रपात छोड़ने का अभियान

ज.ज.ग. के पोट्सडम क्षेत्र के ३०० से अधिक लोगों ने धूम्रपान छोड़ने की दिशा में पहला कदम उठाया। उन्होंने जर्मन विज्ञान अकादमी के प्रायोगिक आनकोलाजी शोध केंद्र की ओर से बड़े पैमाने पर किये गये एक परीक्षण में भाग लिया। सैकड़ों लोगों को जो धूम्रपान छोड़ना चाहते हैं, इसलिए निराश लौटना पड़ा कि जिस क्लब में इसका कोर्स चल रहा था, उसमें जगह ही नहीं थी।

शोध केन्द्र ने कुछ दिनों पहले धूम्रपान की लत छुड़ाने वाली एक दवा का आविष्कार किया था। धूम्रपान करने वाले २४ व्यक्तियों पर इसके प्रभाव का परिणाम यह रहा कि १२ ने धूम्रपान एकदम छोड़ दिया। शेष में से कुछ सिर्फ कभी-कभी ही सिगरेट पीने लगे और कुछ लोगों के सिगरेट पीने की संख्या पहले से आधी हो गई। इसका कोर्स ८ सप्ताह चला। इस परिणाम के आधार पर एक नयी दवा तैयार की गई है जो और भी प्रभावशाली है।

सभी देशों को ज़ाइस आप्टिक्ल और सूक्षम यंत्रों का निर्यात

ज.ज.ग. के नगर येना में कार्ल ज़ाइस सूक्ष्म यंत्र तथा आप्टिकल वर्क्स में खगोल विद्या संबंधी यंत्रों के निर्माण के लिए एक नया ४५ मीटर लम्बा हाल बनाया गया है। इस हाल से विभिन्न पुर्जों को जोड़ कर यंत्र बनाने का कार्य अबाध गति से चलने के साथ ही काम के समय में बचत संभव हुई है।

ज़ाइस कारखाने में जो सूक्ष्म यंत्र, चश्मे तथा विद्युत के समान बनाने का विश्व में सबसे बड़ा कारखाना है, १८हजार मजदूर, प्राविधिक और वैज्ञानिक काम करते हैं। कारखाने से १०० देशों को निर्यात किया जाता है।

ज़ाइस कारखाना १८४६ में स्थापित हुआ था, लेकिन १९४५ में अमरीकी फौजों ने एकाधिकारियों के हित में इसे आशिक रूप से नष्ट कर दिया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद येना अस्थाई रूप से अमरीकी फौजों के कब्ज़े में रहा। उन्होंने कारखाने के प्राविधिक कागजपत्रों और सबसे अच्छे विशेषज्ञों को तलब किया। १ लाख ८० हजार पेटेंट किस्में रजिस्टर्ड, डिजाइनें और पेटेंट संबंधी सारे कागजात जब्त कर लिये।

एशिया तथा अफ्रीका के १०० से अधिक पत्रकारों ने उस प्रदर्शनी को देखा जिसमें, पश्चिम जर्मनी के वर्तमान राष्ट्रपति हाइनरिख ल्यूबके से संबन्धित वे दस्तावेज़ रखे गये हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि वह कुख्यात नाज़ी यातना शिविरों का निर्माता था

युद्ध में बुरी तरह क्षतिग्रस्त इस कारखाने का पुनः निर्माण १९४६ के अन्त में जर्मनी में तत्कालीन सोवियत प्रशासन के आदेश पर शुरू हुआ।

१९४६ से अब तक पुराने यंत्रों के अलावा ३०० और नये यंत्रों का निर्माण तथा निर्यात होने लगा है। आज इसमें ५०० यंत्र बनाये जाते हैं। इन यंत्रों में २ मीटर के रिफ्लेक्टर वाला एक दूरवीक्षण यंत्र भी है।

३६ घंटे में एक जहाज़

ज. ग. के जहाज निर्माण उद्योग ने १९६५ में अपने ग्राहकों को हर ३६ वें घंटे में एक जहाज बना कर दिया। १२ जहाज कारखानों में अपने देश के अलावा सोवियत संघ, ट्यूनीशिया, तन्जानिया, चीन, नोर्वे पोलेण्ड, स्वीडन, डेनमार्क और आइसलैण्ड के लिए भी जहाज निर्मित हुए।

पिछले वर्ष की तुलना में जहाज निर्माण में ५६ प्रतिशत की वृद्धि हुई। सबसे बड़ा १९ हजार टन का यात्री जहाज 'अलेक्जेण्डर पुश्किन, था जिसे विस्मार जाहज कारखाने में बनाया गया। १२६०० टन तक के २९ मालवाही जहाज विशेष रूप से नेपतुन और रोस्टक के वारनोव जहाज कारखानों में बनाये गये।

भारत-विद्या केन्द्र

(पृष्ठ ९ का शेष)

प्रोफेसर मेलिग ने, "सतीप्रथा" विषय पर लिखा अपना शोध प्रवन्ध डा. मोडे के पास सब्मिट किया। इस प्रबन्ध की रूपरेखा, जल्द ही कलकत्ता के एक सुप्रसिद्ध मासिक "चतुष्कोण" में प्रकाशित होगी।

डा. मोडे, भारत से इतना प्यार करते हैं कि जब भी उन्हें मौका मिलता है, वह भारत चले आते हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र को इन प्रकाण्ड विद्वान पर गौरव होना स्वाभाविक है, और हम भारतीयों को भी इस बात पर बहुत नाज़ होना चाहिये कि सुदूर जर्मनी में हमारा एक इतना बड़ा स्नेही और शुभचिन्तक है।

नई जर्मन सेना

(पृष्ठ १५ का शेष)

बाह्य स्वरूप

इस सेना की वर्दी पहले की सेना की तरह है और पदों के बैज पुरानी जर्मन सेना के बैजों से कुछ भिन्न हैं। ऊपरी अनुशासन के स्वरूप जैसे सैल्यूट और दूसरी सैनिक औपचारिकताएं परम्परा पर आधारित हैं। पहले की जो दूसरी बातें हैं – उनमें हैं, दक्षता, निपुणता और व्यवस्थित अनुशासन (जिसकी प्रशंसा १९६३ और १९६५ के सैनिक अभ्यासों में राष्ट्रीय जन सेना के साथ भाग लेने वाली वारसा संधि की सेनाओं ने भी की है।) स्पष्ट ही, जो भी परम्परा सैनिक प्रगतिशील दृष्टि से कायम रखने के योग्य समझी गयी उसे कायम रखा गया है।

लेकिन सेना में पुराने 'प्रशियन साम्राज्यवाद' की प्रवृत्ति जरा भी नहीं है। इसके एकदम विपरीत है। इस सेना का एक शांतिपूर्ण मिशन है और इसे हर सैनिक अच्छी तरह समझता है। और इसीलिए इस सेना की लड़ाकू ताकत को कम करके आंकना एकदम गलत होगा।

लोइना–२

(पृष्ठ ४ का शेष)

लोइना–२ के और विस्तार के लिए तेजी से काम हो रहा है। एक दूसरा बेनजाइन और गैस अलग करने वाला संयंत्र ६० हजार टन एथिलीन गैस तैयार करेगा।

निर्माण के दूसरे दौर में बनने वाले सबसे महत्वपूर्ण संयंत्रों में है फेनाइल सिंथेसिस प्लांट जिसकी मशीनें इस समय बैठायी जा रही हैं। फेनाल कृत्रिम रेशों, दवाओं, रंगों और कृमिनाशक दवाओं के लिए जरूरी रासायनिक पदार्थ है।

लोइना–२ का कैप्रोलेक्टम कारखाना कृत्रिम रेशों के लिए प्रतिवर्ष २५ हजार टन कच्चा माल तैयार करेगा।

'सूचना पत्रिका' के स्वामित्व और अन्य बातों के संबंध में विवरणः

फार्म ४

(देखिये नियम ८)

१. प्रकाशन का स्थान	नई दिल्ली
२. प्रकाशन की अवधि	मासिक
३. मुद्रक का नाम	जर्मन जनवादी गणतंत्रका भारत स्थित व्यापार-दूतावास
जाति	जर्मन
पता	१. कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली
४. प्रकाशक का नाम	ब्रूनो मे
जाति	जर्मन
पता	१. कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली
५. संपादक का नाम	ब्रूनो मे
जाति	जर्मन
पता	१. कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली
६. उन व्यक्तियों के नाम और पते जो इस पत्र के मालिक हैं, या जो इसकी कु पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार या हिस्सेदार हैं ...	जर्मन जनवादी गणतंत्र का भारत स्थित व्यापार दूतावास १. कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली

मैं, ब्रूनो, यह घोषित करता हूं कि मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है

ब्रूनो मे
प्रकाशक के हस्ताक्षर
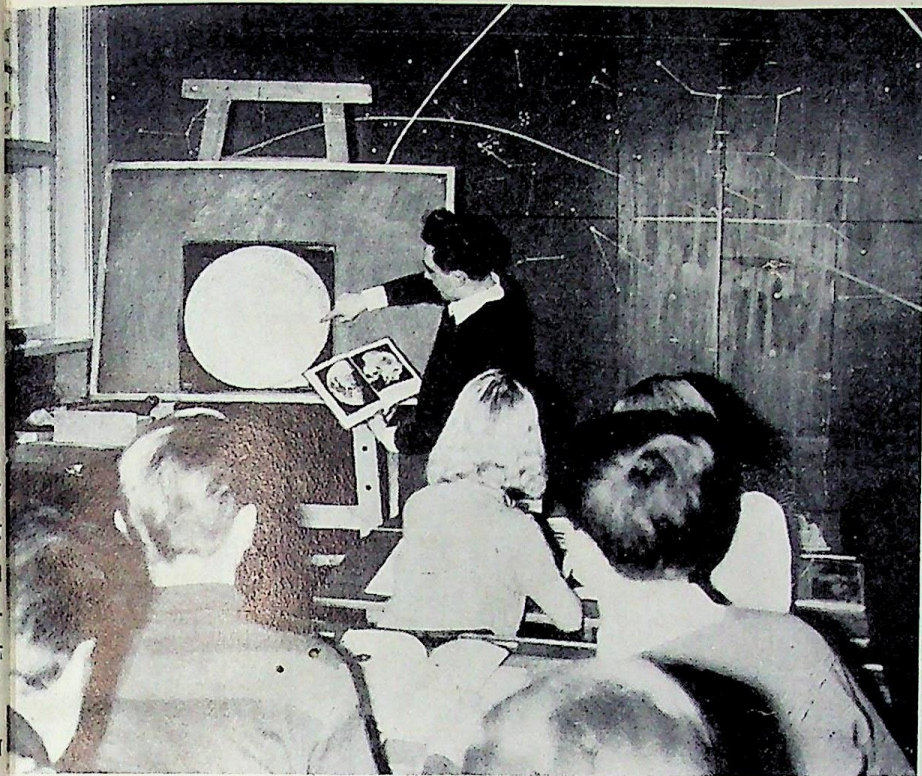
ज.ज.ग. के शिशु तथा युवक खेलकूद समारोह के दौरान शतरंज प्रतियोगिता में डूबे हुए बाल शतरंज खिलाड़ी

चन्द्रमा के धरातल पर बिना झटका खाये ल्यूना-९ का उतरना अभी तक ज. ज. ग. के स्कूलों में पढ़ाई का सबसे दिलचस्प विषय है। एक खगोल शिक्षक १०वीं कक्षा के उत्सुक विद्यार्थियों को ल्यूना–९ के उतरने के स्थान के बारे में समझा रहे हैं

हम्बोल्ट विश्वविद्यालय तथा बर्लिन के दूसरे शिक्षा संस्थानों के हजारों छात्रों ने वियतनाम में बर्बर आक्रामक युद्ध और उसमें पश्चिम जर्मनी द्वारा आक्रामण का समर्थन किये जाने के विरुद्ध गत ११ फरवरी को ज़ोरदार प्रदर्शन किया। ज.ज.ग. के अन्य नगरों में भी इसी समय फरवरी में जो वियतनाम की जनता के साथ एकता–मास के रुप में मनाया गया, इसी तरह की विशाल सभाएँ हुईं। ज. ज. ग. की ट्रेड यूनियनों ने एकता की भेंट के रुप में वियतनाम की जनता को १० लाख मार्क देने का निश्चय किया है

क्लिनगेनटाल में बर्फ से ढके हुए मार्ग-चिह्न। क्लिनगेनटाल ज.ज.ग. में शीतकालीन खेल कूद का प्रसिद्ध स्थान है

जर्मन जनवादी

के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

१९६६

वर्ष ११ | २० अप्रैल, १९६६
अंक ४

संकेत

मुख पृष्ठ : बर्लिन ब्राण्डेनबुर्ग द्वार पर वसन्त का आगमन

अंतिम पृष्ठ : बर्लिन का लाल टाउन-हाल

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये मति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, बहादुर शाह जफर मार्ग, नयी दिल्ली, द्वारा मुद्रित। संपादक : ब्रूनो मे

जर्मन जनवादी गणतन्त्र और संयुक्त राष्ट्र संघ

आवेदन-पत्र के साथ संलग्न ज. ज. ग. की सरकारी घोषणा की जर्मन प्रतिलिपि

Erklärung

Im Namen des Staatsrates der Deutschen Demokratischen Republik erkläre ich feierlich, daß die Deutsche Demokratische Republik bereit ist, die Pflichten, die sich aus der Charta der Vereinten Nationen ergeben, zu übernehmen und gewissenhaft zu erfüllen.

Der Vorsitzende des Staatsrates
der Deutschen Demokratischen Republik

/W. Ulbricht/

Berlin, den 28. Februar 1966

१ मार्च, सन् १९६६ के दिन जब जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता के लिये आवेदन-पत्र दिया, तो दुनिया का ध्यान एक बार फिर जर्मनी और इससे संबंधित आज की हकीकतों की ओर आकर्षित हुआ। इन हकीक़तों में सबसे बड़ी हकीक़त यह है कि १६ वर्षों से अधिक समय से, दो विभिन्न समाज-व्यवस्था वाले दो जर्मन राज्य, जर्मन भूमि पर मौजूद हैं।

हिटलरशाही और फासिस्तवाद की कमर-तोड़ पराजय के बाद चार बड़ी शक्तियों में पोट्स्डम संधि हुई थी और यह तय पाया था कि युद्धोत्तर जर्मनी का विकास इसी संधि की शर्तों के अनुसार होगा। विश्व महत्व की इस पोट्स्डम संधि में कहा गया था: "मित्र देश यह चाहते हैं कि जर्मन जनता को, लोकतन्त्र और शान्ति के आधार पर अपने जीवन का पुनर्निर्माण करने का अवसर दिया जाय। यदि उनके प्रयत्न इस दिशा की ओर निर्देशित किये जायें तो कालान्तर में दुनिया के स्वतन्त्र एवं शान्तिप्रिय लोगों में उनके लिए अपना स्थान पा लेना संभव हो जायेगा।..."

"लोकतंत्र और शांतिपूर्ण आधार पर जीवन" की प्राप्ति कैसे हो, इसके बारे में वे राजनीतिक एवं आर्थिक सिद्धांत पोट्स्डम संधि में ही निश्चित किये गये थे जो जर्मनी के संबंध में मित्र-राष्ट्रों का पथ-प्रदर्शन करते। इन सिद्धांतों में सबसे जरूरी सिद्धांत थे जर्मनी से सैन्यवाद तथा नात्सीवाद को जड़मूल से उखाड़ फेंकना और आर्थिक शक्ति की इजारेदारी को खत्म करना। इसके अलावा पोट्स्डम संधि में स्पष्ट शब्दों में कहा गया था कि "..... जर्मनी एक सम्पूर्ण आर्थिक इकाई रहेगा। ..." लेकिन यह एक सर्वविदित बात है कि पश्चिमी शक्तियों ने इन सिद्धांतों का न केवल पालन ही नहीं किया बल्कि उनका उल्लंघन किया। इसके परिणाम स्वरूप यदि जर्मनी दो भागों में विभाजित हुआ, और जर्मन भूमि पर दो राज्य स्थापित हुए तो इसमें जर्मन जनवादी गणतन्त्र का कोई दोष नहीं। जहां तक ज.ज.ग. का सम्बन्ध है, इस राज्य ने पोट्स्डम संधि का पूरा पूरा पालन किया और संधि की शर्तों के अनुसार अपनी राज्य सीमाओं में इसने, लोकतंत्र और शान्ति के आधार पर, नये जीवन का नवनिर्माण आरम्भ किया और इस प्रकार ज.ज.ग. इस रास्ते पर उत्तरोत्तर बढ़ता चला गया। इससे स्पष्ट होता है कि अपने जन्म से ही जर्मन जनवादी गणतंत्र अन्तर्राष्ट्रीय कानून का पालन करता चला आया है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र शुरू से ही एक ऐसी नीति पर अमल करता आया है जो संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रपत्र (चार्टर) के बिल्कुल अनुरूप है। संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता के लिए जो आवेदन-पत्र दिया गया था उसके साथ नत्थी किये गये स्मरण-पत्र में कहा गया है:

"जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, यह घोषणा करते समय कि वह संयुक्त राष्ट्र प्रपत्र में वर्णित शर्तों को मानने को तैयार है, इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहती है कि उसने अपनी इस मान्यता का ठोस प्रमाण भी अपनी परराष्ट्र नीति द्वारा पेश किया है। इसकी नीति का उद्देश्य था विश्व शान्ति की सुरक्षा करना, और आज भी इसका यही उद्देश्य है। जर्मन भूमि से अब कदापि युद्ध शुरू न हो, यह इसका

(जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार का) परम उद्देश्य है। इसीलिए इसने लगातार, ग्राम तथा पूर्ण निरस्त्रीकरण एवं अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को शान्तिपूर्ण ढंग से निपटाने का समर्थन किया है, और तमाम राज्यों के साथ, समानता के आधार पर मैत्री-पूर्ण रिश्ते कायम करने के प्रयत्न कर रही है। इसके अलावा यह उपनिवेशवाद तथा रंगभेद के प्रत्येक रूप का दृढ़ता से विरोध करती है, और 'उपनिवेशों एवं वहां की पराधीन जनता को स्वाधीनता प्रदान करने की घोषणा' का सक्रिय अनुमोदन करती है। ज.ज.ग. की सरकार की नीति आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को विकसित करने में योग दे रही है।

"जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने यह घोषणा भी की है कि वह संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रायोजित विभिन्न प्रकार की संधियों को मानने के लिए तैयार है, और उसने अपने प्रभुसत्तात्मक राज्य में (ज.ज.ग. में–सं.) इन संधियों पर अमल करने के लिए कानून भी बनाये हैं।..."

अनेक वर्षों से, जर्मन जनवादी गणतन्त्र की सरकार, संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यों को ध्यान से देखती चली आ रही है, और इसने, समय समय पर महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर अपने विचारों को पेश किया है।

यहां उन सबसे महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों को याद करना अनुचित न होगा जिन पर संयुक्त राष्ट्र संघ में बहस हुई, और जिन पर ज.ज.ग. की सरकार ने इस विश्व संगठन के सामने अपना अभिमत पेश किया। इन प्रश्नों में उल्लेखनीय हैं: ग्राम तथा पूर्ण निरस्त्रीकरण, दो जर्मन राज्यों द्वारा आणविक शस्त्रास्त्रों के परित्याग की आवश्यकता, नाटो तथा वारसा संधियों के सदस्य-देशों के बीच अनाक्रमण संधि, दो जर्मन राज्यों में सैनिक व्यय को कम करना, और निरस्त्रीकरण के आर्थिक एवं सामाजिक परिणाम इत्यादि। ज.ज.ग. ने न केवल निरस्त्रीकरण से संबंधित विशेषज्ञों की रिपोर्ट से अपनी पूर्ण सहमति ही प्रकट की, बल्कि उसने जर्मनी में तनाव कम करने के और निरस्त्रीकरण के लिए कुछ तात्कालिक उपाय भी सुझाए, और मध्य यूरोप में एक अनुशस्त्रास्त्र विहीन क्षेत्र कायम करने का सुझाव दिया। राष्ट्र संघ महासभा के १९वें अधिवेशन में, ज.ज.ग. ने, आणविक शस्त्र-अस्त्रों के प्रसार को रोकने के लिए संधि होने का समर्थन किया। इसके २०वें अधिवेशन में उसने अपने इस समर्थन को फिर दोहराया।

८ जनवरी, १९६६ के दिन संयुक्त राष्ट्र संघ की महसभा के २०वें अधिवेशन ने, 'राज्यों के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करने और उनकी प्रभुसत्ता एवं आजादी की सुरक्षा संबंधी घोषणा' अपनाई। ज. ज. ग. ने इस 'घोषणा' के समर्थन में एक विज्ञप्ति जारी की। इस विज्ञप्ति में ज.ज.ग. की सरकार ने, अपने इस दृष्टिकोण को व्यक्त किया कि प्रत्येक राज्य एवं जनगण का, जिसमें जर्मन जनता भी शामिल है, यह बुनियादी अधिकार है कि वह अपने हितों के एवं राष्ट्रीय हितों के अनुसार, किसी भी बाहरी हस्तक्षेप के बिना, अपने आन्तरिक मामलों को निपटाये।

इसी प्रकार, इस वर्ष के जनवरी मास में, ज.ज.ग. की सरकार ने, यूरोप की सभी सरकारों को ऐसे सुझाव पेश किये जिनका संबंध यूरोप की सुरक्षा से था। ये सुझाव संयुक्त राष्ट्र संघ के पूर्व पारित प्रस्ताव के अनुसार पेश किये गये।

एक अन्य बयान में, ज.ज.ग. की सरकार ने, "व्यापार एवं विकास से संबंधित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन" के विवरण का स्वागत किया। उल्लिखित सभी स्मरण-पत्रों तथा बयानों में, ज.ज.ग. ने, संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्तावों और घोषणाओं को अमल में लाने के लिए ठोस सुझाव दिये।

जर्मन जनवादी गणतन्त्र, यथाशक्ति संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न संगठनों एवं इसकी विशिष्ट संस्थाओं में सक्रिय रूप से भाग लेता है। इन संगठनों एवं संस्थाओं में से कुछ उल्लेखनीय ये हैं: यूरोप का आर्थिक आयोग, संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन, विश्व मौसम-विज्ञान संगठन, और विश्व स्वास्थ्य संगठन इत्यादि। यहां यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र संघ तथा इसकी सुरक्षा परिषद ने दक्षिणी अफ्रीका की नस्लवादी नीति के खिलाफ पास किये गये प्रस्तावों पर अमल करते हुए, जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने जून, १९६३ में ही, दक्षिण अफ्रीका के साथ व्यापारिक एवं पोत परिवहन के तमाम रिश्ते तोड़ दिये, और उसने नस्लवादी नीति की घोर निन्दा की है। इसी प्रकार १२ दिसंबर, १९६५ के दिन ज.ज.ग. की सरकार ने, रोडेशिया में नस्लवादियों द्वारा गैर-कानूनी तरीके से राजसत्ता हथियाने की जबरदस्त निन्दा की। उसका यह रवैया भी संयुक्त राष्ट्र संघ के फैसले के अनुसार ही था।

ऊपर के ये उदाहरण इस तथ्य का स्पष्ट प्रमाण है कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र, संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रपत्र में उद्घोषित जिम्मेदारियों को निबाहने के लिए तैयार भी है और समर्थ भी। इसके अलावा वह संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों की पूर्त्ति में महत्वपूर्ण योगदान भी दे सकता है।

इस सब को देखते हुए इस नतीजे पर पहुंचना कठिन नहीं है कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने, संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रवेश पाने का अधिकार अर्जित किया है। इसके बावजूद, दुनिया में कुछ ऐसे तत्व और लोग हैं जो इन ठोस तथ्यों एवं हक़ीकतों की ओर से आंखें बन्द करने का नाटक करते हैं, और जर्मन जनवानी गणतन्त्र को एक राज्य मानने से इन्कार करते हैं। उदाहरण के लिए तीन पश्चिमी शक्तियों ने, राष्ट्र संघ में प्रवेश पाने के लिए दिये गये ज.ज.ग. के आवेदन-पत्र पर उक्त बात कही है। लेकिन जीवन के ठोस तथ्यों ने इस तथाकथित दृष्टिकोण को झूठा साबित किया है, क्योंकि आज तक ज.ज.ग. ३० से भी अधिक देशों के साथ राजनयिक, कौंसली तथा अन्य सरकारी रिश्ते और ११० देशों के साथ व्यापारिक रिश्ते कायम कर चुका है। इस वास्तविकता को अब ऐसे अनेक पश्चिमी पत्रकारों ने भी स्वीकार किया है जिनका साम्यवाद से दूर का भी रिश्ता नहीं है। उदाहरण

(शेष पृष्ठ १० पर)

"...भारत सरकार एवं भारतीय जनता के आतिथ्य के लिये धन्यवाद..."

ज. ज. ग. की उप-प्रधान मन्त्री अपनी सफल भारत यात्रा से सन्तुष्ट

कम्बोदिया और बर्मा का सरकारी दौरा करने के बाद, जर्मन जनवादी गणतंत्र का एक सरकारी प्रतिनिधिमण्डल, वहां की मन्त्रि-परिषद की उपाध्यक्ष (उप-प्रधानमंत्री) डा. (श्रीमती) मारग्रेटे विट्टकोवस्की के नेतृत्व में, भारत की पांच दिवसीय यात्रा करके स्वदेश लौटा। प्रतिनिधिमण्डल भारत सरकार का अतिथि था, और यह २३ मार्च से २७ मार्च, १९६६ तक यहां रहा।

ज.ज.ग. के इस प्रतिनिधिमण्डल के अन्य सदस्य थे, डा. वोल्फगांग क्रिजेवेट्टर (ज.ज.ग. के उप विदेश मंत्री), श्री कूर्ट बोट्टगर (विदेश मंत्रालय में दक्षिण पूर्व एशिया विभाग के प्रमुख), श्री विल्ली शिल्ड (विदेश एवं अन्तर जर्मन व्यापार मन्त्रालय के महा-निदेशक) और डा. उलरिख हाउस्सलर (डा. विट्टकोवस्की के सचिव)।

अपने इस सरकारी दौरे में प्रतिनिधि-मंडल ने भारत एवं भारत सरकार के निम्न प्रतिनिधियों से बातचीत की :

उप-राष्ट्रपति, डा. ज़ाकिर हुसेन,
स्व-राष्ट्र मन्त्री, श्री गुलाज़ारी लाल नन्दा;
पर-राष्ट्र मंत्री, श्री स्वर्ण सिंह;
वाणिज्य मंत्री, श्री मनुभाई शाह;
योजना मन्त्री, श्री अशोक मेहता;
विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री, श्री दिनेश सिंह, और विदेश सचिव, श्री चन्द्रशेखर झा।

इसके अतिरिक्त, ज.ज.ग. के प्रतिनिधि-मण्डल के सदस्य अनेक संसद सदस्यों से मिले। इन मुलाकातों में भारत और ज.ज.ग. के संबंधों, संयुक्त राष्ट्र संघ में जर्मन जनवादी गणतन्त्र के प्रवेश, और अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के अन्य प्रश्नों पर बातचीत हुई।

नारी कल्याण संस्था और **भारत–ज.ज.ग. मैत्री संघ** ने, प्रतिनिधि-मण्डल के सम्मान में स्वागत समारोहों का आयोजन किया।

उपविदेश मंत्री, डा. वोल्फगांग क्रिजेवेट्टर ने सप्रू हाउस में, **इंडियन कौंसिल आफ वर्ल्ड अफेयर्स** के तत्वाधान में "ज.ज.ग. और संयुक्त राष्ट्र संघ" के विषय पर व्याख्यान दिया।

मार्च २६ के दिन, ज.ज.ग. की उप-प्रधान मंत्री, श्रीमती (डा.) विट्टकोवस्की ने एक प्रेस-कान्फ्रेंस दी। इस प्रेस-कान्फ्रेंस में भारत में उनके प्रभावों और भारतीय सरकार के साथ उनकी बातचीत के बारे में प्रश्न पूछे गये। इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए, डा. विट्टकोवस्की ने कहा कि भारत सरकार के प्रतिनिधियों के साथ हुई बातचीत से वह बहुत सन्तुष्ट हैं। ज.ज.ग. की नीति और जर्मन जनता के सामने उपस्थित समस्याओं के बारे में यहां उन्होंने काफी अच्छी समझदारी पाई। उनके मतानुसार ज.ज.ग. के सरकारी प्रतिनिधि-मण्डल के इस दौरे से भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच मित्रता के संबंध अधिक मजबूत हुए हैं। इसलिए उनकी राय में, सभी क्षेत्रों में दोनों देशों के रिश्ते बढ़ने की बहुत अच्छी संभावनायें हैं।

महान कार्य : तीसरे महायुद्ध को रोकना

भारत–ज.ज.ग. मैत्री संघ द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में बोलते हुए, डा. विट्टकोवस्की ने कहा : "हमारी उपलब्धियां तब तक सुरक्षित नहीं हो सकती जब तक आक्रमण और युद्ध संसार में जीवित रहेंगे। हम (जर्मन लोग) जानते हैं कि युद्ध क्या होता है। इसलिए हम, जिन्होंने हिटलरशाही के दमन के खिलाफ लड़ा, और ज.ज.ग. के लोग, विशेषकर हमारे नौ-जवान, मानवता के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी से भागना नहीं चाहते। हम यह इल्ज़ाम भी अपने सिर लेना नहीं चाहते (बशर्ते कोई इल्ज़ाम लगाने वाला बाकी बचे) कि नये महानाशकारी युद्ध से पहले हमने इसको रोकने के लिए ज़बरदस्त प्रयत्न नहीं किए। इसलिए हमें आज ही इस महानाश को रोकने के लिए अमल एवं ज़बरदस्त प्रयत्न करना चाहिए। इन प्रयत्नों को सफल बनाने के लिए हम विश्व की समस्त मानवता से सहयोग की अपील करते हैं। इसलिए हम अपनी सरकार का यह प्रथम और पावनतम कर्तव्य समझते हैं कि वह जर्मन भूमि से तीसरे युद्ध का श्रीगणेश न होने दे। मेरी सरकार के सभी कार्य इसी उद्देश्य एवं जिम्मेदारी से परिचालित होते हैं। अपने सतत प्रयत्नों द्वारा हम ऐसे उपायों और साधनों की तलाश में रहते हैं जिनको अपनाने से यूरोप में, और विशेषकर जर्मनी में (जो यूरोप की समस्याओं की धुरी है), एक स्थायी शान्ति एवं सुरक्षा कायम हो।

"इन सभी समस्याओं का हल तभी संभव है जब यथार्थ स्थिति पर ध्यान दिया जाय, और यह यथार्थ स्थिति यह है कि जर्मन भूमि पर आज दो विभिन्न व्यवस्थाओं के दो जर्मन राज्य मौजूद हैं। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है, जिसको कोई झुठला नहीं सकता। इसलिए प्रत्येक

ऐसा कदम जो इस हक़ीक़त को दृढ़ करने में उठाया जायगा उससे हम को बल मिलेगा, और वह यूरोप की सुरक्षा को मजबूत बनायेगा एवं जर्मन एकीकरण को निकट लायगा।

"मेरी सरकार ने आज तक १५० से अधिक सुझाव पेश किये हैं, और इनमें जर्मन जनवादी गणतंत्र द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बनने के लिए दिया गया आवेदन-पत्र नवीनतम कदम है। हाल ही में जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने जो छः-सूत्री सुझाव दिया था उसमें निम्न बातें कही गयीं थीं। दोनों जर्मन राज्य एक दूसरे को मान्यता दें, दो जर्मन राज्य आपसी झगड़े सुलझाने के लिए बल-प्रयोग का परित्याग करें, वे आणविक शस्त्रीकरण का त्याग तथा अणु-शस्त्रों के फैलाव को रोकें, और दोनों जर्मन राज्य आपसी रिश्तों को एवं अन्य राज्यों के साथ अपने संबंधों को सामान्य बना दें।

ज.ज.ग. राष्ट्र संघ में शांति को मजबूत करेगा

"हमारा यह निश्चित मत है कि ज.ज.ग. की संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता यूरोप में और समस्त संसार में शान्ति एवं सुरक्षा को मजबूत करने के पक्ष में एक महत्वपूर्ण तत्व होगा।..."

जर्मन जनवादी गणतन्त्र के उप विदेश मंत्री, डा. वोल्फगांग कीज़ेवेट्टर ने भी सप्रू हाउस में दिये गये अपने भाषण में इस तथ्य की पुष्टि की। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता के लिए दिये गये ज.ज.ग. के आवेदन पत्र को, इसकी शान्तिपूर्ण विदेश नीति और उन सतत प्रयत्नों के संदर्भ में देखना चाहिए जो ज.ज.ग. की सरकार शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को वढ़ावा देने के लिए करती रही है।

भारत से विदा

२७ मार्च को, जर्मन जनवादी गणतन्त्र के सरकारी प्रतिनिधि-मंडल ने भारत से विदा ली। विदा लेते समय, डा. (श्रीमती) मारग्रेटे विट्टकोवस्की ने, भारत के कार्यकारी प्रधान मंत्री, श्री गुलज़ारी लाल नन्दा को निम्न तार के द्वारा, अपना आभार प्रदर्शन किया :

"आपके देश से विदा होते समय, मैं उस अत्यंत मधुर आतिथ्य के लिए धन्यवाद देना चाहती हूं जो भारत में आवास के दिनों मुझे और मेरे अन्य सहयोगियों को प्राप्त हुआ।

"मुझे इस बात का विश्वास है कि हमारी आपसी बातचीत ने, हमारे दो देशों के बीच मौजूद मित्रता के संबंधों को और भी सुदृढ़ किया होगा।

"कृपा करके, श्रीमती इंदिरा गांधी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ दीजियेगा।

"मैं आपके लिए, और भारत सरकार तथा भारतीय जनता के लिए शान्ति एवं सुख समृद्धि की कामना करती हूं।..."

डा० विट्टकोवस्की
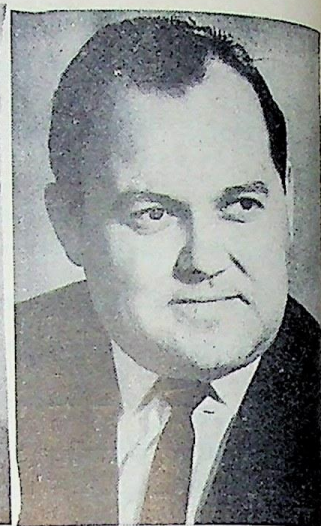
डा० कीज़ेवेट्टर

श्रीमती (डा.) ग्रेटे विट्टकोवस्की : आपका जन्म, पोज़नान में, सन् १९१० में हुआ। आप एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री हैं।

सन् १९९२ में, श्रीमती विट्टकोवस्की जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य बनी, और सन् १९३५ तक उन्होंने फासिस्त-विरोधी भूमिगत संघर्ष में सक्रिय भाग लिया। इसके बाद इनको जर्मनी छोड़ना पड़ा। फासिस्तवाद की कमर तोड़ पराजय के बाद डा. ग्रेटे विट्टकोसस्की स्वदेश लौटीं, और सन् १९४६ से, आर्थिक क्षेत्र में, राज्य के अनेक मुख्य पदों पर आपने काम किया है।

सन् १९५१ से १९५४ तक आप, 'जर्मन उपभोक्ता सहकारी संघ' की प्रधान रहीं। सन् १९५४ में आप 'राज्य योजना आयोग' की उपाध्यक्ष बनीं, और सन् १९६१ तक इस पद पर आसीन रहीं। उस वर्ष में आपको जर्मन जनवादी गणतंत्र की मन्त्रि परिषद् का उपाध्यक्ष (उप प्रधान मन्त्री) नियुक्त किया गया। सन् १९५४ से श्रीमती विट्टकोवस्की 'जर्मन समाजवादी एकता पार्टी' की केन्द्रीय कमेटी की सदस्य हैं, और आप ज. ज. ग. की 'फासिस्त विरोधी प्रतिरोध कमेटी' की सदस्य भी हैं।

श्री वोल्फगांग कीज़ेवेट्टर : आप का जन्म, जर्मनी के सुन्दर प्रदेश टूरिनजिया में, सन् १९२४ में एक मज़दूर परिवार में हुआ। इसके बाद पोट्सडाम में आपने 'राजनीति एवं विधि-शास्त्र की जर्मन अकादमी' में विश्वविद्यालय की शिक्षा पाई।

डा. वोल्फगोग कीज़ेवेट्टर, सन् १९५० से, जर्मन जनवादी गणतंत्र की विदेश सेवा में काम कर रहे हैं। सन् १९५४ से १९५७ तक आप विदेश मन्त्रालय में प्रेस-विभाग के प्रमुख रहे। सन् १९५७ से १९५९ तक आप अफ्रो-एशियाई देशों—विशेषकर दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ ज.ज.ग. के सम्बन्धों को विकसित करने के महत्वपूर्ण पद पर काम करते रहे। १९५९ से १९६१ तक श्री कीज़ेवेट्टर जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मन्त्रालय के महा-सचिव रहे और १९६१ से १९६३ तक संयुक्त अरब गणराज्य में आप ज. ज. ग. की सरकार के विशेष प्रतिनिधि एवं राजदूत के रूप में रहे।—सन् १९६४ में आप ज. ज. ग. के उपविदेश मन्त्री बने और आपको अफ्रो-एशियाई देशों के साथ सम्बन्ध विभाग सौंपा गया है।
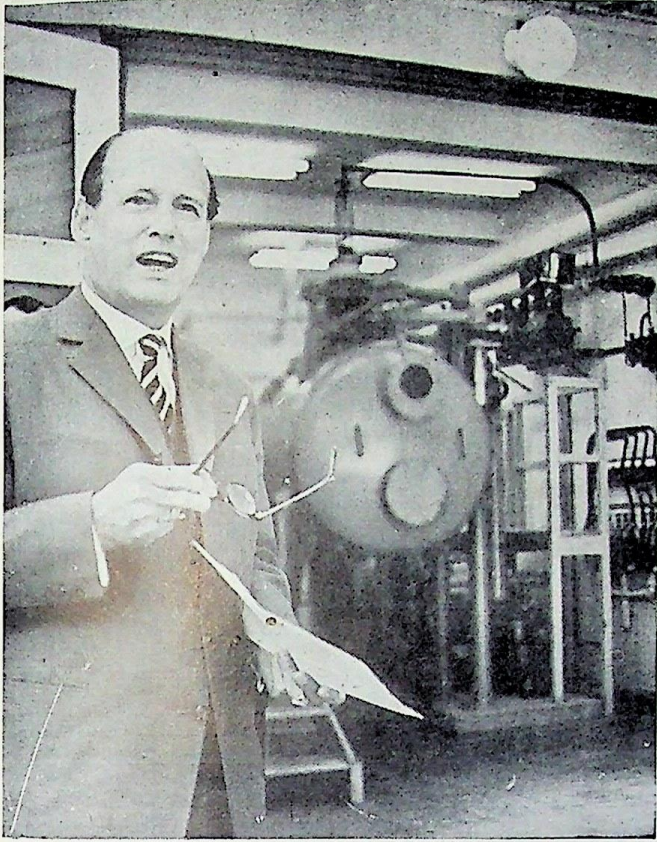
एक विश्वविख्यात जर्मन वैज्ञानिक

हास्सो मागर

ड्रेसडेन का सुन्दर नगर जो दूसरे महायुद्ध में क्षत-विक्षत एवं ध्वस्त हुआ था, अब पुनः जीवित हो उठा है। ऐतिहासिक राज-महलों और कला-वीथियों के पुनर्निर्माण के साथ ही साथ, यहां अब बहुत विकसित उद्योग एवं अनुसंधान तथा शिक्षा के अनेक महत्वपूर्ण केंद्र और संस्थान विराजमान हैं। इन सभी संस्थानों में एक इसलिए विशेष उल्लेखनीय है, क्योंकि इसके निदेशक एक असाधारण व्यक्तित्व अर्थात् मानफ्रेड वान आरडेन्ने हैं।

उक्त संस्थान का नामकरण भी इन विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक के नाम पर ही किया गया है। "मानफ्रेड वान आरडेन्ने अनुसंधान संस्थान" में मुख्यतः न्यूक्लीय भौतिकी, इलेक्ट्रानिक तथा आयनिक भौतिकी, उच्च सूक्ष्म दर्शिकी (सूपर-माइक्रोस्कोपी), मेडिकल-इलेक्ट्रानिकी और भौतिकी में उच्चस्तरीय अनुसंधान होता है। 'संस्थान' के प्रमुख (श्री आरडेन्ने), शोध के विषयों का निर्धारण करते हैं। 'संस्थान' में लगभग ३०० व्यक्ति—मर्द और औरतें—उनकी सहायता करते हैं। श्री आरडेन्ने का विशिष्ट गुण है उनकी सृजन-शील प्रतिभा। यह प्रतिभा विशेष ध्यान की अधिकारी है।

प्रोफेसर मानफ्रेड वान आरडेन्ने जब अपने ४५ वर्षीय वैज्ञानिक जीवन का सिंहावलोकन करते हैं, तो वे अपने कार्य को उन ५५० पेटेण्टों में जीवित पाते हैं, जो उनको जर्मनी और अनेक देशों में प्राप्त हैं। इन पेटेण्टों के अलावा प्रो. आरडेन्ने २६ पुस्तकों, और २६५ प्रकाशित वैज्ञानिक लेखों के लेखक भी हैं।

श्री मानफ्रेड आरडेन्ने एक अथक वैज्ञानिक और आविष्कर्ता भी हैं। सन १९२३ में, जबकि वह केवल १६ वर्ष के थे, उन्होंने बेतार-तार के क्षेत्र में एक नई खोज के लिए पेटण्ट प्राप्त किया, और इसके एक साल बाद उन्होंने रेडियो-टेलीग्राफी पर दो पुस्तकें लिखीं, जिनमें से एक के पांच संकरण छपे। प्रो. आरडेन्ने ने सन् १९३० में सहसा विश्व-ख्याति प्राप्त की। उस वर्ष उन्होंने, केवल इलेक्ट्रानिकी के आधार पर पहली बार टेलीविजन-चित्र एवं फिल्में प्रसारित करने में सफलता प्राप्त की। वैसे इस विश्व महत्व की घटना से पहले ही, सन १९२६ में वह विस्तृत-बैण्ड उच्च-आवृत्ति प्रवर्धक (वाइड बण्ड हाइ-फ्रीक्वेन्सी एमप्ली-फायर), और सन् १९२९ में हल्का अधि-मिश्रक विद्युत-अग्र (लाइट मौड्यूलेटर इलेक्ट्राड) तथा उच्च विकिरण क्षमता—(हाइ रेडियेटिंग पावर) वाला इलेक्ट्रान किरण वाल्व विकसित कर चुके थे। इसके बाद प्रोफसर आरडेन्ने ने इलेक्ट्रानिक एवं आयनिक भौतिकी को अपने गहरे अध्ययन तथा अन्वेषण का क्षेत्र बनाया।

इस गहरे अध्ययन का प्रथम परिणाम, सन १९३० में, ज्योतिमान बिन्दु टेलिविजन प्रेषी (लूमिनस स्पाट टेलीविजन ट्रांसमीटर) के रूप में प्रकट हुआ। प्रो. आरडेन्ने का, इसके बाद का सृजनात्मक कार्य इतना विस्तृत एवं बहुमुखी रहा है कि इस कार्य का संक्षिप्त सार प्रस्तुत करने के लिए भी पृष्ठों के पृष्ठ दरकार होंगे। यहां उनके कुछ महत्वपूर्ण आविष्कारों का उल्लेख करना पर्याप्त होगा।...

सन १९३४ में प्रो. आरडेन्ने ने एक्स-रे यन्त्र के लिए आकृति-संपरिवर्तक (इमेज-कनवर्टर) का आविष्कार किया, जिसका आज विश्वव्यापी इस्तेमाल हो रहा है। इसी प्रकार सन १९३६ –१९३८ में उन्होंने इलेक्ट्रानिक स्क्रीन माइक्रोस्कोप, एक्स-रे छाया माइक्रोस्कोप तथा स्टीरियो-इलेक्ट्रानिक माइक्रोस्कोप का आविष्कार किया। बाद में आविष्कारों की इस पंक्ति में उच्चतम शक्ति वाले इलेक्ट्रानिक माइक्रोस्कोप भी आ मिले हैं, और सन १९५७ में उन्होंने अणुसंहित-वर्णक्रम लेखन (मालिक्यूल-मास्स-स्पेक्ट्रोग्राफी) का श्रीगणेश किया। कालान्तर में प्रो. आरडेन्ने के इन आविष्कारों ने, प्रकाश के भौतिक रहस्यों से जिनका संबंध था, इलेक्ट्रानिकी, भौतिकी और धातु-विज्ञान को डाक्टरी के मानव कल्याणकारी पेशे की सेवा में लाया। उदाहरण के लिए, सन १९५७ में श्री आरडेन्ने ने जठर-आंतर पथ (गैस्ट्रो इन्टस्टाइनल ट्रैक्ट) के लिए एक बहुत छोटा निगला जाने वाला प्रपित्र (ट्रांसमीटर), और हाल ही में उन्होंने कैंसर जैसे भयंकर रोग को (उद्गम स्थान से) अन्यत्र फैलने से रोकने के लिए एक नई पुरअसर चिकित्सा विधि का प्रदर्शन किया। इस चिकित्सा का नाम है "बहुमुखी कैन्सर रसायनी चिकित्सा" (मल्टी-स्टेप कैन्सर केमोथिरेपी)।

प्रोफ़ेसर मानफ्रेड वान आरडेन्ने ने अपना शोध संस्थान पहले पश्चिम बर्लिन में स्थापित किया था। लेकिन सन १९५५ में वह वहां से ड्रेस्डेन (जर्मन जनवादी गणतंत्र) में चले आये और यहीं उन्होंने अपना उक्त नया शोध-संस्थान कायम किया। यह 'संस्थान' प्राकृतिक सौन्दर्य की गोद में बसा हुआ है। आधुनिकतम वास्तुकला के कई भवनों पर आधारित यह 'संस्थान' नवीनतम वैज्ञानिक यन्त्रों से सुसज्जित है। इसके सूचना केंद्र में, विश्व भर की नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकी गतिविधि, वर्गीकृत प्रणाली के आधार पर संचित की जाती है, जो जरूरत पड़ने पर तत्काल उपलब्ध होती है। 'संस्थान' के वर्कशाप तथा प्रयोगशालाएं, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विभिन्न विकासशील उद्योगों के साथ बराबर संपर्क बनाये रखती है। इस प्रकार यह 'संस्थान' ज.ज.ग. के तुरन्त औद्योगीकरण में महत्वपूर्ण योग दे रहा है।

पिछले वर्ष में, इस 'संस्थान' ने अपनी दसवीं वर्षगांठ मनाई। इस अवसर पर प्रकाशित एक विशेष प्रकाशन में, जर्मन जनवादी गणतन्त्र की सरकार द्वारा 'संस्थान' को दी गई प्रभूत आर्थिक तथा अन्य सहायता का उल्लेख किया गया है।

अपनी अद्भुत वैज्ञानिक उपलब्धियों के लिए, सोवियत संघ और ज.ज.ग. ने, प्रोफेसर मानफ्रेड वान आरडेन्ने को उच्चतम पुरस्कारों एवं पदकों से सम्मानित किया है। उनके कार्य तथा कृतियों को आधुनिक युग के प्रकाण्ड वैज्ञानिक बड़े सम्मान की दृष्टि से देखते हैं।...

कुछ समय पहले, प्रो. आरडेन्ने ने, अपनी आत्म-कथा लिखी है जिसमें उन्होंने अपने आज तक के जीवन का आधा भाग लिखा है। इसमें नौजवान पीढ़ी को संबोधन करते हुए उन्होंने लिखा है: "अपने जीवन को काल्पनिक सपनों में व्यर्थ मत जाने दो, बल्कि अपने इन सपनों में जीवन-संजीवनी भर दो।..." यह उक्ति, हमारे युग के इस महान जर्मन वैज्ञानिक के व्यक्तित्व के विकास को ही चरितार्थ नहीं करती, बल्कि उनके आदर्शों एवं सिद्धांतों को भी उजागर करती है।...मानवता का एक सुन्दर सपना है खुशहाल जीवन और उज्जवल भविष्य का निर्माण करना। प्रो. मानफ्रेड वान आरडेन्ने और उनके 'ड्रेस्डेन संस्थान' में काम करने वाले उनके सहयोगी, मानवता के इस सुन्दर सपने को साकार करने की तपस्या कर रहे हैं।...

अपने अनुसन्धान केन्द्र में कार्यरत प्रोफ़ेसर आरडेन्ने
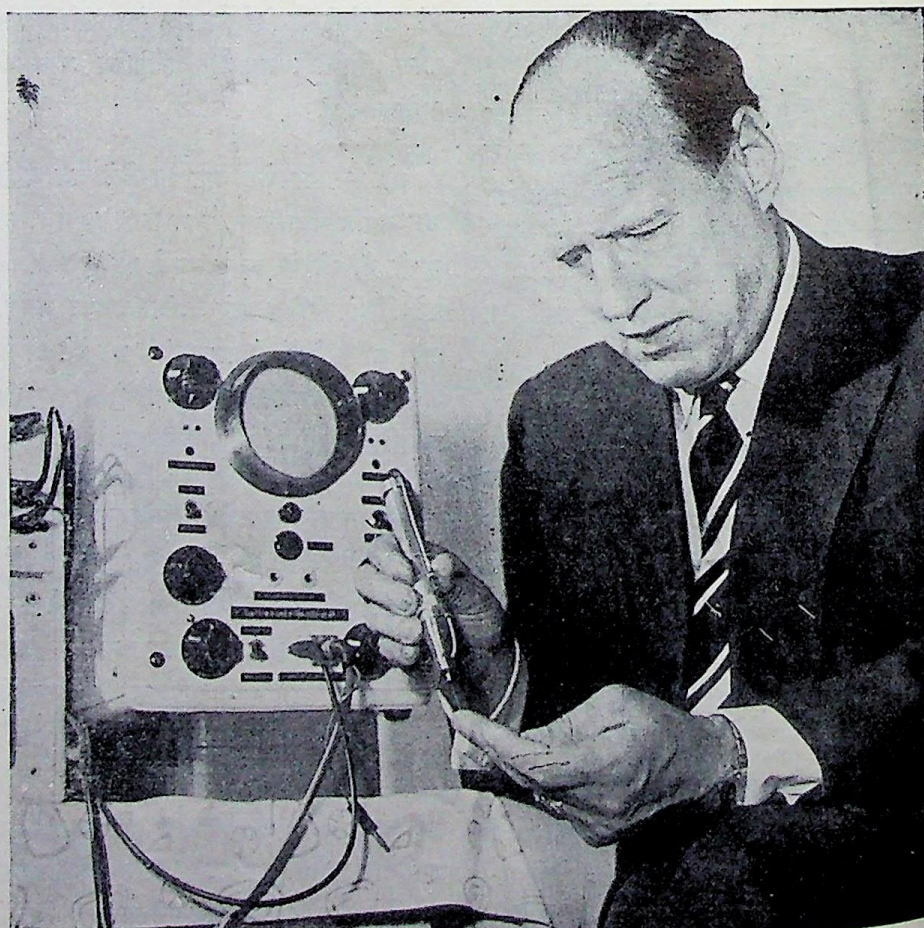
समाजवादी एकता पार्टी के २० साल

इस वर्ष की २१ अप्रैल के दिन, **जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी** अपने जीवन के २० वर्ष पूरे करेगी। यह पार्टी जर्मन जनवादी गणतंत्र की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है जिसकी सदस्य संख्या लगभग १७ लाख है २० वर्ष पहले, इस पार्टी की स्थापना से, जर्मनी के इतिहास में एक नया अध्याय आरम्भ हुआ। 'समाजवादी एकता पार्टी' ने एक ऐसी राजनीतिक शक्ति एवं वातावरण पैदा किया जिसने वर्तमान समाजवादी जर्मनी के लिये शांति-प्रिय और लोकतंत्रात्मक विकास-पथ पर बढ़ना संभव बना दिया।

समाजवादी एकता पार्टी का जन्म हुआ जर्मनी की दो शक्तिशाली पार्टियों--कम्यूनिस्ट पार्टी और सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी--के आपसी विलय से। जिस दिन अप्रैल, सन् १९४६ में आयोजित दो पार्टियों के एकता सम्मेलन में कम्युनिस्ट पार्टी के नेता श्री विलहेल्म पीक और सोशल डेमोक्रैट नेता श्री ओट्टो ग्रोटवोल ने हाथ मिलाया, उस दिन जर्मनी के एक भाग में (पूर्वी जर्मनी में——सं०) बहुत समय से विभाजित जर्मन मज़दूर वर्ग एकता के सूत्र में बन्ध गया। 'एकता पार्टी' के झण्डे पर मिले हुये हाथों का जो चिन्ह है वह मज़दूर वर्ग की एकता और शान्ति, लोकतंत्र एवं समाजवाद के लिये संघर्ष- रत प्रगतिशील जनता का प्रतीक है। जर्मन मज़दूर वर्ग के विभाजित होने के कारण ही, जर्मन म्रसाज्यवाद, जर्मनी की नवम्बर, १९१८ की क्रांति को कुचलने में समर्थ हुआ था। इसी विभाजन का यह भंयकर नतीजा भी निकला कि जर्मनी में फासिस्तवाद, राजसत्ता हथियाने में सफल हुआ। फासिस्तवाद द्वारा चलाये गये दमनचक्र की कालरात्रि में, जर्मनी के सोशल-डेमोक्रैट, कम्युनिस्ट, ईसाई तथा अन्य लोकतंत्री तत्व अपने कटु-अनुभवों को झेल कर इस अनिवार्य परिणाम पर पहुंचे कि लोकतंत्रात्मक सिद्धान्तों पर जर्मनी के पुर्ननिमाण के लिये मज़दूर वर्ग की एकता और समानता के आधार पर अन्य जनवादी शक्तियों के साथ इसका दृढ़ सहयोग पहली तथा अनिवार्य शर्त है।

जर्मनी के मज़दूर वर्ग की दो प्रमुख पार्टियों के नेता विलहेल्म पीक (बायें) और ओट्टो ग्रोटवोल आपस में हाथ मिला रहे हैं

इसी मान्यता तथा सूझ-बूझ का यह परिणाम निकला कि जर्मन समाजवादी एकता पार्टी ने, सभी हिटलर-विरोधी एवं फासिस्त-विरोधी तत्वों को, "जनवादी जर्मनी का राष्ट्रीय मोर्चा" (नेशनल फ्रण्ट आफ डेमोक्रेटिक जर्मनी) में शामिल होने का निमन्त्रण दिया और उनसे सहयोग की अपील की। इस 'राष्ट्रीय मोर्चा' में जर्मन जनवादी गणतंत्र की पांचों राजनीतिक पार्टियां शामिल हैं जिनके नाम ये हैं: समाजवादी एकता पार्टी, क्रिस्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन, नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी आफ जर्मनी, लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी और डेमोक्रेटिक पेज़ण्ट्स पार्टी आफ जर्मनी।

'जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी' के नेतृत्व में, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, जीवन के सभी क्षेत्रों में ज़बरदस्त सफलता प्राप्त की है। इस सफलता का थोड़ा बहुत अनुमान इस तथ्य से मिल सकता है कि केवल १ करोड़, ७० लाख आबादी का एक छोटा देश होने पर भी ज. ज. ग. की गणना दुनिया के पहले १० ऐसे देशों में होती है जिनका औद्योगिक उत्पादन सबसे ज्यादा है। अपने अस्तित्व के पहले १५ वर्षों में (१९४९-१९६५) ज. ज. ग. ने अपना औद्योगिक उत्पादन चार गुना और कृषि उत्पादन दुगुना कर दिया। इस तरह उसने जर्मनी में वास्तविक आर्थिक चमत्कार की उपलब्धि की।

'समाजवादी एकता पार्टी' ने, ज.ज.ग. की एक ऐसी नई विदेश नीति को विकसित करने में महत्व और सहयोग दिया जो विश्व जनों में शान्ति एवं मैत्री के सिद्धान्तों पर आधारित हो, और जो फासिस्त जर्मनी द्वारा किये गये अमानुषिक अत्याचारों, आक्रामक नीति और तबाही की बदनामी को धो सके। इसी शांति और मैत्रीपूर्ण विदेश नीति का अनुसरण करके ज. ज. ग. आज एक ऐसा प्रभुसत्तात्मक राज्य बन चुका है जिसने विश्व के सभी शान्ति प्रिय एवं लोकतंत्रात्मक देशों में अपने लिये एक सम्मानित स्थान बना लिया है। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता के लिये ज. ज. ग. द्वारा हाल ही में दी गई अर्ज़ी को विश्व व्यापी समर्थन मिला है।

पश्चिमी जर्मनी में हाल ही के हालात को देखते हुये 'समाजवादी एकता पार्टी'

उन लगातार कोशिशों का ज़बरदस्त महत्व है जो यह पार्टी, जर्मन भूमि से तीसरा युद्ध रोकने के लिये कर रही है। ज. ज. ग. की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी होने के नाते 'समाजवादी एकता पार्टी' जर्मन समस्या के शान्तिपूर्ण हल के लिये एक अहम भूमिका अदा कर रही है। जर्मनी में शान्ति स्थापना के लिये, इसके एकीकरण के लिए और दूसरे महायुद्ध के अवशेषों को समाप्त करने के लिये ज. ज. ग. ने जो सुझाव पेश किये हैं, उनके लिये इसको विश्वव्यापी प्रशंसा मिली है। इन सुझावोंमें, 'समाजवादी एकता पार्टी' के प्रथम सचिव, एवं ज. ज. ग. की राज्य परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त का वह छः सूत्रीय कार्यक्रम विशेष उल्लेखनीय है जो उन्होंने १९६६ के नव वर्ष सन्देश के रूप में, पश्चिमी जर्मनी की संसद को भेज दिया (इस कार्यक्रम के लिये देखिये **सूचना पत्रिका** का फरवरी १९६६ का अंक--सं.)।

इसके अलावा, समाजवादी एकता पार्टी ने, पश्चिमी जर्मनी की एक प्रमुख राजनीतिक पार्टी 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी' को हाल ही में जो **खुला पत्र** भेजा है, लोकतंत्र में आस्था रखने वाले विश्व के समस्त लोगों ने मुक्त हृदय से उसका स्वागत किया है। इस खुले पत्र का मूलाधार यह सूझबूझ है कि जर्मनी की सब से मज़बूत पार्टियां होने के नाते जर्मनी की 'समाजवादी एकता पार्टी' और 'जर्मनी की सोशल डैमोक्रेटिक पार्टी' को, आपसी मतभेदों के बावजूद जर्मनी में युद्ध और शान्ति का बुनियादी मसला हल करने के लिये कोई रास्ता जरूर तलाश करना चाहिये। 'समाजवादी एकता पार्टी' ने अपने खुले पत्र में, पश्चिमी जर्मनी की 'सोशल डैमोक्रिटेक पार्टी' के साथियों के सामने यह सुझाव रखा है कि दो जर्मन राज्यों की सरकारों के बीच बातचीत, शान्ति संधि पर हस्ताक्षर और जर्मनी का चरित्र कैसा हो इत्यादि, जैसे सवालों पर आपस में विचार विनिमय शुरू किया जाये।

'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' के आम सदस्यों में उक्त खुले पत्र के प्रति जो सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रिया प्रकट हुई, और इस पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने पत्र का जो उत्तर भेजा है, इन से स्पष्ट होता है कि कई मतभेदों के होते हुये भी, जर्मनी के मजदूर वर्ग और तमाम प्रगतिशील शक्तियों--विशेषकर 'समाजवादी एकता पार्टी' तथा 'सोशल डैमोक्रैटिक पार्टी' के बीच बातचीत, न केवल आवश्यक ही है, बल्कि संभव भी है, और यह शुरू भी हो चुकी है।

शान्ति के लिये 'समाजवादी एकता पार्टी' की यह नवीनतम पहल, इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि यह पार्टी जर्मनी की समस्त जनता के राष्ट्रीय हितों के लिये काम करती है। इस लिये यह कहना अनुचित न होगा कि जर्मन जनता ने, अपनी इस राष्ट्रीय आकांक्षा को पूरा करने के लिये कि एक शान्तिपूर्ण, जनवादी, खुशहाल अविभाजित (एकीकृत) जर्मनी बन जाय, २० वर्षीय 'समाजवादी एकता पार्टी' में अपना सही प्रतिनिधि पाया है।

संयुक्त राष्ट्र संघ और ज. ज. ग.

(पृष्ठ ४ का शेष)

के लिए सुप्रसिद्ध अमरीकी अखबार 'न्यूज़ वीक' ने १४ मार्च १९६६ के दिन लिखा : "...यद्यपि पूर्वी जर्मनी १७० लाख लोगों का देश है, जिसके पास अपनी सेना, मुद्रा, सरकार तथा वे सभी चीज़ें हैं जो एक प्रभुसत्तात्मक राज्य के लिए जरूरी है। फिर भी पश्चिमी जर्मनी और इसके सहयोगियों की नज़र में यह (पूर्वी जर्मनी–स०) सोवियत अधिकृत जर्मन सीमा का एक बड़ा टुकड़ा मात्र है। लेकिन यह दृष्टिकोण, दिन प्रतिदिन विवादस्पद बनता जा रहा है।..." इस टिप्पणी के बाद, बोन (पश्चिमी जर्मनी की राजधानी–स०) स्थित अपने सूचना ब्यूरो के प्रमुख, श्री ब्रूस वान वोक्रस्ट (जो ज.ज.ग. की यात्रा कर आया है) के रिपोर्ट का हवाला देते हुए 'न्यूज वीक' ने लिखा है : "सचाई तो यह है कि पूर्व में रहने वाले जर्मनवासी कई बातों में पश्चिमी जर्मनी में रहने वालों से अधिक जर्मन हैं। और उनका देश, चान्सेलर लुडविग एरहार्ड के अमरीकीकरण हुए फेडरल गणराज्य (प. जर्मनी–सं.) की तुलना में, द्वितीय महायुद्ध के पूर्व के दशकों के स्वाभाविक जर्मनी के साथ आश्चर्यजनक हद तक साम्य रखता है।"

इन तथ्यों के अलावा, यह एक बहुत महत्वपूर्ण तथ्य है कि संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता का प्रश्न इस बात से जुड़ा हुआ नहीं है कि प्रार्थी-राज्य, राष्ट्र संघ के सदस्य राज्यों द्वारा मान्यता प्राप्त है या नहीं। इस बात को, संयुक्ट राष्ट्र संघ के महासचिव ने, सन् १९५० में ही स्पष्ट किया था। उन्होंने इस स्पष्टकरण में कहा था :

१. कोई सदस्य (राज्य), किसी अन्य ऐसी सरकार क प्रतिनिधि को स्वीकार करने के हक़ में वोट दे सकता है, जिसको उस (राज्य) ने मान्यता नहीं दी है, अथवा जिसके साथ उसके राजनयिक संबंध नहीं हैं ;

२. इस मतदान का अर्थ न मान्यता देना है और न ही राजनयिक मान्यता प्रदान करने की तैयारी।..."

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, राष्ट्र की सदस्यता के लिए आवेदन-पत्र देते समय इस बात को ध्यान में रखा था कि आज दो प्रभुसत्तात्मक जर्मन राज्य मौजूद हैं। इस लिए ज. ज. ग. सम्पूर्ण जर्मनी का मात्र प्रतिनिधि होने का दावा नहीं करता, बल्कि दोनों जर्मन राज्यों को राष्ट्र संघ का सदस्य बनाये जाने का समर्थन करता है। इस सिलसिले में उक्त स्मरण-पत्र में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है :

"दो जर्मन राज्यों के बीच सामान्य संबंधों का कायम होना, उनके शान्ति-पूर्ण एकीकरण के लिए अनिवार्य शर्त है। इसलिए जर्मन जनवादी गणतन्त्र की सरकार, पश्चिम जर्मन सरकार की, राष्ट्र संघ प्रपत्र के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों के बावजूद, यह राय रखती है कि पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य को विश्व संगठन का सदस्य बनाना, उक्त शान्तिपूर्ण एकीकरण में सहयोगी सिद्ध होगा। इसके अलावा, यह दो जर्मन राज्यों के बीच सद्भावना बढ़ायेगा, और इस तरह वह एक दूसरे के निकटतर होते जायेंगे। अन्त में दोनों राज्यों का एक महासंघ (कान्फेडेरेशन) वजूद में आयेगा जिससे विभाजित जर्मन जनता पुनः एक हो जायेगी। इसके साथ ही साथ, ऐसे हालात भी पैदा किये जा सकते हैं जिन से मध्य यूरोप में वर्तमान तनावों को खत्म करके यूरोप की सुरक्षा की गारण्टी भी दी जा सकती है।..."

जर्मन जनवादी गणतंत्र के सबसे अधिक छपने वाले विश्वप्रसिद्ध दैनिक **नूएस डूइत्शलैण्ड** के ८ सितम्बर, १९६५ के अंक में प्रोफ़ेसर क्लाउस फूक्स ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण लेख लिखा है । इसके महत्व को देखकर **सूचना पत्रिका** के पाठकों के लिये इस लेख का सारांश हम हिन्दी मे प्रस्तुत कर रहे हैं ।

—सं०

पश्चिमी जर्मनी

अणु-बम बनाने की योजनायें

प्रो. क्लाउस फूक्स

पश्चिमी जर्मनी में अणु-बम बनाने के लिये आवश्यक, जानकारी नाभिकीय शक्ति संयन्त्र (न्यूक्लियर पावर प्लांट) का एक अभिन्न अंग है । इसलिये बम उत्पादन की एक खास मजिल तक वहां के लोगों को यह कह कर भुलावे में डाला जा सकता है कि यह (पावर पलांट–सं.) "केवल शान्तिपूर्ण उद्देश्यों के लिये है" । लेकिन सैनिक कार्यों के लिये इसके संभावित प्रयोग की दृष्टि से, यह बात काफी खटकती है कि पश्चिमी जर्मनी में उक्त नाभिकीय शक्ति संयंत्र की सभी मंज़िलों का निर्माण अपने हाथ में लेने की कोशिश हो रही है और इस निर्माण का आरम्भ एल्वेल्लर में कच्चे यूरेनियम के शोधन से शुरू हुआ है । 'पश्चिमी जर्मनी का वैज्ञानिक अनुसंधान का फेडरल मन्त्रालय' अपने १ हज़ार मिलियन डूइत्श मार्क (१ मिलियन =१० लाख) के कुल बजट में से ४० प्रतिशत रक़म "नाभिकीय ऊर्जा का प्रयोग और अनुसंधान के लिये" खर्च करता है ।

पश्चिम जर्मन सरकार के इस रवैये से, और पं. जर्मनी को समय समय पर पहले ब्रिटेन और फिर मुख्यतः अमरीका ने सरकारी स्तर पर दी गई सहायता के परिणामस्वरूप पं. जर्मनी के 'ज़ीमेन शूकर्ट', 'ब्राउन बोवेरी' तथा 'क्रुप' आदि जैसे इजारेदार ट्रस्ट, अभिक्रियक (रिएक्टर) निर्माण में काफी माहिर हो गये हैं । ये ट्रस्ट अब इस स्थिति में हैं कि ये अपने साधनों से मध्यम क्षमता वाले अभिक्रियक बना सकते हैं । इस वर्ष फरवरी मास में फेडरल मन्त्रालय ने अपने महा निदेशक, श्री प्रेट्श द्वारा यह घोषणा की है कि पश्चिमी जर्मनी १९६८ तक अभिक्रियक निर्यात करने की स्थिति तक पहुंच जायेगा ।

पश्चिमी देशों को धमकियां

अभिक्रियक-उद्योग में इस आत्म निर्भरता का अर्थ होगा कि पश्चिमी जर्मनी अपने मित्र देशों (पश्चिमी देशों) के थोड़े बहुत अंकुश एवं नियन्त्रण से भी आज़ाद हो जायेगा । इस संदर्भ में पिछले वर्ष के मई मास में हुई 'अणु-आयोग' की बैठक में प्रोफेसर विन्नाकर का बयान ध्यान देने योग्य है जिसमें उन्होंने 'यूरेटम' के साथ पं. जर्मनी के रिश्तों पर फिर से विचार करने की मांग की है । प्रोफेसर महोदय 'जर्मन अणु फोरम' के प्रधान, 'जर्मन अणु आयोग' के उपाध्यक्ष और 'फार्बवेरके होएखस्ट' ट्रस्ट के बोर्ड के अध्यक्ष हैं ।

इसी महिने में 'पश्चिमी यूरोप संघ' ('यूरेटम' जिसका अंग है) की एक बैठक में पं. जर्मनी के शासक दल के एक संसद सदस्य श्री कुलीजिग ने 'पश्चिमी यूरोप संघ' के सुरक्षा आयोग' की 'यूरेटम' नीति के खिलाफ जहर उगला । . . . यू. पी. आई. समाचार ऐजेन्सी के अनुसार उक्त संसद सदस्य ने कहा: "यूरोप में खण्डनीय सामग्री का जो सैनिक भण्डार है उस पर किसी तरह का नियन्त्रण नहीं है । पश्चिमी यूरोप के देशों में, जिसमें फेडरल रिपब्लिक (पश्चिमी जर्मनी—सं.) भी शामिल है, प्लूटोनियम का वार्षिक उत्पादन १,२०० किलोग्राम है । इस उत्पादन से २०० अणुबम बनाये जा सकते हैं । इसके अलावा, 'पश्चिमी यूरोप संघ' संधि के दायित्वों को पूरा किया जाना चाहिये । फ्रांस पर आज सिद्धान्ततः आणविक शस्त्र नियंतण लागू है,

भारत और ज.ज.ग.

निम के

↑ १

२ ↓
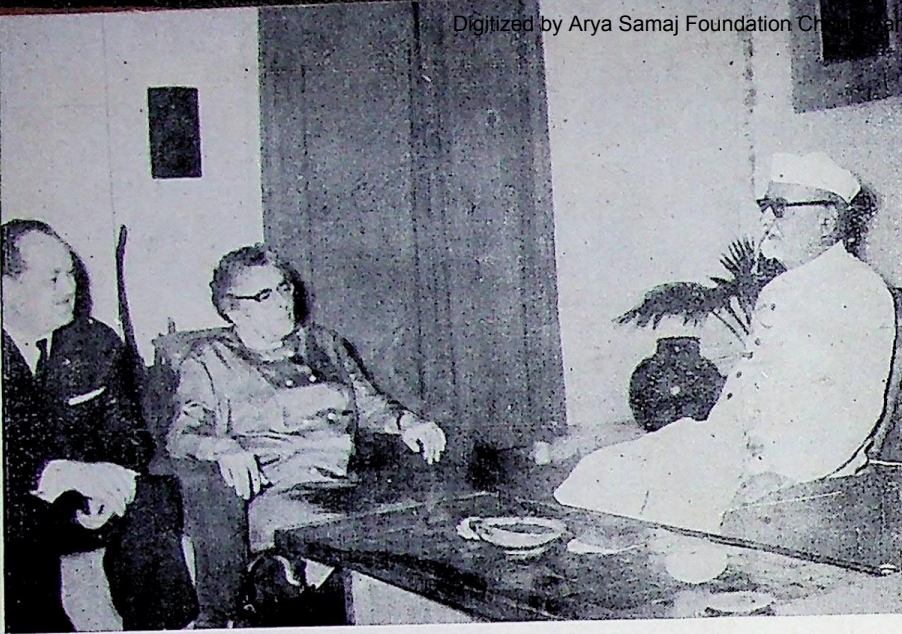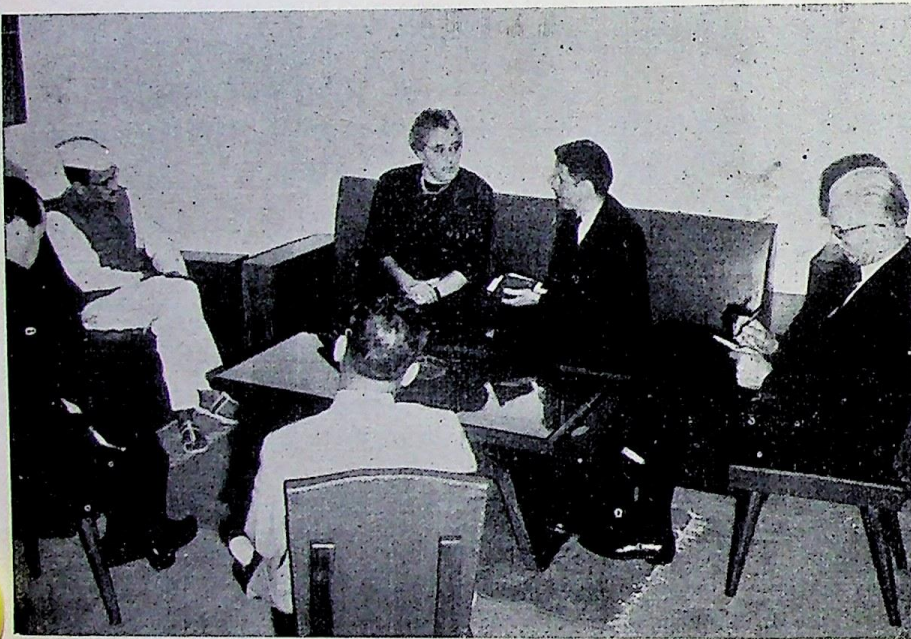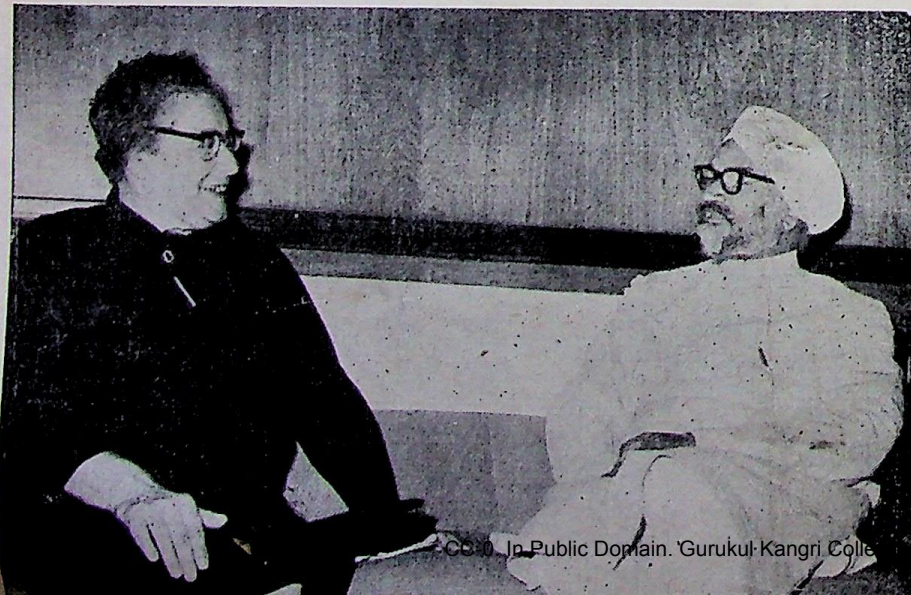
ज र्मन जनवादी गणतंत्र का एक सरकारी प्रतिनिधि-मण्डल २३ मार्च को, वहां की उप प्रधान मंत्री, डा. मारगरेट विट्टकोवस्की के नेतृत्व में भारत आया और २७ अप्रैल तक भारत सरकार का अतिथि रहा। आवास के दिनों में प्रतिनिधि-मण्डल के सदस्य भारत सरकार के प्रतिनिधियों, संसद सदस्यों एवं अन्य अनेक राजनीतिज्ञों से मिले, और कई महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार विनिमय किया।

↓ ५

३ ↓

.ग.

मके सहयोगी

↓४

६↑

७↓

८↓

↓५
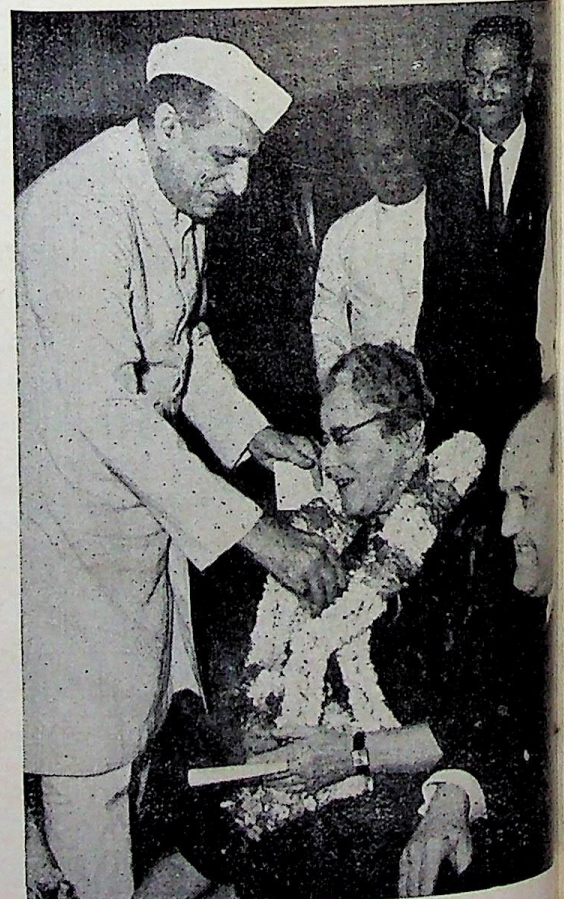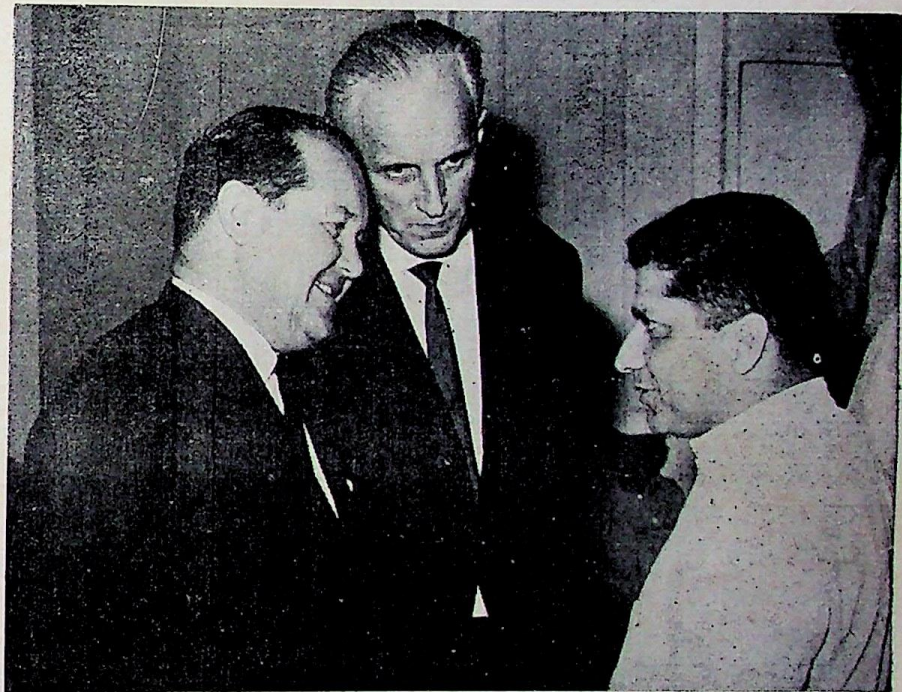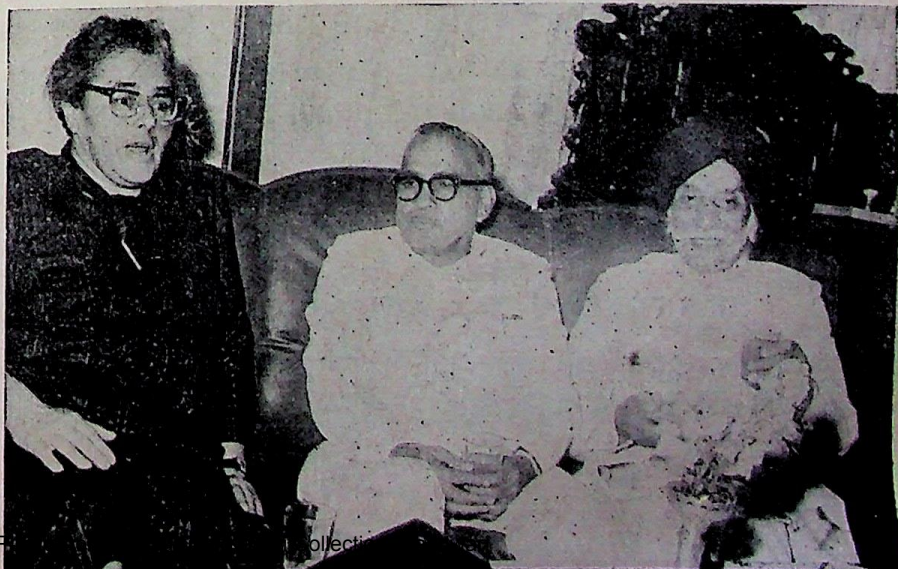
चित्र १ : भारत के उप-राष्ट्रपति डा. ज़ाकिर हुसैन के साथ डा. विट्टकोस्की और ज.ज.ग. के उप विदेश मंत्री डा. बोल्फगांग कोज़ेवेट्टर। चित्र २ और ३ : डा. (श्रीमती) विट्टकोवस्की गृहमंत्री श्री गुलज़ारी लाल नन्दा, और विदेश मंत्री, सरदार स्वर्णसिंह के साथ चित्र ४ : सप्रू हाउस में "ज.ज.ग. और राष्ट्र संघ" के विजय पर बोलते हुये डा. कोज़ेवेट्टर। सरदार निहाल सिंह इस मीटिंग के अध्यक्ष थे। इनके बाईं ओर भारत में ज.ज.ग. व्यापार दूतावास के प्रमुख, श्री हरबर्ट फिशर बैठे हैं। चित्र ५ : 'भारत ज.ज.ग. मैत्री संघ' द्वारा आयोजित एक सार्वजनिक सभा में दिल्ली के महापौर श्री नूर उद्दीन अहमद, डा. विट्टकोवस्की को पुष्प-माला पहना कर स्वागत कर रहे हैं चित्र ६ : वाणिज्य मंत्री, श्री मनुभाई शाह के साथ, भारत-ज.ज.ग. के संबन्धों पर विचार विनिमय करते हुये प्रतिनिधि-मण्डल। चित्र ७ : विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री दिनेश सिंह के साथ बातचीत करते हुये डा. कोज़ेवेट्टर तथा श्री फिशर चित्र ८ : लोक सभा में, ज.ज.ग. के प्रतिनिधि-मण्डल के सम्मान में दिये गये एक भोज के अवसर पर श्रीमती (डा.) विट्ट-कोवस्की, लोकसभा के अध्यक्ष सरदार हुकुम सिंह और केशव देव मालवीय के साथ

लेकिन ब्रिटेन पर ऐसा कोई बन्धन नहीं ।–" पश्चिमी जर्मनी के ऐसे प्रवक्ताओं के उक्त कथन का यही अर्थ है कि पश्चिमी जर्मनी कल यही कहेगा कि फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन दोनों को अपना प्लूटोनियम उत्पादन 'पश्चिमी यूरोप संघ' के नियन्त्रण में दे देना चाहिए । यदि वे ऐसा नहीं करते तो पं. जर्मनी भी इस नियंत्रण से किसी तरह से अपने आपको छुड़ा लेगा ।

पश्चिमी जर्मनी अणुबम बनाने की क्षमता रखता है । इस तथ्य को दुनिया के दो बहुत बड़े अणु वैज्ञानिकों ने सप्रमाण सिद्ध किया है । ये वैज्ञानिक हैं 'सोवियत अणु समिति' के उपाध्यक्ष, प्रोफेसर येमेलियानोफ, और 'अमरीकी अणु आयोग' के अध्यक्ष एवं नोबेल पुरुस्कार विजेता प्रोफेसर सीबोर्ग ।

इन स्पष्ट प्रमाणों के बावजूद, पश्चिमी जर्मनी के अखबारों से पता चलता है कि कार्लसरूहे में स्थित 'नाभिकीय अनुसंधान केन्द्र' के प्रबन्धकों ने मेरे इस आरोप का "स्पष्ट खण्डन" किया है कि सन् १९६८ में कार्लसरूहे का 'नाभिकीय अनुसंधान केन्द्र' अणु बमों के लिये शुद्ध प्लूटोनियम पैदा करने के योग्य हो जायेगा ।

शान्तिपूर्ण प्रयोगों के लिये नहीं, सैनिक उद्देश्यों के लिये

उक्त 'नाभिकीय केन्द्र' का यह खण्डन तथ्यों को झुठला नहीं सकता ।––पं. जर्मनी 'पश्चिमी यूरोप संघ' के देशों के एक संयन्त्र के निर्माण में शामिल है । यह संयन्त्र "यूरोकैमी" द्वारा बेलजियम में बनाया जा रहा है । इसलिये कार्लसरूहे के 'नाभिकीय अनुसन्धान केन्द्र' के लिये उन नई एवं आधुनिक प्रक्रियाओं की ओर ध्यान देना अधिक हितकर होता जिनको इसने आज तक नज़रअन्दाज़ किया है । इस 'केन्द्र' ने ऐसा करने की बजाय एक अलग और स्वतंत्र प्लांट बनाया है, जो खर्च की दृष्टि से बहुत मंहगा है, लेकिन जो सैनिक उद्देश्यों के लिये आवश्यक है ।

कार्लसरूहे के उक्त संयंत्र (प्लांट) पर ब्रिटेन के एक प्रसिद्ध मासिक "न्यूकलियर इंजीनियरिंग" ने टिप्पणी करते हुए अपने मार्च, १९६५ के अंक में लिखा है कि यह स्पष्ट है कि इस संयन्त्र को पश्चिमी जर्मनी के उन प्रभावशाली तत्वों का समर्थन और सहयोग प्राप्त है जो संकुचित राष्ट्रवाद से प्रेरित हैं ।

पश्चिमी जर्मनी अणुबम बनाने के जितना निकट पहुंचता जा रहा है, उसके लिये "शांतिपूर्ण प्रयोग" का ढोंग भरना भी उतना ही कठिन होता जा रहा है । पश्चिमी जर्मनी के जूलिख नामक स्थान में समस्थानिकों (आइसोटोप्स) को अलग करने के लिये गैस अपकेन्द्रित (सेन्ट्रिफूग) कार्य-विधि पर जब अचानक रहस्य का पर्दा डाला गया, तो हम में इस रहस्य को जानने की उत्सुकता जाग पड़ी । हमारी इस उत्सुकता का समाधान किया सुप्रसिद्ध अणुवैज्ञानिक प्रोफेसर स्टीन-बेक ने । उन्होंने मुझे यह समझाया कि उक्त विधि, प्लूटोनियम समस्थानिकों को अभि-क्रियक समस्थानिकों (आइसोटोप्स) से जुदा करने के लिये बहुत उपयोगी विधि है । इसके अलावा, इस विधि से अभिक्रियक प्लूटोनियम को शोध कर, बहुत कम खर्च से, अणु-बम प्लूटोनियम में तबदील किया जा सकता है । समस्थानिकों को अलग करने की इस विधि से (पं. जर्मनी में) इतना अभिक्रियक-प्लूटोनियम तैयार किया जा सकता है जो हर वर्ष २५ अणुबमों के बनाने के लिये काफी होगा ।

अन्तरात्मा की पुकार : वैज्ञानिकों का उत्तरदायित्व

प्लूटोनियम समस्थानिकों को अलग करने की उक्त कार्य-विधि इसलिये तो और भी निन्दनीय है क्योंकि यह हितकारी अभिक्रियक प्लूटोनियम को दूषित करके सैनिक इस्तेमाल के लिये (शांतिपूर्ण प्रयोगों के लिये नहीं) तबदील और तैयार करता है । इस दृष्टि से देखने पर यह अनुमान लगाया गया है कि पश्चिमी जर्मनी में आजकल जो नाभिकीय शक्ति उत्पादक संयन्त्र निर्माणधीन हैं, वे प्रति वर्ष ७० अगु-बम बनाने की क्षमता रखेंगे ।

पश्चिमी जर्मनी में काम करने वाले अणु वैज्ञानिकों को आज या कल, अपनी अन्तरात्मा से इस प्रश्न का उत्तर देना ही होगा कि क्या वे अपने शोध का फल एक ऐसी सरकार के हाथों में सौंप देंगे जो एक ओर यूरोप के कई देशों की सीमाओं पर अपना अधिकार जताती हैं और दूसरी ओर अणु शस्त्रास्त्रों को किसी भी तरह हासिल करने के लिये ज़बरदस्त प्रयत्न कर रही है ।

यही कारण है कि हिरोशिमा नगर के अणु-बम से तबाह होने की २०वीं वार्षिकी के अवसर पर मैंने पश्चिमी जर्मनी के वैज्ञानिकों से इस बात की अपील की थी कि वे कार्लसरूहे के संयन्त्र में अणु-बमों के लिये पैदा किये जा रहे प्लूटोनियम के बारे में अपनी स्थित को साफ करें । मेरी इस अपील के जवाब में, 'नाभिकीय अनुसन्धान केन्द्र' के प्रबन्धकों ने (वैज्ञानिकों ने नहीं–सं.) लिखा कि 'केन्द्र' में नौकरी करने वाले वैज्ञानिक मेरे "प्रहारों को एक राजनीतिक चाल" समझते हैं, और इसलिये "उनका इनसे कोई मतलब नहीं" ?

लेकिन मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि कार्लसरूहे के संयन्त्र में काम करने वाले वैज्ञानिक (सरकारी प्रबन्धक नहीं–सं.) अपने काम को केवल शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिये इस्तेमाल करना चाहते हैं । लेकिन सवाल यह है कि क्या उनकी सरकार (पं. जर्मन सरकार) उनकी इस सद्-इच्छा को पूरा होने देगी ?

* * *

बर्लिन हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय | पुनर्निर्माण के बीस वर्ष बाद

गुण्टेर वूट्टके

२९ जनवरी के दिन, बर्लिन के विश्व-प्रसिद्ध हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय ने, अपने पुनर्उद्घाटन का २०वां वार्षिकोत्सव मनाया। दो दशक पहले सारा बर्लिन युद्ध ध्वस्त था—वहां चारों ओर मलबे के ढेर ही ढेर नजर आते थे। विश्वविद्यालय भी इस तबाही से नहीं बचा था। हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय के कुल १७२ भवनों में से ४६ तो बिल्कुल नष्ट हुए थे, और ६६ मकानों को भारी क्षति पहुंची थी।··· और विख्यात 'उण्टर डेन लिण्डन' नामक सड़क पर खड़ा इस विश्वविद्यालय के मुख्य भवन का दो तिहाई हिस्सा भी तबाह हुआ था।

उन दिनों की याद करते हुए हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय के वर्तमान रजिस्ट्रार बोले "उन दिनों का हमारा पहला काम था कमरों से मलवा उठाना और उखड़ी हुई खिड़कियों को कार्डबोर्ड तथा कीलों आदि से बन्द करना।···"

बर्लिन के इस विश्वविख्यात ज्ञान-मंदिर में फिर से विद्या का दीप जलाने के लिये फासिस्त विरोधियों को सक्रिय सहयोग दिया उन तत्वों ने जो जीवन को फिर से सुधारना संवारना चाहते थे।

सन १९४९ में (इसी वर्ष में जर्मन जनवादी गणतन्त्र का जन्म हुआ) बर्लिन के इस विश्व-विद्यालय का नामकरण "हुम्बोल्ट विश्व-विद्यालय" किया गया। विश्वविद्यालय के उस समय के रेक्टर (उपकुलपति) प्रोफेसर डेर्श ने एक समारोह में ये शब्द कहे थे: "बर्लिन के इस विश्वविद्यालय को जगत प्रसिद्ध बनाने का श्रेय दो हुम्बोल्ट बन्धुओं को है। इनमें से एक भाई मनीषी था, और दूसरा भाई था एक वैज्ञानिक। लेकिन मानवतावाद और विश्व बन्धुत्व की भावनाओं में दोनों की समान आस्था थी। इसी परम्परा और भावना के अनुरूप हमें यहां कलाओं एवं प्राकृतिक विज्ञानों का अध्ययन अध्यापन करना चाहिए, और इसी मानववादी एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से हमें अपने राष्ट्र के पुनरुत्थान तथा विश्व के कल्याण में हाथ बटाना चाहिए।..."

आज २० वर्ष बाद, हुम्बोल्ट-विश्वविद्यालय के सदस्यगण अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं शिक्षा के क्षेत्रों में प्राप्त अपनी सफलताओं पर बजा तौर पर गर्व कर सकते हैं। इन पिछले दो दशकों में, इस विश्वविद्यालय के पुनर्निर्माण पर लगभग १५० मिलियन मार्क (१ मिलियन =१० लाख) की धनराशि खर्च की गई है। इस निर्माण में चर्म रोगों एवं रसौली चिकित्सा के लिए, नवीनतम डाक्टरी उपकरणों से सुसज्जित क्लिनिक भी शामिल हैं। इसके अलावा बर्लिन के सीमांचल पर दो बड़े छात्रा-वास भी तामीर किये गए हैं जिनमें १,७०० विद्यार्थी रह सकते हैं। ... और 'उण्टर डेन लिण्डन' के राजमार्ग पर स्थित विश्व-विद्यालय के मुख्य ऐतिहासिक भवन के पुन-

'उण्टर डेन लिण्डन' नामक प्रसिद्ध राजमार्ग पर खड़ा बर्लिन हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय
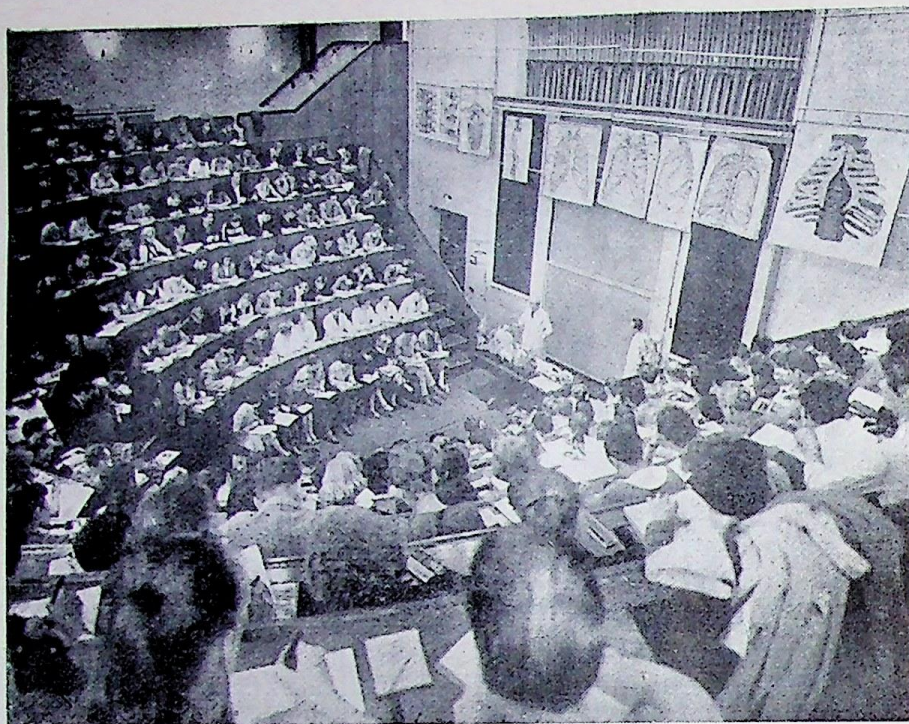
विश्वविद्यालय के 'शरीर रचना संस्थान' की एक व्याख्यान-शाला।

निर्माण के लिए, जर्मन जनवादी गणतन्त्र की सरकार ने लगभग १७ मिलियिन मार्क का अनुदान दिया।

हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय के जो नवीनतम संस्थान निर्माणाधीन हैं उनमें से विशेष उल्लेखनीय हैं––वनस्पति-शास्त्र का विशिष्ट शोध संस्थान। समस्थानिक (आइसोटोप) विच्छेदन विभाग और एक परिकलन (कलकुलेटिंग) केन्द्र।

१९४६ में जहां हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय में ४,००० विद्यार्थी अध्ययन करते थे, वहां आज इसके ९ संकायों में लगभग १४,००० छात्र छात्राएँ विद्याध्ययन करते हैं।

सन् १९५० से १९६५ तक इस विश्वविद्यालय से लगभग २६,००० व्यक्ति, विभिन्न विषयों में प्रशिक्षित होकर निकले। १९६५ में यहां से कुल २,१३५ स्नातक निकले जिनमें ९०२ महिलायें थीं। विश्वविद्यालय में प्राकृतिक वैज्ञानिकों, कृषि-विशेषज्ञों डाक्टरों एवं पशु-चिकित्सकों के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया गया।···

पिछले २० वर्षों में सरकार ने, लगभग ३३० मिलियन मार्क (३३ करोड़ मार्क) की धन राशि केवल छात्रवृत्तियों के लिए विश्वविद्यालय को दे दी।

इन वर्षों में हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय की ख्याति उत्तरोत्तर बढ़ती गई है। बर्लिन विद्या मन्दिर के अनेक विद्वान एवं वैज्ञानिक विश्व के महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा संगठनों, जैसे 'ब्रिटिश रायल सोसायटी,' 'अन्तर्राष्ट्रीय अतरिक्ष अनुसंधान परिषद' में अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में इस विश्वविद्यालय में अन्य देशों से आने वाले विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती जा रही है। इस समय ३५ से अधिक देशों के स्नातकोत्तर छात्र और विद्यार्थी––जिनमें से अनेक अरब एवं अफ्रीका के देशों के हैं––हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय में पढ़ते हैं।

सन् १९६५ में ६५० विदेशी तथा पश्चिमी जर्मनी के प्रोफेसर तथा वैज्ञानिक आदि इस विश्वविद्यालय में अध्ययन परामर्श एवं व्याख्यान देने के लिए आये। इसके अलावा २,००० अन्य छात्र एवं शोधार्थी आदि पिछले साल जर्मन जनवादी गणतन्त्र की राजधानी बर्लिन में सिर्फ इस लिये आकर ठहरे ताकि वे हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय में अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि के स्तर के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

आगामी (तीसरे) दशक में, बर्लिन के इस विश्व विख्यात विद्या-मन्दिर के सामने कई महत्वपूर्ण कार्य आयेंगे। इनमें से सब से बड़ा कार्य होगा विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम को वैज्ञानिक-तकनीकी क्रांति की आवश्यकताओं के अनुसार ढाल लेना। इस महान कार्य में इसको सफलता मिलेगी––इतना तो निश्चित है।

एक दीक्षान्त समारोह में जाते हुये आचार्य गण

वसन्तकालीन व्यापार मेला

लाइपज़िग : पूर्व पश्चिम व्यापार का संगम

१५ मार्च १९६६ के दिन विश्वप्रसिद्ध वसन्तकालीन लाइपज़िग व्यापार मेला समाप्त हुआ। दुनिया भर से आये हुये व्यापारियों और व्यापार फर्मों ने अपूर्व मात्रा में व्यापार किया। इस अन्तर्राष्ट्रीय मेले में कुल मिलाकर ७० देशों के १०,५५५ प्रदर्शकों ने भाग लिया और उन्होंने ६० मण्डपों में अपनी वस्तुएँ प्रदर्शित की थीं। यह प्रदर्शन-मण्डप ३५२,००० वर्ग मीटर क्षेत्रफल पर फैले हुए थे। मेला देखने के लिए ९० देशों से लगभग ६९०,५०० दर्शक आये, जिनमें से ९०,५०० पश्चिमी जर्मनी, पश्चिम बर्लिन और दुनिया के अन्य देशों से आये थे।
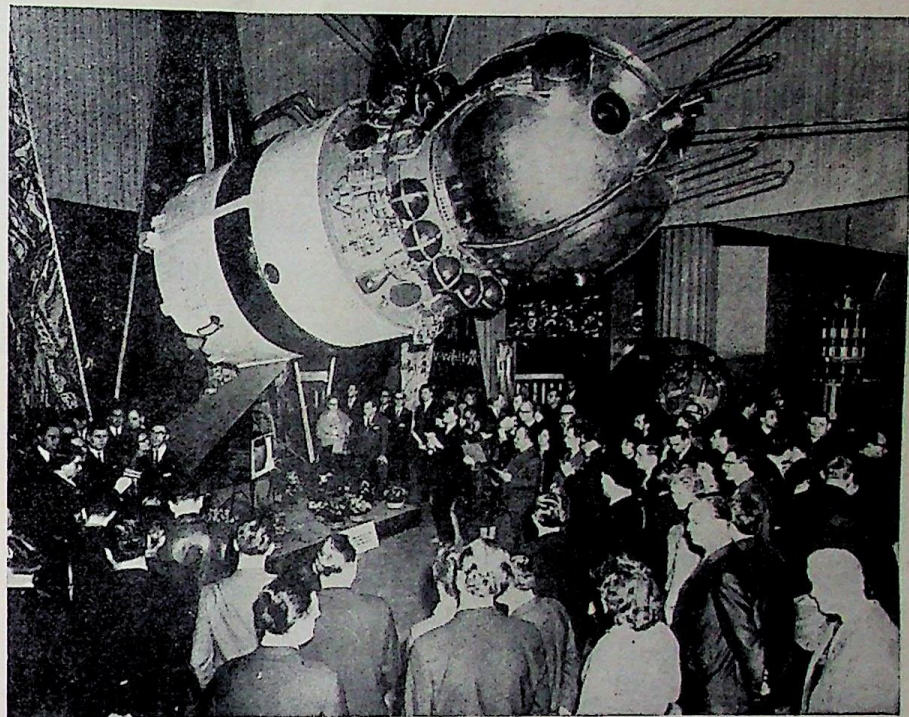
मेले में "वोस्टोक" अन्तरिक्ष-यान का यह ४.७५ टन वजन वाला मॉडल भीड़ का आकर्षण केन्द्र रहा

जर्मन जनवादी गणतन्त्र की व्यापार संस्थाओं एवं फर्मों ने समाजवादी, विकासशील और पूंजीवादी देशों के व्यापारियों तथा व्यापार फर्मों के साथ आयात निर्यात के अनेक समझौते किए।

भारत के मण्डप में प्रदर्शित वस्तुएं
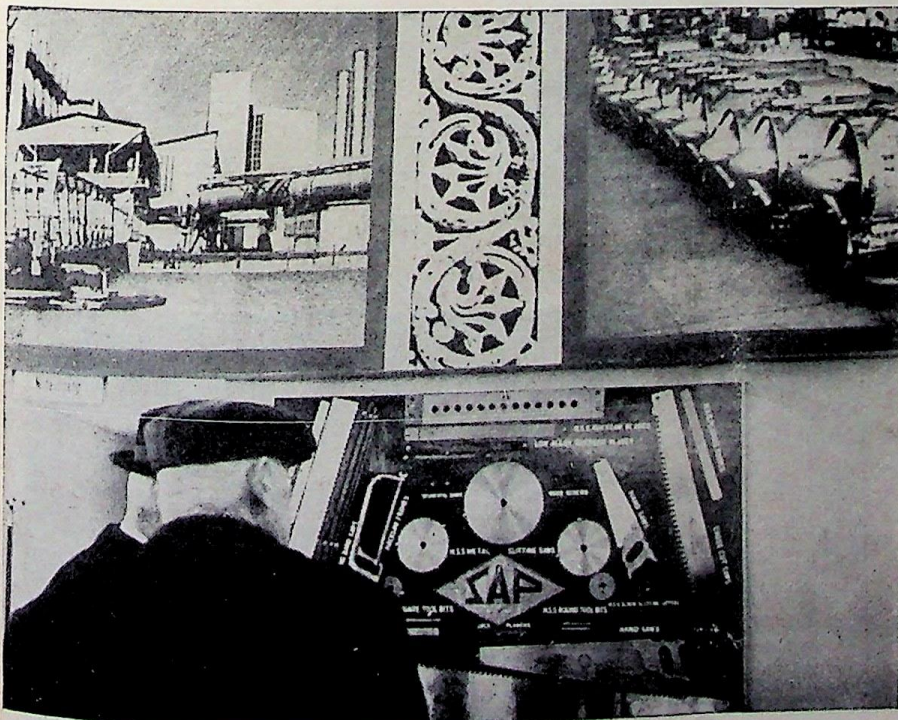
इंगलैण्ड, फ्रांस, बेल्जियम, नीदरलैण्ड्स, आस्ट्रिया और स्वीडन जैसे पूंजीवादी, औद्योगिक राज्यों की मुख्य व्यापार फर्मों एवं आर्थिक संगठनों के साथ ज.ज.ग. की व्यापार संस्थाओं ने आपसी सहयोग और आयात निर्यात के लिए महत्वपूर्ण बातचीत की तथा समझौते किये। ज.ज.ग. ने पश्चिमी जर्मनी को इंजीनियरिंग, रासायनिक एवं उपभोक्ता उद्योग के उत्पादन सप्लाइ करना और पश्चिमी जर्मनी से धातु उद्योग का सामान, इंजीनियरिंग और रासायनिक वस्तुयें खरीदना मान लिया है। इसी प्रकार, ज.ज.ग. की उक्त संस्थाओं ने, पश्चिम बर्लिन की व्यापार फर्मों के साथ माल खरीदने और बेचने के कई समझौते किए।...ज.ज.ग. ने समुद्र पार देशों के साथ माल विनिमय और आयात निर्यात के जितने समझौते किये (इस मेले में), उनसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भविष्य में भी जर्मन

जनवादी गणतंत्र और एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका के विकासशील देशों के बीच व्यापार तीव्रगति से बढ़ जायेगा ।

ज.ज.ग. की व्यापार फर्मों ने विशेषकर निम्न वस्तुओं की काफी बड़ी बिक्री की : धातु तथा रासायनिक उद्योगों के लिए संयंत्र एवं उपकरण; मशीनी औज़ार; टेक्सटाइल मशीनें, खाद्य एवं तत्संबंधी उद्योग के लिए मशीनें, परिवहन उपकरण, विद्युत तकनीकी, रासायनिक तथा सूक्ष्म यन्त्र, और प्रकाशीय, कैमरा एवं फिल्म उद्योग की मशीनें । इन वस्तुओं के अतिरिक्त उपभोक्ता वस्तुओं, टेक्सटाइलों, मुद्रण यन्त्रों, खिलौनों और वाद्य-यंत्रों की बिक्री भी काफी अच्छी रही ।
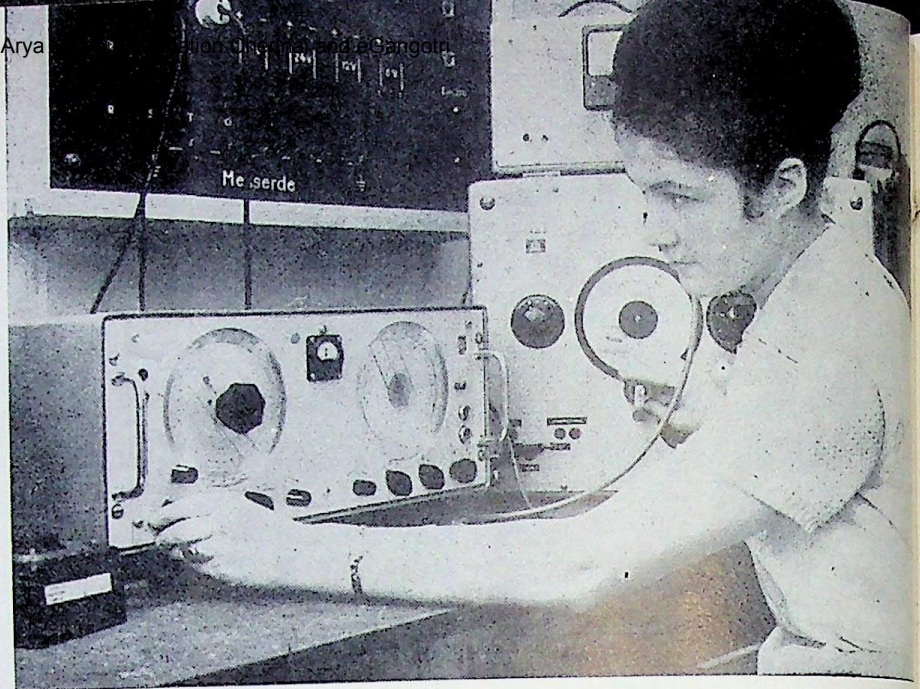
▲ समुद्र पोतों के लिये ज.ज.ग. ने नवीनतम यंत्र मेले में प्रदर्शित किया

◄ ज़मीन खोदने के इन भीमकाय यन्त्रों काफी भीड़ आकर्षित की

'समाजवादी एकता पार्टी' के पोलिट सदस्य, श्री पाल वर्नर भारतीय मण्डप देख रहे हैं ▼
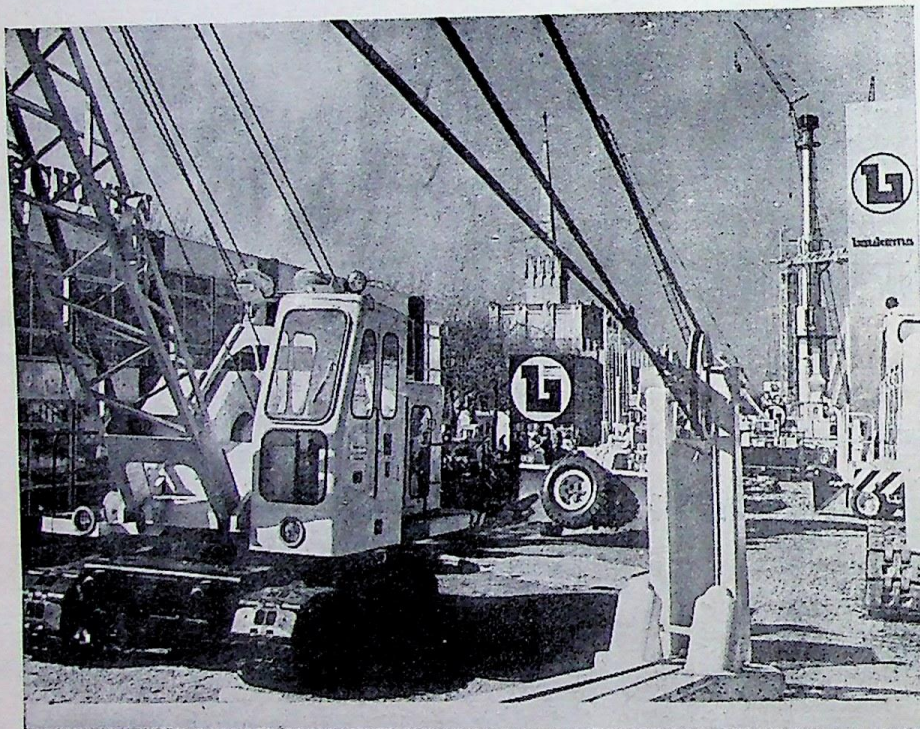
उक्त व्यापार मेले में आयोजित गोष्ठियों एवं व्याख्यानों में वैज्ञानिक तथा तकनीकी अनुभवों और विचारों का आदान प्रदान हुआ । 'चैम्बर आफ टेकनालोजी' की दूसरी कांग्रेस में भी ऐसी गोष्ठियों एवं व्याख्यानों का आयोजन हुआ ।

मेले के अन्तिम दिन पर, उच्चतम कोटि की ११८ वैज्ञानिक-तकनीकी वस्तुओं को लाइपज़िग व्यापार मेले के स्वर्ण पदकों से सम्मानित किया गया ।

चिट्ठी पत्री

प्रिय महोदय,

आपकी **सूचना पत्रिका** पढ़ने का मुझे शुभ अवसर मिला। इसमें छपे लेख बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक लगे। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले हम लोग एक नवीन 'इम्मोर्टल लाइब्रेरी' स्थापित किये हैं। हमारी इच्छा है कि जर्मन की लेखकों व कवियों की साहित्य व संस्कृति का अवलोकन करूं। इसके लिए हम आपसे निम्न सहयोग की याचना करते हैं :

(क) आपकी 'सूचना पत्रिका' निरंतर हमें यहां भेजते रहेंगे।

(ख) ज.ज.ग. से संबंधित जितना भी साहित्य हिन्दी एवं अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ है, उसकी एक एक प्रति और साथ ही साथ पोस्टर, चित्र वगैरह भी भेजने की कृपा करेंगे।

आशा है, आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार करेंगे।

अमर लाल शाह
सिजुवा बाज़ार (**नेपाल**)

प्रिय महोदय,

मैं आपका **वृत्त पत्रिका** (यह पत्रिका 'सूचना पत्रिका' का मराठी संस्करण है—सं.) प्रत्येक माह में पढ़ता हूं, और मेरे 'फ्रेंड्स यूनियन' कुछ मित्रगण इसका लाभ उठाते हैं। मैंने कुछ पत्रिकाओं में श्रीमान डा. लांगर और श्री श्रेडर के प्रवासवर्णनात्मक लेख पढ़े, जिनके रेखाचित्र भी उन्होंने चित्रित करके हमारे देश का सरुचिता से दर्शन किया था। उनके भारत यात्रा से हमारे परस्पर देश में प्रेम भावना का स्नेहतापूर्वक आकर्षण बढ़ता जाता है। मैं आशा करता हूं, आपके देश के साथ हमारे संबंध दृढ़ होते रहेंगे। इन स्नेह सम्बन्धों को दृढ़ करने के लिए आप हमें सहकार्य करें। मैं तथा मेरा मैत्रीसंघ आपके जर्मन लोकशाही के स्नेह प्रेमी नागरिकों से मित्रता संबंध स्थापित करना चाहते हैं। आप कृपया पत्र-मित्र के लिए ऊपर लिखे हुए पते पर इस प्रकार का पत्र व्यवहार तथा सम्बन्ध स्थापित करने वाले संस्था का पता भेजने का कष्ट उठाएं। आपका कार्यालय हिन्दी राष्ट्रभाषा को समझ सकता है। यह जान कर हिन्दी में पत्र व्यवहार करना उचित समझकर अंग्रेजी में लिखा नहीं। . . .कृपया शीघ्र पत्रोत्तर देने का कष्ट करें।

एम. एस. वैराले
अकोला (**महाराष्ट्र**)

प्रिय महोदय,

आपकी **सूचना पत्रिका** यथासमय प्राप्त हो जाती है। तदर्थ धन्यवाद। मैं आपकी 'पत्रिका' पढ़कर अत्यन्त हर्षित हूं। 'पत्रिका' में बहुत ही उपयोगी एवं पठनीय सामग्री रहती है। मैं ज.ज.ग. की संस्कृति, साहित्य और लोगों के सामाजिक जीवन के बारे में जानने का अत्यन्त इच्छुक हूं। इसलिए आप मुझ इससे संबंधित पुस्तकें भेजने की कृपा करने के साथ सूचना 'पत्रिका' को भी नियमित रूप से भेजते रहें। भारत-जर्मन जनवादी गण- तंत्र में मैत्री रहे।

के. जी. कुप्पाण्णन
नामक्कल (**मद्रास**)

प्रिय महाशय,

सूचना पत्रिका का स्थायी पाठक होना चाहता हूं मैं। आज मैंने उसका एक मासिक देखा तो वह बहुत पसन्द आया। आप कृपया उसके एक 'सूचना पत्रिका' या कोई खास नमूना हो तो मेरे नाम पर भेज देने की कृपा करें।

कुरियन
कोतनल्लूर (**केरल**)

प्रिय महोदय,

आपकी प्रकाशित सम्मानित **सूचना पत्रिका** जो मेरे व्यक्तिगत नाम से आती है, उसे मैं 'मुरादाबाद प्रेस क्लब' की लायब्रेरी में भी भेज देता हूं। अनुपम चित्रों वाली आपकी 'पत्रिका' यहां सभी श्रमजीवी पत्रकारों द्वारा सर्वाधिक पसन्द की गई है।

आशा है कि आपके सराहनीय प्रयास से भारत तथा ज.ज.ग. की जनता के मध्य संबंध और मधुर और दृढ़ होंगे और एक दूसरे के बहुत निकट आ जायेंगे।

सधन्यवाद।

जगजीवनलाल सेठ
मुरादाबाद (**उ. प्र.**)

श्रीमान संपादक साहब,

मैंने कल आपकी **सूचना पत्रिका** व्यापार-दूतावास का प्रकाशन पढ़ी। इस 'पत्रिका' को देखकर मैं बहुत ही खुश हुई। लिहाज़ा मैं आपसे गुज़ारिश करती हूं कि आप मेहरबानी करके एक 'सूचना पत्रिका' मेरे नाम हर माह भेजा करें। इसके अलावा और भी आपके प्रकाशन महिलाओं के संबंध में हों, भेजने की कृपा करें।

नफ़ीस अन्सारी,
इन्दौर (**मध्य प्रदेश**)

माननीय संपादक जी,

आपके यहां से प्रकाशित **सूचना पत्रिका** मुझे बहुत प्रिय है। एक बार, मई के अंक में मुख पृष्ठ पर 'फासिस्तवाद और युद्ध का दानव फिर जीवित न हो,' नाम से एक चित्र छपा था। उसी को देख कर पहले पहल मैं आपकी 'पत्रिका' से प्रभावित हुई थी। उस चित्र का हमारे नगर में निर्मित विशाल 'शहीद स्मारक' से अत्यधिक साम्य था। दोनों स्मारकों की समानता बताती है कि दोनों देशों के बीच काफी दूरी होते हुए भी दोनों देशों के कलाकारों की भावनाएँ एक सी हैं। आप उसी तरह के प्रेरक चित्र बराबर छापते रहें।

नीलिमा सिन्हा
पटना (**बिहार**)
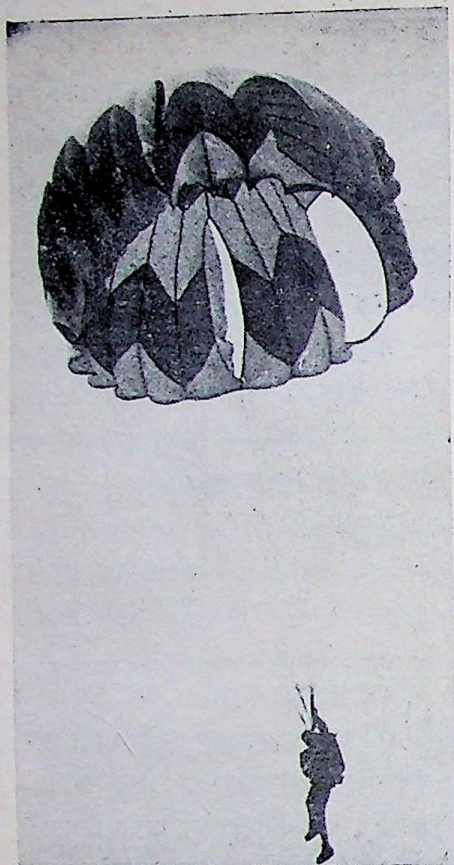
पैराशूट-कूद...

ज. ज. ग. में १९६६ की तीन विश्व प्रतियोगितायें

इस वर्ष के दौरान, जर्मन जनवादी गणतंत्र में तीन विश्व खेल-कूद प्रतियोगितायें आयोजित होंगी। ये प्रतियोगितायें होंगी–वज़न उठाने वाले, नावें चलाने वाले और हवाई छत्रियों से कूदने वाले खिलाड़ियों की। यह तथ्य इस बात का प्रणाम है कि खेल-कूद के संसार में ज. ज. ग. की मान्यता दिन प्रति दिन बढ़तीजा रही है। इन तीन प्रतियोगिताओं के पहले विश्वव्यापी दिलचस्पी की एक अन्य विशिष्ट प्रतियोगता भी ज. ज. ग. में होगी, जो इस प्रकार होगी :

२७ अप्रैल, १९६६ के दिन, लाइपज़िग के केन्द्रीय खेल-कूद मैदान में, एक लाख दर्शकों के सामने स्वीडन और ज. ज. ग. के फुटवाल खिलाड़ी पहला आधिकारिक मैच खेलेंगे। फुटवाल के शौकीन लोगों के लिये यह मैच काफी दिलचस्प होगा, क्योंकि स्वीडन के फुटबाल खिलाड़ियों की टीम विश्व प्रसिद्ध है, और ज. ज. ग. की फुटवाल टीम ने भी तोकियो में आयोजित विश्व फुटवाल चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीत कर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है।

उल्लिखित तीन खेल-कूद प्रतियोगितायें जर्मन जनवादी गणतंत्र के विभिन्न स्थानों में मध्य ग्रीष्मकाल और शरद्काल में आयोजित होंगी। जुलाई २४ और ६ अगस्त के बीच, लाइपज़िग हवाई अड्डे के ऊपर, दुनिया भर के पैराशूट खिलाड़ी, चैम्पियनशिप में भाग लेंगे। इस विश्व-प्रतियोगिता में, विश्व चैम्पियन का पद जीतने के लिये मर्द और औरतें १,००० मीटर की ऊँचाई से, पहले अलग-अलग और उसके बाद समूहों में, हवाई छतरियों से कूदेंगे। चार कूदों में से तीन पर अंक दिये जायेंगे।

१५ अगस्त और २१ अगस्त के बीच, बर्लिन में नाव-दौड़ प्रतियोगिता होगी।... इसी प्रकार अधिक से अधिक वज़न उठाने की प्रतियोगिता भी १५ से २३ अक्तूबर तक होगी। इस चैम्पियनशिप में सोवियत संघ अपना प्रथम स्थान बनाये रखने के लिये संघर्ष करेगा। पिछली विश्व प्रतियोगिता में पोलैण्ड की टीम ने उससे यह पद लगभग छीन ही लिया था। मध्य-भार चैम्पियनशिप में, इस वर्ष तीसरी बार, सोवियत संघ के विक्टर कूरेन्त्सोव और ज. ज. ग. के वेरनर डिट्टरिख में ज़बरदस्त होड़ होगी।

...नाव दौड़ का एक दृश्य

समाचार

ज. ज. ग. तथा पश्चिमी जर्मनी के बीच नया प्रवेश-पत्र समझौता

ज. ग. के राज्यसचिव डा. माइकेल कोहल तथा पश्चिमी बर्लिन के सीनेट कौंसिलर हार्स्ट कोवर ने एक नये प्रवेश-पत्र सम्बन्धी समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं। १९६३ के बाद यह चौथा समझौता है।

समझौते के अनुसार प्रत्येक पश्चिम बर्लिन का निवासी ज. ज. ग. स्थित अपने सम्बन्धियों से 'ईस्टर' तथा 'विटसून' पर्व पर मिलने जा सकता है। ३० जून तक आवश्यक पारिवारिक कार्यों के लिये प्रवेश-पत्रों की भी व्यवस्था की गई है। वर्तमान प्रबन्ध ३१ मार्च को समाप्त हो रहा है। १९६५ में ईस्टर त्यौहार पर ५८०,००० से अधिक पश्चिम बर्लिन के निवासियों ने ज. ज. ग. में रहने वाले अपने सम्बन्धियों से भेंट की।

ज. ज. ग. के प्रधान मन्त्री द्वारा लाइपज़िग मेले में स्थित भारतीय प्रदर्शनी का अवलोकन

ज. ग. के प्रधानमंत्री विली स्टोप ने उच्च नेताओं के साथ लाइपज़िग मेले में स्थिति भारतीय प्रदर्शनी का अवलोकन किया। प्रदर्शनी के निर्देशक श्री प्रेम नाथ ने विली स्टोप की अगवानी की।

प्रधानमंत्री स्टोप ने कहा, "यहां हम देख सकते हैं कि भारत ने औद्योगिक उत्पादन में क्या महान प्रगति की है।" उन्होंने आशा प्रकट की कि भारत और ज. ज. ग. के बीच व्यापारिक सम्बन्ध विकसित और गहरे होते रहेंगे। प्रधान-मन्त्री ने कहा कि उन्हें इस बात की प्रसन्नता है कि सोवियत संघ की मध्यस्थता से भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों में सुधार हुआ है।

भारतीय प्रदर्शनी के अवलोकन के दौरान प्रधानमंत्री स्टोप ने फ़रीदकोट के राज़ा हरिन्दर सिंह से भेंट की जो कि व्यापारिक समझौते के लिये लाइपज़िग आये हुये थे।

पश्चिम बर्लिन के निवासी, ज. ज. ग. की राजधानी में रहने वाले संबन्धियों से मिलने के लिये प्रवेश-पत्र प्राप्त कर रहे हैं

भारत तथा अन्य देश ज. ज. ग के छपाई की मशीन खरीदते हैं

ज. ग. में हाल ही में हुये अन्तरराष्ट्रीय लाइपज़िग वसन्त मेले में भारत ने ९०६ मिलियन रुपये के मूल्य की छपाई तथा जिल्दसाज़ी की मशीनें खरीदी हैं। उक्त समझौते पर बम्बई की इण्डो-यूरोपियन मशीनरी क. के निर्देशक श्री एस. भण्डारी तथा ज. ज. ग. के विदेश व्यापार संस्थान पोलीग्राफ एक्सपोर्ट के प्रमुख निदेशक श्री एरविन वेगवर्थ ने हस्ताक्षर किये। ३.८ मिलियन मूल्य का व्यापार १९६६ में ही होगा तथा ५.९ मिलियन का १९६७ में। भारत के साथ पोलीग्राफ एक्सपोर्ट का यह सबसे बड़ा अनुबन्ध है।

समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद श्री भण्डारी ने ए. डी. एन. को बताया: "विगत कई वर्षों से ज. ज. ग. तथा हमारे देश के मध्य अच्छा सहयोग रहा है। ज. ज. ग. निर्मित छपाई की मशीनों का भारत में अच्छा स्थान है। मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी काफी अच्छे सम्बन्ध रहेंगे।" उन्होंने घोषणा की कि मशीनें राज्य द्वारा संचालित एवं निजी छापेखानों में लगाई जायेंगी। ज. ज. ग., भारत को छपाई की मशीनों का निर्यात करने वाला सबसे प्रमुख देश है, और भारत की ५० प्रतिशत आवश्यकता की पूर्ति करता है।

भारतीय राष्ट्रीय प्रदर्शनी जिसमें १९० व्यापारिक संस्थानों ने देश के औद्योगिक उत्पादन का प्रदर्शन किया है, को देखने के दौरान प्रधानमंत्री श्री स्टोप ने भारतीय उद्योग की कार्य कुशलता के सम्बन्ध में सूचनायें एकत्रित कीं। वह विशेषतया हिन्दुस्तान मशीन टूल्स लि. द्वारा निर्मित इल्कट्रो-टेक्निकल प्लांट तथा मशीन टूलों से अधिक प्रभावित हुये। यूनियन कार्बाइड के स्टाल पर श्री

स्टोप को बताया गया कि भारत, जर्मन जनवादी गणतंत्र को २० लाख रुपये के मूल्य की बैट्रियां भेजता है ।

सामूहिक प्रदर्शनी के अतिरिक्त लगभग ३० भारतीय फर्मों ने अपने विभागों में अपने उत्पादन का प्रदर्शन किया । पहली बार, भारत, समुद्र पार देशों में अपनी बहुत सी फर्मों सहित सबसे बड़ा प्रदर्शक था जिनमें कलकत्ता की फर्म भाई एंण्ड भाई प्रा. लि. भी सम्मिलित थी ।

५४०० नवीन पुस्तकें प्रकाशित

जर्मन जनवादी गणतंत्र स्थित संस्थानों ने १९६५ में ५४०० नई पुस्तकें प्रकाशित की जिनकी कुल संख्या ९६.५ मिलियन प्रतियां थीं । उक्त घोषणा, पुस्तक व्यापार संस्था के नये अध्यक्ष श्री हाइन्ज कोलर ने लाइपज़िग में आयोजित एक प्रेस कांफ्रेंस में की । ५४०० नवीन प्रकाशनों में ८०० पुस्तकें अनुवाद के रूप में हैं जिनकी १२.५ मिलियन प्रतियां प्रकाशित की गई हैं । इन अनूदित पुस्तकों में ३०४ रूसी, ८३ फ्रेन्च, ७१ अंग्रेजी, ५३ चेकोस्लोवाक तथा ४५ अमेरिकन पुस्तकें हैं ।

१९६४-६५ तक ज. ज. ग. की पुस्तकों का निर्यात ११.३ प्रतिशत बढ़ गया है । ज. ज. ग. का साहित्य पसन्द करने वाले देशों में जापान, ब्रिटेन, स्विटज़रलैण्ड नीदरलैण्ड्स, बेलिजयम, फिनलैण्ड तथा डेनमार्क भी सम्मिलित हैं ।

भारत के लिये ज.ज ग. से कृत्रिम-गुर्दे

लाइपज़िग व्यापार मेले में घोषणा की गई है कि भारत ने ज. ज. ग. से काफी मात्रा में कृत्रिम गुर्दे खरीदे हैं ।

अब तक उपलब्ध कृत्रिम गुर्दों की अपेक्षा ज. ज. ग. के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित गुर्दे छोटे तथा पारदर्शी हैं और उनमें रक्त भरने के लिये रिक्त स्थान है । इस लिये यह गुर्दे बिना अतिरिक्त रक्त के कार्य करते हैं ।

इनके द्वारा रक्त को साफ किया जाता है तथा खून से पानी का अंश कम कर दिया जाता है ।

कृत्रिम गुर्दे कहीं भी लाये ले जाये जा सकते हैं, और किसी भी रोगी के बिस्तर में लगाये जा सकते हैं । इनके लगातार उपयोग से गुर्दे के पुराने मरीजों का जीवन बचाया जा सकता है और उन्हें स्वस्थ बनाया जा सकता है ताकि वे अपना व्यवसाय पुनः कर सकें ।

अरब राष्ट्रों द्वारा ज ज.ग. के संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता के लिये आवेदन-पत्र का समर्थन

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्री आटो विनज़ेर ने अपनी आठ दिवसीय संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा के पश्चात् एक प्रेस कांफ्रेन्स में कहा कि "संयुक्त अरब गणराज्य के प्रमुख राजनीतिज्ञों से भेंट के साथ ही राष्ट्रपति जमाल नासिर से भेंट करने से ज. ज. ग. की शान्तिपूर्ण नीति तथा उसका संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता के लिये आन्दोलन प्रकाश में आया है । इराक, यमन, अलजीरिया तथा सीरिया के विदेशमन्त्रियों के साथ हुई वार्तायें भी लाभप्रद रही हैं ।..."

श्री विनत्ज़ेर ने बताया कि साइप्रेस के राष्ट्रपति आर्कबिशप मकारियोस सहित सभी से वार्ताओं के दौरान, ज. ज. ग. की शान्तिपूर्ण नीति को पूर्ण समर्थन तथा सहानुभूति प्राप्त हुई है । उनकी यात्रा का आवश्यक परिणाम यह रहा है कि सभी अरब राज्य ज. ज. ग. द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता के लिये आवेदन का पूर्ण समर्थन करने के साथ सहयोग के लिये तैयार हैं ।

बौद्ध-धर्म का अध्ययन

जर्मन जनवादी गणतंत्र में हाले स्थित मार्टिन लूथर विश्वविद्यालय में बौद्ध-धर्म सम्बन्धी अध्ययन का केन्द्र स्थापित किया गया है । विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग के निदेशक प्रोफेसर हाइन्ज़ मोडे इसके अध्यक्ष होंगे । यह केन्द्र, ज. ज. ग में बौद्ध धर्म विशेषतया बौद्धकालीन कला से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन करेगा । साथ में अंग्रेजी भाषा में एक पत्रिका का प्रकाशन भी किया जायेगा ।

धूम्रपान हानिकारक है

लगभग २७,००० व्यक्ति प्र[ति] वर्ष धूम्रपान करने के कारण, समय से पहले ही मरते हैं । उनमें ६,००० से अधिक व्यक्ति फेफड़े के कैंसर के कारण, और उसमें भी विशेषतया हृदय गति रुक जाने से मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं । ४० से ४९ वर्ष की आयु के समूह में धूम्रपान करने वाले, धूम्रपान न करने वालों की अपेक्षा तीन गुना अधिक मृत्यु को प्राप्त होते हैं ।

यह आंकड़े ज. ज. ग. के बर्लिन के एक प्रसिद्ध चिकित्सक डा० डीटर-पाउन ने दिये हैं । १० प्रतिशत लोगों ने, धूम्रपान त्यागने की इच्छा व्यक्ति की है । इनमें से बहुत से लोगों ने किसी विशेष उपचार की इच्छा ज़ाहिर नहीं की है लेकिन एकाध दिन में धूम्रपान छोड़ देने की दृढ़ इच्छा व्यक्त की है ।

लाइपज़िग मेले में भारतीय मण्डप

मद्रास में ३१ जनवरी से ६ फरवरी, १९६६ तक, प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय चमड़ा मेला का आयोजन हुआ। इस मेले में ३६ विदेशी प्रदर्शकों ने भाग लिया जिनमें जर्मन जनवादी गणतंत्र भी एक था।

मेले में यह एक आम भावना और इच्छा थी कि ज. ज. ग. को, भारतीय चर्म उद्योग को, चमड़े की विभिन्न वस्तुएं तैयार करने के लिये तकनीकी सहयोग की पेशकश करनी चाहिये।

मेले में भाग लेनेवाले तकनीशनों ने ज. ज.ग. की प्रमुख चमड़ा साज़ी की फर्म "वेब-फेट्ट-केमी" द्वारा भेजी गयी चर्म वस्तुओं और तकनीकी जानकारी में काफी दिलचस्पी दिखाई।

कई चमड़ा-साज़ और चमड़े की वस्तुएं निर्यात करने वाले इस बात से काफी सन्तुष्ट एवं प्रसन्न हुए कि वे जर्मन जनवादी गणतंत्र से, कई विशिष्ट चर्म-वस्तुएं और चमड़ों को रंगने के कई रासायनिक तत्व रुपयों की मुद्रा में आयात कर सकते हैं। चमड़ा रंगने वालों और चमड़ा-निर्यातकों के लिये इस अन्तर्राष्ट्रीय चमड़ा मेला में ज. ज. ग. की अनेक ऐसी चीजें थीं जिन्होंने उनका ध्यान आकर्षित किया।

मद्रास के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री श्री वेनकटरमण के साथ ज.ज.ग. के श्री मेट्स्मा-रकर हाथ मिला रहे हैं

बर्लिन के कई झीलों में आपको इस तरह की सुन्दर बत्तखें विहार करती हुई मिलेंगी

ज.ज.ग. की सरकार नौजवानों को हर प्रकार से प्रोत्साहित करती है। यहां के व्यावसायिक प्रशिक्षण स्कूलों के साथ प्रयोगशालायें भी जुड़ी हैं जहां शिक्षार्थी हर प्रकार के प्रयोग करते रहते हैं

जर्मन
जनवादी

के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

६

१९६६

वर्ष ११
अंक ६
२० जून, १९६६

संकेत

पृष्ठ

मुख पृष्ठ : लाइपजिग में ज. ज. ग. और भारत के बीच हाकी मैच का एक दृश्य

अंतिम पृष्ठ : माइसेन नगर

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे ।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, बहादुर शाह जफर मार्ग, नयी दिल्ली, द्वारा मुद्रित । संपादक : ब्रूनो मे

ज. ज. ग. और सोवियत संघ सच्चे मित्र हैं

पच्चीस साल पहले, २२ जून १९४१ को, जर्मनी के फासिस्ट शासकों ने सोवियत संघ पर हमला किया। एक समाजवादी देश पर इस घातक आक्रमण के साथ द्वितीय विश्व युद्ध एक नई मंजिल में पहुंच गया। आरम्भ में आक्रामक फासिस्ट जर्मन सेनाओं को थोड़ी-बहुत सफलता मिली, लेकिन उसके बाद वे सोवियत भूमि से खदेड़ दीं गयीं। हिटलरी आक्रमण का शिकार बने अन्य देशों में उस समय भी फासिस्ट आक्रामकों के खिलाफ जबर्दस्त आन्दोलन चल रहा था लेकिन केवल अपनी शक्ति से वे उन्हें पीछे धकेल नहीं सके। समाजवादी सोवियत संघ ने जब जर्मन फासिस्ट सेनाओं को पराजित करने की अपनी शक्ति का परिचय दिया, तभी दूसरे देशों को मुक्ति की प्रक्रिया का शुभारम्भ हुआ।

इस प्रकार सोवियत संघ ने पूरी दुनिया के सामने यह सिद्ध कर दिया कि समाजवाद की भावना से ओतप्रोत जनता के देश को कोई भी आक्रमणकारी, चाहे वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, पराजित नहीं कर सकता।

सोवियत सेनाओं ने फासिस्ट आक्रमणकारियों को खदेड़कर जर्मन भूमि में पहुंचा दिया जहां वे ८ मई १९४५ को अन्तिम और पूर्ण रूप से पराजित हुए।

युद्ध के बाद जर्मनी की स्थिति सचमुच भयावह ही थी। १९४६ में जर्मनी में मृत्यु संख्या का अनुपात भारत से अधिक था जहां अकाल, महामारी और औपनिवेशिक शोषण के कारण लोगों के जीवन की अवधि संसार में सबसे छोटी हो गयी थी।

आर्थिक तबाही से भी ज्यादा खतरनाक बात यह थी कि फासिज्म ने अधिकतर जर्मनवासियों के मन में भारी सन्देह पैदा कर दिया था। युद्ध की लपटें जब जर्मन भूमि में पहुंच गयीं, तो बहुत से लोग निराश होकर हताश हो गये, विजेताओं की ओर भय और अविश्वास की दृष्टि से देखने लगे, क्योंकि वे उन्हें मुक्ति दाता के रूप में देखने में असमर्थ रहे।

पूरब के मुक्ति दाता फूलों के गजरे लेकर नहीं आये थे क्योंकि उनका स्वागत गोलियों से हुआ था। लेकिन उन्होंने अपनी रोटियां हमारे साथ बांट कर खायीं। वे भड़कीली वर्दियां नहीं पहनते थे। वे लुभावने रंगों की मिठाइयां नहीं चाभते थे। उनके पास टिनों में बन्द गोश्त और "लकी स्ट्राइक" सिगरेटें भी नहीं थी जिनके जरिए पस्तहिम्मत लोगो को अपना अनुचर बनाया जाता है।

लोगों की समझ बदलने की प्रक्रिया एक धीमी प्रक्रिया थी। इसी तरह महीनों और साल गुजरते गये और तब जाकर वर्तमान ज. ज. ग. के लोग सोवियत जनता की सहायता और भावनाओं की सराहना करने लगे। ध्वस्त घरों और फैक्टरियों को मलबों के साथ मिलकर साफ करने का ज. ज. ग. और सोवियत जनगण का सहयोग दिनों दिन बढ़ने लगा और उसका दायरा सोवियत सहायता से ज. ज. ग. में निर्मित होनेवाले प्रथम परमाणुवक पावर स्टेशन के निर्माण तक फैल गया।

अर्थतंत्र के क्षेत्र में यह सहयोग खासतौर से सफलता के साथ विकसित हुआ। प्राविधिक क्रान्ति की आवश्यकताओं के अनुरूप सहयोग के नये प्रभावशाली रूप का जन्म हुआ। यहां यह कहा जा सकता है कि ज.ज.ग. और सोवियत संघ व्यापार में एक-दूसरे के सबसे बड़े हिस्सेदार बन गये हैं। हमारे दोनों देशों के बीच इतना अधिक व्यापार होने लगा जितना विश्व के किन्हीं दो देशों के बीच अब तक नहीं हुआ।

अर्थतंत्र और संस्कृति के क्षेत्र में घनिष्ठ सहयोग के कारण सोवियत संघ और जर्मन जनवादी गणतंत्र के जनगण एक दूसरे के बहुत निकट आ गये। वे आज एक ही मोर्चे पर खड़े हैं और शांति के लिये तथा औपनिवेशिक शोषण और साम्राज्यवादी तिकड़मों के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष चला रहे हैं। सच्चे अन्तर्राष्ट्रवाद की भावना में जनता को दीक्षित करने वाली मजदूर वर्ग की पार्टी के कठोर और धैर्यपूर्ण कार्यों की बदौलत ही यह परिवर्तन सम्भव हुआ है।

सोवियत संघ के साथ मैत्री और हमारे देश के भविष्य के लिए उसके महत्व को समझदारी की जड़ें हमारी जनता में काफी दिनों से गहराई से जम गयी हैं। सोवियत संघ के साथ मैत्री न सिर्फ जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजनीति है, बल्कि हमारी जनता का एक प्रेरणाप्रद ध्येय भी बन गया है।

पर जर्मन भूमि पर स्थित दूसरे राज्य, यानी पश्चिमी जर्मनी में यह बात नहीं है। वहां पिछले युद्ध के बाद से सोवियत-विरोधी प्रचार शायद ही कभी बन्द हुआ है। इन तमाम वर्षों में वहां की जनता में धुंआधार सोवियत-विरोधी प्रचार किया गया है और जनता में यह विश्वास पैदा कर दिया गया है कि पश्चिमी जर्मनी के लिये सोवियत संघ एक खतरा है। इस प्रकार के तर्क के जरिये उन्होंने पश्चिमी जर्मनी को फिर से सशस्त्र किये जाने और परमाणु अस्त्रों को हस्तगत करने को एक आवश्यकता के रूप में पेश किया है। इस प्रचार के साथ-साथ पूर्वी यूरोप में अन्य देशों की भूमि पर अपने अधिकार का दावा किया जाता है। विश्व की अधिकतर सरकारों के नाम हाल ही में भेजे गये पश्चिमी जर्मन सरकार के पत्रसे यह बात फिर से स्पष्ट हो गयी है।

पश्चिमी जर्मनी की यह नीति और प्रचार योरप तथा विश्व की शांति और सुरक्षा के लिये एक गम्भीर खतरा है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

जर्मनी का पहला परमाणुविक विद्युत-स्टेशन
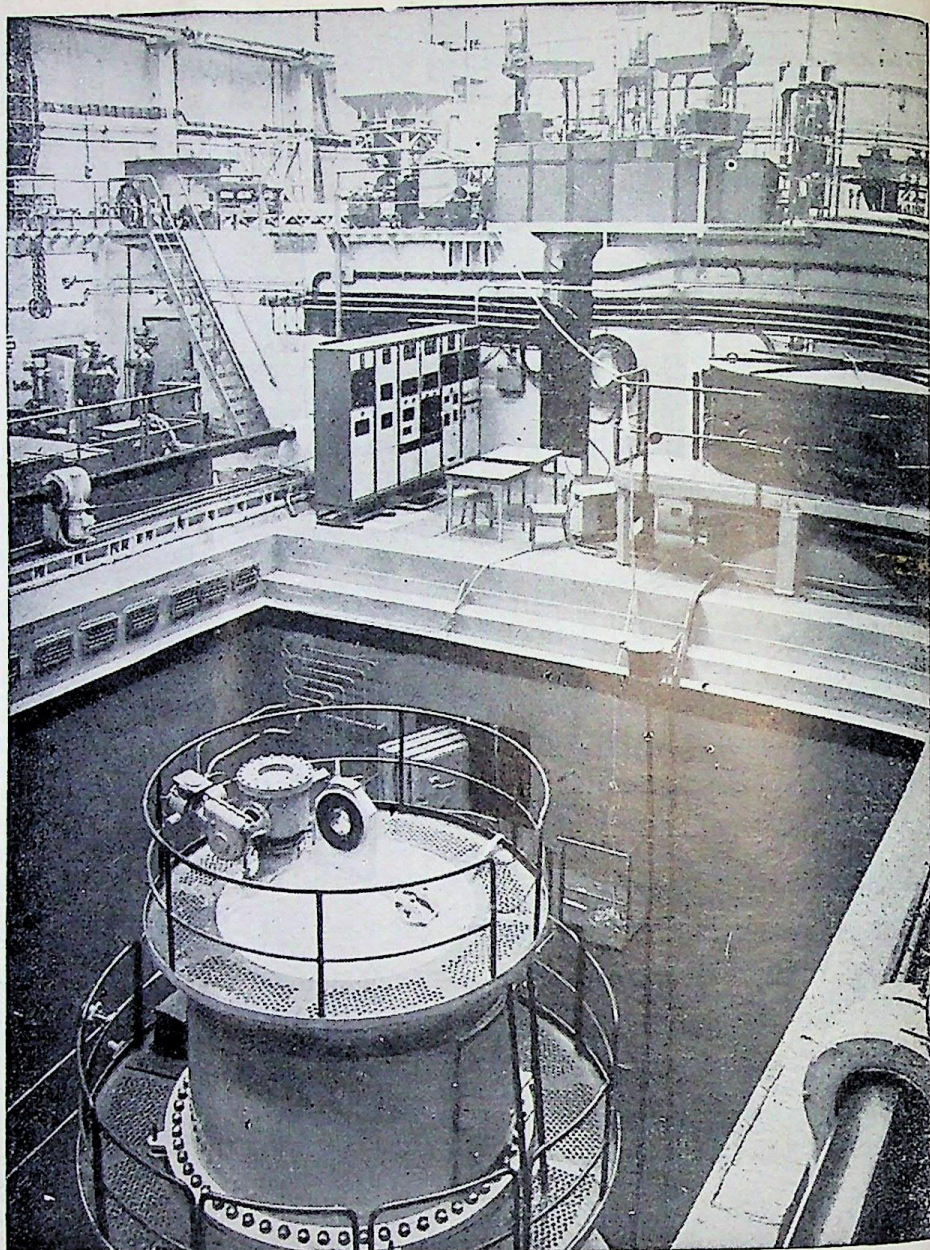
इस वर्ष ९ मई को राजधानी बर्लिन के निकट राइन्सबर्ग में ज. ज. ग. के प्रथम परमाणुविक विद्युत केन्द्र ने कार्य शुरू किया। यह जर्मन भूमि पर पहला परमाणुविक शक्ति केन्द्र है जो उद्योगों को परमाणु से उत्पादित बिजली देता है। इसके साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र उन राष्ट्रों की श्रेणी में आ गया है जो परमाणु शक्ति का उपयोग शांतिपूर्ण कार्यों के लिए करते हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के हजारों वैज्ञानिकों और कामगरों ने हमारी जनता के जीवन में वह ऐतिहासिक उपलब्धि की है जो भावी पीढ़ियों द्वारा याद की जायगी। साथ ही उन्होंने व्यवहार में यह बात सुनिश्चित कर दी है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र संसार के दस प्रमुख औद्योगिक देशों में अपना स्थान बनाये हुए है।

संसार के प्रमुख औद्योगिक देशों में जर्मन जनवादी गणतंत्र का गिना जाना उसकी वैज्ञानिक क्षमताओं का प्रमाण है।

मेहनतकश वर्ग और विज्ञान में निकट सम्पर्क ही विज्ञान द्वारा अपने मूल उद्देश्य के प्रति न्याय को सुनिश्चित बनाता है——अर्थात इस बात को सुनिश्चित बनाता है कि विज्ञान के परिणाम जनता की सेवा और सामाजिक प्रगति के साधन बनेंगे।

इस परमाणुविक शक्ति केन्द्र के निर्माण के दौरान हमारे उद्योग के सामने कभी-कभी नितान्त नयी और अत्यन्त पेचीदी समस्याएं खड़ी हो गयीं। इसके लिए नये सामान, नयी तकनालाजी और इस शक्ति केन्द्र के काम करने तथा उसके नियंत्रण आदि के विश्वसनीय सूक्ष्म यन्त्रों और उपकरणों की आवश्यकता पड़ी। अणु विद्युत केन्द्र के लिए इस्पात तथा कंक्रीट के विशाल वर्गों के उत्पादन की नयी पद्धति और इसके साथ उसके निर्माण में संलग्न व्यक्तियों में अत्यधिक मानसिक कार्य-क्षमता की भी आवश्यकता थी।

अणु विद्युत केन्द्र का निर्माण न सिर्फ उचित

था बल्कि ज. ज. ग. के लिए जरूरी भी। कुछ दशकों में ही विद्युत शक्ति की हमारी अधिकाधिक बढ़ती हुई आवश्यकता को इगनाइट के हमारे खनिज भण्डार पूरा नहीं कर सकेंगे। इसका अर्थ है कि हमें शक्ति के दूसरे स्रोत ढूंढ़ने पड़ेंगे। दूसरे, जल विद्युत केन्द्रों से उपलब्ध बिजली का लागत मूल्य शीघ्र ही अणु विद्युत केन्द्र से उपलब्ध बिजली के लागत मूल्य से बहुत अधिक बैठने लगेगा।

विद्युत केन्द्र तक कोयले की ढ़लाई और उसके बाद उपभोक्ताओं को बिजली की सप्लाई बहुत मंहगी पड़ती है। अणु विद्युत केन्द्रों का निर्माण जल-विद्युत-घरों की तरह शक्ति साधनों की उपलब्धि के आधार पर करने की जरूरत नहीं है, बल्कि उनका निर्माण वहीं किया जा सकता है जहां शक्ति की आवश्यकता हो। इसके अतिरिक्त जल विद्युत केन्द्रों से बिजली की सप्लाई में मौसम के प्रभावों से बाधा पड़ने की संभावना, जैसे हमारे यहां जाड़ों में होती है, समाप्त हो जायगी।

राइन्सबर्ग में अणु विद्युत केन्द्र के निर्माण से—जो विकास के इस क्षेत्र में मील का पहला पत्थर है——हमने शक्ति के नये स्रोतों की खोज की दिशा में एक प्रगति की है।

इससे हमारी आर्थिक शक्ति और रानैतिक सत्ता में भी वृद्धि होती है। यह विश्व अर्थ व्यवस्थाओं में जर्मन जनवादी गणतंत्र को एक प्रधान शक्ति तथा अन्य आधुनिक औद्योगिक देशों का एक महत्वपूर्ण साझीदार बनाने में सक्षम बनायेगा।
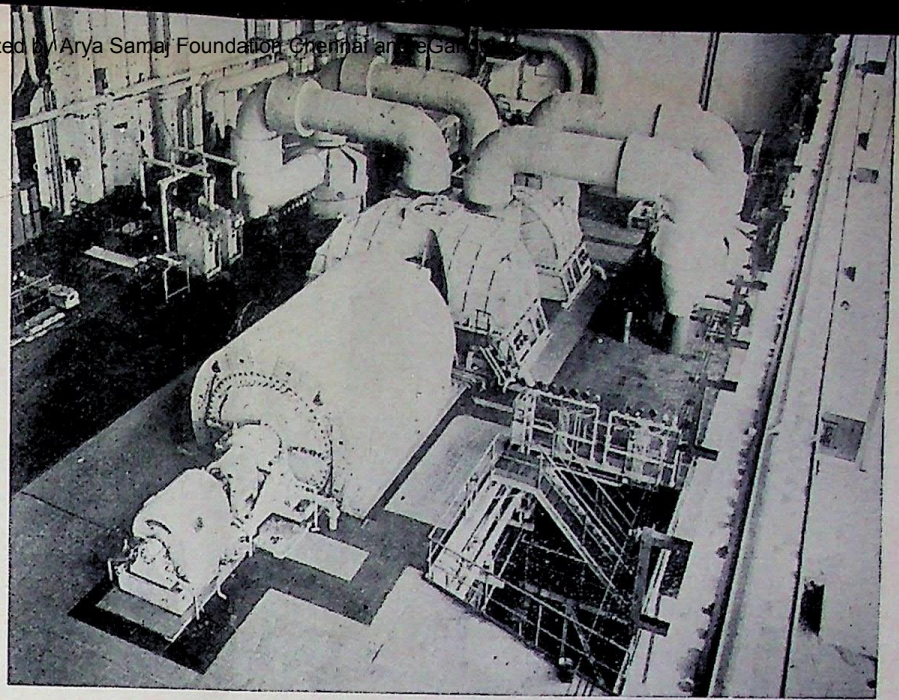
जेनरेटर ७० मेगावाट शक्ति का उत्पादन करता है। टर्बाइन भाप से काम करता है।

राइन्सबर्ग के अणु विद्युत केन्द्र का निर्माण सोवियत संघ के सक्रिय सहयोग से हुआ। उच्च दक्षता प्राप्त सोवियत वेल्डरों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के मजदूरों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया, सोवियत संघ के रिएक्टर निर्माताओं ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के वैज्ञानिकों को सहयोग दिया। दोनों देशों के वैज्ञानिकों ने एक-दूसरे से राय ली, एक दूसरे के साथ प्रयोग किये और सर्वश्रेष्ठ हलों की खोज की। जर्मन जनवादी गणतंत्र के वैज्ञानिकों ने सोवियत संघ के दूब्ना परमाणुविक शोध संस्थान और नोवो-वोरोनेश अणु विद्युत केन्द्र में अध्ययन किया और जो अनुभव तथा ज्ञान उन्होंने वहां प्राप्त किया उससे वे आज अपने राइन्सबर्ग अणु विद्युत केन्द्र को चलाते हैं। राइन्सबर्ग जर्मन जनवादी गणतंत्र और सोवियत संघ में शांति तथा मैत्री के दृढ़ समझौते का सबसे नया शिशु है। यह हमारी रचनात्मक शक्ति और देशों की अटूट मैत्री का प्रतीक है।

परमाणुविक विद्युत स्टेशन का कन्ट्रोल रूम
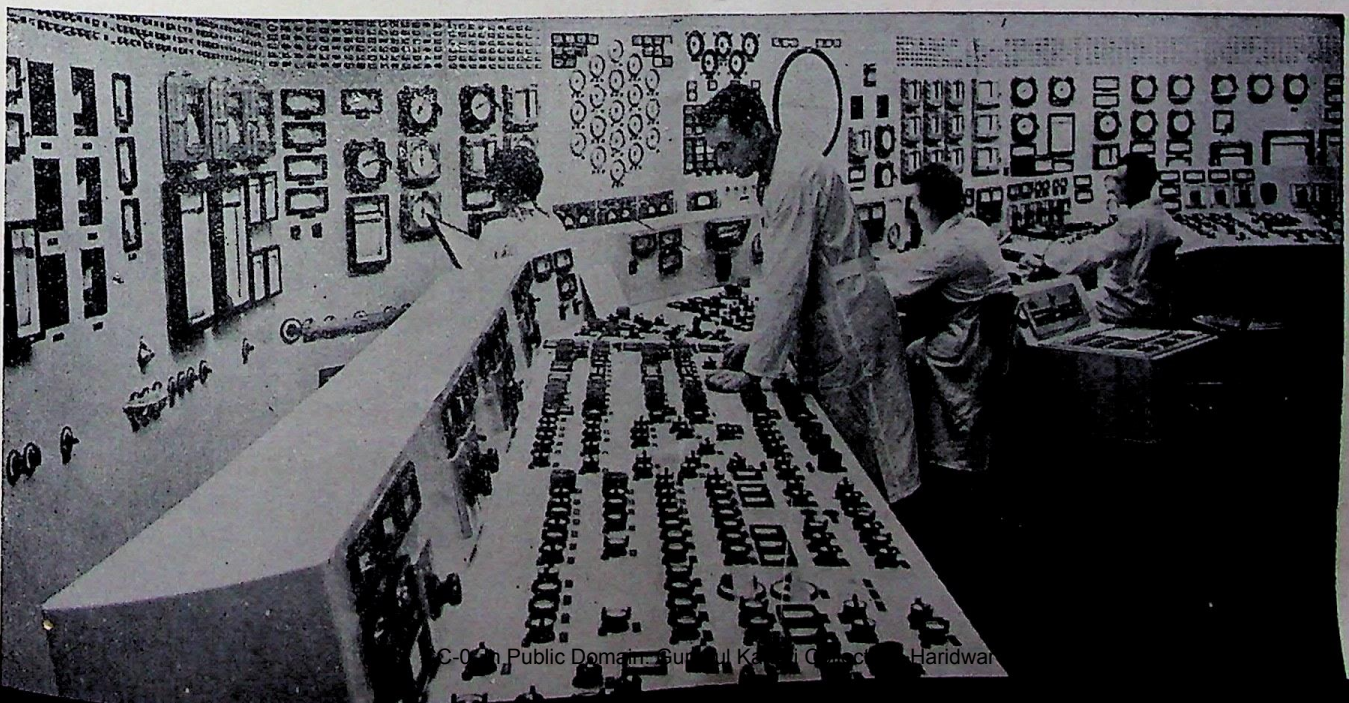
दो जर्मन पार्टियों में संवाद जारी है

ज. ज. ग. की पार्टी द्वारा पश्चिमी प्रचार का खंडन

जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय समिति ने एकमत से यह विचार प्रकट किया है कि पश्चिम जर्मन सोशल डैमोक्रैटिक पार्टी (एस.पी.डी.) के साथ विचार-विमर्श को "जारी रखा जाय" और उसे इस तरह चलाया जाय जिससे कि "हमारी जनता की आवश्यक समस्याओं के सम्बंध में हमारे बीच समान समझदारी पैदा हो सके "।

केन्द्रीय समिति के बयान में आगे कहा गया है: "हमारी दो पार्टियों के बीच समान समझदारी पैदा होने में निश्चित रूप से समय लगेगा । पर हम समझते हैं कि दोनों जर्मन राज्यों की जनता के जीवन को सुखमय और सुरक्षित बनाना अन्तिम रूप से इस प्रश्न के उत्तर पर निर्भर करेगा कि जर्मन भूमि से नये युद्ध की शुरूआत को किस तरह रोका जाय और संयुक्त जर्मनी का भावी रूपरंग किस प्रकार का बनाया जाय ।"

इसके बाद बयान में प्रस्तावित बैठकों का उल्लेख करते हुए यह कहा गया है : "हमें मालूम हुआ है कि उत्तरी राइन वेस्टफालिया के चुनावों के कारण एस.पी.डी. की कार्यकारिणी से एसेन में बैठक न बुलाने का अनुरोध किया गया है । इससे यह भी जाहिर हो जाता है कि चुनाव आन्दोलन के कारण वहां तनाव और उत्तेजना का कैसा वातावरण पैदा हो गया है ।

"जर्मनी की दो सबसे बड़ी पार्टियों के बीच सम्पर्क स्थापित करने और दोनों में समान समझदारी पैदा करने के ध्येय को हम बहुत अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं । अतएव दोनों पार्टियों के बीच होने वाले खुले विचार-विमर्श को हम पश्चिमी जर्मनी में होने वाले चुनावों का निरर्थक विषय बनाना नहीं चाहते, क्योंकि वहां के चुनावों में ईमानदारी से प्रायः काम नहीं लिया जाता है । इसमें संदेह नहीं कि समाजवादी एकता पार्टी के प्रतिनिधि एस.पी.डी. के रवैये पर वस्तुपरकता और आवश्यक स्पष्टता के साथ विचार करेंगे, लेकिन तभी जब कि वे पश्चिमी जर्मनी में जाकर बोलेंगे । हम यह नहीं चाहेंगे कि सी.डी.यू. इस या किन्हीं अन्य घटनाओं का, जिनका प्रस्तावित प्रथम बैठकों में समाधान होना असंभव है, एस.पी.डी. के खिलाफ पैंतरेबाजी के लिए इस्तेमाल करे ।

"अतएव हम एस.पी.डी. की कार्यकारिणी द्वारा प्रस्तावित मई की तिथियों को अनुपयुक्त समझते हैं और जुलाई की तिथियों का प्रस्ताव करते हैं । उस समय तक एस.पी.डी. की पार्टी कांग्रेस हो जायगी और उत्तरी राइन वेस्टफालिया का चुनाव भी समाप्त हो जायगा । आशा है तब तक कई प्रश्नों के सम्बंध में एस.पी.डी. की स्थिति भी ज्यादा स्पष्ट हो जायेगी और तब दोनों बैठकें शान्त वातावरण में हो सकेंगी ।

"एक ओर एस.पी.डी. के नेतृत्व ने हनोवर में बैठक बुलाने का प्रस्ताव किया, दूसरी ओर लोअर सैक्सनी के गृह-मंत्रालय ने यह ऐलान किया कि ज.ज.ग. के उन नागरिकों को, जिन पर यह शक होगा कि वे समाजवादी एकता पार्टी या जर्मनी की गैर-कानूनी कम्युनिस्ट पार्टी के उद्देश्यों के मुताबिक काम करते हैं, पश्चिमी जर्मनी में आने नहीं दिया जायगा । समाजवादी एकता पार्टी इस ऐलान को आश्चर्य की दृष्टि से देखती है। कोई व्यक्ति इस बात को गंभीरता से सोच भी नहीं सकता कि समाजवादी एकता पार्टी के प्रवक्ता हमारी पार्टी की नीति का प्रतिनिधित्व नहीं करेंगे । ऐसी स्थिति में समाजवादी एकता पार्टी के प्रवक्ताओं की हिफाजत को कैसे सुनिश्चित बनाया जायेगा— खास तौर से ऐसी हालत में जब ज.ज.ग. की पार्टियों और जन-संगठनों के सभी सदस्यों और पदाधिकारियों के खिलाफ मुकदमा

एस.पी.डी. के प्रतिनिधि समाजवादी एकता पार्टी के प्रतिनिधियों से वार्ता के बाद बाहर आते हुए । एस.पी.डी. के प्रतिनिधि हैं : फ्रिट्स सटालबर्ग (बायें) और हांस स्ट्रीफाइनर (दायें से दूसरे) समाजवादी एकता पार्टी के पाल वर्नर, वेरनर लैम्बर्ज (दायें से तीसरे और चौथे)

चलाने का मनमाना विशेष कानून अभी भी वहां बरकरार है और पश्चिमी जर्मनी में प्रवेश करने पर उनके गिरफ्तार कर लिये जाने का खतरा मौजूद है। इसके अलावा, हम यह भी देख रहे हैं कि एस.पी.डी. की कार्यकारिणी हमारी पार्टी के नेताओं के खिलाफ चलाये जाने वाले जहरीले प्रचार का अभी तक भी दृढ़ता से विरोध नहीं कर रही है।"

बयान में फिर से यह आश्वासन दिया गया है कि ज.ज.ग. में एस.पी.डी. के प्रवक्ताओं की व्यक्तिगत स्वतंत्रता पूरी तरह सुरक्षित रहेगी। समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय समिति ने एस.पी.डी. की कार्यकारिणी के सामने यह सुझाव भी पेश किया है कि अमरीकी राष्ट्रपति जानसन के पास संयुक्त रूप से या अलग-अलग "वियतनाम में युद्ध बन्द करने और वहां से सभी अमरीकी फौजों को तुरन्त हटा लेने" का मांग-पत्र भेजा जाय। वियतनाम में अमरीकी युद्ध के प्रति अपनाया जाने वाला दृष्टिकोण एक ऐसी कसौटी है जिस पर शान्ति या युद्ध के प्रति किसी के दृष्टिकोण की सच्ची परख हो जाती है।

समाजवादी एकता पार्टी के बयान में एस.पी.डी. से कहा गया है: "इस परिस्थिति में सी. डी.यू. से भयभीत होना खास तौर से बुरी बात है। हैम्बर्ग नगर चुनावों से यह जाहिर हो गया है कि समाजवादी एकता पार्टी के साथ विचार-विमर्श शुरू करने के तुरन्त बाद वहां एस.पी.डी. को १९४५ के बाद सबसे बड़ी चुनाव सफलता मिली। जाहिर है कि हैम्बर्ग के मतदाताओं ने सी.डी.यू. के आलिंगन से अपने को मुक्त करने की दिशा में प्रथम क़दम उठाने के एस.पी.डी. के आवश्यक साहस के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित किया है।"

बर्लिन की राज्य सीमा के सम्बंध में बयान में यह कहा गया है: "पश्चिमी जर्मनी के प्रतिशोधकामी, ज.ज.ग. की प्रादेशिक सीमा में स्थित पश्चिमी बर्लिन के विशेष क्षेत्र का दुरुपयोग करते हुए हमारे खिलाफ जो उत्तेजनात्मक कार्यवाइयां कर रहे हैं, उन्हें हम खास तौर से चिन्ता की दृष्टि से देखते हैं। एस.पी.डी. इस सम्बंध में उनका साथ क्यों देती है? क्या सोशल डेमोक्रैट यह नहीं समझते कि ऐसा करके वे सी.डी.यू. की उन्हीं आक्रामक शक्तियों की (बौन की) सहायता कर रहे हैं जो पश्चिमी बर्लिन में उनके (एस.पी.डी.) के बहुमत को छीन लेना चाहती हैं?"

बयान में आगे कहा है: "एस० पी० डी० की कार्यकारिणी ने अपने बयान में कहा है कि 'एस पी० डी० केवल अपने कामों के जरिए जनता के कल्याण के लिए आवश्यक परिस्थियों का निर्माण करेगी' और यह कि बौन सरकार में भाग नहीं लेकर भी इस सम्बंध में एस. पी. डी. काफी काम कर सकती है। उसके इस बयान से हमें खेद हुआ है।"

ज. ज. ग. की समाजवादी एकता पार्टी ने उसके बाद ये प्रश्न पूछे:

—एस. पी. डी. की कार्यकारिणी ने दो जर्मन राज्यों के बीच व्यापार को स्वाभाविक बनाने और बढ़ाने की मांग क्यों नहीं उठाई?

—उसने ज. ज. ग. के खिलाड़ियों के साथ पश्चिमी जर्मनी में किये गये भेदभाव के बरताव को रोकने की कोशिश क्यों नहीं की?

—उसने ज. ज. ग. के कलाकारों, वैज्ञानिकों, डाक्टरों, व्यापारियों और पत्रकारों को पश्चिम बर्लिन के तथाकथित यात्रा बोर्ड द्वारा परेशान किये जाने का विरोध क्यों नहीं किया?

—एस. पी. डी. की कार्यकारिणी ने उन तपे हुए फासिस्ट-विरोधियों की रिहाई की मांग क्यों नहीं की जिन्हें पश्चिमी जर्मनी के उन्हीं या उसी विचार के जजों ने सजा दी है जिन्होंने हिटलर शासन के समय सोशल डैमोक्रैटों और कम्युनिस्टों को जेलों और यातना शिविरों में डाल रखा था?

—उसने जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी पर से प्रतिबन्ध हटाने की मांग क्यों नहीं उठाई?

अन्त में समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय समिति ने एस. पी. डी. के उस बयान का उल्लेख किया है जिसमें कहा गया है कि दो जर्मन राज्यों की सरकारें एक-दूसरे के साथ दो विदेशी राज्यों जैसा बर्ताव नहीं कर सकतीं।

"हम भी इस बात से सहमत हैं, क्योंकि वे आखिर दो जर्मन राज्य ही तो हैं। या इसका मतलब यह होता है कि दो जर्मन राज्य और उनकी सरकारें एक-दूसरे से क़तई बातचीत न करें और किसी तरह का सम्बन्ध न रखें? क्या यह स्वाभाविक है कि पश्चिमी जर्मनी एक ओर तो दक्षिण वियतनाम के तानाशाह की के शासन के साथ, फ्रैंको, सालाजार और वेरवेर्ड की फासिस्त सरकारों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखे, और दूसरी ओर अपने सभी साधनों का उपयोग करके दूसरे जर्मन राज्य के साथ स्वाभाविक सम्बन्धों को कायम नहीं होने देता?"

विभिन्न अभिमत . . .

बायेर्न कुरियर ने जो पश्चिमी जर्मनी के भूतपूर्व रक्षा-मन्त्री स्ट्राउस का मुखपत्र है, दो जर्मन मजदूर पार्टियों के बीच समान समझदारी पैदा करने के सभी प्रयासों को 'एकीकरण की मूर्खतापूर्ण योजनायें' बताया है। तनाव में कमी लाने की इच्छा रखनेवाले पश्चिमी जर्मनी के लोगों को उसने "मूर्ख और राजनीतिक जुएबाज" कहा है। पत्र ने विचारों के आदान-प्रदान की "हालस्टाइन सिद्धान्त को और इस प्रकार एक मात्र प्रतिनिधित्व करने के पश्चिम जर्मनी के अधिकार को कमजोर करने का अदूरदर्शी प्रयास" कह कर निन्दा की है।

पश्चिम जर्मन संसद के अध्यक्ष डा० गेरस्टेनमायर ने अखबारों को बयान देते हुए ऐलान किया है कि "जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिकों के खिलाफ भेदभाव बरतने वाले कानूनों को रद्द करना सम्भव नहीं है। पुनः एकीकरण के प्रति सम्मान की भावना के बावजूद "जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिकों को सताया जाना जारी रखा जायगा", क्योंकि "राष्ट्रीय एकता हमारी सर्वोच्च वैधानिक धरोहर नहीं है।" उन्होंने आगे कहा: "और ऐसे भी यह मेरे अनुकूल नहीं है, संक्षेप में यह कि मैं फिर ऐसी स्थिति में पड़ना नहीं चाहता जिसमें जनता के लिए उपयोगी बात को ही न्यायोचित कहा जाता है।"

पश्चिमी जर्मन कानूनों की वैधता सीमा पर खतम हो जाती है

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने पश्चिमी जर्मनी के कानूनों के सीमा क्षेत्र का विस्तार करने के उस एक पक्षीय निर्णय पर विरोध प्रकट किया है जिसके अनुसार उन कानूनों को जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिकों के खिलाफ भी इस्तेमाल किया जायगा

"जर्मन राष्ट्र से सम्बन्धित प्रमुख सवालों पर जर्मन जनवादी गणतंत्र की समाजवादी एकता पार्टी के प्रस्ताव पर पश्चिमी जर्मनी की सोशल डमोक्रटिक पार्टी से विचारों का जो आदान प्रदान हो रहा था उस सिलसिले में पश्चिमी जर्मन संघीय गणराज्य ने धृष्टतापूर्ण तरीके से अपने कानूनों की वैधता का क्षेत्र दूसरे देशों तक बढ़ा कर अपनी प्रतिशोधावी मनोवृत्ति का परिचय दिया है।

"उसने खुले तौर पर घोषणा की है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिक पश्चिमी जर्मनी में होने वाली सार्वजनिक सभाओं में भाग लेंगे तो वे जर्मन जनवादी गणतंत्र की सीमा में ही शांति, राष्ट्रीय समझदारी और अपने देश की सुरक्षा और सुदृढ़ीकरण के हित में अपनी कार्रवाइयों के लिये दण्डित किये जा सकते हैं।

"पश्चिम जर्मन सरकार की यह मान्यता इस विचार पर आधारित है कि भूतपूर्व जर्मन राइख अभी तक, ३१ दिसम्बर १९३७ की सीमा के अन्तर्गत अस्तित्व में है और उसका प्रतिनिधित्व केवल पश्चिमी जर्मन संघीय गणराज्य करता है। इस विचार के अनुसार, जो अन्तर्राष्ट्रीय कानून के विरुद्ध है, वह यह बेहूदा और मिथ्या दावा करता है कि उसके एक पक्षीय कानून न सिर्फ जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिकों पर बल्कि पोलैण्ड के जनवादी गणतंत्र और सोवियत संघ के नागरिकों पर भी लागू होते हैं।

"पश्चिमी जर्मन कानूनों के सीमा क्षेत्र में इस एक पक्षीय विस्तार द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामों और यूरोप की सीमाओं में भी परिवर्तन करने के पश्चिमी जर्मन सरकार के आक्रामक इरादे प्रगट होते हैं। इस प्रकार पश्चिमी जर्मन संघीय सरकार ने एक बार और अपनी उन नीतियों का इजहार किया है जो शांति के लिए खतरा हैं। यह संयुक्त राष्ट्र संघीय घोषणापत्र के उन सिद्धन्तों का पूर्ण उल्लंघन है, जो आक्रमणों पर प्रतिबन्ध लगाते हैं और प्रत्येक देश से दूसरे देश की प्रभुसत्ता का आदर करने और इसके अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप न करने की मांग करते हैं। पश्चिमी जर्मनी की अन्यायपूर्ण कार्रवाइयां जो सम्पूर्ण जर्मनी का अकेले ही प्रतिनिधित्व करने के उसके दुराग्रह पर आधारित होती हैं, दोनों जर्मन राज्यों के सम्बन्धों के सुधार के मार्ग में निरन्तर नयी बाधाएं खड़ी करती रहती हैं। इन कार्रवाइयों को आपसी समझदारी बढ़ाने और सम्बन्धों में सुधार की किसी भी नीति के विरुद्ध योजनाबद्ध शत्रुता पूर्ण कार्रवाई ही कहा जा सकता है।

"जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार पश्चिमी जर्मनी के कानूनों का सीमा क्षेत्र जर्मन जनवादी गणतंत्र तक बढ़ाने, और उन्हें जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिकों के खिलाफ, जो अपने देश की शांतिपूर्ण नीतियों का पालन करते हैं, इस्तेमाल करने के संघीय सरकार के एक पक्षीय निर्णय का जोरदार और कड़ा विरोध करती है। पश्चिमी जर्मन संघीय सरकार का यह कार्य अन्तर्राष्ट्रीय कानून का पूर्ण और खुला उल्लंघन है।..."

ज. ज. ग. और सोवियत संघ...

(पृष्ठ ३ का शेषांश)

पश्चिमी जर्मन सरकार के इस पत्र के उत्तर में सोवियत सरकार ने कहा है कि जर्मनी की पुरानी सीमाओं के भीतर जर्मन राइख को फिर से स्थापित करने के उद्देश्य से पश्चिमी जर्मनी किसी भी तरह से परमाणविक शक्तिवाला देश बनना चाहता है। सोवियत सरकार ने पश्चिमी जर्मनी की सरकार को यह बता दिया है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र पोलैण्ड और चैकोस्लोवाकिया की सीमाओं पर उसके किसी प्रकार के हमले का मुहतोड़ उत्तर दिया जायेगा। पश्चिमी जर्मनी की सरकार समाजवादी देशों की एकता को कमजोर करने में कभी सफल नहीं हो पायेगी। सोवियत नोट में कहा गया है कि जर्मन राष्ट्रीय समस्या के समाधान की कुंजी दो जर्मन राज्यों के हाथों में है। इस प्रकार उसने पश्चिमी जर्मनी के इस आरोप का खंडन कर दिया है कि जर्मन समस्या के समाधान के रास्ते में सोवियत संघ बाधक बना हुआ है। सच तो यह है कि पश्चिमी जर्मनी ही योरप की वर्तमान वास्तविकता को देखने से इनकार करके जर्मनी के एकीकरण को रोक रहा है।

सोवियत संघ ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के इस सुझाव का हार्दिक समर्थन किया है कि दोनों जर्मन राज्य परमाणविक शस्त्रों से अपने को दूर रखें, योरप की वर्तमान सीमाओं को अन्तिम रूप से स्वीकार करलें और आपस में समझौता करने की कोशिश करें। इस समर्थन के कारण जर्मन जनवादी गणतंत्र के लिए जर्मन जनता की राष्ट्रीय समस्या के समाधान के वास्ते काम करना सुगम हो गया है। इस प्रकार जर्मन जनवादी गणतंत्र और सोवियत संघ की मैत्री जर्मनी तथा योरप की शांतिप्रिय जनता के लिए लाभदायक है जो स्थायी शांति की इच्छुक है और अतीत की पुनरावृत्ति को रोकना चाहती है।

राष्ट्र संघ में प्रवेश और यूरोपीय सुरक्षा पर ओटो विन्ज़र के विचार

संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रवेश के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र ने जो आवेदन पत्र दिया उसे ज. ज. ग. के विदेश मंत्री ओटो विन्जर ने इस वर्ष शांति की दिशा में अपने देश की सबसे महत्वपूर्ण पहलकदमी कहा है।

जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी के हाल में ही हुए खुले अधिवेशन में भाषण करते हुए हर विन्जर ने ज.ज. ग. की विदेश नीति के अंतर्गत उठाये गये नये कदमों पर प्रकाश डाला। उन्होंने जर्मन समस्या के बारे में विश्व भर में जो प्रतिक्रियाएं व्यक्त की जा रही हैं, उनका भी उल्लेख किया और पश्चिमी जर्मन सरकार के तथाकथित "शांति संबंधी पत्र" को पश्चिमी जर्मन साम्राज्यवादियों के आक्रामक कार्यक्रम को उचित ठहराने का प्रयत्न कहा।

बल प्रयोग त्यागने की घोषणा के बारे में समाजवादी देशों से विचार विनिमय करने के पश्चिमी जर्मन सरकार के प्रस्ताव का उल्लेख करते हुए ओटो विन्जर ने कहा कि ज. ज. ग. ने बहुत पहले १९५९ में ही पश्चिमी जर्मन सरकार के पास अनाक्रमण संधि का एक मसविदा भेजा था। उन्होंने कहा: "समाजवादी देशों के साथ बल प्रयोग के त्याग की घोषणाएं करने के बोन सरकार के प्रस्ताव में उन घोषणाओं को ज. ज. ग. के खिलाफ इस्तेमाल करने का इरादा साफ है। ज. ज. ग. भी इस बात के लिए तैयार है कि दोनों जर्मन राज्य आपस में बल प्रयोग न करने पर सहमत हों और तदनुसार घोषणाओं का आदान-प्रदान करें। यदि बोन सरकार सचमुच बल प्रयोग का त्याग करना चाहती है तो उसे इसमें आपत्ति नहीं होनी चाहिये।"

"पश्चिमी जर्मनी का यह दावा कि उसने आणुविक हथियारों का निर्माण बंद कर दिया है, इस बात से झूठा साबित हो जाता है कि दक्षिणी अफ्रीका के साथ उसने आणुविक शोध और विकास का संयुक्त कार्यक्रम बनाया है। साथ ही अमरीका की मदद से पश्चिमी जर्मन "संघीय गणराज्य" यूरोप में आणुविक शस्त्रों का सबसे खतरनाक भंडार बन गया है।

विदेश मंत्री ने इस तर्क का जोरदार खण्डन किया कि जर्मनी का विभाजन ज. ज. ग. के राष्ट्र संघ में प्रवेश के मार्ग में बाधक है। "आज तक किसी ने भी यह विचार व्यक्त नहीं किया कि अफ्रीका की जनता और विभिन्न जातियां जो साम्राज्यवादियों की उपनिवेशवादी नीतियों के कारण बट गयी हैं, राष्ट्र संघ में दाखिले के पहले मिल कर एक हो जायें। जर्मनी का विभाजन भी साम्राज्यवादी नीतियों का परिणाम है।"

राष्ट्र संघ की सदस्यता देशों और राज्यों के एक में मिलने या अलग-अलग होने के मार्ग में कभी बाधक नहीं। सीरिया और मिस्र १९५८ तक राष्ट्र संघ के अलग-अलग सदस्य थे। बाद में वे मिलकर एक सदस्य हो गये। लेकिन १९६१ से वे फिर विश्व संस्था के अलग अलग सदस्य हैं।

यूरोपीय सुरक्षा का उल्लेख करते हुए विदेश मंत्री ने कहा: "यरोप के सभी देशों की आपसी समझदारी यूरोप की सुरक्षा की गारंटी के लिए आवश्यक है। इस उद्देश्य से मध्य यूरोप, दो जर्मन राज्यों को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। इस बात का असाधारण महत्व आज यूरोप के बाहर भी समझा जा रहा है। ज. ज. ग. की मंत्रिपरिषद् की उप-प्रधान डाक्टर विट्टकोव्स्की की हाल की भारत यात्रा के दौरान भारत के विदेश मंत्री श्री स्वर्ण सिंह ने उनसे वार्ता के समय कहा था कि निस्संदेह विश्व शांति की कुंजी मध्य यूरोप में है। हम भारत के विदेश मंत्री के कथन से सहमत हैं। लेकिन यह कुंजी स्थाई शांति का द्वार खोले, इसके लिए दोनों जर्मन राज्यों सहित यूरोप के सभी देशों के बीच अच्छे संबन्ध होना जरूरी है। लेकिन बोन सरकार वाशिंगटन से परमाणुविक अस्त्रों की और साथ ही उनके इस्तेमाल के लिए नियंत्रण में साझे की भी मांग करती है—दूसरे शब्दों में वह विश्व-युद्ध की कुंजी पर अधिकार की मांग करती है।"

नोबेल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर गुस्टाव हर्ट्ज़

बर्लिन के बाहरी आंचलों में उन्हें विचारपूर्ण मुद्रा में घूमते हुए देख कर लोग समझते हैं कि यह महान वैज्ञानिक प्रोफेसर गुस्टाव हर्ट्ज नहीं, बल्कि कोई प्रकृति प्रेमी हैं। सचमुच प्रकृति से अपने निकट सम्पर्क द्वारा विद्वान वैज्ञानिक अपने अत्यन्त व्यस्त दिन के लिए शक्ति ग्रहण करते हैं। वैण्डेन्श्लॉस में वृक्षों से घिरी एक झील के किनारे उनका खूबसूरत बंगला वास्तव में उनके आराम के लिए ही बनवाया गया था, जिसके, एक व्यस्त और सफल जीवन के बाद वे अधिकारी हैं। लेकिन परिवार के लोगों तथा शुभचिन्तकों की यही एक ऐसी सद्भावना पूर्ण सलाह है जिसे इस विनम्र भौतिक शास्त्री ने इनकार कर दिया है। प्रोफेसर हर्ट्ज के पास अभी भी, जब कि उनका ८० वां वर्ष चल रहा है, बहुत सी योजनाएं हैं। उन्होंने जो करने को ठाना था वह सब का सब पूरा नहीं हुआ है और वे अपने अनुभवों की निधि को यथासंभव अधिक से अधिक युवक शोधकर्ताओं और भौतिक शास्त्रियों को सौंप जाना चाहते हैं।

गुस्टाव हर्ट्ज, महान जर्मन वैज्ञानिक हाइनरिख हर्ट्ज के, जो भौतिक शास्त्र के इतिहास में विद्युत चुम्बकीय रेडियो तरंगों के आविष्कारकर्ता के रूप में विख्यात हैं, भतीजे हैं। अपने इस पूर्वज की बौद्धिक वसीयत को कायम रखते हुए उनकी खोजों को उन्होंने आगे बढ़ाया और यह सिद्ध किया कि विद्युत तरंगें और प्रकाश तरंगें समान होती हैं।

अपने चाचा के समान ही गस्टाव हर्टज ने भी गणित और भौतिक शास्त्र का अध्ययन किया। म्यूनिख, गोट्टिनगेन और बर्लिन में उन्होंने गणितज्ञ डेविड हिलबर्ट, और लुडविग पेण्ड्ट्ल, कोनर्ड राण्टगेन, मैक्स फान ल्यू और मैक्स प्लैंक आदि भौतिक शास्त्रियों से शिक्षा प्राप्त की। १९११ में डाक्टरेट लेने के बाद वे १९१७ से बर्लिन में ही रहने लगे।

गुस्टाव हर्ट्ज जब २४ वर्ष के एक शोध सहायक ही थे तभी उन्होंने अपने मित्र जेम्स फ्रैंक के साथ कई कठिन शोध कार्यों में हाथ लगाया जिनमें उन्हें काफी हद तक सफलता मिली। "कनेक्शन बिट्विन क्वैन्टम हाइपोथसिस एण्ड आयोनिक टेन्शन्स" उनकी सर्वप्रथम पुस्तक का शीर्षक है। यह विषय उन दिनों बहुचर्चित था, उसी तरह जिस तरह आज अन्तरिक्ष यात्रा में 'अन्तरिक्ष मिलन' की समस्या चर्चित है। मैक्स प्लैंक ने क्वांटम सिद्धान्त की शुरुआत की थी जिसे उस समय आइन्स्टाइन और अन्य लोगों ने साहस के साथ आगे बढ़ाया।

हर्ट्ज और फ्रैंक ने इस सिद्धान्त का इलेक्ट्रान्स और वाष्प के टकराव में भी परीक्षण शुरू किया। एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयोग के बाद १९१४ में नान इलास्टिक टकरावों का पता लगा जिससे यह निष्कर्ष निकला कि अणुओं के टकराव से उन्हें एक निश्चित मात्रा में ही शक्ति प्राप्त होती है।

उसी समय डेनमार्क के एक वैज्ञानिक निल्स बोह्र ने अणु का एक माडल विकसित किया---जिसका नाम उन्हीं पर पड़ा। प्लैंक के क्वाण्टम सिद्धान्त के आधार पर यह मानकर कि अणु में शक्ति की स्पष्ट धाराएं होती हैं जिन्हें वाह्य प्रभावों से बदला जा सकता है, उन्होंने अपना माडल बनाया था। अब समस्या यह थी कि बोह्र के सिद्धान्त यदि सही प्रमाणित हों तो वे भौतिक शास्त्र के अत्यन्त महत्वपूर्ण ठोस आधारभूत सिद्धान्त सिद्ध हों।

बोह्र के माडल के सही होने का पहला और संभवतः सब से अधिक सफल प्रमाण युवक वैज्ञानिक गुस्टाव हर्ट्ज और जेम्स फ्रैंक द्वारा दिया गया जिसे उन्होंने एक प्रयोग द्वारा प्रदर्शित किया। उनकी खोज के निष्कर्ष

द्वारा बाहर के एटम में एलेक्ट्रान्स की शक्ति की विभिन्न स्थितियों का पता लगाया जा सकता था। फ्रैंक-हर्ट्‌ज प्रयोग जिसे दोनों शोधकर्ताओं ने आगे चलकर विकसित किया आज आधुनिक भौतिक शास्त्र का आधारभूत प्रयोग है और उसके निष्कर्ष आणुविक भौतिकी के प्रयोग द्वारा सुनिश्चित आधार माने जाते हैं। इसके लिए दोनों वैज्ञानिकों को १९२५ में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

गुस्टाव हर्ट्‌ज को प्रथम विश्वयुद्ध में सैनिक भी बनना पड़ा। १९१७ में वह बुरी तरह घायल हो कर लौटे। स्वस्थ होने के बाद सर्वप्रथम उन्होंने डच फिलिप्स कम्पनी की भौतिक शोध प्रयोगशाला में काम किया जहां उन्होंने इलेक्ट्रानों के टकराव के प्रयोग की पद्धति को दुरुस्त किया। महान प्रायोगिक कठिनाइयों के बीच कार्य करते हुए उन्होंने नियोजन एटम की बनावट की खोज की। उसी समय उन्होंने हाले विशवविद्यालय के भौतिक शास्त्र संस्थान के प्रोफेसर और निर्देशक का पद स्वीकार किया। तीन वर्ष बाद उन्होंने बर्लिन के हम्बोल्ट विश्वविद्यालय और टैकनिकल कालेज के प्रोफेसर का पद स्वीकार किया।

अपने बर्लिन प्रवास में वे प्लैंक और आइन्स-टाइन की विद्वत-मण्डली के सम्पर्क में आये जिसमें अन्य वैज्ञानिकों के अलावा लीज माइटनर, ओटो हैन और मैक्स बोर्न भी थे। आज गुस्टाव हर्ट्‌ज सहित ये नाम जर्मनी में भौतिक शास्त्रके एक अत्यन्त महान युग का प्रतिनिधित्व करते हैं। आज जिसे 'नव भौतिक शास्त्र' कहा जाता है उसकी अधिकांश खोजें इसी काल में की गयीं।

१९२८ में हर्ट्‌ज ने आइसोटोप्स के विखण्डन की पद्धति की खोज की जो हमारे आज के अणुयुग में परमाणुविक भट्ठी (एटमिक रिएक्टर) को शक्ति देने में व्यापक रूप से प्रयोग की जाती है।

एक साहसी जनतंत्रवादी और शांति के समर्थक प्रोफेसर गुस्टाव हर्ट्‌ज नाज़ीवाद के आगे न झुकना चाहते थे न झुके। चूंकि उन्होंने नाजियों के प्रति भक्ति के एक वक्तव्य पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया इसलिए उन्हें विश्वविद्यालय छोड़ना पड़ा।

उसके बाद उन्होंने सीमेन्स ट्रस्ट की एक औद्योगिक शोध प्रयोगशाला के प्रधान का पद ग्रहण किया। द्वितीय महायुद्ध के बाद १९४५ में उन्होंने परमाणुविक शोध के कार्य को विस्तार देने में, विशेष कर परमाणु शक्ति के शांति पूर्ण उपयोग की दिशा में मूलभूत देन दी। इसके साथ ही अल्ट्रासानिक भौतिकी और विद्युतीय संवहन इंजीनियरिंग की कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं को हल किया।

प्रोफेसर हर्ट्‌ज बर्लिन स्थित जर्मनी की विज्ञान अकादमी के नियमित सदस्य हैं। इसके साथ ही वे जर्मन नेचुरल साइसन्सैज की लियोपोल्डिना अकादमी, लाइपजिग की सैक्सोनियन विज्ञान अकादमी, प्रेग की चैको-स्लोवाक विज्ञान अकादमी के भी सदस्य हैं। वे बुडापेस्ट स्थित हंगेरियन विज्ञान अकादमी के सम्मानित सदस्य ग्रोटिंगेन विज्ञान अकादमी के सहयोगी सदस्य और सोवियत विज्ञान अकादमी के भी विदेशी सदस्य हैं।

कुछ ही वर्ष पहले परमाणुविक भौतिक शास्त्र की प्रथम पाठ्‌ पुस्तक उनकी देख रेख में प्रकाशित हुई है जो विद्यार्थी को भौतिक शास्त्र के इस आकर्षक क्षेत्र से परिचित कराती है। इस महान वैज्ञानिक के कार्य ज. ज. ग. के युवक वैज्ञानिकों के लिये एक उदाहरण बन गये हैं। वे उनके विचारों और निर्णयों की स्पष्टता तथा जर्मन जनता, विश्व शांति और सम्पूर्ण मानवता के हितों के लिए उनके कार्यों को प्रशंसा और आदर की दृष्टि से देखते हैं।

प्रोफेसर डाक्टर हर्ट्‌ज अपने शिष्यों के साथ

१९५४ में उन्होंने पुनः लाइपजिग विश्व-विद्यालय में शैक्षणिक कार्य शुरू किया और वहां से १९६१ में अवकाश ग्रहण किया। प्रमुख वैज्ञानिक संस्थाओं में उनके सक्रिय सहयोग के कारण, जो वह अभी भी करते हैं, उन्हें १९५५ में ज. ज. ग. के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया और बाद में विशिष्ट सेवापदक, बैनर आफ लेबर और अन्य राष्ट्रीय सम्मान दिये गए। सोवियत सरकार ने उन्हें लेनिन पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया।
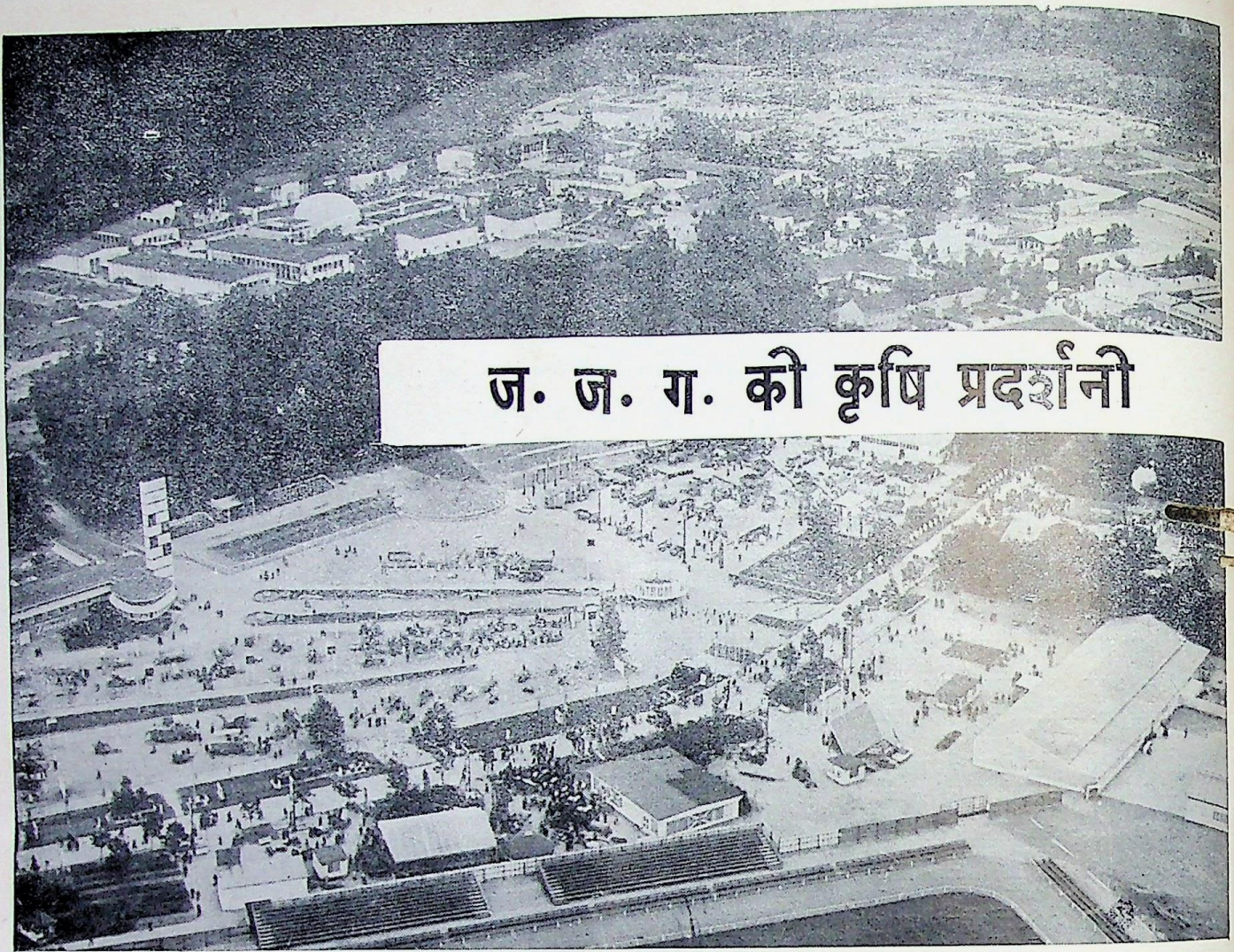
ज. ज. ग. की कृषि प्रदर्शनी

हरसाल गर्मियों में, जून-जुलाई महीने में जर्मन जनवादी गणतंत्र की कृषि प्रदर्शनी लाइपजिग के निकट मार्कलीबर्ग में हुआ करती है। अब तक हुई प्रदर्शनियों में कृषि में रुचि लेनेवाले करीब ११० लाख लोग और कृषि विशेषज्ञ इस प्रदर्शनी के, जिसे वे 'हरा विश्वविद्यालय' कहना पसन्द करते हैं मेहमान रह चुके हैं। इनमें से १ लाख लोग दुनिया के सभी देशों के लोग थे।

दर्शकों की सर्वसम्मत राय है कि यह कृषि प्रदर्शनी विशाल पैमाने पर आयोजित एक ऐसा, शैक्षिक प्रदर्शन है जिसका अन्तर्राष्ट्रीय महत्व है।"

फ्रांस के एक दर्शक एन. मोनोड का कहना है: "हमारे लिए यह प्रदर्शनी अपने अतुलनीय शैक्षिक चरित्र के कारण एक महान अन्वेषण है। इस तरह की और इतनी उच्च कोटि की कोई और प्रदर्शनी होती है, हमें नहीं मालूम। इसे देख कर हमें अतीव प्रसन्नता हुई।"

१४० हेक्टर के एक विशाल क्षेत्र और ९० हालों तथा मण्डपों में आयोजित इस शैक्षिक प्रदर्शनी में दर्शकों को कृषि की सभी समस्याओं का पूर्ण वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषित स्वरूप देखने को मिलेगा। अपनी व्यापकता और आधुनिक स्वरूप के कारण १४ वीं कृषि प्रदर्शनी अर्थव्यवस्था और उत्पादन, सघन खेती और श्रम उत्पादकता, सहकारिता और विशेषज्ञता आदि के बहुविध सम्बन्धों पर प्रकाश डालती है जो भावी नियोजन पर वैज्ञानिक प्रबन्ध के प्रभाव तथा एक विशाल समाजवादी आयोजन की चौमुखी प्रगति का दिग्दर्शन करते हैं।

इस प्रदर्शनी में जर्मन जनवादी गणतंत्र की समाजवादी कृषि के सबसे अच्छे समायोजनों की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियों के बारे में मौखिक रूप से, चित्रों, चार्टों, फिल्मों, और माडलों द्वारा बताया जायगा। इसके साथ ही पशु तथा कृषि उत्पादन में अधिक वृद्धि के तरीकों, सहकारी संघों के अन्तर्सम्बन्धों के विकास, कृषि सेवा समायोजनों के विस्तार और औद्योगिक आधार पर शुरू की जाने वाली व्यवस्था की दिशा में उनके द्वारा उठाये गये कदमों और उत्पादन के संगठन पर भी उक्त माध्यमों से सविस्तार प्रकाश डाला जायगा।

मार्कलीबर्ग की कृषि प्रदर्शनी का उद्देश्य यह है कि कृषि में रुचि लेने वालों को दिलचस्प उदाहरणों द्वारा कृषि उत्पादन के सभी अंगों और नवीनतम वैज्ञानिक खोजों के

व्यावहारिक कार्य के दौरान प्राप्त हुए सर्वश्रेष्ठ अनुभवों से अवगत किया जाय ।

प्रदर्शनी में आयोजित गोष्ठियों और अनौपचारिक बैठकों में कृषि वैज्ञानिकों तथा उससे संबंधित अन्य लोगों से अनुभवों का आदान प्रदान कर दर्शक नया ज्ञान प्राप्त करते हैं और अपने काम के ढंग में विकास के नये तरीकों की खोज करते हैं, जिसका अवश्यम्भावी परिणाम अधिक आर्थिक लाभ होता है । मार्कलीबर्ग अपने मेहमानों और शिक्षार्थियों को ५ हेक्टर के क्षेत्रफल में बने एक औद्योगिक प्रतिष्ठान में कृषि की नवीनतम तकनीकों का भी ज्ञान प्राप्त कराता है ।

इस 'हरा विश्वविद्यालय' का महत्व उसके उच्च वैज्ञानिक तथा शैक्षिक चरित्र के कारण विद्यार्थी दर्शकों के लिए धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है । बहुत से दर्शक अपने काम से संबंधित किसी ठोस समस्या का अध्ययन करने के लिखित निर्देशों सहित आते हैं ।

इस महत्वपूर्ण शैक्षिक कृषि प्रदर्शनी के पीछे मूल भावना यह दिखाना है कि ज्ञान और अनुभव के मैत्रीपूर्ण आदान प्रदान द्वारा कृषि उत्पादन और श्रम उत्पादकता में उच्चतम वृद्धि कैसे उपलब्ध की जा सकती है । विज्ञान और नयी तकनोलाजी का खेती के समाजवादी सघनीकरण और पशुपालन में और अच्छा उपयोग कैसे किया जा सकता है और विज्ञान तथा तकनोलाजी के उपयोग द्वारा औद्योगिक उत्पादन में कदम-ब-कदम संक्रमण कैसे हो सकता है ।

लेकिन इस प्रदर्शनी का कार्यक्रम सिर्फ कृषि के पेशे से संबंधित समस्याओं का दिग्दर्शन कराना ही नहीं है । मार्कलीबर्ग जर्मन जनवादी गणतंत्र के ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक जीवन को भी प्रतिबिम्बित करता है । दर्शकों के मनोरंजन के लिए पेश किये जाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत ग्रामीण लोक गीतों से लेकर हल्के फुल्के गाने तक रहते हैं ।

प्रदर्शनी के दौरान सबसे अच्छी सांस्कृतिक तथा गैर पेशेवर संगीत मण्डलियां, आर्केस्ट्रा तथा बैंड पार्टियां अपने कार्यक्रम देती हैं । प्रदर्शनी में एक ग्रामीण क्लब घर बना होता है जहां ग्रामीण कस्बों की बाकायदा बैठकें होती हैं—जो यह बताती हैं कि गांवों की बौद्धिक तथा सांस्कृतिक जिन्दगी को कैसे जागृत और विकसित किया जा सकता है ।
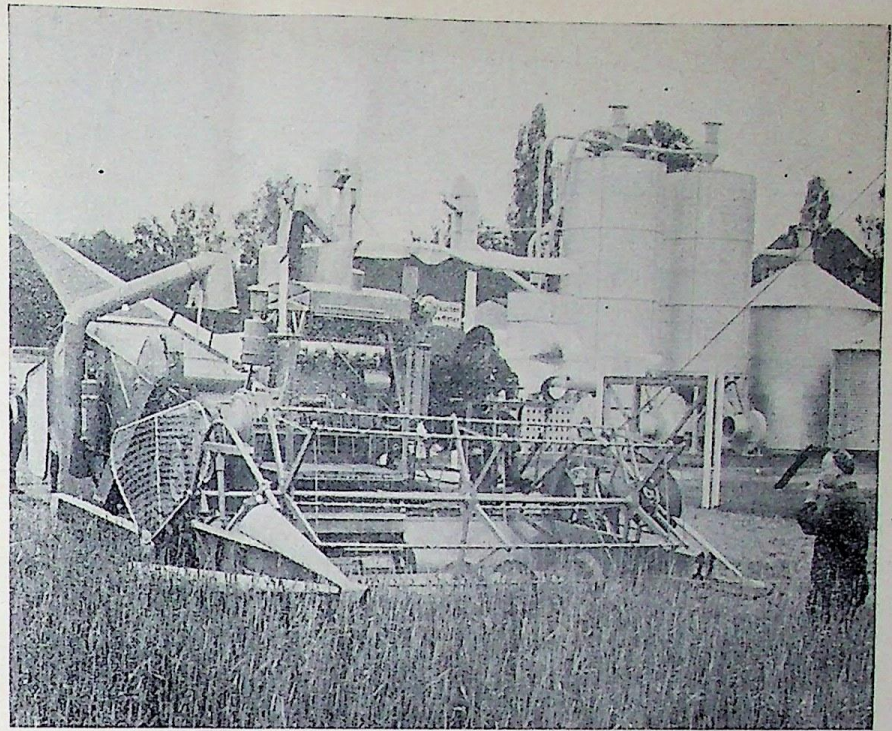
प्रदर्शनी स्थल से ही लगा हुआ एक पार्क है जहां फलों की सजावट, हंसों का सरोवर, फौवारे और शान्त जगहें प्रदर्शनी में घूमने से थके हुए लोगों को कुछ देर बैठने और आराम करने का आमंत्रण देती हैं ।

प्रदर्शनी में जुताई, दूध दुहने, घुड़सवारी और लम्बी तथा ऊंची कूद की अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं एक ऐसी तस्वीर पेश करती हैं जो सिर्फ वर्णन की नहीं वरन् निजी अनुभव की चीज है ।

जर्मनी का विभाजन और पुनः एकीकरण का मार्ग

ज. ज. ग. की राजधानी बर्लिन में २० अप्रैल १९६६ को एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस कान्फ्रेंस में 'जर्मनी का विभाजन और पुनः एकीकरण का मार्ग' शीर्षक जर्मन समस्या सम्बन्धी एक सर्वेक्षण जनता के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

भूमिका के अनुसार १२० पृष्ठों वाले इस सर्वेक्षण में जर्मनी तथा विश्व भर की जनता के समक्ष यह "सिद्ध करने की कोशिश की गयी कि कैसे पोट्सडम सन्धि का उल्लंघन कर जर्मनी का विभाजन किया गया, इसके साथ ही इस सर्वेक्षण का उद्देश्य यह भी दिखाना है कि वही शक्तियां जिन्होंने विभाजन किया और बराबर इस विभाजन को गहरा ही बनाती जा रही हैं, वर्तमान तनाव और यूरोप में युद्ध का खतरा उत्पन्न करने के लिए जिम्मेदार हैं।"

सर्वेक्षण में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि जर्मनी की एकता के बारे में दोनों जर्मन राज्यों का पहले क्या रुख रहा और आज क्या है। मुख्य रूप से यह सर्वेक्षण दोनों जर्मन राज्यों, सोवियत संघ, अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस की सरकार के आधिकारिक वक्तव्यों पर आधारित है। इस सर्वेक्षण का उद्देश्य जर्मनी की सही स्थिति की जानकारी देना और शान्ति की सुरक्षा तथा तनाव घटाने की दिशा में उचित कदम उठाने को प्रेरणा देना है।

सर्व प्रथम शांति की सुरक्षा की जाय

"जर्मन जनवादी गणतंत्र शान्ति की सुरक्षा को जर्मन समस्या का मुख्य अंग मानता है।" सर्वेक्षण में कहा गया है, "दोनों जर्मन राज्यों के प्रतिनिधियों ने कहा है कि युद्धोत्तर काल अब समाप्त हो गया है। लेकिन केवल ज.ज.ग. ही पुनः एक नये युद्ध-पूर्व-काल की परिस्थितियां पैदा होने से रोकने के लिए तथा स्थायी शांति और समझदारी के नये युग की शुरूआत के लिये प्रयत्नशील है। ऐसी नीति न केवल पुनः एकीकरण के बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के भी हित में है। यूरोप की सुरक्षा, शांति की सुरक्षा और जर्मनी के पुनः एकीकरण की जमीन तैयार करने के लिए दोनों जर्मन राज्यों में सामान्य और तथ्यों पर आधारित सम्बंध जरूरी हैं।"

सर्वेक्षण के चार अध्यायों में निम्नलिखित विषय सम्मिलित हैं :

(१) वह मार्ग--जिस पर चलने से जर्मनी का विभाजन हुआ (१९४५ से १९४९)

(२) दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व का प्रथम काल (१९४९ से १९५५) जिसमें एक और ज.ज.ग. ने पूरे जर्मनी को ध्यान में रखते हुए कई बार पेशकदमी ली, दूसरी ओर पश्चिमी जर्मन संघीय गणराज्य ने पुनर्सैन्यीकरण का प्रयत्न और **नाटो** सैन्य संघटन में प्रवेश किया।

(३) ज. ज. ग. और संघीय गणराज्य के सुदृढ़ीकरण का काल (१९५६ से १९६१) जिसमें उन्होंने प्रमुख प्रश्नों पर एक दूसरे से अधिकाधिक विरोधी नीतियां अपनायीं, और

(४) अंतिम दौर (१९६१ से १९६६) जिसमें पश्चिमी जर्मनी द्वारा परमाणविक शस्त्रीकरण की कोशिश की गयी, जब कि ज. ज. ग. ने शांतिपूर्ण सहअस्तित्व द्वारा आपसी समझदारी को बढ़ाने का प्रयत्न किया।

पश्चिमी जर्मनी के जबरिया कार्य

इस सर्वेक्षण से सिद्ध होता है कि पूर्वी जर्मनी की जनतांत्रिक शक्तियां पश्चिमी जर्मनी की कुछ जबरियां कार्यवाहियों के कारण कुछ कदम उठाने के लिए बाध्य हो गयी थीं।

--२९ मई १९४७ को पश्चिम के ब्रिटिश अमेरिकी अधिकृत क्षेत्र में एक आर्थिक परिषद का गठन किये जाने के बाद ही मार्च [illegible] में पूर्वी जर्मनी के सोवियत अधिकृत क्षेत्र में भी एक केन्द्रीय आर्थिक आयोग का गठन किया गया।

--२० जून १९४८ को अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा अधिकृत तीन पश्चिमी क्षेत्रों में अलग से एक मुद्रा सम्बन्धी सुधार लागू किया गया। इस पर २४ जून १९४८ को पूर्वी जर्मनी को भी अपनी मुद्रा में परिवर्तन करना पड़ा। सितम्बर १९४९ में पश्चिमी जर्मनी का एक पृथक राज्य बनाकर जर्मनी का विभाजन कर दिये जाने के बाद ही ७ अक्तूबर १९४९ को जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना की गयी।

--५ मई १९५५ को पश्चिमी जर्मनी के नाटो का सदस्य बन जाने के बाद ही ज. ज. ग. १४ मई १९५५ को वारसा संधि का सदस्य बना।

--७ जून, १९५५ को बुण्डेस्वेहर (पश्चिमी जर्मन सेना) का गठन शुरू होने के बाद ८ जनवरी, १९५६ को ज. ज. ग. की राष्ट्रीय जन सेना का निर्माण शुरू किया गया।

आत्मनिर्णय अधिकार का प्रयोग

सर्वेक्षण से सिद्ध होता है कि १९४५ में युद्ध समाप्त होने के बाद हिटलर विरोधी मोर्चे की प्रमुख शक्तियों में सम्पन्न हुए पोट्सडम समझौते के आधार पर पूर्वी जर्मनी की जनतांत्रिक शक्तियां जर्मन जनता के आत्मनिर्णयाधिकार को लागू करने और राष्ट्रीय

प्रश्न को हल करने का अधिक प्रयत्न करती रही हैं।

इसके विपरीत पश्चिमी जर्मनी के राजनीतिज्ञ पुरानी सत्ता-स्थिति को पुनः स्थापित करने का प्रयत्न करने लगे। उनकी इन कोशिशों को पश्चिमी शक्तियों (अमेरिका ब्रिटेन और फ्रांस) का भी समर्थन प्राप्त था। इससे पश्चिम के तीन अधिकृत क्षेत्रों में पोट्सडम समझौते के लागू होने में रुकावट पैदा हुई।

ज. ज. ग. अक्तूबर, १९४९ में अपनी स्थापना के समय से ही जर्मन समस्या के शांतिपूर्ण समाधान के उद्देश्य से पहल लेता रहा, लेकिन पश्चिमी जर्मनी अपनी स्थापना के पहले वर्ष से ही ज. ज. ग. को अपने अधिकार में करने का प्रयत्न करता रहा।

बोन द्वारा स्वतंत्र चुनावों में बाधा

सर्वेक्षण ने इस बात को विस्तार से सिद्ध किया है कि कैसे बोन सरकार की पूरे जर्मनी का प्रतिनिधित्व करने की महत्वाकांक्षा और उसका तथाकथित हालस्टीन सिद्धान्त 'जर्मनी के जनतांत्रिक पुनः एकीकरण के मार्ग में गम्भीर रूप से बाधक बने।' इस प्रकार पश्चिमी जर्मन सरकार ने "शांतिपूर्ण एकीकरण के ज. ज. ग. के आज तक के सारे प्रस्तावों को अस्वीकृत करने का 'एक बहाना' खोज लिया।

पश्चिमी जर्मन सरकार की विभाजन नीति के अनेक प्रमाणों में से एक यह है कि उसने पूरे जर्मनी में स्वतंत्र चुनाव कराने के लिए एक अखिल जर्मन सम्मेलन बुलाने का ज. ज. ग. का १५ सितम्बर १९५० का प्रस्ताव ठुकरा दिया। पश्चिमी जर्मनी के तत्कालीन चांसलर अडानावर ने समझौता वार्ता करने से इनकार कर दिया पर अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण में चुनाव कराने पर जोर देते रहे।

ज. ज. ग. के स्वर्गीय प्रधानमंत्री ओटो-ग्रोटेवाल ने कहा कि ज. ज. ग. की सरकार आडानावर के १४ सूत्री प्रस्ताव की अधिकांश शर्तें मानती है, किन्तु सुझाव दिया कि पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के प्रतिनिधि पहले मिलकर इस पर विचार कर लें कि वास्तविक रूप में जनतांत्रिक चुनाव कैसे सुनिश्चित बनाये जा सकते हैं, विशेषकर उस हालत में जब चुनावों के 'अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण' की बात थी। आडानावर ने इस सुझाव का कोई उत्तर नहीं दिया।

ओटो ग्रोटेवाल इस बात पर सहमत थे कि पूर्वी पश्चिमी जर्मनी के प्रतिनिधियों का एक आयोग विजेता शक्तियों के नियंत्रण में इस बात की पुनः जांच करे कि क्या स्वतंत्र चुनाव करना व्यावहारिक था? ज. ज. ग. की संसद ने वाइमर गणतंत्र (१९१९-१९३३) के चुनाव कानून पर आधारित एक चुनाव बिल भी स्वीकृत किया। लेकिन बोन की प्रतिक्रिया फिर नकारात्मक रही।

पश्चिमी जर्मन सरकार ने पश्चिमी सैन्य संघटनों में शामिल होने के लिए वार्ताएँ जारी रखीं लेकिन किसी शांति समझौते पर वार्ता करने से इनकार कर दिया।

सामान्य संबंधों की वकालत

सर्वेक्षण में कहा गया है कि नाटो में पश्चिमी जर्मनी के शामिल किये जाने की पेरिस संधि के फरवरी १९५५ में पुष्टीकरण द्वारा सम्पूर्ण जर्मनी में स्वतंत्र चुनावों द्वारा शांतिपूर्ण एकीकरण की अंतिम सम्भाना भी समाप्त हो गयी। संघीय सरकार ने अपनी प्रभुसत्ता पश्चिमी शक्तियों को समर्पित कर दी जिससे जर्मनी और उसके पुनः एकीकरण के प्रश्नों पर निर्णय लेना अब उन्हीं के हाथ में है।

इन बदली हुई परिस्थियों में भी ज. ज. ग. ऐसे मार्ग बराबर सुझाता रहता है जिन पर चलने से जर्मन एकीकरण सम्भव होगा। "एक जर्मन संघ की स्थापना के उसके सुझाव ने एक ऐसा मार्ग दिखाया जिससे दोनों जर्मन राज्यों के सम्बन्धों में धीरे धीरे सुधार आ सकता था और अंततः जर्मन एकीकरण भी हो सकता था।" किन्तु संघीय गणराज्य ने इसका उत्तर जर्मन जनवादी गणतंत्र के खिलाफ आक्रामक तैयारियों से दिया जो, १३ अगस्त १९६१ की जर्मन जनवादी गणतंत्र की सुरक्षात्मक कार्यवाही, पश्चिमी बर्लिन के साथ खुली हुई सीमा बन्द कर देने से——विफल हो गया।

सर्वेक्षण में १९६१ के बाद के काल को इस प्रकार वर्णित किया गया है: जब कि पश्चिमी जर्मनी की सरकार परमाणुविक अस्त्रों पर अधिकार में साझीदारी प्राप्त करने की कोशिशों द्वारा दोनों जर्मन राज्यों के बीच की खाई को और चौड़ा कर रही है, "जर्मन जनवादी गणतंत्र दोनों राज्यों के बीच कम से कम शर्तों पर भी अच्छे सम्बन्धों के समझौते द्वारा जर्मनी में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धान्तों को लागू करने का हर प्रयत्न कर रहा है। इससे दोनों जर्मन राज्यों का एक संघ बनाने की जमीन तैयार होगी, जो आज जर्मन एकीकरण का एक मात्र मार्ग शेष है। इस प्रकार जर्मन समस्या को हल करने के लिए अकेले जर्मन जनवादी गणतंत्र के पास ही कोई रचनात्मक कार्यक्रम है।"

विभिन्न अभिमत . . .

सी. एस. यू. के संसद सदस्य गेटनबर्ग ने 'बेल्ट एम सोन्नटैग" में लिखा है: "एकमात्र प्रतिनिधित्व करने वाले हमारे अधिकार के सम्बन्धों में दुनिया क्या सोचेगी . . ऐसा हो सकता है कि वे यह सोचने लगें कि जर्मन समस्या जर्मनी का अपना मामला है। . . . यदि ऐसा हुआ तो पश्चिमी देशों के साथ पश्चिमी जर्मनी की मैत्री का आधार खतरे में पड़ जायगा। ऐसी स्थिति में पुनः एकीकरण की नीति और पश्चिमी नीति का जोड़ कमजोर हो जायगा।"

बड़े उद्योग पतियों के पत्र **"हान्डेलसब्लाट"** ने लिखा है: "समाजवादी एकता पार्टी ने अगर राज्य यंत्र के प्रमुख सदस्यों को भेजने का फैसला किया, तो उसे यह समझ लेना चाहिये कि अधिकारियों के आदेश से वे क्षेत्रीय सीमा पर या अधिक से अधिक हाल के दरवाजे पर गिरफ्तार किए जा सकते हैं।"

बौन के सरकारी क्षेत्र और इजारेदार अखबार, जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ सम्पर्क बनाने के खिलाफ घृणा का जोरदार प्रचार कर रहे हैं। इसके बाबजूद बहुत सारे लोग विचार-विमर्श को जारी रखने का बोन की नीति की निरर्थकता के सम्बन्ध में अपनी आवाज बुलन्द कर रहे हैं।

नव-स्थापित विदेशी व्यापार संस्थान

यूनिटेकना

यूनिटेकना ग्रासैनहैण्डैल्स-गैसैल-शैफ्ट एम–बी. एच. एक नव–स्थापित विदेशी व्यापार संस्थान है जो टैक्सटाइल ग्रौर फूड प्रौसैसिंग तथा उससे संबंधित ग्रन्य मशीनों का ग्रायात तथा निर्यात करता है। यह संस्था र्बालन में है।

इसका निर्यात प्राकृतिक तथा मानव निर्मित रेशों की प्रोसैसिंग करने वाली मशीनों, बुनाई के करघों, टैक्सटाइल फिनिशिंग मशीनों, ग्रौद्योगिक तथा घरेलू सिलाई करने वाली मशीनों से लेकर खाद्य सामग्री बनाने, ग्रनाज भंडारों, पैकिंग, करने डेयरी, ग्रर्क पीसने ग्रौर चाकलैट बनाने तक की मशीनों तक है।

पूर्ण संयंत्र

ज. ज. ग. में टैक्सटाइल ग्रौर फूड प्रौसैसिंग मशीनों के निर्माण उद्योग के पीछे दशकों का ग्रनुभव है। उनका व्यापार करने वाली संस्थाएं ग्राहकों को उत्पादन के सबसे ग्रधिक किफायती तरीकों का चुनाव करने में हर संभव सहायता देती हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के पहले से ही इन व्यापारिक संस्थानों के दूरगामी व्यापारिक संबंध स्थापित थे ग्रौर उनके द्वारा दिये गये सामान जर्मनी में बनी उच्च कोटि की वस्तुग्रों की ख्याति में वृद्धि करते थे।

पिछले कुछ वर्षों में ज. ज. ग. में निर्मित मशीनों ग्रौर उपकरणों की सहायता से ग्रनेक महत्वपूर्ण टैक्सटाइल (कपड़ा) मिलें जर्मनी में ग्रौर बाहर खोली गयी हैं। इन मिलों में हैं जर्मन जनवादी गणतंत्र में विल्हेल्म पीक स्टैड स्थित वेब कैमफेजर कामबिनेट ग्रौर संयुक्त ग्ररब गणराज्य में शिबिनग्रल-काम की कपड़ा मिल है। फूड प्रोसेसिंग ग्रौर संबंधित उद्योगों के पूर्ण संयंत्र भारत, संयुक्त ग्ररब गणराज्य ग्रौर इराक में जर्मन जनवादी गणतंत्र की मशीनों की मदद से खड़े किये गये हैं।

घनिष्ठ संबंध

यूनिटेकना का उद्देश्य है ग्रपने विदेशी व्यापार संबंधों का विस्तार करना ग्रौर पहले से स्थापित संबंधों को ग्रौर दृढ़ करना तथा इस प्रकार समाजवादी ग्रर्थव्यवस्था के सिद्धांतों का पालन करना।

१९६६ में लाइपजिक के वसन्त मेले में १२५ टैक्सटाइल की तथा २५ फूड प्रोसेसिंग करने वाली मशीनें प्रदर्शित की गयीं जिनमें ४० तो नयी मशीनें थीं ग्रौर ३५ पुरानी मशीनों के विकसित संस्करण। उनमें से कुछ मशीनें ये हैं: सिलाई तथा बुनायी करने वाली एक वेब मशीन माडल १४०[illegible] वाट, सूत बटने, सिलाई तथा बुनाई करने वाली एक त्रिपदीय मशीन-माडल १४०१० मालिमो, एक नैपर माडल ६७०३।२, ग्रौर पहनने के लिए तैयार कपड़ों की एक मशीन। उपर्युक्त मशीनें माल को ग्रंतिम रूप से तैयार (फिनिशिंग) करने के ग्राधुनिक तरीके इस्तेमाल करती हुई किफायती दरों पर कपड़ा उत्पादन करने में सक्षम हैं। प्रदर्शित की जाने वाली मशीनों में एक ग्रौर दिलचस्प वस्तु

कार्ल-मार्क्स-स्टैड का एक रोटरी बुनाई संयंत्र
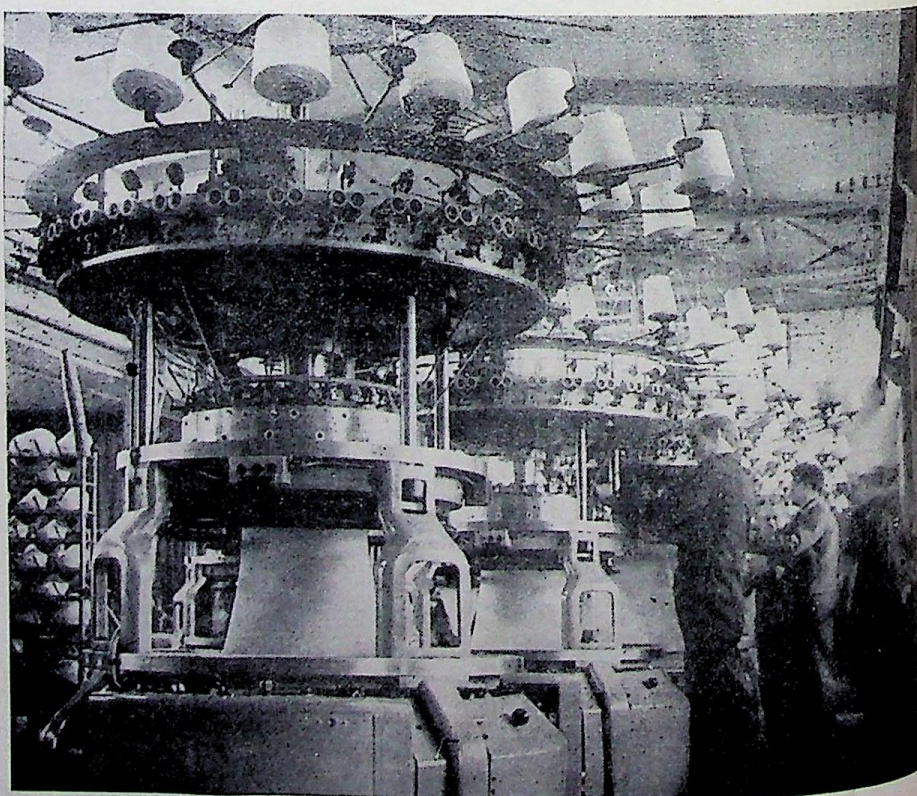
थी बिस्कुट, डबल रोटी आदि की पैकिंग करने वाली एक स्वचालित मशीन जो पैकिंग के आधुनिकतम फैशन के अनुसार काम करती है। यह स्वचालित मशीन कर्मचारियों की संख्या में भारी बचत करती है।

प्राविधिक सहयोग में दिलचस्पी

यूनिटेकना की रुचि समाजवादी तथा पूंजीवादी दोनों देशों के व्यापारिक हिस्सेदारों से प्राविधिक सहयोग बढ़ाने में है और इस प्रकार वह उद्योगों और विदेशी व्यापार में विशेषीकरण की विकासमान प्रवृत्ति के अनुसार चलना चाहता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के टेक्सटाइल और फूड प्रोसेसिंग उद्योग को यथासंभव सर्वाधिक अनुकूल स्थितियों में मशीनों से परिपूर्ण करने के लिए यूनिटेकना बराबर बाजार की जांच करता रहता है।

यूनिटेकना आसेनहैण्डेल्सगैसैलशैफ्ट अपने व्यापार संबंधों को अन्य देशों के साथ हुए व्यापार समझौतों में की गयी व्यवस्थाओं के आधार पर ही विकसित करना चाहता है। उन्हें प्रासेसिंग उद्योग स्थापित करने अथवा उनका विस्तार करने में अनुकूल शर्तों पर सहायता देना वह अपना मुख्य कर्तव्य मानता है।

ज. ज. ग. द्वारा भारत को चावल मिल की भेंट

खाद्य उपमन्त्री द्वारा ज. ज. ग. की सहायता की सराहना

१९ मई के दिन उड़ीसा के बरगढ़ में ज. ज. ग. की सरकार ने भारत को एक धान मिल उपहार में दिया।

यह मिल प्रति घन्टे १ टन चावल तैयार कर सकती है जो काठ या काठ और इस्पात के मिले-जुले ढांचे से ज्यादा टिकाऊ होता है।

इस मिल की सबसे उल्लेखनीय विशेषता यह है कि इसमें से ७३ प्रतिशत से अधिक चावल एकदम सफेद हालत में निकल आता है। इस यन्त्र का निर्माण किफायतसारी, टिकाउपन, देखने-सुनने में सुन्दरता और सुगमता से काम अंजाम देने के सिद्धान्तों पर आधारित है। इसमें धान की सफाई करने भूसी अलग करने, चावल को सफेद करने और चावल के टुकड़ों को अलग करने के उपकरण तथा रबड़ रोलर लगे हुए हैं। चावल में किसी भी तरह के बाहरी तत्व का मिश्रण नहीं होता। टूटे चावलों का अनुपात ५ प्रतिशत से भी कम होता है। इसमें चावल पर पालिश की मात्रा भारत में इस्तेमाल होनेवाली अन्य मिलों की तुलना में ८ से १० तक अधिक होती है।

धानकुटाई की यह मिल बरगढ़ में पिछले वर्ष नवम्बर में पहुंची थी। ज. ज. ग. के विशेषज्ञों ने केवल दो महीने के अन्दर इस मिल को वहां खड़ा कर दिया।

भारत के खाद्य उपमंत्री श्री ए. एस. शिन्दे ने इस मिल का उद्घाटन करते हुए अपने भाषण में कहा: "इस अवसर पर मैं पूर्वी जर्मनी के टेक्निशियनों के शानदार कार्य की सराहना करना चाहता हूं।" ....उन्होंने आगे कहा कि इस मिल की प्राप्ति से दोनों देशों की मैत्री के सम्बन्ध और ज्यादा मजबूत हो जायेंगे। उन्होंने उड़ीसा की वर्तमान कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए उड़ीसा की जनता के प्रति दर्शायी गयी सहानुभूति की सराहना की। 'इस मिल की स्थापना इसी दृष्टिकोण का एक अंग है।'

श्री शिन्दे ने कहा: "मशीनरी के कार्य के सम्बन्ध में तिरूवारूर और मंड्या से हमें जो प्रारम्भिक रिपोर्ट मिली है, उनसे मालूम होता है कि यह नयी मशीन गुणात्मक और परिमाणात्मक, दोनों ही दृष्टियों से ज्यादा अच्छी है।" उन्होंने आगे कहा कि ऐसी मिलों की स्थापना करके भारत न सिर्फ चावल की काफी मात्रा, बल्कि विदेशी मुद्राकी काफी बड़ी रकम भी बचा सकता है जो विदेशों से अनाज मंगाने के लिए बहुत जरूरी है।

श्री शिन्दे ने ज. ज. ग. के मुख्य डिजाइनर श्री बिशकौफ को धन्यवाद दिया और उनके योग्यता पूर्ण काम की सराहना के तौर पर उन्हें एक तोहफा प्रदान किया।

ज. ज. ग. से प्राप्त तथा अन्य मिलों का निरीक्षण करते समय ज. ज. ग. के भारत स्थित वाणिज्य काउंसिलर और व्यापार प्रतिनिधि श्री एच. जे. लेमनित्जेर तथा ज. ज. ग. के दूसरे विशेषज्ञ भी श्री शिन्दे के साथ थे।

उद्घाटन समारोह में भाषण करते समय श्री लेमनित्जेर ने कहा था कि भारत के खाद्य को आधुनिक बनाने के महत्वपूर्ण कार्य क्रम की पूर्ति के लिए ज. ज. ग. इसी प्रकार की और मिलें भारत को प्रदान कर सकता है।

बाद में ज. ज. ग. के भारत स्थित रेडियो संवाददाता के साथ मुलाकात में श्री शिन्दे ने कहा कि ज. ज. ग. से इस प्रकार की और मिलें प्राप्त करने में, जिन्हें विदेश व्यापार संगठन यूनीटेकना सप्लाई करता है, भारत को प्रसन्नता होगी। खाद्य उपमंत्री ने श्री लेमनित्जेर और ज. ज. ग., के इंजीनियरों तथा टक्निशियनों के सम्मान में एक भोज दिया।

ज. ज. ग. की यात्रा—२

एस. रामकृष्णन (पी. टी. आई., बम्बई)

लाइपजिग मेले के किसी गैर-तकनीकी दर्शक के लिए ज. ज. ग. के औद्योगिक विकास की विविधता और आधुनिकता को पूरी तरह समझ पाना और उसका मूल्यांकन करना मुश्किल काम है, लेकिन मेले के विस्तृत प्रांगण में घूमते हुए, जिसका तीन चौथाई, ज. ज. ग. के बहुमुखी विकास का प्रमाण प्रस्तुत करता है, कोई भी उसका एहसास कर सकता है।

दर्शक जो कुछ देखता है उसके लिए पूरी तरह तैयार हो कर जाता है। उसे ज. ज. ग. में तैयार की जाने वाली वस्तुओं की एक मोटी सूची दी जाती है जिसमें सारे आवश्यक प्राविधिक विवरण दिये रहते हैं और उत्पादन तथा समूहों के आधार पर उनका वर्गीकरण किया रहता है। सुविधा के अलावा इससे मेले में एक गंभीर व्यावसायिक वातावरण बन जाता है, जो इसका उद्देश्य है, अर्थात् उससे विश्व के भिन्न-भिन्न स्थानों से आने वालों को उन बातों पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद मिलती है, जिनमें उन्हें दिलचस्पी होती है।

लाइपजिग में जिस एक बात ने मेरा ध्यान खींचा वह यह थी कि सारी राजनीतिक समस्याओं के बावजूद, जो शीत युद्ध के काल से ही उठती रही हैं, मेले के दौरान जीवन की गति में आ जाने वाली तेजी राजनीतिक तनावों से अप्रभावित रही। पश्चिमी देशों के व्यवसाई अथवा समाजवादी देशों के व्यापारिक शिष्ट मण्डल, समान रूप से भारी सख्या में आये थे। इस बार तो पश्चिमी देशों के व्यापारी हजारों की संख्या में थे, और मेले में व्यापार और अधिक व्यापार का ही वातावरण छाया रहा।

अपने लाइपजिग आवास को मैं कितना भी पसन्द करता, मुझे इस देश का भी कुछ देखना था। मैंने येना और वाइमर की यात्रा से इस देश का दर्शन शुरू किया और वहां मुझे एक छोर पर नाजी यातना-शिविरों की भयानकताएं तो दूसरे छोर पर उसके पहले साहित्य और कला के क्षेत्र में उपलब्ध सांस्कृतिक महानता को देखने का अवसर मिला। समाजवादी व्यवस्था जिसे भौतिकवादी और सांसारिक कहा जाता है उसने देश की सम्पन्न सांस्कृतिक की थाती को कुंठित नही होने दिया है बल्कि उस की सुरक्षा की है।

हाले के रसायनिक कारखानों से होकर मोटर से गुजरते हुए हम मैगडेबर्ग पहुंचे, जहां मुझे जर्मन जनवादी गणतंत्र की नियोजन पद्धति के विकास पर, जिसके कारण इतने कम समय में देश की अर्थ व्यवस्था की इतनी आशातीत प्रगति हुई, बातचीत करने का अवसर मिला। मुझे इकाई पर आधारित पहल और वेतन, बोनस, उत्पादन की दक्षता के निर्धारण में मुनाफे को भी ध्यान में रखने की जो नई प्रवृत्ति उत्पन्न हुई है उसकी जानकारी कराई गयी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के नियोजन अधिकारी, प्रारम्भ से ही नियोजन में अति केन्द्रीकरण की गलतियों से बचते रहे। और इस प्रकार उन्होंने विशषज्ञों के किसी वर्ग को नियोजन को सिर्फ प्रबन्ध के काम में बदल देने से, जो काम तथा अलग-अलग कारखानों की विशेष समस्याओं की वास्तविकताओं से अनभिज्ञ तथा असम्बद्ध रहता है, रोका। अब तक सरकार की नीति इन्फ्रा स्ट्रक्चर्ड उत्पादनों में, विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, मूल्य गत सहायता देने की रही है। विकास की गति तीव्र हो जाने के बाद अब व्यापक रूप से, उत्पादन की हर इकाई को अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए विकेन्द्रीकरण पर जोर दिया जा रहा है।

इसके लिए जो तरीका अपनाया जा रहा है वह कुशल तथा व्यावहारिक दोनों है। सुधार लाने की प्रकिया एक प्रकार से स्वयं परिचालित और पूंजी तथा साधनों के अधिक लाभजनक उपयोग को संभव बनाने वाली है। लगी हुई पूंजी का, जिसमें कच्चा माल और दूसरे सामान भी शामिल हैं, समय समय पर हिसाब लगाया जाता है और उस पर एक निश्चित राज्य लेवी लगती है। यदि विनियोग पूंजी के दक्षतापूर्ण उपयोग से उत्पादन बढ़ता है जो राज्य की लेवी निश्चित होने से, कारखाने को बचने वाला उत्पादन अधिक होगा जिसका उपयोग वेतन वृद्धि, बोनस, या कारखाने के विस्तार के लिए किया जा सकता है। यदि पूंजी और क्षमता का अच्छा उपयोग नहीं हुआ तो उसके अनुपात के अनुसार कारखाने को बचत कम होगी। गलतियों को दुरुस्त करने वाली इस प्रकार की स्वयं परिचालित प्रक्रिया, एक ऐसी अर्थ व्यवस्था में जहां मूल्यों का निर्धारण सामान्य तथा औसत लागत और मुनाफे के एक निश्चित प्रतिशत के आधार पर होता है, बहुत अच्छा काम करती है, और राज्य की नीति की सहायता के लिए सबसीडी या मूल्यों की अतिवृद्धिके तत्व अनेक क्षेत्रों में नहीं रह गये हैं।

मैं जर्मन जनवादी गणतंत्र में सामूहिक खेती की महान सफलताओं के बारे में, जो कृषि क्षेत्र के समस्त उत्पादन के ८५ प्रतिशत के लिए जिम्मेदार हैं, जानता था। लेकिन एक सामूहिक फार्म देखने का मौका मुझे बर्लिन कृषि कालेज के एक वैज्ञानिक अधिकारी की मदद से लगा। वह सामुहिक कृषि फार्म बर्लिन से १०० किलोमीटर दूर था।

उक्त अधिकारी किसी कार्यवश वहां जा रहे थे, और उन्होंने मुझे कृपापूर्वक अपनी कार

में बैठा लिया। इसलिए फ्रैंकफुर्ट जिले के हर्जबर्ग फार्म में मैंने जो कुछ देखा वह पहले से तैयार किया गया कोई प्रदर्शन नहीं था। औसत फार्म आमदनी की दृष्टि से इस फार्म का औसत उत्पादन कुछ कम था। फिर भी अनेक कमियों के बावजद इस टाइप–१फार्म में लगे हुए किसान कुछ वर्ष पहले व्यक्तिगत खेतों और पशुओं से जो उत्पादन-किया करते थे, उससे ४० से ७५ प्रतिशत अधिक उत्पादन कर रहे हैं।

एक छोटा परिवार जिसमें केवल पति और कभी कभी उसकी पत्नी भी फार्म पर काम करती है, २० हजार एम. डी. एन. (ज. ज. ग. की मुद्रा) प्रति वर्ष की आय करता है, जबकि कुछ वर्ष पहले केवल १२ हजार या उससे भी कम कमाता था। यह कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। इससे उनकी जिन्दगी तो बेहतर हुई ही है, राष्ट्र को अधिक भोजन भी मिला है। सामूहिक कृषि से बड़े पैमाने पर खेती, कृषि में मशीनीकरण की शुरुआत और अधिक उपज संभव हुई है। इसी प्रकार ज. ज. ग. के समस्त ग्रामीण क्षेत्रों में बहुतायत से और सस्ते मूल्य पर उपलब्ध बिजली का उपयोग करते हुए पशुपालन की तकनीक में भी मशीनों के उपयोग द्वारा विकास किया गया है जिसके फलस्वरूप उत्पादन में वृद्धि हुई है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की कृषि में जिस बात ने मुझे अधिक आकर्षित किया वह यह थी कि सामूहिक कृषि में भी वैयक्तिक स्वामित्व की जो पहल होती थी उसे बनाये रखने पर जोर दिया गया है। जबकि अधिकांश कारखानों पर सरकार का नियंत्रण है अधिकांश सामूहिक फार्मों के मालिक स्वयं उसमें काम करने वाले किसान हैं। जमीन के मालिकों ने स्वयं आगे बढ़कर स्वेच्छया अपनी जमीनों और दूसरे साधनों को एकत्र कर सामूहिक कृषि शुरू की। भूमि तथा अन्य कृषि साधनों के स्वामित्व की वसीयत का अधिकार भी कानूनन सुरक्षित है। मुझे बताया गया कि ज. ज. ग. में सामूहिक कृषि की सफलता का मुख्य कारण यह रहा है कि 'मानवीय तत्वों' की उपेक्षा करने की भूल कभी नहीं की गयी।

सामूहिक फार्म तीन तरह के हैं––टाइप-१ जिसमें सिर्फ जमीनों की पंजी (पूल) की गयी है, टाइप–२ जिसमें जमीन और कुछ मशीनों की पंजी की गयी है और टाइप ३ जिसमें जमीन और मशीनों के साथ साथ मवेशी भी शामिल हैं। इन सामूहिक फार्मों के सदस्यों में आय के वितरण का व्यावहारिक तरीका अपनाया गया है। मुनाफे का एक निश्चित हिस्सा भूमि और अन्य साधनों के लिए रख लिया जाता है। बाकी को 'काम की इकाइयों' के आधार पर वितरित किया जाता है। इस प्रकार जिसने सामूहिक फार्म में अधिक परिश्रमिक किया वह अधिक बोनस आदि का हकदार होता है।

अनेक औद्योगिक प्रायोजनाओं को देखने के बाद मुझे औद्योगिक मजदूरों के वेतन स्तर, और उनकी काम की स्थितियों के बारे में खासी जानकारी हुई, साथ ही वर्कर्स कौंसिलों की भूमिका को भी समझने का अवसर मिला। इस सिलसिले में मुझे जो दो महत्वपूर्ण बातें मालूम हुई वे ये हैं––(१) वेतन स्तर काफी ऊंचा और खपत पर आधारित होने के बावजूद वेतन के ढांचों में, सबसे कम पाने वाले अकुशल मजदूर और सबसे अधिक पानेवाले उच्चाधिकारी जिसमें कारखाने का डाइरेक्टर भी शामिल है––चौगुने या पंचगुने से अधिक अन्तर नहीं है और (२) ट्रेड यूनियनों का ढांचा और वर्कर्स कौंसिल की जिम्मेदारियां मजदूरों और व्यवस्था में अधिकाधिक सहयोग में सहायक होती हैं और उनके आपसी टकराव, को, जो अक्सर बाहरी तत्वों के कारण उत्पन्न होते हैं बचाती हैं, नागरिक को पूर्ण-सामाजिक सुरक्षा प्राप्त है और राज्य के साधन अधिकाधिक उसके कल्याण के लिए ही इस्तेमाल किये जाते हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रथम समाजवादी नगर आइसनह्युट्टेनस्टैड की अत्यन्त दिलचस्प यात्रा में मुझे मालूम हुआ कि यहां आकर लोगों के बसने से आबादी में वृद्धि की अनुमति देने के पहले यहां की नगरपालिका अनुमति देने के पहले यहां की नगरपालिका मकान, स्कूल, सड़कें, अस्पताल वगैरह आवश्यक नागरिक सुविधाओं का निर्माण कर लेती है। बहुत से देशों में औद्योगिक विकास के परिणाम स्वरूप ग्रामीण आबादी विकसित हो रहे शहरी क्षेत्रों की ओर गतिमान होने लगती है जिसके कारण वहां की नागरिक सुविधाएं अपर्याप्त पड़ने लगती हैं। यह समाजवादी नगर भी तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन यहां आबादी का प्रवाह नगर के विकसित होते क्षेत्रों में आवास और दूसरी सुविधाओं का निर्माण पूरा होने तक स्थगित रहता है।

बर्लिन का टाउन स्कूल और उच्च प्राविधिक प्रशिक्षण देने वाली संस्थाओं को देखने के बाद मुझे मालूम हुआ कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की शिक्षा पद्धति में, आने वाली पीढ़ी के निर्माण में संलग्न अध्यापक को, समाज में उसके उच्च स्थान को देखते हुए, उच्च वेतनमान देने पर जोर दिया जाता है। जर्मन जनवादी गणतंत्र की शिक्षा में इस बात पर भी जोर दिया जाता है कि प्रत्येक शिक्षार्थी एक वर्ष तक किसी मिल या फार्म में भी काम करे, ताकि वह सिर्फ 'मेज कुर्सी वाला आदमी' न बने, साथ ही उद्योगों तथा प्राविधिक शिक्षण संस्थाओं में निकट संबंध बनाये रखा जाता है।

शिक्षा का खर्च राज्य द्वारा ही वहन किया जाता है और वह माता–पिता के लिए 'बोझ' भी नहीं है। विद्यार्थियों को नियमित रूप से १९० एम. डी. एम. प्रति विद्यार्थी छात्रवृत्ति और दूसरी सुविधाएं दी जातीं हैं ताकि वह समाज का उपयोगी और उत्पादनशील नागरिक बनें। अब यह भावना बढ़ रही है कि भावी पीढ़ी का काफी राजकीय पोषण हो चुका, और अब समय आ गया है कि छात्रगण अपनी कक्षाओं में अच्छा काम करके अपनी छात्रवृत्ति का एक भाग 'कमायें'। एक शिक्षाविद ने बताया कि यूरोप के किसी भी देश के युवक जर्मन जनवादी गणतंत्र में छात्र होने से अधिक और कुछ नहीं पसन्द करेंगे।

बिना 'बर्लिन की दीवार' देखे जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा अपूर्ण रहेगी। मैं दो जर्मन राज्यों के बीच इस अवास्तविक मानव निर्मित अवरोध को देखने गया और वहां दर्शक रजिस्टर में यह लिखने से अपने को न रोक सका कि––यह सब कुछ कितना अवास्तविक है।

अप्रैल १९६६ से लागू

ज. ज. ग. की नई परिवार संहिता

१ अप्रैल को ज. ज. ग. की पीपुल्स चैम्बर के १७वें अधिवेशन द्वारा जर्मन जनवादी गणतंत्र की परिवार संहिता स्वीकृत कर लिये जाने के बाद लागू हो गयी। इस परिवार संहिता में दस अध्याय और ११० अनुच्छेद हैं, अध्यायों का धाराओं में उपविभाजन कर दिया गया है।

यह संहिता जिन महत्वपूर्ण विषयों पर लागू होती है वे ये हैं: विवाह, परिवार, परिवार भत्ता विवाह विच्छेद (तलाक अथवा दम्पति में से किसी एक की मृत्यु द्वारा), संयुक्त सम्पत्ति के सम्बन्धों को रद्द करना, माता पिता और संतान के सम्बन्ध (संतान किससे सम्बद्ध रहेगी, सन्तान सम्बन्धी विवाद, बच्चे का पारिवारिक नाम, दत्तक, परिवार में सम्बन्ध, साधारण नियम, सम्बन्धियों का पोषण, अभिभावक, अल्प-वयस्कों तथा वयस्कों की निगरानी और एतद् सम्बन्धी सीमाएं)

प्राक्कथन

यह परिवार संहिता एक विस्तृत प्राक्कथन के साथ प्रस्तुत की गयी है जिसका एक अंश नीचे दिया जा रहा है:

"जर्मन जनवादी गणतंत्र में समाजवादी विकास के कारण नये प्रकार के पारिवारिक सम्बन्ध विकसित हुए हैं---शोषण से मुक्त रचनात्मक श्रम, स्त्री-पुरूष में बंधुत्वपूर्ण सम्बन्ध, जीवन के हर क्षेत्र में स्त्रियों का समान दर्जा और सभी को उपलब्ध शिक्षा की समान सुविधाएं किसी परिवार की खुशहाली और स्थायित्व के प्रमुख कारण हैं। अच्छे वैवाहिक और पारिवारिक सम्बन्ध आज की विकसित होने वाली पीढ़ी की नैतिकता की दृष्टि से अत्यन्त मूल्यवान हैं और वे जनता के जीवन और कार्य को आनन्दमय बनाते हैं।

"परिवार संहिता एक समाजवादी समाज में पारिवारिक सम्बन्धों के इसी वांछित विकास को प्रोत्साहित करने के लिए बनायी गयी है। नागरिकों और विशेष रूप से युवा पीढ़ी को एक वांछित पारिवारिक जीवन स्थापित करने की भावना के प्रति सचेत करने में यह परिवार संहिता पथ-प्रदर्शन करेगी। इसका उद्देश्य वैवाहिक स्थिति, परिवार और उसके सभी सदस्यों के अधिकारों की रक्षा करना है। पारिवारिक कलह को रोकना और विवाद उत्पन्न हो जाने की स्थिति में उन्हें हल करना भी इसका उद्देश्य है। इस सिलसिले में सम्बन्धित शासकीय अधिकारियों तथा संस्थाओं के अधिकार और कर्तव्य निश्चित कर दिये गये हैं।"

विवाह

"कम से कम १८ वर्ष के स्त्री और पुरूष विवाह सूत्र में आबद्ध हो सकते हैं।"

विवाहित दम्पति के पारिवारिक नाम के बारे में इस संहिता में "पति और पत्नी" को "एक ही पारिवारिक नाम ग्रहण करने का" प्राविधान है। "यह नाम या तो पति का हो सकता है अथवा पत्नी का। बच्चों का नाम करण समान पारिवारिक नाम के आधार पर होगा। कोई विवाहित दम्पति किसका नाम ग्रहण करना चाहता है यह निर्णय विवाह के समय ही कर लेना पड़ेगा। यह अपरिवर्तनीय होगा।"

सम्पत्ति

निम्नलिखित प्राविधान विवाहित दम्पति की सम्पत्ति के नियामक होंगे:

(१) सम्पत्ति की वसीयत या पति अथवा पत्नी अथवा दोनों द्वारा वैवाहिक जीवन के समय की गयी आय में से किसी के द्वारा भी की गयी बचत पति पत्नी दोनों की सम्पत्ति होगी। यही नियम पेन्शन, छात्रवृत्ति, अथवा अन्य नियमित आय के बारे में, जो अर्जित आय की परिभाषा में आती है, लागू होगा।

(२) पति या पत्नी को विवाह के पहले भेंट, विशिष्ट सेवा अथवा कार्य के पुरस्कार स्वरूप प्राप्त धन या डीड अथवा ऐसा धन या डीड जो विवाह के समय वसीयत में मिला हो, पति या पत्नी की, जिसे वह मिला हो, अलग सम्पत्ति समझी जायगी। व्यक्तिगत इस्तेमाल या काम सम्बन्धी वस्तुएं, यदि उनकी आय से बहुत अधिक मूल्य वाली न हो तो पति या पत्नी की अलग सम्पत्ति होंगी।"

इस सम्बन्ध में संहिता में आगे यह भी प्राविधान है कि:

(१) पति और पत्नी दोनों को ही आपसी सहमति से अपनी संयुक्त सम्पत्ति अथवा टाइटल डीड को बेचने का समान अधिकार है। पति और पत्नी दोनों को ही दोनों का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार है।

तलाक

"मकान और अचल सम्पत्ति पति अथवा पत्नी द्वारा दोनों की आपसी सहमति के बाद ही बेची जा सकती है। बचत कोष में अथवा बैंकों में जमा रकम के बारे में सम्बन्धित संस्थाओं के नियम लागू होंगे।"

"विवाह-विच्छेद उसी हालत में हो सकता है जब कानूनी कार्रवाई के दौरान इस बात के विश्वसनीय प्रमाण मिल जायें कि पति पत्नी दोनों के लिए उनके बच्चों और साथ ही समाज के लिए भी दाम्पत्य जीवन का कोई अर्थ नहीं रह गया है।

"तलाक सम्बन्धी आदेश में अदालत यह भी तय करती है कि नाबालिग बच्चे किसके संरक्षण में रखे जायं। यह बच्चे के भावी
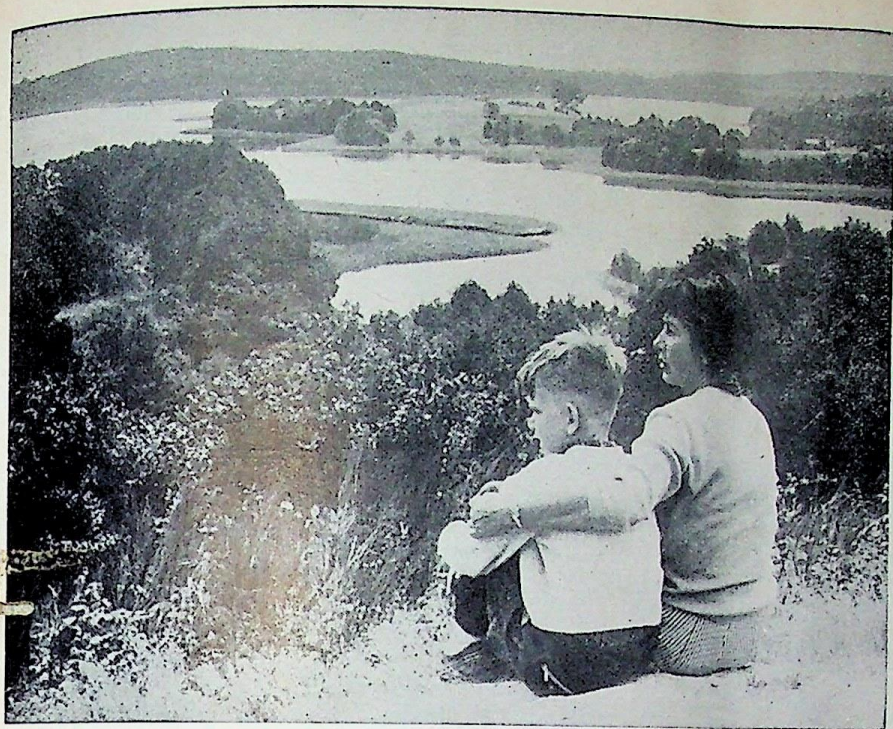
मां-बेटे छुट्टी का आनन्द लेते हुए

पालन-पोषण, शिक्षा और विकास को ध्यान में रख कर तय किया जाता है। अदालत द्वारा बच्चों के पालन पोषण के लिए, जिसके संरक्षण में बच्चे नहीं रखे जाते उससे मिलने वाला भत्ता भी तय किया जाता है।

"वह माता या पिता जो बच्चों के संरक्षण से वंचित हैं—बच्चों से नियमितरूप से मिलने के अधिकारी हैं।

"रद्द विवाहों से निराश्रित बच्चों को तलाक द्वारा निराश्रित बच्चों के समान ही अधिकार प्राप्त हैं।"

सम्पत्ति का निबटारा इस प्रकार होता है :

"विवाह विच्छेद के बाद संयुक्त सम्पत्ति बराबर बराबर बांट दी जाती है। यदि इस पर स्वेच्छिक समझौता नहीं हो पाता तो सम्बधित दम्पति की सामान्य स्थिति को ध्यान में रखते हुए अदालत ही उसका निबटारा करती है।"

माता पिता और बच्चे

माता-पिता और बच्चों के सम्बन्धों के प्रति बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। पारिवारिक शिक्षा पर कुछ खास विचार व्यक्त करने के बाद संहिता में माता पिता के अधिकारों पर निम्नलिखित बातें कही गयी हैं :

"माता-पिता अपने बच्चों के पालन-पोषण में समान रूप से भागीदार हैं। यदि माता पिता में से कोई एक किसी कारण अपने उक्त अधिकारों से वंचित हो जाता है तो माता या पिता, जो भी हों, बच्चों के सम्बन्ध में अकेले ही निर्णय कर सकते हैं।

"यदि माता पिता में से किसी की मृत्यु हो जाय या अभिभावकत्व के अपने अधिकार से वंचित हो जाय तो माता-पिता में से जो भी बचा हो वह उसका स्थान ले सकता है।

"यदि तलाक हो जाय, या विवाह रद्द हो जाय तो अदालत यह तय करेगी कि बच्चे माता या पिता में से किस के पास रखे जायें।

"यदि बच्चे के जन्म के समय माता-पिता विवाहित न हों तो उस हालत में अभिभावकत्व के सारे अधिकार केवल माता को ही मिलते हैं। बच्चे की भौतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताएं मां के परिवार के लोगों और पिता द्वारा उसकी क्षमता, आय और अन्य साधनों के अनुसार मिलने वाले पोषण भत्ते से पूरी होती है। यदि मां की मृत्यु हो जाय, या वह अपने अधिकार से वंचित हो जाय तो बच्चों की देखभाल और सुरक्षा के शासकीय अधिकारियों द्वारा अभिभावकत्व के अधिकार पिता, बच्चे के बाबा-दादी अथवा उनमें से किसी एक को स्थानान्तरित कर दिये जा सकते हैं।

"माता या पिता जिसके भी संरक्षण में बच्चा रखा गया हो उसके द्वारा अपने कर्तव्य का गम्भीर उल्लंघन किये जाने की अवस्था में, जिससे बच्चे के भविष्य को खतरा हो, अंतिम उपाय के रूप में सम्बन्धित माता या पिता को अभिभावकत्व की सुविधाओं से वंचित कर दिया जाता है।

माग्देबुर्ग का ओटो फॉन गॉरिके तकनालोजी स्कूल

१९४९ में जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना के समय पूर्वी जर्मनी में सिर्फ एक तकनालाजी स्कूल था। किन्तु समाजवाद की स्थापना के बाद अधिक लोगों को उच्च तकनीकी और वैज्ञानिक प्रशिक्षण देने की आवश्यकता पड़ने लगी। यह कार्य केवल एक तकनालोजी स्कूल से—जो आज ड्रेसडेन तकनालोजी विश्वविद्यालय के नाम से विख्यात है — नहीं चल सकता था। इस लिए तकनालाजी के नये स्कूल खोलने पड़े।

अगस्त १९५३ में जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रिपरिषद द्वारा प्राविधिक कर्मचारियों की संख्या बढ़ाये जाने के बारे में स्वीकृत निर्णय के अनुसार वर्तमान विश्वविद्यालयों और कालेजों में प्राविधिक शिक्षा के विस्तार और नये प्राविधिक स्कूलों के खोलने का एक दीर्घकालिक कार्यक्रम बनाया गया। विश्वविद्यालयीय मामलों के तत्कालीन मंत्री को वैज्ञानिक कर्मचारियों और विश्वविद्यालय के लेक्चररों की राय लेते हुए तुरन्त एक योजना बनाने की जिम्मेदारी सौंपी गयी।

माग्देबुर्ग का ओटो फान गारिके तकनालोजी स्कूल इन नवस्थापित तकनालाजी स्कूलों के महत्व और विकास का उदाहरण प्रस्तुत

करता है। इस स्कूल में विद्यार्थी हैवी इंजीनियरिंग का अध्ययन करते हैं और चूंकि मैगडेबर्ग में इंजीनियरिंग के भारी सामानों के निर्माण के कई बडे-बड़े कारखानें हैं इसलिए इस नगर में उक्त स्कूल खोलना पूर्णतः उचित है।

मार्च १९५४ में ५३० विद्यार्थियों ने वहां पढ़ाई शुरू की। वे सभी विद्यार्थी स्कूल के अंतर्गत आठ संस्थाओं में अध्ययन करते थे और उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए २७ लेक्चरार थे।

अब तक सरकार इस संस्था के निर्माण और विस्तार पर ५ करोड़ मार्क खर्च कर चुकी है। भवन निर्माण कार्य में नये शिक्षण-भवन नये होस्टल और विद्यार्थियों के लिए एक आधुनिक कैन्टीन आदि हैं।

उद्योगों के निकट रह कर सम्बन्धित विषय पर शोध कार्य मैगडेबर्ग की विशेषता है। दूसरे देशों के तकनालाजी स्कूलों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग पर भी जोर दिया जाता है। अन्य देशों के साथ इसी तरह के स्कूलों में प्रक्षिण और शोध के अनेक मैत्री पूर्ण समझौते किये गये हैं---इस तरह के स्कूलों में---मास्को का बोमान तकनालोजी स्कूल, हंगरी का मिस्कोलो तकनालोजी विश्वविद्यालय और चैकोस्लोवाकिया का ब्राटिस्लावा तकनालोजी स्कूल। ओटो फान गारिके तकनालोजी स्कूल की स्थापना के दो वर्ष बाद ही विदेशों के छात्रों ने उसमें अध्ययन के लिए प्रवेश का प्रार्थना पत्र भेजा। इस समय मैगडेबर्ग में २२ देशों के छात्र भारी इंजीनियरिंग का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

स्नातक परीक्षा पास कर छात्र यहां से डिप्लोमा प्राप्त इंजीनियरों के रूप में निकलते हैं। भारी इंजीनियरिंग पढ़ाई का मुख्य विषय है, लेकिन वे भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र और अन्य विषयों के भी स्नातक हो सकते हैं।

१९६१ में यहां २ हजार छात्र थे जो १३ विभिन्न विषय पढ़ते थे। वे सभी छात्र इस स्कूल में अन्तर्गत २७ विभिन्न संस्थानों में पढ़ते थे और उन्हें पढ़ाने के लिए २३५ प्रोफेसर लेक्चरर, सहायक लेक्चरर और वैज्ञानिक सहयोगी थे। यह इस स्कूल से, जो शुरू में सिर्फ भारी इंजीनियरिंग की पढ़ाई का स्कूल था, पढ़ाये जाने वाले अनेकानेक विषयों का एक उदाहरण है। और यही कारण है जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रिपरिषद द्वारा इस संस्था को तकनालाजी के स्कूल का दर्जा दिये जाने, और मैगडेबर्ग के अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्तियों में से एक---भौतिकविद ओटो फान गॉरिके के नाम पर इस स्कूल का नामकरण किये जाने का।

हाल ही में इस स्कूल का और विस्तार किया गया है और इस में नये उपकरण लगाये गये हैं। यह निरंतर विकसित हो रहा है। इस समय यहां के शिक्षक २७०० नियमित और ७०० पत्राचार द्वारा अध्ययन करने वाले छात्रों को पढ़ाते हैं। १९७० में इसमें कुल ६ हजार छात्र हो जायेंगे। छात्रों की इस वृद्धि से इसके विस्तार, भवन निर्माण और आधुनिकतम शोध सुविधाओं के उपकरण लगाने के लिये और बड़ी धनराशि का व्यय आवश्यक हो जायगा।

१९५४ में इस की स्थापना से अब तक करीब डेढ़ हजार डिप्लोमा प्राप्त इंजीनियर यहां से निकल चुके हैं। वे अपने स्कूल की ख्याति बढ़ाते हैं और व्यावहारिक कार्य की कसौटी पर भी खरे उतरे हैं। उनमें से बहुत से लोग जर्मन जनवादी गणतंत्र की अर्थ-व्यवस्था और उद्योगों में अत्यन्त वरिष्ठ पदों पर हैं।

दूसरे महायुद्ध की बरबादी के बाद नवनिर्मित माग्डेबुर्ग

आंध्र प्रदेश के सांस्कृतिक मामलों के मंत्री, श्री एन. आर. अप्पा राव ने २९ अप्रैल को नेल्लोर टाउनहाल में आयोजित एक सभा में नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र की ओर से प्रकाशित एक स्मारिका का उद्घाटन किया। केन्द्र (पहले जिसका नाम भारत-जर्मन मैत्री संघ था) के अध्यक्ष श्री आर. एल. रेड्डी ने सभा का सभापतित्व किया। श्री अप्पा राव ने केन्द्र के ८ वर्ष के कार्यों की सरहना की

ज. ज. ग. के मद्रास स्थित उप वाणिज्य दूत डाक्टर जे. हाइडरिख ने कहा कि ज. ज. ग. की जनता भारत और उसकी प्रगति में अत्यधिक दिलचस्पी रखती है। ताशकंद समझौते को अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सोहार्द्र की दिशा में एक बड़ी मंजिल बताते हुए डाक्टर हाइडरिख ने कहा कि ज. ज. ग. की सरकार ने, पश्चिमी और पूर्वी जर्मनी के एकीकरण का जो प्रस्ताव किया है उसके पीछे भी ताशकंद समझौते की सी सच्ची भावनाएं हैं ▼

▲ उत्तरी वियतनाम की ये युवतियां उन ६८ विद्यार्थियों में हैं जो ज. ज. ग. की छात्रवृत्ति पर पढ़ने आई हैं। ज. ज. ग. ने वियतनामी जनता को, जो युद्ध से ग्रस्त है, अब तक १ करोड़ ८० लाख की सहायता दी है, तथा ५० हजार लोगों ने वियतनाम की मदद के लिए रक्त दान दिया है

दो पांच वर्षीय बालिकाएं अपने भालू को वायलिन सुना रही हैं। वे लाइनेफेल्डे संगीत विद्यालय में, जहां विशेष प्रतिभावान बच्चों को शिक्षा दी जाती है, अध्ययन करती हैं। बच्चे पढ़ना-लिखना सीखने के पहले ही वाद्ययंत्र बजाना सीख लेते हैं ▼

सूचना पत्रिका

जर्मन
जनवादी

के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ११
अंक ७
२० जुलाई, १९६६

संकेत

पृष्ठ

मुख पृष्ठ : ओडर नदी के तट पर स्थित श्वेटकेपेट्रो-केमिकल संयन्त्र का एक दृश्य

अंतिम पृष्ठ : टूरिनजिया के पर्वत प्रदेश में स्थित श्वारसाटाल नामक घाटी, जहां हर साल हज़ारों पर्यटक आते हैं

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १/३९, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस बहादुर शाह जफर मार्ग, नयी दिल्ली, द्वारा मुद्रित। **सम्पादक : ब्रूनोये**

सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी कांग्रेस के बाद

जर्मन संवाद का रूप

| आरनो फ्रीडमान

पिछले वर्ष शरद्काल में, पश्चिमी जर्मनी के बुण्डेस्टाग (संसद) के चुनावों के लिये जब पश्चिमी जर्मनी की दो प्रमुख राजनीतिक पार्टियों--क्रिश्चियन डेमोक्रैट्स और सोशल डेमोक्रैट्स में दिखावे का संघर्ष जारी था तो वहां के एक कैबारे (मधुशाला) के नर्तक ने धुलाई उद्योग के एक बहुत लोक प्रिय विज्ञापन को ज़रा तोड़कर, 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी' के तथाकथित विरोध के खोखलेपन पर व्यंग्य किया : "सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी को वोट दीजिये, आज तक क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी का ऐसा बेहतरीन प्रतिरूप यहां कभी नहीं था।—" पश्चिमी जर्मनी के लोगों को यह कटु व्यंग्य समझने में देर नहीं लगी। 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी' के जन्मदाताओं ने, अपने समय में, जर्मन सैन्यवाद एवं साम्राज्यवाद का डट कर विरोध किया था, लेकिन आज यह पार्टी, पश्चिमी जर्मनी के घरेलू और विदेशी मामलों में, वहां की घोर प्रतिक्रियावादी 'क्रिश्चियन डेमोक्रैटिक पार्टी' की खतरनाक नीतियों की पिच्छलग्गू बन कर रह गई। इसी पिच्छलग्गू नीति के कारण पश्चिमी जर्मनी के सोशसल डेमोक्रैटों को चुनाव में बुरी तरह हारना पड़ा। यदि वे एक अलग और सही नीति लेकर मतदाताओं के सामने आते तो उनके जीतने के अवसर बहुत थे।

जर्मन समस्या के शांतिपूर्ण हल के लिये, दो जर्मन राज्यों के मेलजोल के लिये, और इस तरह यूरोप में यथावत स्थिति बरकरार रखने में जर्मन सहयोग प्रदान करने के लिये--एक अत्यन्त निराशाजनक स्थिति पैदा हो गई थी। लेकिन ऐसी ही स्थिति में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की 'समाजवादी एकता पार्टी' (सोसलिस्ट यूनिटी पार्टी) ने, इस वर्ष के फरवरी मास में, जर्मनी में शीत-युद्ध से जकड़ी हुई सीमाओं को तोड़ने के लिये जबरदस्त पहल शुरू की। ज. ज. ग. की इस प्रमुख पार्टी ने, पश्चिमी जर्मनी की 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी' को सम्बोधित करते हुए यह बात साफ-साफ लिखी कि जर्मनी में शान्ति को सुरक्षित करने के लिये, केवल दो जर्मन राज्यों की दो पार्टियों की पहल ही, उक्त निराशाजनक स्थिति को एक सही दिशा की ओर मोड़ सकती है।

वैसे जर्मनी की इन सब से बड़ी दो पार्टियों--समाजवादी एकता पार्टी और सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी के मुख्य प्रश्नों पर, आपस में काफी मतभेद हैं। ज़ाहिर है कि ये मतभेद जर्मन जनता के राष्ट्रीय प्रश्नों को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने में बाधक हैं।--पश्चिमी जर्मनी के डोर्टमूण्ड नामक औद्योगिक शहर में, इस महीने के आरम्भ में, सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी की कांग्रेस हुई। इस अवसर पर, ज. ज. ग. की प्रमुख पार्टी समाजवादी एकता पार्टी ने, सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी के सामने कुछ ठोस और अहम सवाल रखे, और उसने सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी कांग्रेस से यह प्रार्थना की कि वह इस सवाल का सीधा और साफ जवाब दे कि वह (सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी) दो जर्मन राज्यों द्वारा परमाणविक शस्त्रास्त्रों को प्रत्येक रूप में परित्याग करने के हक़ में है या नहीं?

हाल ही में, 'समाजवादी एकता पार्टी' ने, प. जर्ममी की 'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' को तीसरा खुला पत्र लिखा है। उक्त पार्टी ने, निम्न चार सूत्रों को, सहयोग एवं समझदारी के लिए, कम से कम अपेक्षित आधार घोषित किया है :

१. दोनों जर्मन राज्य, परमाणविक शस्त्रास्त्रों पर नियन्त्रण पाने के प्रयत्नों का परित्याग करें।

२. जर्मनी में निरस्त्रीकरण के लिये ठोस कदम उठाये जाने चाहियें।

३. फेडरल गणराज्य (प. जर्मनी—सं०) को, यूरोप के सभी देशों के साथ अच्छे पड़ोसियों का व्यवहार करना और शांति से रहना चाहिये, और उसको वर्तमान सीमाओं को मान लेना चाहिये।

४. शीत-युद्ध को समाप्त करके तनाव कम करना चाहिये। बाद में दो जर्मन राज्यों की सरकारों को पारस्परिक बातचीत द्वारा जर्मनी के पुनः एकीकरण के लिये रास्ता हमवार करना चाहिये।

कांग्रेस को यह कहा गया था कि वह जर्मनी में निरस्त्रीकरण से सम्बन्धित ठोस उपायों का या तो समर्थन करे या विरोध । इसी प्रकार मध्य यूरोप में खेंची गई सीमाओं को बदलने या न बदलने के हक़ या विरोध में 'सोशल डेमोक्रैटों' को अपना स्पष्ट मत व्यक्त करने को कहा गया । अन्त में उक्त कांग्रेस के सामने यह ठोस सवाल रखा गया था कि वह जर्मनी में शीत-युद्ध को कम करने, और दो जर्मन राज्यों के बीच, समानता के आधार पर, जर्मनी के पुनः एकीकरण से सम्बन्धित बात चीत करने के बारे में अपना रवैया स्पष्ट करें ।

लेकिन डोर्टमुण्ड में आयोजित 'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' की कांग्रेस ने उक्त प्रश्नों से सम्बन्धित जो फैसले लिये और जबाव दिये हैं, वे यह सिद्ध करते हैं कि प० जर्मानी की इस पार्टी ने, ज. ज. ग. की 'समाजवादी एकता पार्टी' द्वारा तीन खुले पत्रों में भेजे गये उचित प्रस्तावों को ठुकरा दिया है । ऐसा लगता है कि 'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' के बड़े-बड़े नेता, पार्टी कांग्रेस में आये हुये प्रतिनिधियों पर इस तरह दबाव एवं प्रभाव डालने में सफल हो गये कि उन्होंने अपनी पार्टी द्वारा, प्रतिक्रियावादी 'क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी' की गलत नीतियों का साथ देने का अनुमोदन किया । 'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' के ये बड़े नेता आज किस खतरनाक हद तक 'क्रिश्चियन डेमोक्रैटिक पार्टी' की नीतियों के पिच्छलग्गू बन चुके हैं, इसका पता इस तथ्य से लगता है कि उन्होने बोन सरकार (प० जर्मन सरकार––स०) की पुनः-शस्त्रीकरण तथा परमाणविक शस्त्रास्त्रों को हासिल करने, और नाटो सैनिक संगठन को अधिक मज़बूत बनाने की भयंकर नीति का पार्टी कांग्रेस द्वारा पूरा-पूरा समर्थन कराया । इस पार्टी कांग्रेस ने उस नोट का भी पूरा समर्थन किया जो बोन सरकार ने दुनिया के विभिन्न देशों को भेजा । इस नोट में पश्चिमी जर्मनी ने यह मांग की है कि जर्मनी को वे सभी इलाके लौटा दिये जाएं जो सन् १९३७ में (अर्थात् हिटलर के शासनकाल में––स०) उसके कब्ज़े में थे ।

पश्चिमी जर्मनी की 'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' की कांग्रेस के उक्त फैसलों को ज़रा गहराई से देखने पर यह बात सामने आ जाती है कि इस पार्टी के ऊंचे नेताओं ने अपनी पार्टी कांग्रेस को 'क्रिश्चियन डेमोक्रैटिक पार्टी' की तबाहकुन नीतियों से भी दो चार हाथ आगे निकलने के लिये इस्तेमाल किया । लेकिन जर्मन जनवादी गणतंत्र की 'समाजवादी एकता पार्टी', 'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' के साथ मतभेदों के बावजूद, साझा-हितों को जर्मन संवाद का मूलाधार बनाने का प्रयत्न करती है । इसके विपरीत, पश्चिमी जर्मनी की 'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' जहां ऐसी बातों और मतभेदों पर ही ज़ोर देती है जिससे जनतांत्रिक तत्वों और ताक़तों में दरारें पड़ती हैं, वहीं दूसरी ओर वह पश्चिम जर्मन साम्राज्यवाद की ताक़तों के साथ संयुक्त मोर्चा बनाती है ।

'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' के उपाध्यक्ष, श्री हरबर्ट वेनर ने यहां तक दावा किया है कि 'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' और 'समाजवादी एकता पार्टी' के बीच कोई भी साझा हित नहीं है । इतना ही नहीं । इस महानुभाव ने इस बात की भी धमकी दी कि जर्मनी की इन दो सबसे बड़ी पार्टियों ने जर्मन संवाद से सम्बन्धित जिन वक्ताओं का आदान-प्रदान करने का निश्चय किया है, वह "हाथापाई के आदान-प्रदान" में बदल जायेगा । इस प्रसंग में यह याद दिलाना आवश्यक है कि जर्मन संवाद के सिलसिले में, उक्त पार्टियों ने, कार्ल मार्क्स स्टाड्ट (ज. ज. ग.) में १४ जुलाई को और हानोवर (प० जर्मनी) में २१ जुलाई को आम जन-सभाओं में अपने-अपने वक्ता भेजना, अपनी कार्य सूचियों में विचार करने के लिये रखा है ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की 'समाजवादी एकता पार्टी', डोर्टमुण्ड में 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी' की उक्त कांग्रेस के गलत फैसलों से निरुत्साहित नहीं होगी । पिछले १७ वर्षों में, ज. ज. ग. ने पश्चिमी जर्मनी को लगभग १५६ प्रस्ताव भेजे बातचीत करने के लिये । लेकिन हठधर्मी के कारण पश्चिमी जर्मनी ने उन प्रस्तावों को या तो ठुकरा दिया या चुप्पी साध ली । तब भी ज. ज. ग. हताश या निरूत्साहित नहीं हुआ । इस समय, जर्मन संवाद को सफल बनाने के लिये––अर्थात् आम जन-सभाओं में बोलने के लिये दोनों पार्टियों के वक्ताओं के आदान-प्रदान की पूर्व स्वीकृत योजना में आने वाली रूकावटों को दूर करने के लिये, ज. ज. ग. की 'समाजवादी एकता पार्टी', तन-मन से लगी हुई है । 'समाजवादी एकता पार्टी' राजनीतिक शर्तों को पहले मानने पर ज़ोर नहीं देती है । लेकिन जर्मन संवाद से सम्बन्धित इन सार्वजनिक भाषणों को शुरू करने में एक बहुत बड़ी रूकावट यह खड़ी हुई है कि पश्चिमी जर्मनी के अभियोजकों को, ज. ज. ग. के किसी भी नागरिक को पश्चिमी जर्मनी की सीमा में दाखिल होते ही बन्दी बनाने का हुक्म दिया गया है, और इस हुक्म पर अमल शुरू भी हो चुका है । इसलिये जब तक इस नादिरशाही हुक्म को वापस नहीं लिया जाता, 'समाजवादी एकता पार्टी' और पश्चिमी जर्मनी की 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी' के बीच वक्ताओं के आदान-प्रदान का मामला खटाई में पड़ा रहेगा ।

इस सिलसिले में निर्णय चाहे जो भी हो, जर्मन जनवादी गणतंत्र की 'समाजवादी एकता पार्टी' जर्मन हितों के लिये उल्लिखित चार प्रश्नों की वकालत करती रहेगी, और पश्चिमी जर्मनी से उनका सही जबाव मांगती रहेगी । इन प्रश्नों के ही आधार पर ज. ज. ग. पश्चिमी जर्मनी के समस्त मज़दूरों और समस्त जनतांत्रिक एवं शांतिकामी लोगों से बातचीत करने और सद्भावना बढ़ाने का संघर्ष जारी रखेगा ।

जर्मन जनता के खुशहाल भविष्य का राजमार्ग

वाल्टर उल्ब्रिख्त

जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी' की २०वीं वर्षगांठ के अवसर पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त के भाषण के अंश :—

जर्मन महासंघ की ओर

दो जर्मन राज्यों का एक महा-संघ बनाने के सिलसिले में दिये गये हमारे सुझाव का यही उद्देश्य है कि इस से बिना किसी हानि के, अपनी ताक़त के आधार पर (जर्मन) जनता संक्रमण (परिवर्तन) सुगम बना देगी। . . .

एकीकृत जर्मनी के बारे में दिये गये हमारे बयान वास्तव में हमारे सुझाव हैं। ये सुझाव तो जर्मन राज्यों के मज़दूर वर्ग के बीच, जर्मनी की दो सब से मज़बूत राजनीतिक पार्टियों —– 'समाजवादी एकता पार्टी' तथा 'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' के बीच, ट्रेडयूनियनों के बीच तथा ईसाई जनमत के बीच, और सम्पूर्ण जर्मनी में मौजूद तमाम जनतांत्रिक शक्तियों के बीच बहस करने के लिये एक अच्छा आधार प्रस्तुत करते हैं।

जर्मन समस्या का कोई भी हल, जिसमें दो जर्मन राज्यों का एकीकरण भी शामिल है, उनकी (दो जर्मन राज्यों के—सं०) आपसी समझदारी तथा सद्भावना और एक जर्मन महा-संघ के अर्थमें आपसी सहयोग पर आधारित होना चाहिये। इसके अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं।

इसलिये दो जर्मन राज्यों के बीच, और विशेषकर पूर्व और पश्चिम की दो जर्मन मज़दूर पार्टियों के बीच, शांतिपूर्ण समझदारी और सद्भावना का होना एक अनिवार्य आवश्यकता है। इस से उनकी सरकारों को, जर्मन महा-संघ के ढांचे में पारस्परिक सहयोग की संभावनाओं पर सोचने-समझने का मौका मिलेगा। . . .

हम एक जर्मन महा-संघ के स्वप्न को साकार करने की तैयारी कर रहे हैं, और एक दिन, जर्मन जनता का एक नया एकीकृत जर्मन देश, इसी महा-संघ की कोख से जन्म लेगा। . . . .
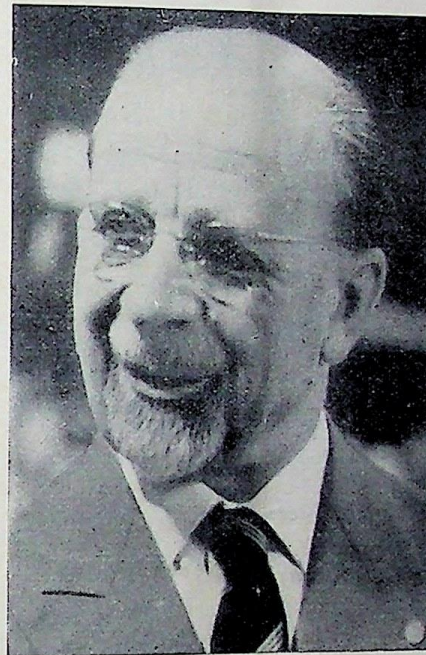
हमारे लिये, अपेक्षाकृत यह कहना सहज है कि उक्त स्वप्न को साकार बनाने—अर्थात् उस मंज़िल तक ले जाने वाला रास्ता तैयार करने में, और दुनिया में उस भावी जर्मनी को अपना सम्मानित स्थान प्राप्त कराने में जर्मन जनवादी गणतंत्र क्या करेगा तथा उसको क्या करना चाहिये।

जर्मन जनवादी गणतंत्र, दृढ़तापूर्वक अपनी शांति-नीति और समाजवादी निर्माण क़ायम रखेगा, ताकि इसके विचार दूसरे जर्मन राज्य के मज़दूरों और तमाम शांतिप्रिय शक्तियों को अधिक प्रभावित कर सकें। हमारी समाज व्यवस्था की ताक़त का आधार यह तथ्य है कि हमारे लोगों के हितों और हमारे समाज एवं इसके राज्य के हितों में विरोध नहीं है—वे एक हैं। 'समाजवादी एकता पार्टी' और हमारे किसान-मज़दूर राज्य की सरकार इस बात की हर मुमकिन कोशिश करेगी कि व्यक्ति और समूह (व्यष्टि और समष्टि) के हित, समाज के हितों के साथ ज्यादा अच्छी तरह मेल खायें। जहाँ तक, शांति स्थापना जैसी बुनियादी राजनीतिक समस्याओं का संबन्ध है, इन हितों में कोई पारस्परिक विरोध नहीं।

आर्थिक क्षेत्र में हमने विकास की कई कठिन और पेचीदा मंज़िलों को पीछे छोड़ दिया है। युद्ध की भयानक तबाहकारी के बाद, नव-निर्माण और नये को आकार देना काफी कठिन था। . . . प्रथम कुछ वर्षों में (युद्ध के बाद) हमारे राज्य को अपने नागरिकों एवं सामूहिक खेतों आदि से कड़े परिश्रम की मांग करनी पड़ी थी। उस समय उनके हितों और उस कड़े परिश्रम में शायद ही कोई समानता दिखाई देती थी। लेकिन फिर भी, उनका वह कड़ा परिश्रम, जीवन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिये, एक अनिवार्य आवश्यकता थी।

बर्लिन में अपने राज्य की सीमा को सुरक्षित करने से हमने अपनी मेहनत के सुफल को खतरे में पड़ने से और दूसरे लोगों के हाथों में जाने से बचाया। इस क़दम के उठाने के बाद ही (बर्लिन की दीवार द्वारा सुरक्षित करने के बाद—सं०) समाजवादी अर्थशास्त्र के कानूनों को पूरी तरह और प्रभावकारी ढंग से अमल में लाना संभव हो सका। आर्थिक योजना की नई व्यवस्था और नये प्रबन्ध ने रचनात्मक कार्य के लिये नई प्रेरणाओं को जन्म दिया : कड़ी मेहनत के रूप में दिये

गये बलिदानों का ग्राज यह सुपरिणाम निकला है कि सामूहिक श्रम के मधुर फल बहुत जल्दी पक कर जनता को मिल रहे हैं।...

इसके विपरीत, पश्चिमी जर्मनी में वहाँ के इजारेदार पूंजीपतियों की पार्टी—"क्रिस्चियन डेमोक्रैटिक पार्टी" ग्रौर ग्रधिकृत ग्रमरीकी ग्रधिकारियों ने, मिलकर पश्चिमी जर्मनी में वहां के जन-समाज की नई बुनियादें तैयार करना रोक दिया है। इस स्वस्थ समाज के निर्माण से वहाँ के मजदूर-वर्ग ग्रौर श्रमिक जनता का ध्यान हटाने के लिये, मारशल योजना तथा ऐसी ही ग्रन्य बेहोश कर देने वाली योजनाग्रों की सहायता से, वहां एक बनावटी खुशहाली का मायाजाल फैला दिया गया।....

हमने, ग्रपने यहां (ज. ज. ग. में—सं०) जनता के शासन, ग्रर्थात् समाजवाद की ठोस बुनियाद डाल दी है। यह काम बड़ा कठिन था।... टेलिविजन, रेफ्रिजिरेटर ग्रौर कपड़े धोने की मशीनें, दिन प्रतिदिन, बाजार में ग्रधिकाधिक संख्या में ग्रा रही हैं। बहुत जल्द मोटर कारों की संख्या में भी काफी वृद्धि होगी।

पश्चिमी जर्मनी में, रूग्रर के खदान मज़दूर ग्रपने कटु ग्रनुभव से ग्राज इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि तथाकथित "खुशहाल समाज" ग्रौर "सोशल मार्केट इकोनोमी" जैसे छलावों ने उनको ग्रपने मुख्य उद्देश्य—ग्रर्थात् खुशहाल समाज की बुनियादें डालने से बहुत दूर रखा है। ग्राज वे यह जान चुके हैं कि उनकी बहु-प्रचारित "समाज भागिता" (सोशल पार्टनरशिप) एक सुन्दर ख्याल के सिवा कुछ भी नहीं। ग्रपने ग्रनेक ग्रनुभवों से इस सही समझदारी को प्राप्त करके भी ग्राज वे कुछ करने में ग्रपने ग्रापको ग्रसमर्थ से पाते हैं, क्योंकि वहाँ (रूग्रर में, पश्चिमी जर्मनी के ग्रन्य भागों की तरह ही) शासन-सत्ता, कतिपय बड़े पूंजीपतियों के एक गुट की मुट्ठी में है, ग्रौर यह गुट ग्रापात-कानूनों तथा सैन्यवाद से किसी भी सही संघर्ष को कुचलने के लिये तैयार है।...

पश्चिमी जर्मनी के ग्रौर ग्रन्य देशों के प्रेक्षक भी ग्रब यह बात बिना किसी झिझक के मान रहे हैं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता, ग्रपने राज्य ग्रौर समाज के साथ स्पष्ट रूप से एवं दृढ़तापूर्वक एकाकार हो रहे हैं।... यहाँ के लोगों के ग्रौर समाज के हित एक हो चुके हैं, ग्रौर वे इसके साथ ग्रटूट सूत्रों से बन्ध चुके हैं।

इसलिये हमारा यह विश्वास दृढ़ होता जा रहा है कि हमारे गणतंत्र का सतत विकासमान समाजवादी जन-समुदाय, पश्चिमी जर्मनी को प्रभावित किये बिना न रह सकेगा। इस प्रकार, हमारा यह नया जर्मन-जन समुदाय समस्त जर्मन-वासियों के लिये भावी पितृभूमि की संरचना में ग्रपना ग्रमूल्य योग दे रहा है। ग्रौर इस प्रकार हम एक जर्मन महा संघ की स्थापना की तैयारी भी कर रहे हैं।...

पश्चिमी जर्मनी में क्या कुछ बदला जाना चाहिये ?

इसमें कोई सन्देह नहीं कि दो जर्मन राज्यों ग्रौर पश्चिम बर्लिन के विशिष्ट क्षेत्र का एकीकरण शुरू होने से पहले, पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य में काफी कुछ बदला जाना चाहिये। पश्चिमी जर्मनी के मज़दूर-वर्ग ग्रौर वहाँ की पूरी कामगार जनता को वह सब कुछ हासिल करना होगा जिसके लिये ग्राज से २० वर्ष पहले उन्होंने बहुत उत्साह से काम शुरू किया था।...

पश्चिमी जर्मनी के इजारेदार ग्रौर उनके चाटुकार राजनीतिज्ञ, एक ही भावी एकीकृत जर्मनी का सपना देखते रहते हैं, ग्रौर उस जर्मनी का रूप, सन् १९१४ ग्रौर सन् १९३९ की जर्मनी से किसी भी हालत में भिन्न नहीं।

लेकिन ग्राज खुले ग्राम हम यह घोषित करते हैं कि ग्रब ऐसा युद्ध-लोलुप तथा ग्राक्रामक एकीकृत जर्मन राज्य कभी वजूद में नहीं ग्रायेगा जहाँ इजारेदार-पूंजीपतियों ग्रौर प्रतिशोधवादी सैन्यवादियों का बोल-भाला हो। इस प्रकार का जर्मन राज्य इसलिये वजूद में नहीं ग्रायेगा क्योंकि जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता ने ग्रपने लिये, एक शांतिप्रिय तथा खुशहाल जर्मन राज्य का निर्माण किया है ग्रौर वह एक युद्ध-लोलुप जर्मन-राज्य की कभी स्थापना नहीं होने देगी। एक ऐसा जर्मन राज्य इसलिये भी वजूद में नहीं ग्रायेगा क्योंकि स्वयं पश्चिमी जर्मनी का बढ़ता हुग्रा जनमत ऐसा राज्य नहीं चाहता ऐसे एकीकृत जर्मन राज्य का वजूद में ग्रपना इसलिये भी ग्रसंभव है क्योंकि यूरोप के प्रगतिशील देश तथा लोग, विशेषकर सोवियत संघ की जनता, ग्रौर यहाँ तक कि स्वयं साम्राज्यवादी देशों के प्रभावशाली तत्त्व भी, ऐसा राज्य नहीं चाहते हैं।...

हम यह नहीं कहते कि सब से पहले पश्चिमी जर्मनी को, ज. ज. ग. की तरह बना दिया जाना चाहिये ग्रौर उसके बाद ही एक एकीकृत शांतिप्रिय जर्मनी की स्थानपा हो सकती है। लेकिन हम सिर्फ पश्चिमी जर्मनी में रहने वाले ग्रनेक लोगों के इस दृष्टिकोण से सहमत हैं कि जर्मन एकीकरण के उद्देश्य को तभी पूरा किया जा सकता है जब पश्चिम जर्मन राज्य की नीति वहां की श्रमकर जनता के हितों पर ग्राधारित हो।...

पश्चिमी जर्मनी के ग्रनेक संगठनों एवं संस्थाग्रों ने—जैसे मज़दूर यूनियनों, सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी के संगठनों, कम्युनिस्ट पार्टी समाजवादी तरुण संघ, शिक्षक संघों ग्रादि ने ग्रपने ग्रनेक फैसलों तथा बहसों में इस प्रकार की ग्रनेक मांगें की हैं ग्रौर फैसले लिये गये हैं जिनमें पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य के सामाजिक पुनर्गठन की ग्रावश्यकता का बार-बार उल्लेख हुग्रा है। ऐसे संगठनों में परमाणविक शस्त्रीकरण का विरोध करने वाला ईस्टर मार्च ग्रान्दोलन, ट्रेड यूनियनें तथा समाजवादी संगठन, बुद्धिजीवियों के दल ग्रौर किसान संगठन विशेष उल्लेखनीय हैं।....

सबसे बुनियादी मांग है मानवता ग्रौर शांति की रक्षा करना। पश्चिमी जर्मनी में

(शेष पृष्ठ २१ पर)

जार्ज स्टिबी

ज. ज. ग. के नये राजनयिक का स्वरुप

इयूसटासे गार्डन

पश्चिमी जर्मनी के जितने भी वरिष्ठ राजनयिक (डिप्लोमैट) हैं, सब के सब पुराने लोग हैं जो हिटलर के नात्सी विदेश मन्त्री रिब्बेनट्राप की सेवा कर चुके हैं।

इसके विपरीत, जर्मन जनवादी गणतंत्र के वरिष्ठ राजनयिक ऐसे लोग हैं जो ट्रेड यूनियनों के संघर्षों में, जेलों की यातनाओं में और नात्सी बर्बरता के विरूद्ध लड़ाइयों में तप कर निकले हैं।

ज. ज. ग. के ऐसे राजनयिकों का एक जीवन्त उदाहरण है जार्ज स्टिबी, जो रूमानिया और चेकोस्लोवेकिया में ज. ज. ग. के राजदूत रहे हैं और इस समय जो जर्मन जनवादी गणतंत्र के उप विदेश मंत्री हैं।

जार्ज स्टिबी का जन्म सन् १९०१ में बवारिया प्रान्त के मार्क्टराटेनबाख नामक स्थान में हुआ। इनके पिता एक साधारण किसान थे। सात वर्ष की आयु से ही जार्ज को अपने कुटुम्ब के लिये एक चरवाहे के रूप में काम करना पड़ा। अपने ग्राम-स्कूल में शिक्षा हासिल करने के बाद १४ वर्ष की आयु में वह पशुशाला में नौकर हो गये। १८ वर्ष की आयु में जार्ज स्टिबी को पास के मेमिंगन नामक कस्बे की लकड़ी चीरने की मिल में नौकरी मिल गई। यहीं राजनीति से उनका प्रथम परिचय हुआ।

मिल में, पहले ही दिन, मध्याह्न के अवकाश में, जार्ज स्टिबी से एक सहकर्मी मजदूर ने पूछा : "क्या तुम यूनियन के सदस्य हो ?" "नहीं", नवजवान जार्ज ने जबाव दिया और पूछा, "यह यूनियन क्या चीज है ?"

तब जार्ज स्टिबी को पता चला कि मिल के सभी मजदूर ट्रेड-यूनियन के सदस्य हैं और वह भी यूनियन के सदस्य बन गये। इसके कुछ ही दिन बाद वह "स्वतंत्र सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी" के भी सदस्य बने। यह पार्टी, वह वामपन्थी दल था जो प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान मुख्य "सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी" से अलग हो गया था।

सन् १९१९ में, पूरे जर्मनी में क्रांति की लहर फैली हुई थी। मेमिंगेन की सड़कों पर सशस्त्र टकराव के बाद, जार्ज स्टिबी कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गये। इसके बाद उन्होंने कई स्थानों में अनेक कारखानों में काम किया। अपने राजनीतिक विचारों के लिये प्रायः उनको काम से अलग किया गया। सन् १९२३ में वह डुस्सेलडोर्फ के एक कम्युनिस्ट अखबार में "मज़दूर संवाददाता" के रूप में लिखने लगे, और उसी वर्ष, सितम्बर मास में वह उस सशस्त्र दल के एक सरगर्म योद्धा थे जिसने उन प्रतिक्रियावादी शक्तियों को पराजित किया जो फ्रांस की शह पर और पैसा लेकर, राइनलैण्ड को जर्मनी से अलग करके फ्रांस के इशारों पर नाचने वाले "राइनलैण्ड रिपब्लिक" की स्थापना करना चाहते थे। यहां यह कहना अनुचित न होगा कि वर्तमान पश्चिमी जर्मनी का भूतपूर्व राष्ट्रपति, कोनार्ड एडेनावर, उक्त प्रतिक्रियावादी शक्तियों का एक नेता था।

सन् १९३० तक आते-आते, गांव का चरवाहा जार्ज स्टिबी एक अनुभवी पत्रकार और डुस्सेलडोर्फ की कम्युनिस्ट पार्टी के दैनिक अखबार 'फ्राइहाइट" के सम्पादक बन गये थे। सन् १९३० के फरवरी मास में उनको विद्रोह के इलज़ाम में गिरफ्तार करके दो साल की सजा दी गई। उनका दोष केवल इतना था कि उन्होंने एक लेख लिखा था जिसमें जर्मनी के गुप्त तथा अवैध शस्त्रीकरण और दूसरे महायुद्ध की तैयारी को नंगा किया गया था। यह वह समय था जिसके सिर्फ तीन वर्ष बाद हिटलर ने जर्मनी में राजसत्ता हथिया ली।

जार्ज स्टिबी ने अपने जेल जीवन को सार्थक बनाया। उनकी पत्नी को पति के

(शेष पृष्ठ ८ पर)

नोबेल पुरस्कार विजेता द्वारा

बोन सरकार के क़ानूनों की कड़ी निन्दा

पश्चिमी जर्मनी के एक अत्यन्त सम्मानित तथा विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं भौतिकी के ८३ वर्षीय प्रकाण्ड विद्वान श्री मार्क्स बोर्न। इन्होंने, हाल हीं में, "पश्चिम जर्मन धातु-मजदूर संघ" के अध्यक्ष, श्री ओट्टो ब्रेनर को निम्न पत्र लिखा है :

"मैं यह महसूस कर रहा हूं कि मुझे, आपात-क़ानूनों के सम्बन्ध में, आपको लिखना चाहिए। इन क़ानूनों को मैं, फेडरल गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी--सं.) के इतिहास में सबसे बुरा, विनाशकारी और सब से खतरनाक क़दम समझता हूं। मैं यह जानता हूं कि आप उन कतिपय प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक हैं जिसने इन (काले) क़ानूनों की निन्दा एवं विरोध किया है। . . .

"हमारी घरेलू राजनीति में ये क़ानून जर्मन लोकतन्त्र को, जो अभी कमज़ोर तथा असुरक्षित है, तबाह करेंगे। इन क़ानूनों का उद्देश्य है यहां (पश्चिमी जर्मनी में--सं.) एक निरंकुश-शासन-तंत्र कायम करना, और जागृत नागरिक मत को दबाना। . . .

"राजनीतिक दृष्टि से इन क़ानूनों का इसके अलावा और कोई उद्देश्य नहीं हो सकता कि जनता को दबाकर रखा जाये ताकि सैनिक अधिनायकवाद (तानाशाही) और युद्ध के लिये रास्ता तैयार हो सके। . . . अन्य देशों में इन आपात-कानूनों को जर्मन प्रतिशोधभावना का ठोस प्रमाण माना जाता है।

"मेरी आयु ८३ वर्ष है, और मेरा दिल अब कमज़ोर भी है। इसलिये मैं कुछ करने में असमर्थ हूं। मैं अब इतना वृद्ध हूं कि एक बार फिर मैं अपना देश छोड़कर (हिटलर के दमनकाल की तरह--सं०) नहीं जा सकता। लम्बे जीवन के मेरे अनुभवों ने मुझे यह दिखाया है कि मेरे राजनीतिक अनुमान सही होते हैं, और लगभग सभी राजनीतिक मामलों के बारे में मेरा अनुमान सही निकला है। . . . .

"इसलिये इन काले आपात-क़ानूनों को मैं आज जर्मनी के अन्तिम विनाश की ओर--संभवतः समस्त मानवता के विनाश की ओर भी--पहला क़दम समझता हूं। . . .

"मैं प्रार्थना करता हूं कि आप सभी संभव तरीक़ों से इन क़ानूनों को रोकने की कोशिश कीजिये। . . .

ओट्टो ब्रेनर का जवाब

महान जर्मन वैज्ञानिक के उक्त पत्र का जो उत्तर, श्री ओट्टो ब्रेनर ने दिया वह यह है : "मुझे इस बात से बहुत खुशी हुई कि आप जैसे एक महान वैज्ञानिक ने हमारी यूनियन द्वारा अपनाये गये उस रवैये का पूरी तरह समर्थन किया है जो रवैया उसने आपात-क़ानूनों के प्रति अपनाया है। मुझे इस बात से भी सन्तोष है कि इन काले क़ानूनों से जो (घोर) दुष्परिणाम निकलेंगे हम उन पर भी सहमत हैं।

"मैं आपको इस बात का पूरा विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हम, आज की परिस्थिति में, ऐसे काले क़ानूनों को पास होने से रोकने की हर मुमकिन कोशिश करेंगे। . . ."

(पृष्ठ ७ का शेष)

लिये किताबें ले जाने की इज़ाजत इस शर्त पर मिली थी कि वे किताबें ख़तरनाक न हों, और उन पुस्तकों के लेखक जीवित न हों। इस शर्त को "दास कैपिटल" नामक पुस्तक पूरा करती थी। जार्ज स्टिबी ने इसका गहरा अध्ययन किया। उन्हों ने एक व्याकरण की सहायता से रूसी भाषा का ज्ञान भी प्राप्त किया, हालांकि वह इस भाषा का एक शब्द भी नहीं जानते थे।

रूसी भाषा का यह ज्ञान, उनके लिये एक वरदान सिद्ध हुआ। सन् १९३२ में जब जार्ज जेल से छूटकर आये तो जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के बर्लिन से निकलने वाले अखबार "रोटे फाने" के सम्पादक ने उनसे पूछा कि क्या वह रूसी भाषा बोल सकते हैं। जार्ज स्टिबी ने बड़े उत्साह से हां कह दी। इसके बाद तुरन्त ही वह सोवियत संघ में "रोटे फाने" के मास्को संवाद-दाता नियुक्त हुये।

लेकिन जब वह मास्को पहुंचे तो उन्हें पता चला कि रूसी भाषा का उनका ज्ञान काफी कच्चा है। उनको इस बात का भी पता चला कि रूसी भाषा के जिस व्याकरण का उन्होंने अपने बन्दी जीवन के दौरान इतना गहरा अध्ययन किया था वह बहुत पुराना--ज़ार के युग का था। अब तक रूसी भाषा में काफी सुधार हुआ था और उसमें अनेक परिवर्तन हुये थे। बहरहाल, जार्ज स्टिबी हिम्मत हारने वाले आदमी नहीं थे। कुछ ही समय के परिश्रम के बाद उन्होंने रूसी भाषा का पूरा ज्ञान हासिल कर लिया और वह भी स्पेन में, जहां वह विश्व के अन्य देशभक्त तथा प्रगतिशील लोगों की तरह, स्पेन के गणराज्य को फ्रांको फासिस्तों के आक्रमण से बचाने के लिये गये थे। स्पेन की इस जंगे आजादी में, स्टिबी ने पत्रकार और रेडियो मेड्रिड के जर्मन प्रसारक के रूप में महत्वपूर्ण कार्य किया।

फासिस्तों द्वारा स्पेन गणराज्य की पराजय के बाद, जार्ज स्टिबी, फ्रांस के ले वेर्नेत नामक शिविर में बन्दी बनाकर रखे गये। यहां उन्होंने फ्रंच भाषा सीखी। सन् १९४१ में किसी तरह से यह मैक्सिको पहुंचे जहां स्पेन गणराज्य के लिये लड़ने वाले अनेक देशभक्तों को शरण मिली थी। यहां उन्होंने सभी दलों के फासिस्त-विरोधी जर्मन उत्प्रवासियों को "आज़ाद जर्मन राष्ट्रीय कमेटी" में संगठित किया।

सन् १९४६ में, श्री स्टिबी, मैक्सिको से आने वाले जर्मन निष्कासितों को लाने वाले पहले जहाज से जर्मनी लौट आये। वापस लौटते ही वह जर्मनी के पूर्वी भाग में समाजवादी जर्मनी के निर्माण में संलग्न हुये। विभिन्न अखबारों के लिये वह काम करते रहे।

सन् १९५७ में, वह जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजनयिक सेवा में दाखिल हुये, और पहले रूमानिया में और उसके बाद चेकोस्लोवाकिया में ज. ज. ग. के राजदूत बन कर गये। इसके बाद, सन् १९६१ में वह, ज. ज. ग. के उप विदेश मन्त्री बने। सन् १९६६ में, जनेवा में जो १८ देशीय निरस्त्रीकरण सम्मेलन हुआ, उसमें श्री जार्ज स्टिबी ने ज. ज. ग. के सरकारी प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। बवारिया का चरवाहा कितना आगे बढ़ चुका है समाजवादी जर्मन जनवादी गणतंत्र में।

प्रो. कार्ल यासपर्स :

पश्चिमी जर्मनी किधर जा रहा है ?

प्रोफेसर कार्ल यासपर्स, पश्चिमी जर्मनी के एक सुप्रसिद्ध दार्शनिक हैं । हाल ही में उन्होंने पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य की गतिविधियों पर अपनी एक पुस्तक में सविस्तार प्रकाश डाला है । इनकी इस पुस्तक का नाम है "फेडरल गणराज्य किधर भटक रहा है ।"...

प्रोफेसर कार्ल यासपर्स ८३ वर्ष के हैं, और अस्तित्ववाद के जर्मन प्रतिनिधि हैं । आजकल ये स्विटज़रलैण्ड में रहते हैं । प्रोफेसर महोदय, भौतिकवाद-विरोधी दार्शनिक हैं, और बहुत समय पहले इन्होंने, अणु युद्ध को "मोल लेने योग्य एक उचित खतरा" भी कहा था ।

नीचे हम, इन दार्शनिक की उक्त पुस्तक के कुछ उद्धरण प्रस्तुत कर रहे हैं :

—संपादक

"फेडरल गणराज्य (पश्चिमी जर्मन-सं) में हमारी आंखों के सामने, लोकतंत्र बदल रहा है । वहां ऐसे कदम उठाये जा रहे हैं जिनको न लोकतंत्र ही कहा जा सकेगा और न ही स्वतंत्र नागरिकता..."

मतदान और शासन में जनता के भाग पर, प्रोफेसर यासपर्स ने लिखा है :

"जनता, शासन में अपने आप हिस्सा नहीं ले सकती । जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि, अर्थात् संसद-सदस्य शासन करते हैं, जो चान्सलर का चुनाव करते हैं ।...

"(लेकिन) चुनाव भी स्वयं सही चुनाव न होकर पार्टियों के अल्पतंत्र का एक अनुमोदन मात्र है । ...

"केवल वही पार्टी संसद में प्रतिनिधित्व पा सकती है जो कुल वोटों का कम-से-कम ५ प्रतिशत भाग हासिल कर सके । पहले बुनियादी कानून में ऐसी कोई धारा नहीं थी । यह धारा बाद में इस कानून में जोड़ी गई । इस धारा से लोगों का राजनीतिक जीवन संकुचित कर दिया गया है, और किसी नयी चीज़ को सामने लाना अधिक दूभर बना दिया गया है ।..."

पार्टियों का अल्पतंत्र क्या है ?

"इस प्रकार के अल्पतंत्र में विभिन्न ऐसी पार्टियां होती हैं जो एक ओर तो एक पार्टी की तानाशाही के खिलाफ और दूसरी ओर से एक सक्रिय लोकतंत्र के लिये अनिवार्य पार्टियों की स्थापना के खिलाफ भी होती हैं । यह व्यवस्था, अल्पमत के आधार पर एक निरंकुश सरकार को जन्म देती है । यह सुगठित अल्प संख्यक वर्ग, जनता के बहुत बड़े बहुमत पर हुकूमत करता है । .....

"पार्टियों के अल्पतंत्र का अर्थ है : जनता को निकृष्ट नज़र से देखना । इस तंत्र में लोगों से बातें छुपा के रखी जाती हैं, और जनता को, अल्पतंत्र के उद्देश्यों को, यदि इसका कोई उद्देश्य हो तो, जान लेने की कतई जरूरत नहीं ।...

"फेडरल गणराज्य की स्थापना के दिन से इसका सबसे बड़ा उद्देश्य रहा है सुरक्षा ।... लेकिन फेडरल गणराज्य के न्यायिक अधिकारों के द्वारा सुरक्षा सम्बन्धी मांग सुरक्षा को खतरे में डालती है और यह स्वयं ही युद्ध के खतरे का मूल कारण बन जाती है । ध्यान रहे कि उक्त न्यायिक अधिकारों को अन्य राज्य सही नहीं मानते । विश्व की वास्तविक स्थिति को साफ तौर से न देखना, समझना एक ऐसी नीति अपनाने पर मजबूर करता है जिससे असुरक्षा बढ़ती है जबकि दावा यह किया जाता है कि यह (असुरक्षा) कम हो गई है ।..

"इस तरह, पहले निरंकुश और इसके बाद तानाशाही (अधिनायकवाद) के लिये रास्ता तैयार हो जाता है । ..

"ऐसी नीति के सार्थक सिद्धान्त नहीं होते । इन सिद्धान्तों की जगह लेते हैं 'हाल्स्टाइन सिद्धान्त' जैसे बेबुनियाद और कठमुल्लेपन से भरे हुये बयान । इन बयानों को नीति नहीं, बल्कि रुकावट डालने की नीति का नाम दिया जा सकता है ।...

"निरंकुश राजतंत्र की स्थापना और बढ़ जाने का एक स्पष्ट लक्षण है भयभीत होकर राज्य की विरोधी पार्टियों पर प्रतिबंध लगाना । फेडरल गणराज्य में, वहां की फेडरल अदालत ने, कम्युनिस्ट पार्टी को प्रतिबंधित किया । राजनीति के दृष्टिकोण से यह लोकतंत्रीय नहीं है । ...

"बातों को छुपा रखने की मनोवृत्ति और इस प्रकार सच कहने की शक्ति को क्षीण करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है । परिणामस्वरूप कानून पर से भी विश्वास उठ जाता है । चीजों को गोपनीय रखने की आड़ लेकर अपरिमित ताकत को मुठ्ठी में करने की चाह भी बढ़ जाती है । इस तरह निरंकुश एवं मनमानी कार्रवाई करना रोजमर्रा का अमल हो जाता है ।...

"तानाशाही के मार्ग पर चलने से, बुनियादी अधिकारों को खत्म करने की प्रवृत्ति बढ़ जाती हैं । ...

"इस प्रकार के राज्य में वे सभी प्रवृत्तियां मौजूद होती हैं जो इसको एक निरंकुश राजतंत्र बना देती हैं—भले ही इस राजतंत्र में कोई राजा अथवा सम्राट हुकूमत न कर रहा हो । ...

"पूरी तानाशाही स्थापित होने में यदि अभी कुछ कसर बाकी है, वह इन आपाती कानूनों के पास होने से पूरी हो जायेगी। . . . हिटलर का भी यही तर्क था कि जर्मनी में वह केवल वैधता के साधनों से राजसत्ता हासिल कर सकता है। लेकिन ताकत हासिल करने के बाद ही उसने सब कानून तोड़ दिये। इसी प्रकार तानाशाही भी आपात-कानून के साधन अपना कर (पश्चिमी जर्मनी में—सं) वही सब कुछ करेगी (जो हिटलर ने किया था—सं.)। . . .

"आपात-कानून पास करके (पश्चिम जर्मन फेडरल सरकार ने—सं.) एक ऐसा हथियार तैयार रखा गया है जिसके एक ही वार से, समय आने पर, तानाशाही कायम की जा सकती है, बुनियादी कानूनों को खत्म किया जा सकता है, और एक ऐसे राजतंत्र की स्थापना की जा सकती है जहां राजनीतिक आजादी कभी लौट के नहीं आ सकती। इस प्रकार शांति के लिये सब से गंभीर खतरा पैदा हो सकता है, और जर्मनी पर नयी तथा आखिरी तबाही बुलाई जा सकती है . . .

"हमारे राज्य का तंत्र ही लोगों के भय और जनता के प्रति अविश्वास के आधार पर खड़ा है। . . .

"आपात-कानन को हम बुनियादी कानून का पूरक नहीं कह सकते। बल्कि यह एक ऐसा कानून है जो बुनियादी कानून में रखे गये बुनियादी अधिकारों का हनन करता है।"

दार्शनिक यासपर्स को वाल्टर उल्ब्रिख्त का खत

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य-परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, हाल ही में, पश्चिमी जर्मनी के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रोफेसर कार्ल यासपर्स को—जो आजकल स्विटज़रलैण्ड में रहते हैं—एक खत लिखा। पत्र में प्रो० यासपर्स से "हमारे उद्देश्य के लिए मूल्यवान सहायता देने की अपील की गई है। श्री उल्ब्रिख्त ने अपने पत्र में लिखा है: "दोनों ओर से यदि सब्र और सद्भावना पूर्वक सम्वाद शुरू हो जाये तो इससे दोनों जर्मन राज्यों के सम्बन्ध सुधरने में काफी मदद मिलती।"

प्रोफेसर यासपर्स ने, अखबारों में जर्मनी की दो सब से बड़ी मजदूर पार्टियों में—समाजवादी एकता पार्टी (ज.प.ग.) और सोशल डैमोक्रैटिक पार्टी (पश्चिमी जर्मनी)—जर्मन प्रश्न पर हाल ही में शुरू हुये संवाद (विचारों के आदान-प्रदान) का पूरा समर्थन किया है।

इस संवाद का उल्लेख करते हुये श्री उल्ब्रिख्त ने अपने खत में लिखा है. . . "हमें आशा है कि यह संवाद पश्चिमी जर्मनी में ऐसी तब्दीलियां ला सकेगा जिनसे दो जर्मन राज्यों के बीच सामान्य संबंध कायम होंगे, और जिन से दोनों सरकारों के बीच बातचीत एवं समझौतों के बन्द द्वार खुल जायेंगे। निस्सन्देह केवल चन्द चिट्ठियों के विनिमय या थोड़ी बहुत बातचीत से ही ये सद्-परिणाम नहीं निकल सकते। इसके लिये हमें बड़े सब्र के साथ और बहुत समय तक विचारों का आदान-प्रदान जारी रखना होगा।"

नये युद्ध को रोकने का दृढ़ संकल्प

सफल और सही बातचीत के लिये जरूरी है कि पश्चिमी जर्मनी को, अपना यह अन्तर्राष्ट्रीय रवैया छोड़ देना पड़ेगा कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिक भी पश्चिमी जर्मनी के कानूनों की हद में आते हैं। यह भाव भी श्री उल्ब्रिख्त के खत में व्यक्त हुये हैं। . . . पश्चिमी जर्मनी में पास किये गये अपराध कानून में इस बात की गारंटी नहीं है कि ज. ज. ग. के नागरिकों को वहां आजादी से चलने,-फिरने दिया जायेगा। इतना ही नहीं। पश्चिमी जर्मनी के अदालती अमले को ज. ज. ग. के नागरिकों को (जब भी वे पश्चिमी जर्मनी में आयें) तुरन्त गिरफ्तार करने का आदेश भी दिया गया है।

प्रोफेसर यासपर्स की पुस्तक "फेडरल गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी—सं०) किस ओर जा रहा है?" का उल्लेख करते हुये श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने अपने पत्र में लिखा है कि पश्चिमी जर्मनी में आज कल वैसी ही हालत है जैसी सन् १९२९–३० के आस पास जर्मनी की हालत थी, जिसके बाद ही हिटलर ने वहां की शासन-सत्ता हथिया ली थी।

अध्यक्ष उल्ब्रिख्त ने, बोन द्वारा परमाणविक शस्त्रास्त्रों को किसी प्रकार हासिल करने, और प्रतिशोध के लिये युद्ध की तैयारियों को, पश्चिम जर्मन सरकार की खतरनाक नीतियां कहा है। उन्होंने पत्र में लिखा है: ". . . हम यह महसूस कर रहे हैं कि पश्चिमी जर्मनी में शांति के लिये जिस प्रकार खतरे पैदा हुये हैं वे बहुत गंभीर हैं। हम जर्मनी को नई तबाही से बचाने के लिये हर संभव प्रयत्न करेंगे—यह हमारा दृढ़ निश्चय है। . . ."

महासंघ से एकता की ओर

श्री उल्ब्रिख्त ने अपने खत में इस बात का खण्डन किया है कि पश्चिमी जर्मनी और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच सद्भावना एवं शांति स्थापित होने का अर्थ होगा ज. ज. ग. की राजनयिक मान्यता और जर्मनी का स्थाई विभाजन। उन्होंने लिखा है: ". . . पिछले १७ वर्षों से दो जर्मन राज्य मौजूद हैं और उन का दृढ़ीकरण हो रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय और वैधानिक कानून के अनुसार, उनका अस्तित्व एक-दूसरे को मान्यता देने के आधार पर टिका नहीं है।

"प० जर्मनी द्वारा इस बात पर अड़ा रहना कि वह ही मात्र जर्मन राज्य है, और दूसरे जर्मन राज्य के अस्तित्व को अस्वीकार करने का अर्थ है जर्मनी के पुर्न-एकीकरण के रास्ते को बन्द करना। हमारे सामने केवल एक ही रास्ता खुला है, और वह रास्ता है दो जर्मन राज्यों का महासंघ बनाकर उसमें इन दो राज्यों की सरकारों का आपस में शांतिपूर्ण सहयोग और मेलजोल बढ़ाना। . . .

"हम इस महासंघ को सहयोग का प्रथम रूप समझते हैं, कालान्तर में जिसका स्थान एक ऐसा संयुक्त जर्मनी लेगा जो शांतिप्रिय, प्रगतिशील और एक सही लोकतंत्र होगा। इसके लिये यह अनिवार्य आवश्यकता है कि दो में से कोई भी जर्मन राज्य एक-दूसरे पर, अपनी समाज व्यवस्था जबर्दस्ती न थोप दे। . . ."
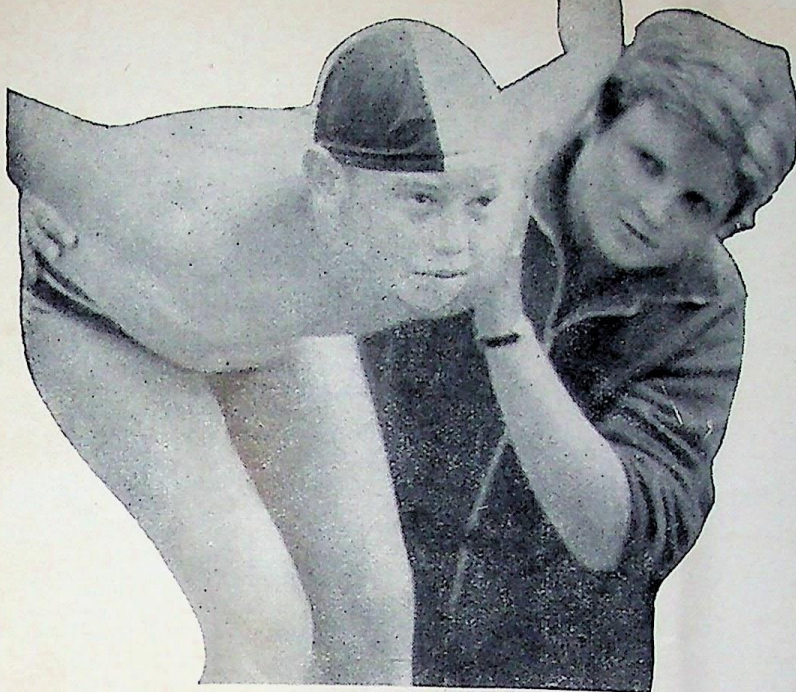
खेलकूद : स्कूलों में एक अनिवार्य विषय

मोनिका सीमके

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने शारीरिक-प्रशिक्षण के क्षेत्र में, सन् १९५२ में, एक महत्वपूर्ण क़दम उठाया । यह क़दम था खेलकूद को स्कूलों में एक अनिवार्य विषय बनाना । तब से, यहां के प्रत्येक स्कूल में हफ्ते में तीन बार खेलकूद के पाठ पढ़ाये जाते हैं । न केवल स्कूलों में ही, बल्कि हर एक व्यावसायिक स्कूल, कालेज और विश्व-विद्यालय के पाठ्यक्रम में भी खेलकूद को, एक विषय के रूप में अपनाया गया है ।

शारीरिक प्रशिक्षण का उद्देश्य, सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाना और प्रत्येक नौजवान को स्कूल की पढ़ाई के बाद किसी-न-किसी खेलकूद में व्यस्त रखना है ।

तैराकी भी स्कूलों में सिखाई जाती है और यह भी अनिवार्य है । तैराकी, पहले ५ वीं कक्षा से सिखाई जाती थी, लेकिन अब चौथी कक्षा से ही यह बच्चों को सिखाई जाती है । सिखाने के लिये सनद याफ्ता प्रशिक्षक नियुक्त हैं, और स्कूल छोड़ने पर प्रत्येक विद्यार्थी के लिए तैराकी की परीक्षा में पास होना आवश्यक है ।

स्कूल समय की समाप्ति के बाद खेलों के मैदान और स्कूलों की व्यायाम शालायें सभी के लिये खुली रहती हैं । स्कूलों के अपनी खेल-कूद क्लब और संघ हैं जहां बच्चे अपनी मनपसंद खेलें खेलते हैं । खेल-कूद प्रशिक्षक और खेलकूद क्लबों तथा फैक्टरी खेलकूद संस्थाओं के मंजे हुये खिलाड़ी, अनेक गांवों एवं कस्बों में जाकर खेलकूद संस्थायें स्थापित करते हैं ।

स्कूल चैम्पियनशिप, अन्तर स्कूल प्रतियोगितायें और क़स्बों के आपसी खेलकूद मुकाबले आयोजित होते हैं । ये प्रतियोगितायें प्रतिभा-वान खिलाड़ियों को सामने लाने और उनको प्रोत्साहित करने में बहुत सहायक सिद्ध होती हैं । इनमें जो विशिष्ट प्रतिभा के खिलाड़ी होते हैं उनको बच्चों एवं युवक खेलकूद स्कूलों में ट्रेनिंग के लिये भेज दिया जाता है ।

खेलकूद में अनिवार्य रूप से पास होने का नियम—या मापदण्ड—प्रत्येक स्कूली बच्चे पर लागू नहीं किया जाता । उदाहरण के लिये यदि कोई प्रतिभावान बच्चा शारीरिक दृष्टि से अक्षम—अपंग आदि हो और वह खेलकूद में हिस्सा लेने में असमर्थ हो तो उस पर खेलकूद में अनिवार्यतः पास होने का नियम लागू नहीं किया जाता । यदि ऐसा न किया जाय तो उसकी आगे की पढ़ाई—कालेज तथा विश्वविद्यालय की पढ़ाई—एकदम खतरे में पड़ जायेगी । इसीलिये ऐसे बच्चों पर उक्त नियम लागू नहीं किया जायेगी । लेकिन इनको भी खेलकूद का पाठ्यक्रम पूरा करना पड़ता है । इस प्रकार उनके मानसिक एवं शारीरिक विकास को बाधारहित बना दिया जाता है ।

खेलकूद के विषय की अच्छी जानकारी देने के लिये प्रशिक्षित शिक्षकों का होना अनिवार्य है । ऐसे शिक्षकों को तैयार करने की शुरूआत, विश्वविद्यालयों में, सन् १९४६ से ही हुई ।—दस वर्ष पहले इस प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम तीन वर्ष से बढ़ा कर चार वर्ष कर दिया गया । इस प्रशिक्षण में प्राकृतिक विज्ञानों के अध्ययन को प्राथमिकता दी गई । इसके फलस्वरूप, खेलकूद के शिक्षक अब ज. ज. ग. में, स्कूल के डाक्टर को भी मदद दे सकेंगे । स्कूलों में ऐसे शिक्षकों का महत्व और सम्मान इतना बढ़ गया है कि कई स्कूलों में वे मुख्याध्यापक अथवा सहायक मुख्य अध्यापक के पदों पर भी आसीन हैं ।

सांस्कृतिक कर कहाँ जाता है ?

पिछले १७ वर्षों से जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति से किसी भी मनोरंजन के लिये जाने में ५ फेनिक (लगभग ५ पैसे) मनोरंजन कर के रूप में वसूल किये जाते हैं। मनोरंजनों में संग्रहालय, रंगमंच, कनसर्ट तथा सिनेमा, नृत्य, रेडियो तथा टेलिविजनों और ग्रामोफोन रिकार्डों की बिक्री आते हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के जन्म लेने से पहले भी, जर्मनी के अधिकारियों ने "सांस्कृतिक विधि स्थापित करने से सम्बधित अनुदेश" पास किया था। उस समय क्षतिग्रस्त मानवतावादी जर्मन संस्कृति के पुनर्निर्माण के लिये सभी क्षेत्रों के सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं को आर्थिक सहायता देना अत्यन्त आवश्यक था। उस समय इस सहायता को शुरू किया था "फ्री जर्मन ट्रेड यूनियनों की कानफेडरेशन" और "जर्मनी के प्रजातांत्रिक पुनरुत्थान के लिये संस्कृति की लीग" ने। युद्ध से ध्वस्त और अस्त-व्यस्त जन-जीवन को हर तरह से पुनः हरकत में लाना था, और सांस्कृतिक जीवन इसका अपवाद नहीं था।... आज, ज. ज. ग. में उक्त मनोरंजक कर को, जर्मनी के सांस्कृतिक जीवन अधिकाधिक संवृद्ध बनाने के काम में लाया जा रहा है।

ज. ज. ग. में सांस्कृतिक निधि की स्थापन हुई सन् १९४९ में, और तब से लेकर आज तक २०० मिलियन मार्क से अधिक की रकम (१ मिलियन=१० लाख) इस कोष में आ चुकी है। इस रकम से १६५ मिलियन मार्क थियेटरों, सिनेमा-घरों और नृत्य आयोजनों से प्राप्त हुई। लगभग ३१ मिलियन मार्क रेडियो एवं टेलिविजन रखने वाले लोगों, और लगभग ४ मिलियन मार्क ग्रामोफोन रिकार्डों की बिक्री से हासिल हुये।

इस रकम का क्या होता ?

पहले कुछ वर्षों में इस रकम को, सांस्कृतिक क्षेत्र की अत्यन्त आवश्यक योजनाओं पर खर्च किया गया। फिर सन् १९६० से,

सांस्कृतिक मंत्रालय के एक निर्देश के अनुसार, इस रकम को जनता में एक विस्तृत सांस्कृतिक आन्दोलन को प्रोत्साहित करने के लिये खर्च किया जा रहा है। मंत्रालय के इस निर्देश के एक वर्ष पहले, बिट्टरफेल्ड में 'समाजवादी एकता पार्टी' का एक सांस्कृतिक सम्मेलन हुआ था, जिसमें 'पार्टी' ने समस्त जनता को, ज. ज. ग. में एक समाजवादी संस्कृति को विकसित करने में हिस्सा लेने और हाथ बटाने की अपील की थी। तब से लेकर आज तक, सांस्कृतिक जीवन को विकसित करने में ८८ मिलियन मार्क की धनराशि खर्च की गई है। इस रकम का आधे से ज्यादा हिस्सा कस्बों तथा फैक्ट्रियों में सांस्कृतिक केन्द्र बनाने, लोककला दलों को सहायता देने और गांवों में पुस्तकालय स्थापित करने में खर्च किया गया। गणतंत्र के ग्रामीण भाग को विशेष सहायता दी गई, क्योंकि सन् १९४५ तक यह भाग सांस्कृतिक दृष्टि से लगभग अछूता ही रहा था। इस सिलसिले में एक उदाहरण देना अनुचित न होगा :

एक उदाहरण

ज. ज. ग. के एरफूर्ट प्रान्त में श्लोटाइम नाम का एक छोटा स्थान है जिसकी आबादी पांच हजार है। इस छोटे कस्बे में सन् १७७३ में निर्मित एक पुराना कैसल खड़ा है। इस कैसल (दुर्ग) के मालिकों ने इसकी कोई देखभाल नहीं की। परिणामस्वरूप यह एक खण्डहर बन गया।.. सन् १९४५ के तुरन्त बाद श्लोटाइम के लोगों ने इस बदसूरत खण्डहर को उखाड़ फेंकने की मांग की। लेकिन एक परिषद् और एक निर्माण इंजीनियर ने ऐसा करने की सलाह नहीं दी। वे, लोगों के सहयोग से इस कैसल को कस्बे का मुख्य सांस्कृतिक केन्द्र बनाना चाहते थे। इस कैसल का ऐतिहासिक महत्व भी था। सन् १५२५ में फांसी पर लटकाये जाने से पहले, महान जर्मन किसान नेता, टामस मून्त्सेर को इसी कैसल में कैद किया गया था।......

बहरहाल, सन् १९६२ में जब, उल्लिखित दो महानुभवों ने, कैसल के खण्डहर का मलबा हटाना शुरू किया तो लोगों ने बड़ी विनम्रता से उनको कहा कि वे "हवाई किल्ले" बना रहे हैं। लेकिन इन "स्वप्न दृष्टाओं" की लगन आखिर फलीभूत हुई। पहले केवल उत्सुकतावश स्थानीय लोग कैसल में आये, लेकिन बाद में वे अच्छे सहायक बन गये। नतीजे के तौर पर, कुछ ही समय के बाद सांस्कृतिक हलचल के लिये यहां कामगारों का एक क्लब, उत्सव मनाने का हाल और कई कमरे वजूद में आ गये। एक खूबसूरत रेस्तरां भी कैसल में खुल गया है। श्लोटाइम के इस सांस्कृतिक केन्द्र को विस्तार देने की योजना भी विचारा-धीन है। इस विस्तार-योजना में एक नृत्यकक्ष, एक खुला थियेटर, एक कार-पार्क इत्यादि भी शामिल है।... कैसल के पुनरुत्थान के लिये सांस्कृतिक निधि से श्लोटाइम के "स्वप्न दृष्टाओं" को १५ हज़ार रकम की सहायता मिली। यहां के लोग इस सहायता के हकदार थे क्योंकि उन्होंने स्वयं ३५ हजार मार्क के मूल्य का श्रमदान किया था।

सामूहिक नृत्य का एक दृश्य

दूसरा उदाहरण

अब दूसरा उदाहरण देखिये : हाइलिगेनस्टाड्ट भी एरफूर्ट प्रान्त का ही एक कस्बा है। इसमें थियेटर नाम की कभी कोई चीज नहीं थी। लेकिन कुछ ही वर्ष पहले यहां श्रमिकों का एक रंगमंच वजूद में आया, और सांस्कृतिक-निधि से इस को सहायता मिली। पिछले वर्षों में लोगों के सहयोग से यह रंगमंच लगातार प्रगति कर रहा है। यहां अभिनीत नाटकों का पूर्वाभ्यस और अभिनय होता है। इस कस्बे के लोगों के लिये यह सब बिल्कुल नया अनुभव है।

सांस्कृतिक-निधि का एक मुख्य उद्देश्य है सांस्कृतिक हलचल से अछूते क्षेत्रों में सांस्कृतिक जीवन का सन्देश पहुंचाना। लेकिन ऐसा करने के लिये वहां के लोगों और कलाकार दलों का सक्रिय होना निर्णायक तत्व है।...कुछ वर्ष पहले तक भी सांस्कृतिक-निधि एक केन्द्रीय दफ्तर से संचालित होती थी, लेकिन आज यह निधि स्थानीय अधिकारियों द्वारा संचालित होती है—अर्थात् इस निधि के लिये जहां से पैसा आता है, वहीं वह खर्च भी किया जाता है। इस प्रकार कला का प्रत्येक क्षेत्र दिन-प्रति-दिन समृद्ध होता जा रहा है और जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिक का सांस्कृतिक धरातल ऊंचा उठता जा रहा है।

सांस्कृतिक निधि का वितरण कैसे होता है ? इस निधि का संचालन न्यासितों (ट्रस्टियों) का एक बोर्ड करता है जिसका अध्यक्ष, ज. ज. ग. का सांस्कृतिक मंत्री होता है। इस न्यास के सभी सदस्य अवैतनिक हैं, जो सामाजिक तथा सांस्कृतिक संगठनों एवं संस्थाओं के प्रतिनिधि होते हैं। न्यासितों का बोर्ड, हर साल, आगामी वित्तीय वर्ष के लिये पैसा खर्च करने का बजट पास करता है।...

जर्मन प्रश्नोत्तरी

पश्चिमी जर्मनी के एक सुप्रसिद्ध लेखक श्री हांस माग्नुस एनसेन्सबर्गर ने, हाल ही में, फ्रांकः र्ट के एक मासिक पत्र "कुस्बूख" में, ५० पृष्ठों की एक वृहत् प्रश्नोत्तरी प्रकाशित की है । इस प्रश्नोत्तरी का नाम है "जर्मन समस्या की प्रश्नोत्तरी" । ईसाई धर्म सम्बंधी प्रश्नोत्तर-माला का रूप अपनाकर, श्री एनसेन्स्वर्गर तथा तरुण लेखकों के एक दल ने प्रश्न और उत्तर के रूप में--"जर्मन समस्या" क्या है और इसके बारे में क्या किया जा सकता है ? --इसका विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है । इसी "जर्मन प्रश्नोत्तरी" के कुछ अहम् प्रश्नों को हम नीचे, संक्षिप्त रूप में अपने पाठकों के लिये प्रस्तुत कर रहे हैं : --संपादक

प्र. जर्मन समस्या क्या है ?

उ. जर्मन समस्या राजनीतिक सामाजिक आर्थिक, सैनिक तथा कानूनी समस्याओं का एक ऐसा पुलिन्दा है जिसकी जड़ दूसरे महा-युद्ध में निहित है । इस युद्ध को जन्म दिया जर्मन राइख ने, पराजय में जिस का (राइख का) खातमा हुआ, और इसके बाद इस राइख का स्थान लिया दो जर्मन राज्यों तथा विजयी शक्तियों द्वारा संरक्षित, बर्लिन के नगर ने । आज तक इस स्थिति को सूलझाया नहीं गया है ।

प्र. क्या यह सुलझ सकती है ?

उ. हां ।

प्र. क्या जर्मन निवासी और जर्मन सरकारें इस समस्या को सुलझाने के लिये तैयार हैं ?

उ. वास्तव में यही जर्मन समस्या है ।

प्र. विश्व राजनीति के लिये यह समस्या क्या अर्थ रखती है ? क्या यह एक बुनियादी सवाल है, एक स्थानीय समस्या का ?

उ. जहां तक जर्मन समस्या की संरचना का सवाल है इसको एक काल-दोष ही कहा जा सकता है--एक विशेष, उलझा हुआ, लम्बा झगड़ा जो शीतयुद्ध के समय से चला आ रहा है ।

प्र. यदि जर्मनी एक विशेष समस्या, एक काल-दोष है, तो इसको अलग क्यों नहीं रहने दिया जाता ?

उ. क्योंकि ऐसा करना बहुत खतरनाक होगा । आज, दूसरे महायुद्ध के २० वर्ष बाद भी पूरे यूरोप में केवल एक राज्य की ओर से ही सैनिक संघर्ष शुरू करने का खतरा है । इसी प्रकार इसी एक राज्य को छोड़कर कोई भी यूरोपीय राज्य, अन्य देशों के इलाकों पर अपना अधिकार नहीं जताता । यूरोप का कोई भी राज्य, केवल एक राज्य को छोड़-कर, किसी अन्य राज्य का अस्तित्व अस्वीकार नहीं करता । यूरोप का कोई भी राज्य एक अपवाद को छोड़कर दूसरे किसी राज्य का बलप्रयोग द्वारा इसकी समाज व्यवस्था बदलने की धमकी नहीं देता । यही कारण है कि जर्मन समस्या को अलग नहीं छोड़ा जा सकता ।

(यह राज्य, यह अपवाद पश्चिमी जर्मनी है, यह बात सर्वविदित है--सं०)

प्र. क्या जर्मन समस्या, केवल जर्मन-वासियों की समस्या है ?

उ. इस समस्या के हल में हर वह व्यक्ति दिलचस्पी रखता है जो इसके भयंकर परि-णामों से प्रभावित होगा । दूसरे शब्दों में इसका तात्पर्य है कि यह समस्या केवल जर्मनी की ही नहीं बल्कि उनके पड़ोसियों और मित्रों की भी है । इन सभी का यह सामूहिक स्वार्थ है कि जर्मनी अब कदापि भय एवं अशांति का उद्गम न रहे । दो-दो विश्वयुद्धों के बाद, सारी दुनिया अब जर्मन समस्या के झगड़ों से तंग आ चुकी है । कोई भी व्यक्ति एक ऐसे राष्ट्र के साथ सहानुभूति नहीं रख सकता जो अपने आपको और अपने पड़ोसी देशों को, तीसरे युद्ध के खतरे के निकट ला देता है ।

प्र. जर्मन फेडरल गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी--सं०) के सरकार की जर्मन समस्या के शांतिपूर्ण हल में क्या देन है ?

उ. इसने केवल रूकावटें डाली हैं राज-नीतिक, सैनिक एवं कानूनी रूकावटें ।

प्र. एडेनावर ने अपने राजनीतिक सिद्धान्त में क्या वादा किया था ?

उ. उसमें यह वादा किया गया था कि यदि जर्मन फेडरल गणराज्य, पश्चिमी देशों के संश्रय (अलायन्स) में शामिल हो जायेगा तो "पश्चिम" इतना बलशाली बन जायेगा कि सोवियत संघ मजबूर होकर जर्मनी से ही नहीं बल्कि पूर्वी यूरोप से भी निकल जायेगा

प्र. इस नीति का क्या परिणाम हुआ ?

उ. जर्मन फेडरल गणराज्य पश्चिमी गुट व्यवस्था का एक अंग बन गया, जर्मनी में सीमायें स्थाई बन गयीं, शीतयुद्ध और जर्मन जनवादी गणतंत्र मजबूत हो गये ।

प्र. पश्चिम जर्मन सरकार की क्या प्रति-क्रिया रही ?

उ. एक आश्चर्य मिश्रित बौखलाहट । (प. जर्मन) सरकार एक साथ ,पुर्न-एकीकरण में जल्दबाजी करना तथा एक राष्ट्रीय नीति अपना लेना चाहती है । वह एक ओर अम-रीका का पल्ला पकड़ना तो दूसरी ओर दगाल का नक़ल उतारना चाहती है। . . यह अपने मित्र देशों की नीतियों के समर्थन में घाषणायें करती है लेकिन गुप्तरूप से यह उन नीतियों का तोड़-फोड़ करती है। बोन का एक उद्देश्य है कि यूरोप में, मौजूदा प्रभाव-क्षेत्रों को नहीं मान लेना चाहिये, बल्कि उनको वक्त देना चाहिये । जर्मन फेडरल गणराज्य के सभी प्रमुख राजनीतिक सिद्धान्त, जर्मन समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने के विरोधी हैं। ये सिद्धान्त, जर्मन जनवादी गणतंत्र को बल प्रयोग द्वारा फेडरल गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी--सं०) में मिला कर, यूरोप के सन्तुलन को बिगाड़ देना चाहते हैं ।

प्र. पश्चिमी जर्मनी का "पुर्नएकीकरण" से क्या तात्पर्य है ?

(शेष पृष्ठ २१ पर)

पश्चिमी जर्मन संघीय गणराज्य के २५ मार्च, १९६६ के पत्र पर ज. ज. ग. की मन्त्रिपरिषद की घोषणा

पश्चिमी जर्मन संघीय गणराज्य के २५ मार्च, १९६६ के पत्र पर ज. ज. ग. की मंत्रिपरिषद ने शांति की सुरक्षा की उत्कट अभिलाषा से प्रेरित हो कर अपनी राय व्यक्त की है। ज. ज. ग. के मंत्रिमण्डल के सदस्यों को इस बात से अत्यधिक चिंता हुई है कि उक्त पत्र द्वारा पश्चिम जर्मन सरकार की नीतियों में किसी प्रकार के भाड़े का कोई संकेत नहीं मिलता, इसके विपरीत उससे यही प्रतीत होता है कि वह अपनी आक्रामक और प्रतिशोधवादी नीतियों पर ही चलना चाहती है। अपने पत्र में पश्चिमी जर्मनी की सरकार, अंतर्राष्ट्रीय कानून के विरूद्ध, अपनी इस अवास्तविक धारणा से ही चिपकी हुई है कि 'जर्मनी का अस्तित्व अभी तक १९३७ की ही सीमाओं के अंतर्गत बरकरार है।' इस प्रकार वह यूरोप की एकमात्र सरकार है जो दूसरे यूरोपीय देशों के क्षेत्रों को अपने अधिकार में लेने की मांग करती है। यूरोप की सीमाओं में परिवर्तन करने का रास्ता अपनाने की यह खुली घोषणा यूरोप की जनता की शांति और सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा है। पश्चिमी जर्मनी की नीति का अपरिवर्तित आक्रामक चरित्र इस बात से भी स्पष्ट होता है कि वह समाजवादी देशों के साथ अलग-अलग बल प्रयोग के त्याग की घोषणाओं का आदान प्रदान करने को तो तैयार है किन्तु ज. ज. ग. से नहीं जो पूरब में उसका पड़ोसी देश है और जिसके साथ उसकी एक हजार किलोमीटर लम्बी सीमा मिली हुई है। पश्चिमी जर्मनी की संघीय सरकार, जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रति शांति को खतरा पहुंचाने वाली तथा शत्रुतापूर्ण व्यवहार त्यागने के लिए जरा भी तैयार नहीं प्रतीत होती।

पश्चिमी जर्मन संघीय गणराज्य की नीति के कारण उत्पन्न खतरा इसलिए और भी बढ़ गया है क्योंकि वह अपने प्रतिशोधवादी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए परमाणुविक अस्त्रों पर अधिकार की भी मांग कर रहा है।

तथ्य अत्यन्त स्पष्ट भाषा में बोलते हैं। उनसे यह सिद्ध होता है कि पश्चिम जर्मन सरकार शांति प्रयासों से अपने को अलग रख कर जनता को धोखा देने की ही नीति का पालन कर रही है। पश्चिमी जर्मनी विश्वयुद्ध के खतरे का दूसरा स्थल और यूरोप में शांति भंग करने वाला मुख्य तत्व बन गया है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रि परिषद् पश्चिमी जर्मनी के पत्र पर सोवियत संघ, पोलैण्ड और चेकोस्लोवाकिया की सरकारों के वक्तव्यों में व्यक्त किये गये दृष्टिकोण से पूर्णतः सहमत है। साथ ही वह शांति की सुरक्षा और विभिन्न देशों की जनता में सहयोग बढ़ाने के सुझावों से अपनी सहमति की घोषणा करती है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रिपरिषद् इस बात पर जोर देती है कि यूरोप की समस्त जनता की शांति और सुरक्षा को सुनिश्चित बनाने के लिए पश्चिम जर्मन सरकार के ठोस योगदान की आवश्यकता है। सबसे पहले यह जरूरी है कि वह पारमाणुविक अस्त्रों पर किसी भी रूप में अधिकार की मांग को छोड़, वर्तमान सीमाओं में परिवर्तन की मांग को हमेशा के लिए त्याग दे और दोनों जर्मन राज्यों में समझदारी का और शत्रुता त्याग कर मैत्री का रास्ता अख्तियार करे।

पश्चिमी जर्मनी के लेखक का पत्र . . .

पश्चिमी जर्मनी के प्रसिद्ध बूर्जुआ मानवतावादी लेखक और नाटककार योहानेस ट्रालो ने, हाल ही में वाल्टर उलब्रिख्त द्वारा पश्चिमी जर्मनी के दार्शनिक, प्रोफेसर कार्ल यासपर्स को लिखे गये एक पत्र पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। अपने पत्र में वाल्टर उलब्रिख्त ने राष्ट्रीय प्रश्नों पर ज. ज. ग. की 'समाजवादी एकता पार्टी' और पश्चिमी जर्मनी की 'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' के बीच हुए विचारों के आदान-प्रदान के बारे में लिखा था —संपादक

"एक जर्मन होने के नाते मुझे उलब्रिख्त के सुझावों पर अक्सर अपनी राय व्यक्त करने का मौका मिला है। वे विचार कभी केवल पार्टी हितों की दृष्टि से नहीं व्यक्त किये गये, बल्कि हमेशा राष्ट्र के हित और उन प्रश्नों को, जिनका शांतिपूर्ण उत्तर खोजा जाता है, हल करने की दृष्टि से ही व्यक्त किये गये हैं। मुझे याद है एक बार मैंने अपने देशवासियों के प्रवक्ता के रूप में, एक जर्मन के नाते उलब्रिख्त के प्रति कृतज्ञता प्रकट की थी। कोई सोच सकता है कि अपने देश का प्रधान होने के नाते उलब्रिख्त के ऊपर ज. ज. ग. की ही जिम्मेदारियां काफी हैं, लेकिन यह बात कि वह—जैसा कि हम सभी लोगों को चाहिये—अपने को सम्पूर्ण राष्ट्र के प्रति, ज. ज. ग. की जनता जिसका एक महत्वपूर्ण और सफल भाग है, जिम्मेदार अनुभव करते हैं, उन्हें उस महत्वपूर्ण राजनीतिक व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करती है, जो वस्तुतः वे हैं।

"अब तक मैं अपने ही देश की ओर से एक इतनी ही व्यावहारिक पहलकदमी की आशा कर रहा था जो व्यर्थ रही। इसके बदले हमारे देश ने ज. ज. ग. के नागरिकों पर भी अपना कानून लागू करने की घोषणा की, जो एक युद्ध घोषणा के ही समान है। अन्य देशों के काफी बड़े क्षेत्रों पर दावे के बारे में भी यही कहा जा सकता है।

"जिन्हें युद्ध की धमकी दी जा रही है, उनके अत्यन्त सुदृढ़ संधि संगठन ने अभी तक खुले तौर पर युद्ध भड़कने नहीं दिया है और यह भी संदिग्ध है कि 'नाटो' सैन्य संगठन के १४ देश जो अपने को अमरीकी प्रयास से मुक्त नहीं करना चाहते, पश्चिमी जर्मनी के प्रेम के कारण युद्ध में संलग्न होंगे। लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के शुरू होने के पहले भी स्थिति वैसी ही थी और जर्मनों ने अपने आपको युद्ध में झोंक दिया।"

"तथ्य और वास्तविकताएं और लाखों बेगुनाह लोगों की मौतें शस्त्रीकरण के लिए उन्मुक्त दुःसाहसी युद्धवादियों को जरा भी प्रभावित नहीं करतीं। हम एक ऐसे समय

(शेष पृष्ठ १८ पर)

मारकी में दुग्ध नल-पंक्ति का स्रोत

ज. ज. ग. में दूध की पहली नल-पंक्ति

कूर्ट स्टोबे

अलपाइन स्थित चरागाहों से बड़े तथा कठिन परिश्रम के बाद दूध को नीचे घाटी तक क्यों लाया जाय ? आखिर इस दूध को एक नल-पंक्ति (पाइप-लाइन) के द्वारा भी तो बड़ी आसानी से नीचे लाया जा सकता है। इसी सोच विचार के आधार पर स्विटजरलैण्ड, आस्ट्रिया और सोवियत संघ ने, अपने-अपने अलपाइन पर्वतों के भागों (चरागाहों) में दूध ले जाने वाली नल-पंक्तियों का निर्माण किया । हालैण्ड में, नदी-नालों की बहुतायत के कारण दूध का परिवहन काफी कठिन है । इसलिए वहां नदी नालों के नीचे से दूध ले जाने वाली नल-पंक्तियां बनाई गई हैं ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की पहली नल-पंक्ति अब कई महीनों से चालू हो चुकी है । इस पंक्ति का निर्माण एक विषम क्षेत्र से आरम्भ हुआ है और ३.५ किलो मीटर दूर मारकी नामक स्थान के एक राज्य-फार्म से दूध, इस नल-पंक्ति द्वारा न्यूएन नामक कस्बे में स्थित केन्द्रीय डेरी में आ जाता है जो बर्लिन के पश्चिम में वाक़ा है ।

यह संयन्त्र (पाइप-लाइन) दिन में दो बार काम करती है । संदाबित (कम्प्रसड) वायु के दबाव से, यह नल-पंक्ति, १.८० मीटर की गहराई पर दूध की पूरी मात्रा को डेरी तक पहुंचा देती है । डेरी तक यह दूध बिल्कुल शुद्ध अवस्था में, और ४ से १० डिग्री सेंटीग्रेड के बीच तापमान तक ठण्डा हुआ केवल ५० मिनट में पहुंच जाता है ।

पश्चिमी जर्मनी और डेनमार्क में बनी हुई ऐसी ही दुग्ध नल-पंक्तियों की तुलना में ज. ज. ग. की उक्त प्रथम दुग्ध नल-पंक्ति लम्बाई में ज्यादा है इसको १५ मीटर की ऊंचाई से होकर गुजरना पड़ा है ।

डेरी में आये हुये दूध से विभिन्न प्रक्रियाओं के द्वारा सपरेटा (क्रीम निकाला दूध), मलाई, पनीर, दही आदि तैयार किया जाता है । दो बार फिल्टर तथा शुद्ध होने के बाद (डेरी में) नल-पंक्ति में संदाबित वायु दबाई जाती है । नल-पंक्ति की इस ओर एक कमप्रेसर, एक दबाव-टैंक और मापने के यंत्र रखे हुये हैं । डेरी में काम करने वाले मजदूर, कुछ ही दिनों की ट्रेनिंग के बाद अब बड़ी कुशलता और आसानी से यह संयंत्र चलाते हैं । नल-पंक्ति की रोजाना सफाई में भी कोई खास कठिनाई नहीं आती। संदाबित वायु के दबाव से झागदार रबर के गेंदनुमा गोले हर रोज खार (नमक) मिले हुये पानी में नल-पंक्ति की सफाई करते हैं ।

यह संयंत्र आर्थिक दृष्टि से काफी लाभदायक सिद्ध हुआ है । परिवहन-लागत और दूध को ठण्डा करने की प्रक्रिया पर जो खर्च आता है उसमें बहुत बचत होती है। इस बात का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि निकट भविष्य में नल-पंक्ति में लगाये जाने वाले नलों (पाइपों) का व्यास बड़ा होगा, जिसके परिणामस्वरूप, दूध सप्लाइ करने वाले कई लोग इस स्कीम में शामिल हो जायेंगें ।

क्रानीनबुर्ग में स्थित जर्मन जनवादी गणतंत्र का "दुग्ध अनुसन्धान संस्थान", जिसने न्यूएन की उक्त दुग्ध नल-पंक्ति लगवाई, अब देश के दक्षिणी पहाड़ी प्रदेश में नये परीक्षण कर रहा है ।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि कुछ वर्षों तक भी, ज. ज. ग. में दूध का परिवहन कैन और टैंकरों (दूध-गाड़ियों) पर ही आधारित रहेगा (१२,००० गाड़ियां प्रतिदिन) । फिर भी उक्त प्रथम दुग्ध नल-पंक्ति, ज. ज. ग. की कृषि में तकनालोजीय क्रांति का द्योतक है ।

नाएन का डेरी केन्द्र : दुग्ध नल-पंक्ति का अन्त
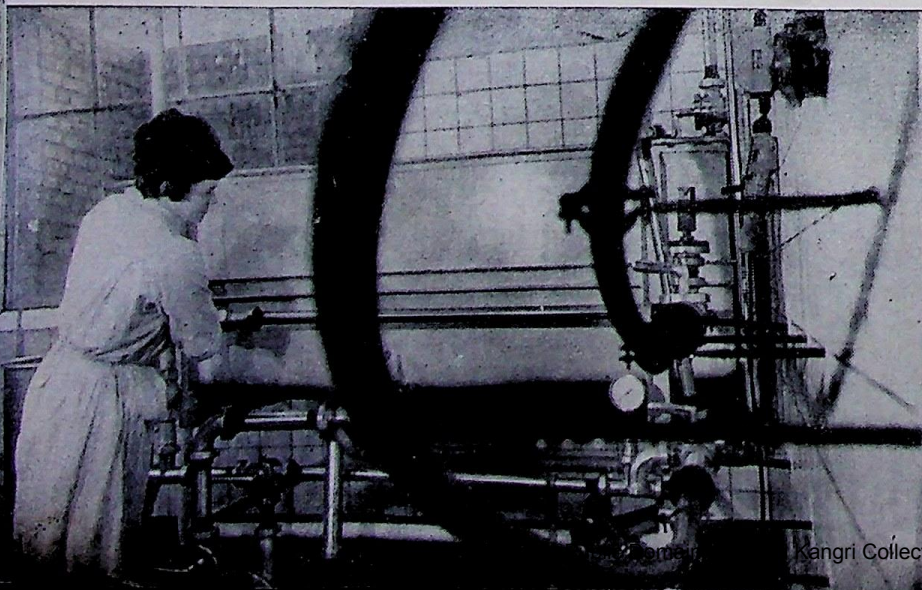
आज विद्यार्थी को क्या सीखना चाहिये ?

प्रोफेसर, डा० मोएले

(लाइपजिग कार्लमार्क्स विश्वविद्यालय में
विद्यार्थी मामलों के उपकुलपति)

लाइपजिग के कार्लमार्क्स विश्वविद्यालय के १०वें जन्म दिन का एक दृश्य

मानव समाज का विकास, तकनालोजी की क्रांति की जिस मंजिल पर पहुंचा है, उसने सभी देशों के लिये शिक्षा-व्यवस्था को बेहतर बनाना अनिवार्य कर दिया है। इस अनिवार्य मांग के परिणामस्वरूप जर्मन जनवादी गणतंत्र में, पिछले कुछ वर्षों में एक ऐसे संकलित शिक्षा व्यवस्था को जन्म दिया गया है जिसमें प्राक्-स्कूल शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय की शिक्षा तक की सभी शाखायें शामिल हैं।

ज. ज. ग. में वैज्ञानिक प्रशिक्षण लगातार विकसित किया जा रहा है, और बुनियादी अनुसन्धान के स्तर को दिन प्रति दिन ऊंचा उठाया जा रहा है। संकलित आंकड़ों के आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि हमारे इस युग में, ज्ञान प्रदान करने की मात्रा, दस वर्षों में दुगुनी हो जाती है। मात्रा की इस वृद्धि को उच्चतर शिक्षा के पारस्परिक साधनों के द्वारा हम प्राप्त करने में अब असमर्थ हैं। इसलिये विश्वविद्यालय को कुछ परंपरागत कार्यों से छूटकारा देना चाहिये। भविष्य में विश्वविद्यालय के प्रथम वर्ष में पढ़ाये जाने वाले सामान्य विषय, हाई स्कूल के अन्तिम वर्ष के पाठ्यक्रम में मिला देने पड़ेंगे, और विशिष्ट प्रशिक्षण का कुछ भाग भी, स्नातकोत्तर अध्ययन के रूप में, विश्वविद्यालय शिक्षा की समाप्ति तक ही पूरा करना पड़ेगा।

लाइपजिग विश्वविद्यालय में खास तौर पर अज कल उन समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है जिनका सम्बन्ध विश्वविद्यालय के प्रथम वर्ष को हाई स्कूल के अन्तिम वर्ष के पाठ्यक्रम में जोड़ने से है। ... कुछ हाई स्कूलों के अन्तिम वर्ष के अध्ययन-अध्यापन में विश्वविद्यालय-प्रशिक्षण का तरीका (जैसे व्याख्यान, सेमिनार, ट्यूटोरियल आदि) अपनाया भी जा चुका है। हाई स्कूल पास करने के साथ ही साथ, विद्यार्थी एक कुशल-मज़दूर की सनद भी प्राप्त कर लें, इसके लिये उनको प्रेरणा दी जा रही है। उदाहरण के लिये लाइपजिग के "मेकानिक्स कलकुलेटिंग टैक्नीक्स इन्स्टीच्यूट" में विद्यार्थियों को तकनीकी गणित में ट्रेनिंग दी जाती है। यहां ट्रेनिंग लेने वाले विद्यार्थियों को, हाई स्कूल में ही इस बात का ज्ञान हो जाता है कि विश्वविद्यालय में उनसे क्या कुछ अपेक्षित है।

इस से पहले कि विभिन्न शाखाओं—कृषि, व्यापार, उद्योग आदि विषयों के प्रवर विद्यार्थी परीक्षाओं में बैठते हैं, उनको कई महीनों तक, काम करने वाले अपने-अपने स्थानों में अमली शिक्षा देकर तैयार किया जाता है। ... राज्य के उद्यमों में, कृषि, राष्ट्रीय व्यापार, उद्योग आदि में—अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रत्येक क्षेत्र में इस बात में गहरी दिलचस्पी है कि अनुसन्धान के नवीनतम परिणामों को जल्द-से-जल्द अमली जामा पहनाया जाये। तीव्र विकास के इन तकाजों को मात्र ज्ञानप्रदान करने से अब पूरा नहीं किया जा सकता। इसलिये यहां का उच्चतर शिक्षा एवं अध्ययन योग्यता तथा प्रतिभा को विकसित करने पर बल दे रहा है। यही कारण है कि हमारे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिये लाइपजिग के निकट बोएलैन में स्थित खदान एवं रसायन के राष्ट्रीय स्वामित्व वाले बहुत बड़े कारखाने में अमली प्रशिक्षण लेना, उनकी विश्वविद्यालय शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की शिक्षा-व्यवस्था के एक बुनियादी सिद्धान्त के अनुसार कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय में भी, विज्ञान की विशिष्ट शाखाओं को ऐतिहासिक एवं भावी प्रगति के उद्देश्यों से जोड़ने पर बल दिया जा रहा है। विश्वविद्यालय के प्रत्येक संकाय के पाठ्यक्रम में से राजनैतिक एवं आर्थिक सम्बंधों का अध्ययन भी शामिल है। ...

अलौकिक तथा विशिष्ट प्रतिभा वाले विद्यार्थियों को, निश्चित कालावधि के पहले ही, शिक्षा समाप्त करने की व्यवस्था भी है। ऐसे विद्यार्थियों को खास तरह का वैज्ञानिक प्रशिक्षण दिया जाता है, और समय से पहले वे परीक्षा पास कर लेते हैं। सब से अच्छे विद्यार्थियों की जवाब-कापियों, सेमिनार-कार्य आदि की हर साल प्रदर्शनी होती है, और सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी को विश्वविद्यालय का सर्वोच्च पुरस्कार दिया जाता है। ...

कार्लमार्क्स विश्वविद्यालय का शारीरिक-संस्थान

चिट्ठी-पत्री

सम्पादक जी,

पिछले दो वर्षों से आपकी **सूचना पत्रिका** बराबर पढ़ रहा हूं। पत्रिका के बारे में अपनी क्या राय दे सकता हूं? लेकिन इतनी सस्ती-सुन्दर एवं ज्ञान-वर्द्धक पत्रिका कहीं और नहीं देखने को मिलती। जर्मन जनवादी गणतंत्र के विषय में आप जो ठोस सामग्री प्रकाशित करते हैं वह रोचक, ज्ञानवर्द्धक और सुन्दर होती है। आपका प्रयास सराहनीय है—मेरी शुभकामनायें सदैव आपके साथ हैं।

शिवमोहन श्रीवास्तव
(लेखक—पत्रकार)
दतिया (म. प्र.)

मान्यवर महोदय,

मैं राजस्थान विश्वविद्यालय से (दर्शन में) एम० ए० कर रहा हूं। मैं वाचनालय में रिजल्ट देखने घुसा था कि मुझे आपकी **सूचना पत्रिका** गुलाब के सौरभ से पूर्ण लगी। यह आपकी पत्रिका ज. ज. ग. एवं भारत की मैत्री में सेतु का काम कर रही है। यह पत्रिका कृपया मासिक निकालते तो हैं ही किन्तु इसे पाक्षिक कर दिया जाय तो अतीव सुन्दर रहेगा। मैं जर्मन भाषा भी सीखना चाहता हूं। यद्यपि मुझे इस पत्रिका को मंगाने का तरीका नहीं आता है किन्तु फिर भी कृपया आप नमूना तथा कार्ड या फार्म आदि लौटती हुई डाक से शीघ्रातिशीघ्र प्रेषित करें। मैं अमरीका की पत्रिका का भी सदस्य हूं, किन्तु उससे भी सुन्दर मुझे यह पसंद आयी। पत्र की प्रतीक्षा में :

परमेश्वर शास्त्री
जयपुर (**राजस्थान**)

महोदय,

मैंने **सूचना पत्रिका** के अंक ६ (जून) में राष्ट्रसंघ में प्रवेश और यूरोपीय सुरक्षा पर ओटो विन्जर के विचार नामक लेख पढ़ा। यह लेख मुझे बहुत पसन्द आया। इस लेख के पढ़ने से जर्मन जनवादी गण-तंत्र की शांतिपूर्ण नीति से परिचय पाते हैं। ओटो विन्जर के विचार बहुत ही सराहनीय हैं। ओटो विन्जर के ये विचार संसार को शांति की दिशा में लाने का महत्वपूर्ण पहलकदमी है।

इसके अलावा जर्मन जनवादी गणतंत्र की कृषि प्रदर्शनी और "अप्रैल १९६६ से लागू जर्मन जनवादी गणतंत्र की नई परिवार संहिता" नामक लेख भी काफी रोचक रहा।

यह एक ऐसी पत्रिका है, जिसमें मेरे मनपसन्द की रोचक और ज्ञानवर्द्धक सामग्रियां मौजूद हैं। मैं ईश्वर से कामना करता हूं कि ये पत्रिका हमेशा उच्च और आदर्श मार्ग की ओर अग्रसित हो।

मुहम्मद मुसलिम 'ज्या'
सुपौल (**बिहार**)

श्रीमान जी,

निवेदन है कि मुझे **सूचना पत्रिका** लगभग पिछले दो साल से लगातार मिल रही है। मैं और मेरे सभी मित्र आपके आभारी हैं। 'सूचना पत्रिका' को अच्छा बनाने के लिये कुछ सुझाव दे रहे हैं। आशा है कि इससे हम "सूचना पत्रिका" को अच्छा बनाने के लिए अपना योगदान डाल सकेंगे।

(१) हर मास सूचना पत्रिक के टाईटेल पेज का रंग बदल देना चाहिये।

(२) आपको पत्रिका में एक पैन फ्रेंड्स् क्लब चलाना चाहिये ताकि अधिक-से-अधिक लोग इसे पढ़ सकें।

आशा है कि आप इन सुझावों को ध्यान में रखेंगे तथा हमें 'सूचना पत्रिका' लगातार भेजा करेंगे।

परमेन्द्र सिंह 'सिद्ध'
तरन-तारन (**पंजाब**)

आदरणीय सपादकजी,

सूचना पत्रिका सदैव मिलती रहती है। धन्यवाद भेज रहा हूं, प्रकाशित करने का कष्ट करें :

सूचित कर मिली सूचना पत्रिका।
शोभक-जर्मन-जनवादी गणतंत्रिका॥
व्यापार दूतावास का यह—प्रकाशन।
महत्वपूर्ण शौच्य-श्लथ-करतारन॥

हास्य प्रखर शान्तिपूर्ण है इसका इतिहास।
जर्मन भारत का चिर-नव-रव प्रकास॥
पत्रवलोकन कर कहता हूं वित्र दर्शन।
हर मास प्राप्त कर प्रफुल्लित होता है मन॥

धन्यवाद के पात्र हैं संपादक व प्रकाशक।
शतश: स्नेही होते हैं इसके स्वामी वादक।

कैलाशनाथ उपाध्याय (कविवर)
जतनवर (उ० प्र०)

पश्चिमी जर्मनी के लेखक का पत्र

(पृष्ठ ११ का शेश)

में रह रहे हैं जब उन सारे लोगों को, जो एक और युद्ध नहीं होने देना चाहते, चाहे वे मजदूर हों, किसान हों, वैज्ञानिक या कलाकार हों, जर्मनी के इस भाग के नागरिक हों या उस भाग के, बिना किसी अपवाद के एकजूट हो जाना चाहिये। बिना किसी संदेह अथवा शर्त के शांति की स्थापना के लिए यह शुरु की है।

"मैं हृदय से आशा करता हूं कि प्रोफेसर यासपर्स जो वास्तविकता को पहचानते हैं, इसी नतीजे पर पहुंचेंगे। सोशल डेमोक्रेट (एस. पी. डी.) पार्टी की कांग्रेस ने, जो डोर्टमुण्ड में हुई, सिद्ध कर दिया है कि विरोध पक्ष का नेतृत्व भी जर्मन राष्ट्र के शत्रुओं में जा मिला है।..."

समाचार

पादरियों द्वारा शांति सेवा की प्रतिज्ञा

ज.ज.ग. के पादरियों और धर्मप्रचारकों के संघ ने वियतनाम में अमरीकी अक्रमण की तीव्र निंदा की है। तद्सम्बन्धी एक प्रस्ताव में कहा गया है : "वियतनाम में अमेरीकी आक्रामकों के नृशंस कार्यों ने हमें उद्वेलित कर दिया है और हम इस बात से चिंतित हैं कि ये कार्य उन्हीं शक्तियों द्वारा किये गये हैं जो जर्मनी में परमाणविक अस्त्रों पर पश्चिमी जर्मन गण-राज्य के सह-नियंत्रण की मांग कर रहे हैं।"

इसलिए कि जर्मन भूमि से अब कभी युद्ध न शुरू हो, पादरियों ने "परमाणविक अस्त्रों की जगह परमाणु युक्त क्षेत्र बनाये जाने, संकट कालीन कानूनों की जगह आपसी समझदारी को बढ़ावा देने, पश्चिमी जर्मनी द्वारा सम्पूर्ण जर्मनी के प्रतिनिधित्व के दावे की जगह दोनों जर्मन राज्यों में सहयोग की और सीमाओं में परिवर्तन के प्रयत्नों की जगह वर्तमान सीमाओं के कायम रखने की गारंटी" की मांग की है।

पादरियों के घोषणा पत्र में, जो अत्यधिक बहुमत से स्वीकृत हुआ, कहा गया है : "शांति की हर संभव तरीके से, वैयक्तिक रूप से तथा सामूहिक रूप से भी, सेवा करना हम और चर्च का कर्तव्य समझते हैं। विश्व शांति आंदोलन के द्वारा हमें शांति की स्थितियां उत्पन्न करनी चाहियें, इसाई शांति सम्मेलन के माध्यम से हमें ईसाई धर्म के शांति संबंधी निर्देशों का पालन करना चाहिए और अपने समाज के माध्यम से, जिसने जर्मन शांति के सिद्धांत को राष्ट्रीय नीति बना दिया है, हमें उस शांति सिद्धांत को आगे बढ़ाने के लिये काम करना चाहिये।"

यह सम्मेलन तीन दिनों तक चला और इसमें ज.ज.ग.के सभी क्षेत्रीय पादरियों और धर्म-प्रचारकों के अलावा दूसरे देशों के पादरियों ने भी भाग लिया।

पश्चिमी जर्मनी में अपराधों की संख्या में वृद्धि

पश्चिमी जर्मनी में अपराधों की संख्या में, पिछले दशक की जनसंख्या वृद्धि से तीन गुनी वृद्धि हुई। प्रति दिन चार हत्याएं और १७ बलात्कार होते हैं, और वहां प्रति घंटे में १५ चोरियां होती हैं।

ज. ज. ग. में पश्चिमी जर्मनी से ३–४ गुने कम अपराध होते हैं। पश्चिमी जर्मनी में सैनिकवाद और साम्रज्यवादी प्रवृत्तियों के पुनः अभ्युदय के कारण ही वहां इतने अधिक अपराध होते हैं, क्योंकि उक्त प्रवृत्तियों से मानव विरोधी वातावरण व्यापक हो जाते है। पूर्वी जर्मनी में अपराधों की संख्या का कम होना वहां की जनतंत्रवादी परिस्थितियों का प्रमाण है। ज. ज. ग. की स्टेट कौंसिल ने अपने एक बयान में उक्त तथ्य बताते हुए मांग की है कि पश्चिमी जर्मनी में जनतांत्रिक परिस्थितियों का निर्माण किया जाये और जरूरी हो तो अवैधानिक कानूनों को जनमत संग्रह द्वारा खत्म कर दिया जाये। साथ ही दोनों जर्मन राज्यों में शांतिपूर्ण संबंधों में पश्चिमी जर्मनी के जो कानून बाधक होते हैं उन्हें भी समाप्त कर दिया जाये।

भारतीय कृषि विशेषज्ञ द्वारा ज.ज.ग. की अध्ययन-यात्रा

जून में अफ्रोएशियाई कृषि पुनर्निर्माण संगठन के महामंत्री श्री कृष्ण चन्द्र ने पांच दिनों तक ज. ज. ग. की यात्रा की। भारत में स्थापित इस संगठन के २३ देश सदस्य हैं।

लाइपजिग स्थित उष्ण कटिबंधीय देशों के कृषि संस्थान से प्रस्तावित सहयोग के प्रति उन्होंने अत्यधिक आशाएं व्यक्त की और कहा, "उष्ण-कटिबंधीय देशों में कृषि की अनेक व्यावहारिक समस्याओं को हल करने में हम इस सहयोग से लाभान्वित होंगे। श्री कृष्ण चन्द्र लाइपजिग के निकट स्थाई कृषि प्रदर्शनी से बहुत अधिक प्रभावित हुए। "उन्होंने कहा, अफ्रीकी-एशियाई देश यहां यह सीख सकते हैं कि कृषि का सबसे अच्छी तरह यंत्रीकरण कैसे किया जाये।"

४७० वर्ष पुराना ढलाई कारखाना

जर्मनी में लोहे की ढलाई करने वाले सबसे पुराने कारखाने की हाल ही में ४७०वीं जयन्ती मनायी गयी। यह कारखाना है ज.ज.ग. स्थित और्क-पर्वत के इलाके में शूनहाइडर हैमर नामक कारखाना। खरीदारी के एक अनुबंध-पत्र में, जो १५६३ ई० का है, शूनेहाइडर कारखाने का उल्लेख है, और यह समझा जाता है कि जर्मनी की पहली

भारतीय पुस्तक प्रदर्शनी

बम्बई के एशिया प्रकाशन गृह ने बर्लिन (ज. ज. ग.) में एक प्रदर्शनी आयोजित की जो ११ दिन तक चली। इस बीच उसे बहुत सी पुस्तकों के आर्डर प्राप्त हुए। कला, सौन्दर्यशास्त्र, बैले-लेटर, जीवनी, इतिहास, विज्ञान, तकनालोजी, राजनीति शास्त्र और साहित्य से सम्बन्धित ५०० पुस्तकों की प्रदर्शनी की गई थी।

यह प्रदर्शनी विश्वविद्यालय पुस्तकों की दुकान में आयोजित की गई थी। उक्त दुकान बर्लिन के मध्य में प्रसिद्ध अण्टर देन लिन्डेन चौक की नयी इमारत में दो फ्लैटों में है। पुस्तकों में न केवल विद्यार्थियों और विद्धवानों ने बल्कि ब्रैण्डेन्बर्ग गेट, जो वहां से कुछ ही गजों के फासले पर है, से गुजरने वाले पर्यटकों ने भी काफी रुचि ली। प्रदर्शनी ज. ज. ग. के अकादमी प्रकाशन गृह के संयोजकत्व में हुई जो शीघ्र ही बम्बई में अपने पुस्तकों की प्रदर्शनी करेगा।

धमन-भट्टी का निर्माण १५८८ में हुआ। यह ढलाई कारखाना अब राष्ट्रीय सम्पत्ति है और तपाये हुए इस्पात पिण्डों के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। १९४८ से अब तक इसके उत्पादन में २० गुनी और श्रम उत्पादकता में १५० प्रतिशत वृद्धि हो चुकी है। इस कारखाने में अब आधुनिक मशीनें लगा दी गयी हैं।

कला समारोह में ६ हजार कलाकार

जर्मन जनवादी गणतंत्र के मजदूरों के ८वें कला समारोह में ६ हजार कलाकारों ने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस समारोह में शौकिया कलाकारों की १५० और पेशावर कलाकारों की ४० मण्डलियों ने भी भाग लिया। उन्होंने कुल, करीब ३०० कार्यक्रम प्रस्तुत किये। मजदूरों के २० नाट्य-संघों द्वारा ऐतिहासिक तथा समकालीन विषयों से संबंधित आधुनिक नाटक अभिनीत हुए।

कला समारोह का एक मुख्य आकर्षण था वियतनामी जनता के साथ ऐक्य प्रदर्शनी संबंधी एक सभा जिसमें प्रसिद्ध विद्वानों तथा अभिनेताओं ने वियतनाम की एक रिपोर्ट पढ़ी, जिसमें अमरीकी युद्ध का विवरण दिया गया था।

अमरीकी आक्रमण को पश्चिमी जर्मनी की सहायता

वियतनाम जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्रालय ने वियतनाम के खिलाफ अमरीका के आक्रामक युद्ध में पश्चिमी जर्मनी की निरंतर बढ़ती हुई सहायता का ज़ोरदार प्रतिवाद किया है। यह समाचार वियतनाम जनवादी गणतंत्र की संवाद समिति वी. एन. ए. ने दिया है।

एक वक्तव्य में कहा गया है कि यूरोप में बोन सरकार की बढ़ती हुई आक्रामक नीतियों के कारण पश्चिमी जर्मनी की सरकार वियतनाम में अमेरिका की आक्रामक कार्रवाइयों में सहयोग दे रही है।

बोन सरकार का यह कार्य १९५४ के जेनेवा समझौते का खुला उल्लंघन है। साथ ही यह वियतनाम और पश्चिमी जर्मनी के नागरिकों के बुनियादी राष्ट्रीय अधिकारों का भी हनन है। वक्तव्य में मांग की गई है कि बोन सरकार वियतनाम में अमेरिकी नीति का समर्थन करना तत्काल बंद करे।

ज. ज. ग. में ६० लाख से अधिक परिवार

दिसम्बर १९६४ की राष्ट्रीय जनगणना के अनुसार जर्मन जनवादी गणतंत्र में एक या एक से अधिक व्यक्तियों के ६६ लाख ३८ हज़ार परिवार थे। प्रत्येक दस परिवारों में औसतन २५ व्यक्ति थे, जब कि १९५० में प्रत्येक दस परिवारों पर औसतन २७ व्यक्ति थे। यह अल्प गिरावट अन्तरराष्ट्रीय प्रवति के अनुकूल है। लगभग डेढ़ करोड़ व्यक्ति दो या दो से अधिक व्यक्तियों वाले परिवार के सदस्य हैं और ६६ लाख व्यक्तियों से अधिक लोग चार या चार से अधिक सदस्यों वाले परिवारों में रहते हैं।

१९५० के बाद से एक व्यक्ति वाले परिवारों में काफी वृद्धि हुई है। इसका कारण है ज. ज. ग. में अविवाहित स्त्रियों की भारी संख्या। प्रति १०० अविवाहित पुरुषों पर ११९ अविवाहित स्त्रियां हैं जिनकी अवस्था ३५ वर्ष से अधिक है। इसका एक और मुख्य कारण यह है कि बहुत से विद्यार्थी अविवाहित लोगों के लिये बने फ्लैटों में ही रहना पसन्द करते हैं।

ज. ज. ग. की राष्ट्र संघ की सदस्यता का समर्थन

ब्रिटेन के तकनीशियनों, अधिशासी और सुपरवाइजरी अधिकारियों के संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री विलियम पैरी ने संयुक्त राष्ट्रसंघ की सदस्यता के लिए ज. ज. ग. के आवेदन पत्र का समर्थन किया है। श्री पैरी ज. ज. ग. की दो सप्ताह की यात्रा पर आये एक प्रतिनिधिमण्डल के नेता हैं। ज. ज. ग. के आवेदन-पत्र को विश्व शांति की दिशा में एक महत्वपूर्ण देन बताते हुए इस ट्रेड यूनियन नेता ने कहा कि अपने संघ के अगले वार्षिक अधिवेशन में मैं प्रस्ताव रखूंगा कि संघ ज. ज. ग. के आवेदन-पत्र का समर्थन करे।

'जर्मन लीग फार यूनाइटेड नैशन्स' ने राष्ट्र संघ से संबंधित सभी संघों को भेजे एक व्क्तव्य में कहा है कि "राष्ट्र संघ की

(शेष पृष्ट २२ पर)

ज. ज. ग. की मुद्रा में अधिक स्थिरता

जर्मन जनवादी गणतंत्रमें फुटकर व्यापार से होने वाली प्राप्ति अब १९४९ के मुकाबले तीन गुनी हो गयी है। प्रचलन में जो मुद्रा है उसमें केवल १५० प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

ज. ज. ग. की आर्थिक पत्रिका ड्यूटशे फाइनेन्जवर्टशैफट ने इस प्रवृत्ति को जर्मन जनवादी गणतंत्र की मुद्रा में अधिक स्थिरता आना कहा है।

२० मई, १९६६ को प्रचलन में ५९१ करोड़ १६ लाख के मार्क के मूल्य की मुद्रा थी। पूरे वर्ष में यह राशि कम या अधिक होती रहती है। छुट्टियों के पहले इसमें बढ़ती हो जाती है और क्रिसमस की खरीद के बाद इसमें गिरावट आ जाती है। एक वर्ष में यह पूरी राशी बैंकों से ११ बार निकाली जाती है और फिर उसमें जमा की जाती है। १९६५ में कुल ६ हज़ार करोड़ मार्क की मुद्रा प्रचलन में थी, जिसमें १८० करोड़ मार्क के नोट और २२०० करोड़ के सिक्के थे।

स्टेट बैंक द्वारा एक मार्क का स्वर्ण मूल्य ०, ३९९९०२ ग्राम शुद्ध स्वर्ण निश्चित किया गया है।

जर्मन जनता के खुशहाल भविष्य का राजमार्ग

(पृष्ठ ६ का शेष)

शांति, लोकतंत्र और प्रगति के लिये जो आन्दोलन बढ़ रहा है, वह अत्यन्त सामान्य, बुनियादी मांगों पर आधारित है। वहां की बुण्डस्टाग (संसद) के प्रगतिशील सदस्य "संसद का सुधार" चाहते हैं ताकि संसद-सदस्यों को पूरे अधिकार प्राप्त हों।...

इसी प्रकार महत्वपूर्ण ट्रेड यूनियन तत्व "पश्चिमी जर्मनी में बड़े उद्योगों के शक्ति-सम्बन्धों में तबदीली" की सही मांग करते हैं। यह तबदीली इसलिये आवश्यक है ताकि श्रमकर जनता के रोज़गार के लिये स्थाई बुनियाद डाली जाये और भविष्य में उन से सम्बन्धित नीति गलत रास्ते पर न डाली जा सके।...

स्प्रिंगर ट्रस्ट जैसे बड़े-बड़े इजारेदार अखबार ट्रस्टों को नियन्त्रण में करना भी बहुत जरूरी है, क्योंकि ऐसा किये बिना शीतयुद्ध और युद्धवाद के प्रचार को खत्म नहीं किया जा सकता।

इसी प्रकार, पश्चिमी जर्मनी में, एक जनवादी भूमिसुधार की बहुत आवश्यकता है। लेकिन यह भूमि-सुधार, हमारे ज. ज. ग. की नकल नहीं होना चाहिये। पश्चिमी जर्मनी में, इजारेदार-पूंजीवादी व्यवस्था के कारण विकास की स्थिति सर्वथा भिन्न है। इसलिये इस व्यवस्था में, जहां तक संभव हो, वहां के कामगार किसान आपसी सहायता और सहयोग कार्य के द्वारा, आधुनिक कृषि-साधनों का लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहे हैं।.. बड़े-बड़े इजारेदार बैंकों और ट्रस्टों का शिकजा तोड़ देने से, रायफेसेन सहकारी संघों को फिर से, किसानों के जनवादी अंगों में बदलना संभव हो जायेगा।...

पश्चिमी जर्मनी में रहने वाले लोगों से हम यह भी पूछना चाहते हैं: क्या पं० जर्मनी में नारियों को समान अधिकार देने का यह उचित समय नहीं है? समान अधिकारों की केवल बातें करना काफी नहीं है। यह अधिकार, यूनियनों की सहायता से हासिल किया जाना चाहिये, ताकि बराबर काम के लिये, स्त्रियों और पुरुषों को बराबर मजदूरी भी मिले, और उनको समानता के अधिकार पर राज्य में, आर्थिकी तथा शिक्षा के क्षेत्रों में ज़िम्मेदार पद भी दिये जा सकें।...

युवक वर्ग भी अपनी पीढ़ी के बुनियादी अधिकारों की गारण्टी चाहता है। इन अधिकारों में विशेष उल्लेखनीय हैं किसी व्यवसाय को सीखने का अधिकार, शिक्षाप्राप्त करने का अधिकार, और मजदूर वर्ग के नौजवानों के लिये कालेज तथा विश्वविद्यालय तक की पढ़ाई हासिल करने का अधिकार जिसके लिये उनको वज़ीफे तथा अन्य सुविधायें मिलनी चाहियें। काम करने वाले नौजवानों की सुरक्षा के लिये एक कानून का होना अत्यन्त आवश्यक है। इस सम्बन्ध में ट्रेड यूनियनों ने काफी अच्छे सुझाव पेश किये हैं, लेकिन उनको अभी अमल में नहीं लाया जा रहा है।...

(शेष अगले अंक में)

...प्रश्नोत्तरी

(पृष्ठ १४ का शेष)

उ. सही रूप में देखा जाये तो "पुनर्एकीकरण" का अर्थ है पश्चिम जर्मन सरकार के रवैये के कानूनी आधार को छोड़ना।... (पश्चिम जर्मन सरकार यह दावा करती है कि केवल वही सम्पूर्ण जर्मनी की मात्र, कानूनी प्रतिनिधि है। सम्पूर्ण जर्मनी से इस सरकार का मतलब है सन् १९३७ की जर्मनी, जिसमें वर्तमान पश्चिमी जर्मनी और ज. ज. ग. के अलावा पौलण्ड तथा सोवियत संघ के भी कुछ भाग शामिल थे--सं.)।

इस प्रकार, (पं० जर्मन) फेडरल गणराज्य "मात्र प्रतिनिधि" के दावे का स्वयं ही बन्दी बन गया है, क्योंकि इस दावे का आधार यह तर्क है कि फेडरल गणराज्य जर्मन राइख का ही वर्तमान रूप है, और ज. ज. ग. एक राज्य नहीं है। इसलिये फेडरल गणराज्य पुर्नएकीकरण के बारे में कोई ठोस नीति अपना नहीं सकती, क्योंकि ऐसा करने से उसका "मात्र प्रतिनिधि" होने का दावा खतरे में पड़ जायेगा।

"मात्र प्रतिनिधि" होने की नीति मात्र कल्पना और निरर्थक है। एक ही सही एवं समझदारी की नीति है, और वह है ज. ज. ग. के साथ सहयोग करने की नीति।...

प्र. पश्चिमी जर्मनी के लिये, शांतिपूर्ण सह-जीवन की नीति क्या अर्थ रखता है?

उ. इसका अर्थ यह होगा कि पश्चिम जर्मन सरकार को अपने (गलत) राजनीतिक, कानूनी तथा सैनिक सिद्धान्तों को त्याग देना होगा, ज. ज. ग. का सम्मान करना होगा, और (दूसरे देशों की) सीमाओं पर अधिकार जताना छोड़ देना होगा।

प्र. क्या दो जर्मन राज्यों का एक महासंघ बनाना वांछनीय है?

उ. जर्मनी को पुनः एक करने के लिये कोई जादुई फारमूला नहीं है। एक ऐसा महा संघ जिस की स्थापना जल्दबाजी में हुई हो और जो राजनीतिक उद्देश्य से खाली हो, लाभ की जगह हानिकर ही सिद्ध हो सकता है।... ऐसा महा-संघ बनाने में काफी समय लगेगा।

प्र. यूरोप में, सैनिक यथापूर्व-स्थिति (स्टेटस्-को) को किन हालात में बदला जा सकता है?

उ. सब से पहली बात यह है कि वर्तमान सैनिक-सन्तुलन को बरक़रार रखना चाहिये, और शास्त्रास्त्रों की वर्तमान शक्ति को यहीं पर रोक देना चाहिए। दूसरे शब्दों में

इसका यह अर्थ है कि पश्चिम जर्मन सरकार को, परमाणविक शस्त्रास्त्रों पर नियन्त्रण हासिल करने का हर प्रयत्न छोड़ देना चाहिये ।

प्र. क्या जर्मन समस्या का एक शांतिपूर्ण हल निराशाजनक है ?

उ. निराशा एक ऐसी नीति-अपनाने से पैदा होती है जो कोरी कल्पनाओं एवं विभ्रमों पर आधारित हो । पश्चिम जर्मन सरकार की ऐसी ही नीति है ।..लेकिन वह समय अब दूर नहीं है जब वास्तविकताओं के थपेड़े उसको यह नीति बदलने पर मजबूर करेंगे ।...

समाचार

(पृष्ट २० का शेष)

सदस्यता के लिए ज. ज. ग. का आवेदन-पत्र लीग के उद्देश्यों के सर्वथा अनुकूल है ।" हमारी धारणा है कि राष्ट्र संघ में संसार के प्रत्येक देश को प्रतिनिधित्व मिलना चाहिये । राष्ट्रसंघ के कार्यों का क्षेत्र विश्वव्यापी है और वह विश्वव्यापी आधार पर ही पूरा हो सकता है । सभी राष्ट्र संघीय संघों से ज. ज.ग. के आवेदन-पत्र का समर्थन करने की अपील की गयी है ।
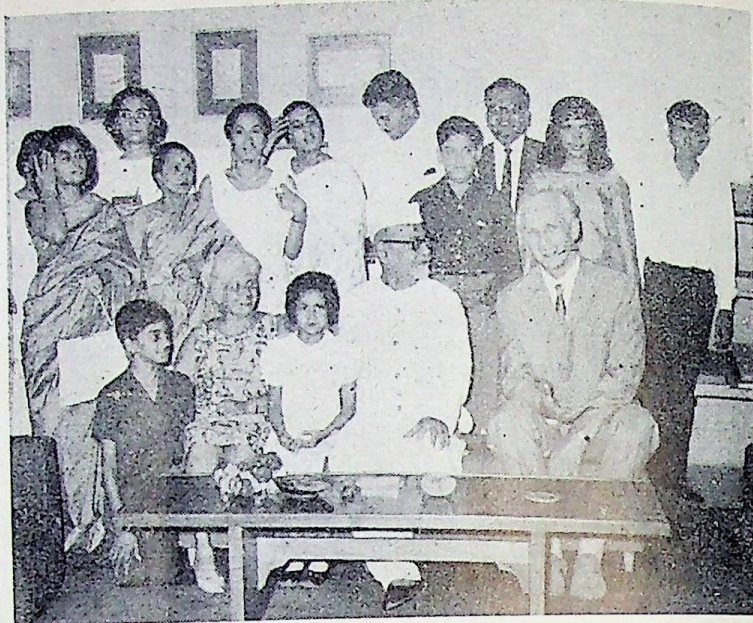
जुलाई के दूसरे सप्ताह में चार भारतीय बच्चों का एक दल, कुमारी पूर्णिमा जायसवाल के नेतृत्व में जर्मन जनवादी गणतंत्र के एक बाल-शिविर में भाग लेने के लिये रवाना हो गया । बर्लिन के लिये रवाना होने से पहले, बच्चों का यह दल, प्रधान मंत्री इन्दिरा गान्धी से आशीर्वाद लेने गया ।...चित्र में ये बच्चे, भारत के उपराष्ट्रपति डा० ज़ाकिर हुसैन और भारत स्थित ज. ज. ग. के व्यापार दूतावास के प्रमुख, श्री हरबर्ट फिशर तथा उनकी धर्मपत्नी के साथ देखे जा सकते हैं ।

पश्चिमी बंगाल सरकार के श्रम एवं सूचना मंत्री, श्री बी० एस० नाहर, कलकत्ता के दम-दम हवाई अड्डे पर कलकत्ता में ज. ज. ग. के क्षेत्रीय व्यापार-दूतावास के प्रमुख श्री फ्रोएटशर से बातचीत कर रहे हैं ।... श्री नाहर जनेवा में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अधिवेशन में भाग लेने के बाद, जर्मन जनवादी गण-तंत्र के दौरे पर भी गये ।
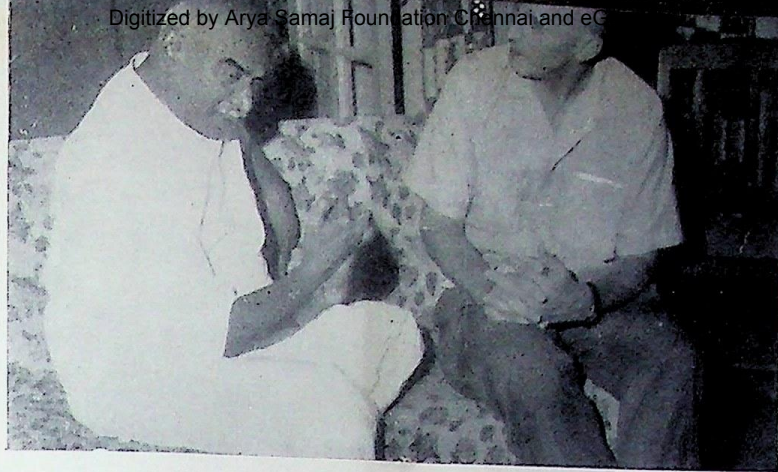
भारत में ज. ज. ग. व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री हरबर्ट फिशर, कांग्रेस के अध्यक्ष, श्री कामराज से विचार विनिमय कर रहे हैं
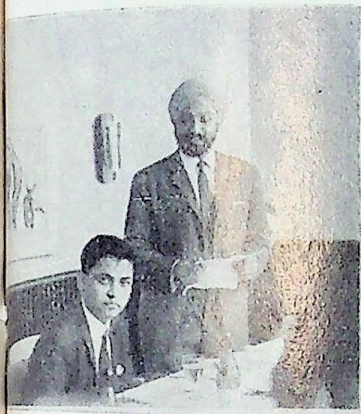
ड्रेस्डेन के "ज. ज. ग.--दक्षिणपूर्व एशिया संघ" ने, भारत के उन २५ शिक्षार्थियों को अलविदाई पार्टी दी जो ज. ज. ग. में २ वर्ष की ट्रेनिंग पूरी करके स्वदेश लौट रहे हैं

ज.ज.ग. के तेल कारखाने में भारत का एक विद्यार्थी डा० इन्द्रजीत ट्रेनिंग ले रहा है
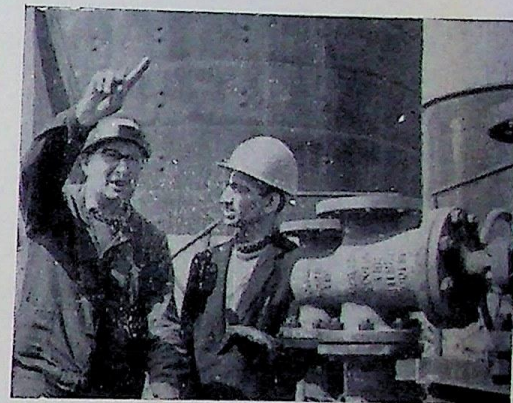
सहयोग के सेतु

मई मास में, बर्लिन के राज्य संग्रहालय में भारतीय चित्रों की प्रदर्शनी हुई। ये चित्र "भारत–ज. ज. ग. सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम" के अन्तर्गत, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने दिये थे। प्रदर्शनी का उद्घाटन किया बर्लिन राज्य-संग्रहालय के निर्देशक प्रो० मायर ने

भारत की सुप्रसिद्ध नर्तकी रीता देवी ने बर्लिन और अन्य स्थानों में अपने नृत्य से ज.ज.ग. के निवासियों का मन मोह लिया।

सूचना पत्रिका

लाइपज़िग का शरद्कालीन व्यापार-मेला

भारतीय सहभागियों को
रजत-जयन्ती
स्वागत

के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ११ | २० अगस्त, १९६९

अंक ८

संकेत

मुख्य पृष्ठ तथा अंतिम पृष्ठ

१९६९ के शरद् लाइपज़िग मेले में भारत, २५वीं बार भाग लेगा--अर्थात् यह भारत की रजत जयन्ती होगी लाइपज़िग व्यापार मेले में

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे

जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १/३९, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस बहादुर शाह जफर मार्ग, नयी दिल्ली, द्वारा मुद्रित। **सम्पादक : ब्रूनो मे**

भारत और दो जर्मन राज्य

हाल ही में, जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी ने पश्चिमी जर्मनी की सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी के सदस्यों एवं मित्रों के नाम खुले खत भेज कर जिस जर्मन संवाद को आरम्भ किया था उससे पूर्व और पश्चिम के बीच जर्मनी तथा यूरोप में शांति को सुरक्षित करने और जर्मनी का पुनर्एकीकरण जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार-विनिमय का मार्ग एक नई मंजिल में दाखिल हुआ। समाजवादी एकता पार्टी के नेताओं और जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार द्वारा शुरू की गई उक्त पहल इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि वे जर्मनी के उस हिस्से (अर्थात् पश्चिमी जर्मनी--सं०) की वर्तमान स्थिति से बहुत चिन्तित हैं जहां पोट्सडैम संधि की शर्तों को पूरा नहीं किया गया, और जहां (हिटलर की) तीसरी राइख की प्रतिक्रियावादी शक्तियां फिर से राजसत्ता पर अधिकार करके उसी नीति को दोहरा रहे हैं जिसने एक ही पीढ़ी के जीवन में दो बार सारी मानवता को सर्वनाश के निकट ला दिया था।

दूसरे विश्व युद्ध की समाप्ति के २१ वर्ष बाद तनाव को कम करने, सहयोग और कदम-ब-कदम जर्मन एकीकरण के लिये, दो जर्मन राज्यों की सरकारों के बीच क्या बात-चीत करने का अब समय नहीं आ गया है? क्या अब एक शांति संधि होनी नहीं चाहिये, और संधि की शर्त क्या होनी चाहियें? पुनः एकीकृत जर्मनी का स्वरूप कैसा होना चाहिये? क्या ऐसा जर्मनी सही अर्थों में एक लोकतंत्री राज्य होना चाहिये, अथवा वैसा ही जर्मनी जहां नात्सी अधिकारियों की हुकूमत हो? क्या ऐसा जर्मनी, सैन्यवाद तथा नव-नात्सीवाद से मुक्त होना चाहिये, अथवा एक ऐसा राज्य जिस में लोग अणु-आयुधों द्वारा नाश के भय की काली छाया में संत्रस्त जीवन बितायें?

ये सवाल, जर्मन राष्ट्र के मरण तथा जीवन से जुड़े हुए हैं, इसलिये यह स्वाभाविक है कि ये प्रश्न पश्चिमी जर्मनी के लोगों में एक गहरी दिलचस्पी पैदा करें, और "समझदारी की आवाज" जर्मनी के दूसरे भाग में (प० जर्मनी में--सं०) भी अच्छी तरह सुनी जा सके। वहां की सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी के नेताओं ने हाल ही में आयोजित अपनी कांग्रेस में इन अहम सवालों और इन विषयों पर बहस को टालना चाहा, लेकिन इसके बावजूद ये लोग अपनी पार्टी के आम सदस्यों के मत को दबाने में असमर्थ रहे। इन सदस्यों की एक काफी बड़ी संख्या ने अपने नेताओं से, ज. ज. ग. के यथार्थ पर आधारित प्रस्तावों को स्वीकार करने का अनुरोध किया।

पश्चिमी जर्मनी की सत्तारूढ़ पार्टी, क्रिश्चियन डेमोक्रैटिक यूनियन को, समाजवादी एकता पार्टी (ज. ज. ग.--सं०) द्वारा दो खुले खतों में पेश किये गये प्रस्तावों--स० ए० पा० और सो० डे० पा० के बीच न वक्ताओं का विनिमय--को रोकने के लिये बहाने तलाश करने में बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। प० जर्मनी में जनमत स्पष्ट रूप से जर्मन संवाद के पक्ष में है। इसलिये क्रिश्चियन डेमोक्रैटिक यूनियन को अपनी इस पहली घोषणा से एकदम मुंह मोड़ना पड़ा कि ज. ज. ग. के किसी भी नेता को पश्चिमी जर्मनी की सीमा में दाखिल होते ही गिरफ्तार किया जायेगा। लेकिन यह एक दुर्भाग्य की बात है कि सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी के पश्चिम जर्मन संसद सदस्यों ने, बाद में, "जर्मन क्षेत्राधिकार से अस्थाई विमुक्ति का कानून" नामक कानून का समर्थन किया। यह काला कानून पश्चिमी जर्मनी से बाहर रहने वाले सभी जर्मन जनों पर प० जर्मनी का अधिकार जताता है, और इस कानून को जल्दबाजी में पारित करने का मात्र तात्कालिक उद्देश्य था जर्मन संवाद का गला घोंटना। यह स्वाभाविक है कि समाजवादी एकता पार्टी ने, वक्ताओं के विनिमय से नाजायज फायदा उठाने के, पश्चिमी जर्मनी के इस भौंडे प्रयत्न को और पश्चिम जर्मन सरकार के इस दावे को भी कि केवल वह ही पूरे जर्मनी का प्रतिनिधि है तथा १९३७ की जर्मन सीमायें ही जर्मनी की वास्तविक सीमायें हैं--इस गलत रवैये को भी ठुकरा दिया। इसके अलावा, किसी भी सरकार या पार्टी का कोई भी नेता एक ऐसी असभ्य स्थिति को स्वीकार नहीं कर सकता जिसमें, अन्य राज्य में, उसके साथ एक ऐसे "अपराधी जैसा व्यवहार हो, जिसको थोड़े समय के लिये (अस्थाई रूप से) उस राज्य के क्षेत्राधिकार से मुक्त किया गया हो।..."

शुभकामनायें

भारत की स्वाधीनता की १९वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर, भारत स्थित जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास के कार्यकारी प्रमुख, भारत को खुशहाल बनाने, शांति तथा निरस्त्रीकरण के लिए, और विश्व के समस्त जन-गण में शांतिपूर्ण सहयोग के लिए, भारतीय जनता के अनथक प्रयत्नों में अधिकाधिक सफलता की शुभकामना करते हैं।

Dr. Wolfgang Spröte

पश्चिम जर्मन सरकार और वहां की सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी के नेताओं के गठजोड़ (षड़यन्त्र) के कारण वक्ताओं का विनिमय भले ही रुक गया हो, लेकिन जहां तक जर्मन संवाद का सवाल है वह, पश्चिमी जर्मनी द्वारा डाली गयी रूकावटों के बावजूद, दोनों जर्मन राज्यों में (वहां के लोकमत में--सं०) बराबर जारी है। पूरी शक्ति एवं तैयारी के साथ पूर्व और पश्चिम में एक बार शुरू किया गया संवाद झूठे प्रचार या पश्चिमी जर्मनी के काले कानूनों द्वारा दबाना या रोकना कठिन है। इसका एक स्पष्ट एवं महत्वपूर्ण लक्षण है पश्चिमी जर्मनी के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रान्त के हाल ही के चुनावों में सत्तारूढ़ क्रिश्चियनः मोक्रैटिक पार्टी की पराजय, जिसमें राष्ट्रव्यापी जर्मन संवाद का काफी हाथ है।

इस सिलसिले में इस तथ्य पर बल देना आवश्यक है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता और पश्चिमी जर्मनी के सभी समझदार लोगों ने, दो जर्मन राज्यों के प्रति प्रधान मंत्रि इन्दिरा गाधी द्वारा सोवियत संघ के हाल ही के दौरे में दोहराई गई भारत की नीति पर सन्तोष प्रकट किया। पश्चिमी जर्मनी की यह अड़ियल नीति और मांग कि केवल वह ही (प० जर्मनी) सम्पूर्ण जर्मनी का प्रतिनिधि है, ज. ज. ग. को "आजाद" करके पश्चिम जर्मन संघीय गणराज्य में "मिला देना" चाहिये, जर्मनी में वर्तमान गतिरोध को दूर करने के रास्ते में सब से बड़ी रूकावट है। इस दुराग्रही नीति को ध्यान में रखते हुये, भारत-सोवियत संघ की सह-विज्ञप्ति में, जर्मन भूमि पर दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व के तथ्य को पुनः दोहराना, एक सन्तोषजनक और प्रशंसनीय बात है। जर्मनी में ऐसे सभी लोगों ने इसका स्वागत किया जो यथार्थ-स्थिति और दो जर्मन राज्यों की सरकारों की आपसी सद्भावना तथा समझदारी के आधार पर जर्मन समस्या की ईमानदारी से हल करना चाहते हैं। यहां इस बात पर बल देना अनुचित न होगा कि पश्चिमी जर्मनी की सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी को खुले पत्रों द्वारा अपने सुझाव भेजते वक्त, (ज. ज. ग. की) समाजवादी एकता पार्टी ने ऐसे सवालों को उठाया था जो भारत की उस शांतिप्रिय नीति के बिलकुल अनुकूल थे, जिसकी पुष्टि बाद में उल्लिखित सह-विज्ञप्ति में हुई।

१. समाजवादी एकता पार्टी ने सुझाव दिया था कि शीत-युद्ध को समाप्त करने, तनाव कम करने और बाद में जर्मन एकीकरण का रास्ता खोलने के उद्देश्य से, दो जर्मन राज्यों की सरकारों के बीच बातचीत शुरु होनी चाहिये।... भारत द्वारा दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व के तथ्य को दोहराने पर, पश्चिम जर्मन सरकार ने जिस बौखलाहट का प्रदर्शन किया, उस से यह नतीजा निकाला जा सकता है कि वह (प० जर्मन सरकार) ज. ग. ज. के साथ किसी भी तरह की बातचीत शुरू करने की इच्छुक नहीं, बल्कि वह जर्मन राष्ट्र के इस अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न को हल करने की जिम्मेदारी, प्रमुख मित्र-राष्ट्रों पर टाल देना चाहता है। स्वर्गीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने, दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व को "जीवन के ठोस तथ्य" कहा था। और जब तक पश्चिमी जर्मनी इस ठोस तथ्य को नहीं मानता, और जब तक वह दूसरे जर्मन राज्य (जर्मन जनवादी गणतंत्र -सं०) के साथ "गोलमेज़ वार्ता" के लिये तैयार नहीं होता तब तक जर्मन समस्या का कोई भी हल सामने नहीं आयेगा।

२. खुले पत्रों में यह बात बिलकुल स्पष्ट की गई थी कि पश्चिम जर्मन संघीय गणराज्य को, यूरोप के सभी देशों के साथ अच्छा पड़ोसी बनकर, शांति के साथ रहना चाहिये और उसको वर्तमान राज्य सीमायें स्वीकार करनी चाहियें।... उल्लिखित भारत-सोवियत सह-विज्ञप्ति में, यूरोप में वर्तमान सीमाओं को बदलने से सम्बंधित किसी भी प्रयत्न से उत्पन्न होने वाले गंभीर खतरों की ओर उचित ध्यान दिया गया था। पश्चिम जर्मन सरकार, सन् १९३७ की जर्मन सीमाओं को बहाल करने का खुले आम प्रचार करती है, और वह यूरोप की एकमात्र ऐसी सरकार है जो यूरोप के अन्य देशों के क्षेत्रों पर अपना अधिकार जताती है। यूरोप में लगातार तनाव का यह मुख्य कारण है।

३. समाजवादी एकता पार्टी के सुझावों में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सुझाव यह है कि दोनों जर्मन राज्यों को अणु-आयुधों को हासिल करने के प्रयत्नों को त्याग देना चाहिए, और जर्मनी में निरस्त्रीकरण के लिये ठोस कदम उठाने चाहियें। आम निरस्त्रीकरण और अणु-हथियारों का प्रसार रोकने से सम्बंधित भारत की समर्थन-नीति का उन सभी जर्मनवासियों ने हार्दिक स्वागत किया है जो एक ऐसा नया जर्मनी देखना चाहते हैं जहां फासिस्तों और सैन्यवादियों का राज न हो।

पूर्व और पश्चिम (जर्मनी-सं०) में रहने वाले प्रगतिशील जर्मनों ने जो संवाद शुरू किया है, और जिसको विश्व के समस्त शांतिकामी लोगों का समर्थन प्राप्त है, वह (संवाद) जर्मन राष्ट्र के अस्तित्व और शांति को बनाये रखने के लिये जारी रखा जायेगा।

भारत-ज.ज.ग. के व्यापार में प्रगति के आंकड़े

वर्ष	रकम, हज़ार रुपयों में
१९५३	३,६६७
१९५५	२१,७१२
१९५७	७२,०७७
१९५९	११२,२०६
१९६१	१५३,६५५
१९६३	२३२,४२६
१९६५	२६३,३६६
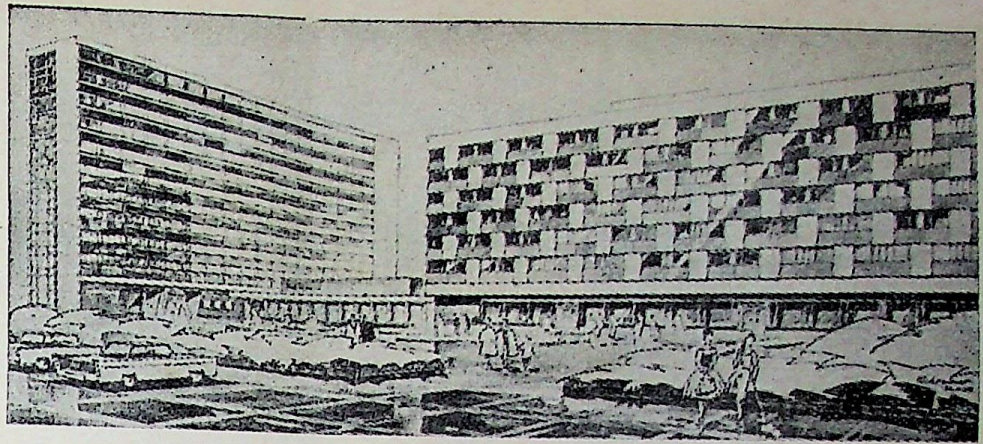
लाइपज़िग में

भारत की प्रभावशाली व्यापार-प्रदर्शनी

शायद ही ऐसा कोई दर्शक हो जिसने पिछले वर्ष (१९६५) लाइपज़िग के **तकनीकी व्यापार मेला** के मैदान में स्थित **भारतीय मंडप** को न देखा हो। इस 'मण्डप' में प्रदर्शित भारतीय वस्तुओं के सामने हर रोज़, हजारों दर्शकों की भीड़ लगी रहती थी। भारत की यह सामूहिक प्रदर्शनी सरकारी तौर पर आयोजित की गई थी जिसमें लगभग २०० उद्यम शामिल हुये थे, और इसमें भारत ने, जो लाइपज़िग व्यापार मेले में (कई वर्षों से) समुद्र पार देशों का सबसे बड़ा प्रदर्शक रहा है, विभिन्न प्रकार की वस्तुऐं प्रदर्शित की थीं। भारत का प्रदर्शन मण्डप १,४८१ वर्ग मीटर के

राज्य व्यापार निगम के अध्यक्ष श्री पटेल से, ज. ज. ग. के अधिकारी बातचीत कर रहे हैं
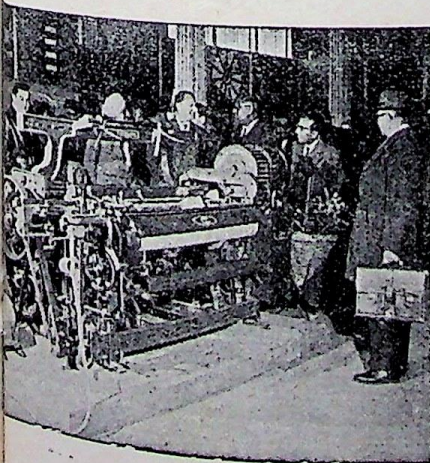
क्षेत्रफल पर फैला हुआ था, और प्रदर्शित वस्तुओं में न केवल पारम्परिक उपभोक्ता वस्तुएं ही थीं, बल्कि उनमें भारत के नये उद्योगों की तकनीकी वस्तुयें भी प्रदर्शित की गई थीं। भारत की इस सामूहिक प्रदर्शिनी में, औद्योगिक उत्पादनों के महत्व पर यथोचित बल दिया गया था।

भारतीय मण्डप के क्षेत्रफल का अधिकांश हिस्सा तकनीकी उत्पादनों ने घेर लिया था। इन प्रदर्शित वस्तुओं में मशीनें, औज़ार, बिजली का सामान, ट्रांसमिशन के कल पुर्ज़े, इस्पात तथा एल्यूमिनियम के उत्पादन, शल्य-क्रिया के यन्त्र; फिल्टर, परीक्षण यन्त्र, पम्प, शीत सयंत्र, रेफ्रिजिरेटर, और अन्य औद्योगिक उत्पादन भी शामिल थे।

व्यापार मेले के भवनों और प्रदर्शन में भी भारतीय प्रदर्शकों की संख्या में और भी वृद्धि हुई थी। यह तथ्य विशेष उल्लेखनीय है कि इस बार के इस व्यापार मेले में न केवल भारत के उपभोक्ता उद्योग की वस्तुऐं ही प्रदर्शित हुई थीं, बल्कि भारतीय उद्योग की विभिन्न शाखाओं की प्रतिनिधि फर्में भी वहां उपस्थित थीं। उदाहरण के लिये कुछ एक फर्मों के नाम ये हैं :

"कमर्शियल एण्ड इण्डस्ट्रियल एक्सपार्टस लिमिटेड", (इस फार्म ने बैटरियों तथा मोटर गाड़ियों के कल पुर्ज़े प्रदर्शित किये थे), "स्टैन-डर्ड बैटेरीज़ लिमिटेड", (इसने अपनी बैटरियां प्रदर्शन में रखीं थीं)। इन फर्मों के अलावा "टी. माणिक लाल मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी" नामक फर्म, पहली बार लाइपज़िग व्यापार मेले में भाग लेने आई थी। इस फर्म

भारतीय मण्डप में समाजवादी एकता पार्टी के पोलिट ब्यूरो के सदस्य, श्री पाल वेरनर
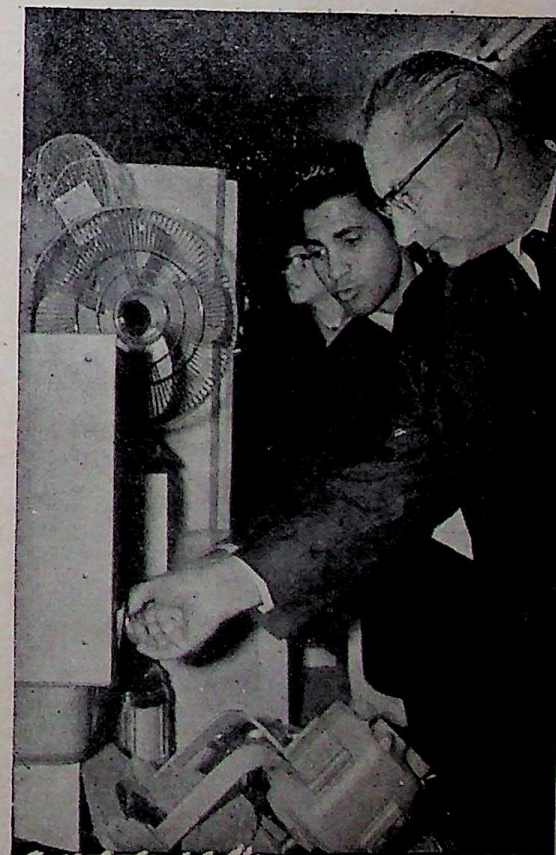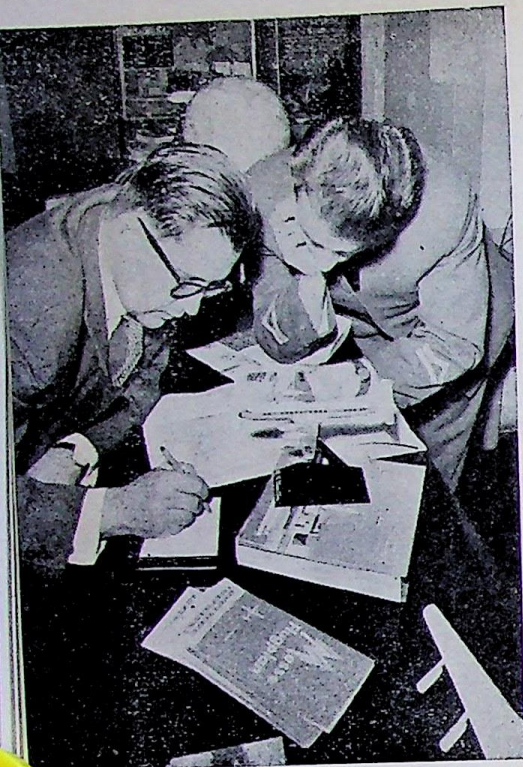
लाइपज़िग मेला के दफ्तर हमेशा व्यस्त रहते हैं

ने प्रदर्शनी में अपनी टेक्सटाइल मशीनें प्रदर्शित की थीं ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र जहां पहले भारत से इसकी पारम्परिक वस्तुएं ही आयात करता था, वहां अब इनके साथ-साथ वह वहां से भारत के नये-नये उद्योगों के उत्पादन

लाइपजिग का एक रेखा-चित्र
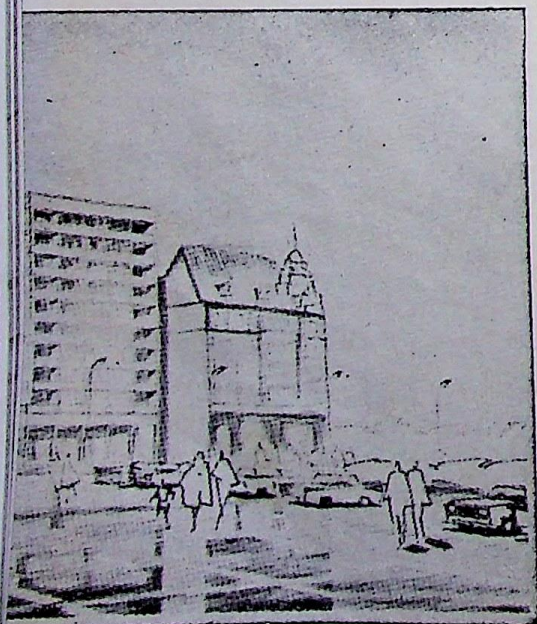
जैसे बैटरियां, मशीनी-औज़ार, टेक्सटाइल, मशीनें, अतिरिक्त पुर्जे और बाजू-कोर (फ्लेंज) आदि भी आयात करता है । हमारे जर्मन गणतंत्र में, हमारा तेल, भारत में बने हुये नलों के द्वारा वहन होता है, और गंगा के देश में बने हुए इस्पात के पाड़ों की बहुत मांग है । ज. ज. ग. भारत से जहां पहले १० लाख रुपये के मूल्य की बैटरियां आयात करता था, अब यह आयात दुगुना--अर्थात् २० लाख रुपयों का हो गया है ।

सन् १९५४ से अब तक, भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच व्यापार में दस गुना वृद्धि हुई है । दोनों ओर से उन लाभों पर बार-बार बल दिया गया है जो दीर्घकालीन व्यापार एवं वित्तीय संधियों के आधार पर व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ाने से प्राप्त हो सकते हैं । इसी आधार पर, दोनों देशों के विदेश-व्यापार मन्त्रालयों के बीच, सन् १९६५ से १९७० तक के दूसरे दीर्घ-कालीन व्यापार एवं वित्तीय समझौते पर नई दिल्ली में सितम्बर १९६४ में हस्ताक्षर हुये ।

केवल माल-विनिमय तक ही सीमित न रह कर, आर्थिक क्षेत्र में दोनों राज्यों के आपसी सम्बन्धों को और अधिक विस्तृत करने की काफी अच्छी संभावनायें मौजूद हैं । सन् १९६१ से अब तक, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, भारत की विभिन्न व्यापार फर्मों के साथ १०० से अधिक समझौते किये हैं । इन समझौतों के अनुसार ज. ज. ग. इन फर्मों को विभिन्न रूपों में, तकनीकी सहायता प्रदान करेगा । ज. ज. ग. ने अपने भारतीय साझे-दारों को संयन्त्र, तकनीकी दस्तावेज़ और सामग्री देकर, भारत के मशीन-इंजीनियरिंग उद्योग के निर्माण में महत्वपूर्ण योग दिया है ।

भारत के बढ़ते हुये औद्योगीकरण के लिये यह जरूरी है कि भविष्य में सह-उत्पादन के सम्बन्धों को प्रबल रूप से बढ़ाना चाहिये ।

'वोल्टास लिमिटेड' के अध्यक्ष, और 'टाटा कनसर्न' के निदेशकों के बोर्ड के सदस्य श्री आर. एफ. एस. तलयारखान--जो लाइपजिग में पहली बार आये थे--ने भी सह-उत्पादन के विचार का इन शब्दों में समर्थन किया : "मैं खास तौर से, ज. ज. ग. की मशीनों और उपकरणों में दिलचस्पी रखता हूं । मैंने अभी तक जो यहां देखा है उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं--विशेषकर ज. ज. ग. की दफ्तरी-मशीनों तथा संगणक यन्त्रों और मशीनी औज़ार के उद्योगों से । हम तकनीकी जानकारी के इच्छुक हैं, और हम सह-उत्पादन के उद्देश्य से, भारत-ज. ज. ग. की संयुक्त कम्पनियां क़ायम करने का सहर्ष स्वागत करेंगे । मैं विशेषकर स्वचालन क्षेत्र में यहां विशेष रुचि रखता हूं । . . ."

भारत की सामूहिक-प्रदर्शनी के निदेशक, श्री प्रेम नाथ ने, लाइपज़िग व्यापार मेले में भारत के भाग लेने पर टिप्पणी करते हुये कहा : "पिछले १३ वर्षों से भारत लगातार लाइपज़िग व्यापार मेलों में भाग लेता आया है । यह एक प्रमाण है इस बात का कि भारत अन्तर्राष्ट्रीय मेलों के इस नगर (लाइपज़िग) को कितना महत्वपूर्ण समझता है । पहले अवसरों की तुलना में इस साल (१९६५) के व्यापार मेले में भाग लेने वाले २०० भारतीय प्रदर्शकों में प्रमुख भारतीय उद्यमों की संख्या अधिक है । लाइपज़िग, भविष्य में निवेश (इनवेस्टमेण्ट) के समान है, क्योंकि भावी व्यापार रिश्तों की बुनियादें यहीं डाली जाती हैं ।

"विश्व मण्डी में ज. ज. ग. एक विश्वस्त और प्रबल साझीदार है । भारत की मण्डी में ज. ज. ग. की वस्तुओं ने बहुत अच्छा नाम कमाया है । १९५३ में हमारे देशों के बीच नाम-मात्र का व्यापार था--अर्थात् केवल ढाई लाख डालर का । लेकिन आज तक हमारा यह व्यापार ७० मिलियन डालर (१ मिलियन = १० लाख) की रक़म तक बढ़ गया ई ।

"हाल के वर्षों में, अन्य देशों के साथ भारत के व्यापार में जो वृद्धि हुई है, उसमें लाइपजिग मेलों ने भी काफी योग दिया है।"

शरद्कालीन लाइपज़िग मेला

विश्व व्यापार और तकनीकी प्रगति के लिये

जर्मन जनवादी गणतंत्र के लाइपज़िग नगर में लगने वाले विश्व-प्रसिद्ध शरद-कालीन व्यापार मेले में ६० देशों के प्रदर्शक भाग लेंगे। ज. ज. ग. के उपभोक्ता उद्योग की वस्तुएं यहाँ अग्रगण्य स्थान ग्रहण करेंगी। इसके प्रदर्शन-मण्डप १००,००० वर्ग मीटर (लगभग १,०८०,००० वर्ग फुट) से अधिक क्षेत्रफल घेर लेंगे, और इसके विभिन्न; उत्पादन न केवल मेले के ३० व्यापार-समूहों में ही प्रदर्शित होंगे बल्कि गुणावस्था में भी ये उत्पादन, प्रदर्शित वस्तुओं के लिये एक मानक निर्धारित करेंगे। विद्युत सामग्री; फोटोग्राफी, चल-चित्रिकी तथा प्रकाशीय सामान; दफतरी मशीनें, टेक्सटाइल, चीनी मिट्टी तथा सेरामिक बरतन, रिहायशी सामान; वाद्य यन्त्रों, खिलौनों और खेल कूद के सामान वाले व्यापार-समूहों में ज. ज. ग. के उत्पादन बढ़ चढ़ कर प्रदर्शित होंगे।

१९६६ का शरद्कालीन मेला : समाजवादी देशों का भाग

इस समय तक, ज. ज. ग. के अलावा, आठ समाजवादी देशों ने लाइपज़िग शरद्-कालीन मेले में भाग लेने की घोषणा की है। ये देश अपने ७० प्रदर्शन-मण्डपों में अपने अनेकानेक उत्पादन प्रदर्शित करेंगे। ये मण्डप ५,००० वर्ग मीटर (लगभग १८,३०० वर्ग फुट) से अधिक स्थान घेर लेंगे। समाजवादी देशों में, चेकोस्लोवाकिया सबसे बड़ा प्रदर्शक होगा, ज. ज. ग. के बाद। कई वर्षों के व्यवधान के बाद, कोरिया जनवादी गणतंत्र इस वर्ष पुनः उक्त शरद्कालीन लाइपज़िग मेले में भाग लेगा।

पूंजीवादी देश और लाइपज़िग व्यापार मेला

१९६६ के शरद्कालीन लाइपज़िग व्यापार मेले में यूरोप के २० से अधिक पूंजीवादी राज्य भाग लेंगे। इन देशों में फ्रांस सबसे बड़ा प्रदर्शक होगा जिसके प्रदर्शन-मण्डप १,८०० वर्ग मीटर (लगभग ११,५०० वर्ग फुट) का क्षेत्रफल घेर लेंगे। आस्ट्रिया, नेदरलैण्ड्स, ब्रिटेन और इटली, क्रमशः फ्रांस के बाद स्थान ग्रहण करेंगे। स्विटज़रलैण्ड की व्यापार फर्मों ने इस साल मेले में जो स्थान सुरक्षित किया है वह तुलनात्मक दृष्टि से काफी अधिक है।

मेले में अरब तथा अफ्रीकी देश

अरब और अफ्रीका के जिन देशों ने, शरदकालीन मेले में भाग लेने की घोषणा की है (आजतक) उनकी संख्या ८ है। इन देशों में लेबनान सबसे बड़ा प्रदर्शक होगा। संयक्त अरब गणराज्य, सूदान और मोरोक्क इन देशों में क्रमशः दूसरे, तीसरे तथा चौथे स्थान पर होंगे।

लातीनी अमरीका के भाग लेने वाले देश

अमरीकी महाद्वीप के आठ देश शरद्-कालीन लाइपज़िग मेले में भाग लेंगे। लातीनी अमरीकी देशों में ब्राज़िल सबसे बड़ा प्रदर्शक होगा। संयुक्त राज्य अमरीका की अनेक फर्में भी मेले में भाग ले रही हैं, और उन्होंने अपने प्रदर्शन-स्थान को बढ़ा देने की प्रार्थना की है।

भारत और एशिया के अन्य देश

आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड के अतिरिक्त एशिया के छः अन्य देश भी १९६६ के उक्त लाइपज़िग मेले में भाग लेंगे। इन देशों में भारत सबसे बड़ा प्रदर्शक होगा। जापान की फर्मों ने अपना प्रदर्शन-स्थान बढ़ा दिया है।

भारत के प्रदर्शकों ने, मेले के प्रदर्शन-मैदान में अपने मण्डपों के लिए ६०० वर्ग-मीटर, अर्थात् ६,५०० वर्ग फुट क्षेत्रफल बुक कर दिया है। अपने उत्पादनों में भारत टेक्सटाइल उद्योग के उत्पादन, जैसे सूती तथा रेशमी कपड़े और हाथ से बुना हुआ तार इत्यादि प्रदर्शित करेगा। इसके अलावा चाय, काफी, तम्बाकू, मसाले, दस्तकारी की चीजें, पुस्तकें और रासायनिक उद्योग के उत्पादन भी प्रदर्शित किये जायेंगे।

विशिष्ट गोष्ठियों का दिलचस्प कार्यक्रम

१९६६ के लाइपज़िग शरद्कालीन मेले में जर्मन जनवादी गणतंत्र का "चैम्बर आफ टेकनालोजी" वैज्ञानिक एवं तकनालोजी की प्रगति से संबन्धित विषयों पर एक महत्वपूर्ण गोष्ठी आयोजित करेगा। यह गोष्ठी ३१ अगस्त से ३ सितम्बर, १९६६ तक "टेकनिशे होखशूले कार्ल मार्क्स स्टाड्ट" में आयोजित होगी, और इसके अध्यक्ष होंगे डा. इंग काइल। डा. काइल, ज. ज ग. के क्रुम्पा-गाइसेटाल नामक स्थान में स्थित स्नेहकों (लूबरिकण्ट) के वैज्ञानिक-तकनीकी केन्द्र के प्रमुख हैं। इस महत्वपूर्ण गोष्ठी में कई देशी और विदेशी विशेषज्ञ तथा विद्वान भाग लेंगे। अनेक प्रदर्शक, कई वस्तुओं की ज़ानकारी प्रदान करने के लिये विशेष व्याख्यान देंगे। इन वस्तुओं में उल्लेखनीय

(शेष पृष्ठ १० पर)

भारत : लाइपज़िग के वसन्त मेले में

पी. एम. शाह

श्री पी.एम. शाह, बम्बई के एक पत्र 'इण्डियन एक्सपोर्टर एण्ड इम्पोर्टर' के सम्पादक हैं। पिछले कुछ वर्षों में श्री शाह, लाइपजिग व्यापार मेलों में कई बार सम्मिलित हुये। इस लेख में उन्होंने १९६६ के वसन्तकालीन लाइपजिग मेले के सम्बन्ध में अपने प्रभाव, और इस मेले में भारत के भाग लेने के बारे में अपने अनुभव व्यक्त किये हैं।
--सम्पादक

जर्मन जनवादी गणतंत्र के अधिकारी, लाइपजिग व्यापार मेले का जो व्यापक और लगातार विज्ञापन कर रहे हैं, उससे दुनिया भर के अनेक-व्यापार सूत्रों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है। शायद यह कथन उचित ही है कि लाइपजिग मेला किसी नारी के सौन्दर्य की तरह दुनिवार आकर्षण बनता जा रहा है, और इसका यह आकर्षण प्रतिवर्ष बढ़ता ही जा रहा है।... पिछले दो वर्षों से मुझे इन मेलों को देखने का अवसर मिला है, और जहां तक दर्शकों तथा भाग लेने वाले देशों की संख्या का सवाल है, मैंने इनमें वृद्धि का स्पष्ट लक्षण देखे। अनुमान लगाया गया है कि इस वसन्तकालीन व्यापार मेले (१९६६–सं.) के दौरान, जो ६ से १५ मार्च तक आयोजित हुआ, लगभग ६ लाख दर्शकों ने मेला देखा, और इसमें ४० देशों ने भाग लिया। इस मेले में लाखों वस्तुएं प्रदर्शित हुई थीं जिनमें जर्मन जनवादी गणतंत्र की अनेकानेक वस्तुएं भी शामिल थीं।

लाइपजिग के इस मेले में, भारी और उपभोक्ता उद्योग के सभी क्षेत्रों की वस्तुओं का अनेक देशों द्वारा जो व्यापक प्रदर्शन हुआ था, उससे क्रय-विक्रय के अनेक समझौते करने में और वैज्ञानिक एवं औद्योगिक विकास में नवीनतम प्रवृत्तियों की जानकारी प्राप्त करने में बहुत ही अच्छा अवसर मिला। उच्चतम तकनीकी स्तर की अनेक वस्तुएं इस मेले में प्रदर्शित हुई थीं। लगभग २०० समाजवादी उद्यम इस मेले में भाग ले रहे थे। सोवियत संघ का मंडप, एक राजमहल जैसा लग रहा था, और सभी मण्डपों में सबसे बड़ा था। इस मण्डप में अनेक वैज्ञानिक एवं तकनीकी वस्तुओं के साथ साथ एक स्पूतनिक और एक अन्तरिक्ष - मानव भी प्रदर्शित हुआ था। चीन, जापान और पश्चिम यूरोप के देशों के अलावा, अफ्रीका तथा एशिया के अनेक देश भी इस मेले में भाग ले रहे थे। परिवहन और खाने-पीने के प्रबन्ध काफी अच्छे थे, और ये प्रदर्शकों तथा उनके कर्मचारियों को आसानी से उपलब्ध थे। जर्मन जनवादी गणतंत्र के अधिकारियों को इस बात का श्रेय जाना चाहिये कि लाइपजिग मेलों को संगठित करने में उन्होंने अनुपम कुशलता प्राप्त की है। परिणामस्वरूप, इन मेलों में भाग लेने वालों को नगण्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

दुनिया भर के लगभग ११०० पत्रकार भी इस मेले में आये थे, जिनमें कुछ ज.ज.ग. के अधिकारियों द्वारा निमंत्रित थे, और शेष स्वयं आये थे। इनमें से अनेक पत्रकारों को अच्छे होटलों में ठहराया गया था, और कई अन्य पत्रकारों को लाइपजिग तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र के दूसरे स्थानों में अनेकानेक औद्योगिक उद्यम देखने के लिये सुविधायें उपलब्ध की गयीं। इसलिये कुछ लोगों द्वारा कल्पित लौह-आवरण (आयरन कर्टेन) कहीं भी देखने को नहीं मिला। जो पत्रकार जर्मन भाषा नहीं जानते थे, उनको दुभाषिये उपलब्ध किये गये। 'प्रेस केन्द्र' पत्रकारों के आने-जाने और कामकाज से खूब व्यस्त था। यहां पत्रकारों को हर प्रकार की सूचनायें तथा सुविधायें उपलब्ध थीं। यह 'प्रेस केन्द्र' एक अनोखा संगठन है जो बहुत ही योग्य ढंग से काम करता है और जहां पत्रकारों की सभी आवश्यकतायें पूरी की जाती हैं। विभिन्न व्यापार संस्थाओं एवं संगठनों के प्रमुखों द्वारा आयोजित प्रेस कानफ्रेंसों में पत्रकारों की भीड़ रहती और उनको हर प्रकार का सूचना साहित्य दिया जाता।

आइये, अब **भारतीय मण्डप** के बारे में कुछ कहा जाय। यह बात बिना किसी झिझक के कही जा सकती है कि **व्यापार मेलों एवं प्रदर्शिनियों की भारतीय परिषद्** ने अपने मण्डप को हर प्रकार से आकर्षक बनाने में कोई कसर उठा नहीं रखी थी। लाइपजिग के इस व्यापार मेले में, भारत के १२० प्रदर्शकों ने, भारत की पारम्परिक और अन्य वस्तुएं प्रदर्शित की थीं। विभिन्न भारतीय फर्मों के लगभग ६० प्रतिनिधि यहां सौदे समझौते के लिये आये थे। वैसे पिछले ११ वर्षों से भारत लाइपजिग के इन व्यापार-मेलों में भाग लेता आया है, लेकिन इस वर्ष इसने अपने मण्डप को खासतौर से ग्राहकों के लिये आकर्षक बनाया था। मण्डप में प्रदर्शित वस्तुओं से यह पता चलता था कि पिछले १५ वर्षों के नियोजित अर्थतन्त्र में भारत ने औद्योगिक दृष्टि से कितनी प्रगति की है। वस्तुओं की विविधता के अतिरिक्त, मधुर भारतीय संगीत की निरन्तर ध्वनि भी भारतीय मण्डप की लोकप्रियता का एक कारण था। इस मंडप की आन्तरिक-सज्जा, प्राच्य कला का एक अनुपम रंग प्रस्तुत कर रही थी।

इस वर्ष (१९६६), वसन्तकालीन लाइपजिग मेले में भारत का भाग लेना इस दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण रहा क्योंकि इसने पहली बार ज.ज.ग. की मन्डी में भारत की गैर-पारम्परिक (औद्योगिक उत्पादन) वस्तुओं को लाने का प्रयत्न किया। भारतीय मण्डप का प्रदर्शन इस दृष्टि से भी बहुत अच्छा था कि हस्तकला की वस्तुयें, चाय, वस्त्र आदि जैसी भारतीय पारम्परिक चीज़ों को प्रदर्शित करने का पुराना ढर्रा इस बार छोड़ दिया

. . . . (शेष पृष्ठ १० पर)
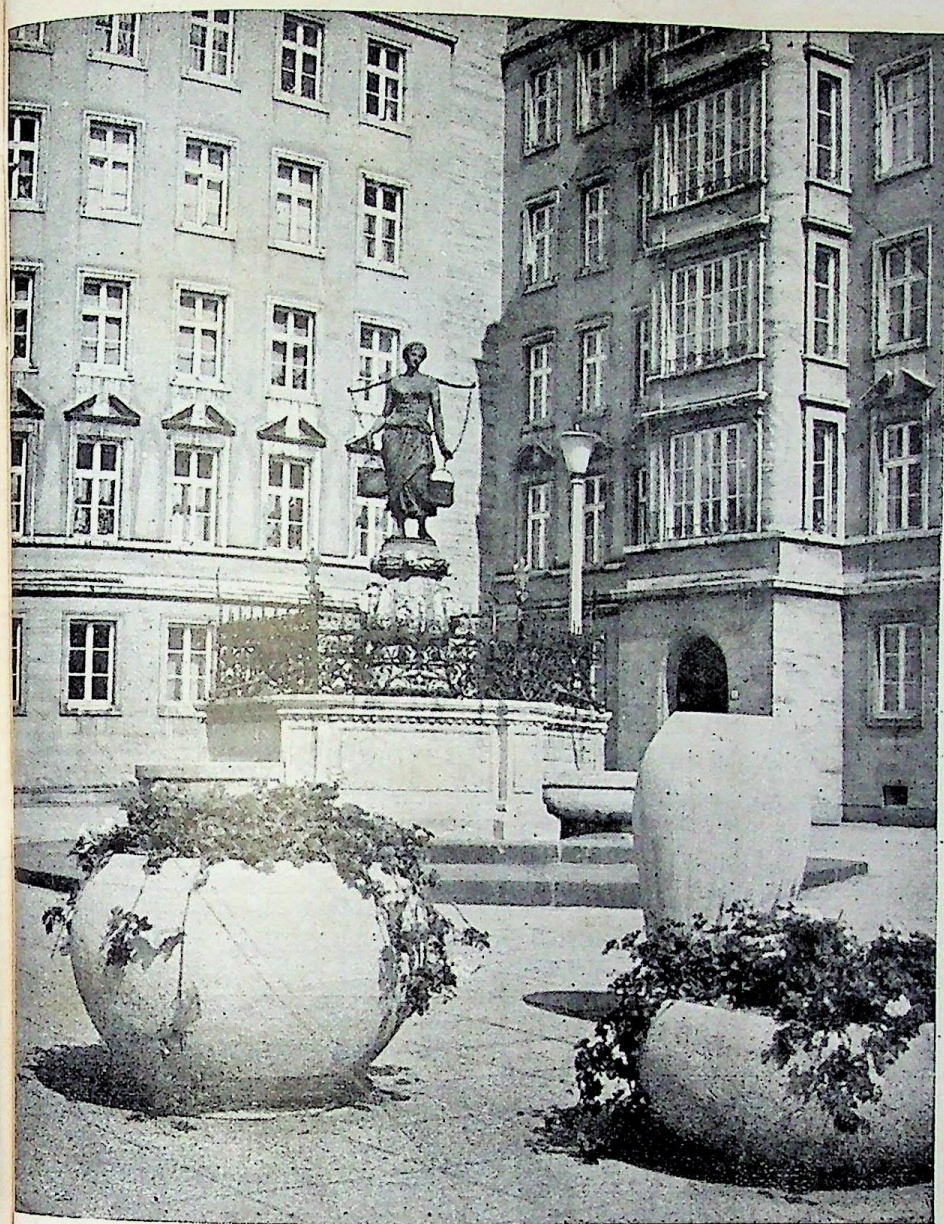
'कुमारियों का फव्वारा'--लाइपजिग

लाइपज़िग : कलाकारों और बुद्धिजीवियों का नगर

लाइपजिग के इतिहास में, इसकी खुशहाली तथा बदहाली का और इसके ऐसे महापुरुषों का विवरण मिलता है जिन्होंने लाइपजिग की ख्याति को अमर बना दिया है । समकालीन इतिहासकार उन व्यक्तियों की अधिक प्रशंसा करते हैं जिन्होंने अपनी कड़ी मेहनत से इस नगर को समृद्ध बनाने की बुनियादें डाल दीं । वर्तमान समय में भी, यहां के हजारों नर-नारियों ने अपनी लगन और परिश्रम से, लाइपजिग को युद्ध की तबाही से उठाकर, एक शांतिप्रिय राज्य में एक शांतिप्रिय नगर के रूप में स्थापित किया है ।

जर्मनी के महान् कवि, गोइटे ने अपना विद्यार्थी जीवन लाइपजिग में ही बिताया । अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना फाउस्ट में "ग्रायेर-बाख्स केल्लर" नामक प्रसिद्ध मधुशाला का एक दृश्य चित्रित करके महाकवि गोइटे ने लाइपजिग के लिये एक साहित्यिक स्मारक खड़ा किया है ।

सन् १७८५ में, अन्य विख्यात जर्मन कवि फ्रेडरिख शिल्लर ने मानवीय भावनाओं से ओतप्रोत एक कविता लिखी, **स्वतंत्रता को संबोधन**। इस प्रसिद्ध कविता का प्रेरणा स्रोत और जन्म स्थान भी लाइपजिग ही है ।

लाइपजिग की विश्वप्रसिद्धि का कारण न केवल इसके मेले और १९ वीं तथा २० वीं शताब्दी में इसकी औद्योगिक प्रगति ही है, बल्कि इस ख्याति का एक मुख्य कारण है इसका बौद्धिक एवं सांस्कृतिक जीवन, जो इस नगर के साथ तब से नत्थी है जब से, लगभग ५५० वर्ष पहले, यहां लाइपजिग विश्वविद्यालय की स्थापना हुई ।

धर्म-सुधार आन्दोलन (रिफार्मेशन) के दिनों में ही (१६ वीं शताब्दी में--सं०), लाइपजिग के प्रिन्टरों ने, मार्टिन लूथर की रचनाओं के प्रथम संस्करण छाप दिये । सन् १५२७ में, हांस हेरगोट नामक एक घुमक्कड़ पुस्तक-विक्रेता को, क्रांतिकारी पुस्तिकायें बेचने के लिये कत्ल किया गया ।

लाइपजिग का सेंट टामस चर्च
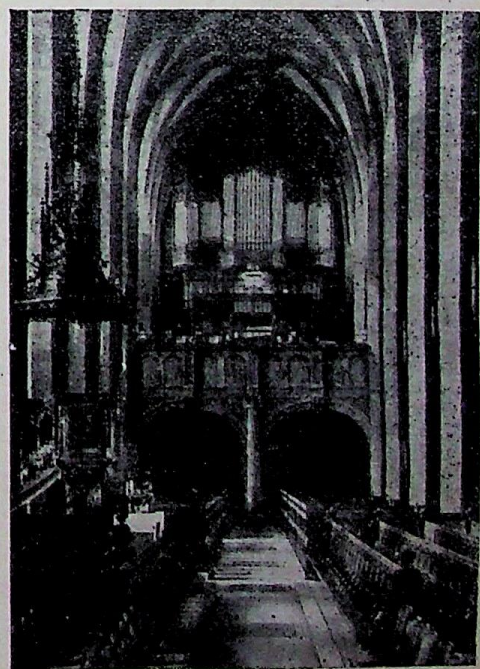
१९ वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक आते आते जर्मनी के पुस्तक-विक्रेताओं, और कला तथा संगीत की कुल दुकानों में से दो-तिहाई दुकानें लाइपजिग में ही थीं। आगुस्ट बेबेल और विलहेल्म लीबनेख्त जैसे मजदूर आन्दोलन के महान् नेताओं ने यहां के मजदूर वर्ग का नेतृत्व किया था। बाद में "लाइपजिगेर फोल्कसाइटुंग" नामक अखबार ने, लाइपजिग के मजदूर वर्ग में मार्क्सवाद के नये विचार लाये, और फ्रांज मेरिंग, रोजा लुक्समबुर्ग और क्लारा जेटकिन जैसे महान् सोशल-डेमोक्रेट पत्रकार, मजदूर आन्दोलन के अंग बन गये।

जब जार्ज डिमिट्रोव ने, हिटलर के नात्सी मंत्री हर्मन्न गोइरिंग पर, कुख्यात राइखस्टाग दहन के मुकदमे में अविस्मरणीय विजय पाई, तो उस समय फिर लाइपजिग की गूंज दुनिया के अखबारों में प्रतिध्वनित हुई। ... नात्सी शासनकाल के दौरान, लाइपजिग का फासिस्त-विरोधी आन्दोलन बहुत सक्रिय था।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य-परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त भी लाइपजिग में ही जन्मे हैं। ....

विश्वप्रसिद्ध जर्मन संगीतकार, योहान्न सेबासतियन बाख ने लाइपजिग को संगीत का नगर बनाकर अमर कर दिया। हामबुर्ग के बाद लाइपजिग, जर्मनी का दूसरा नगर था जहां १६९३ में एक आपेरा-भवन स्थापित किया गया। लाइपज़िग के 'गवाण्डहाउस वाद्यवृन्द' और 'सेन्ट टामस कोयर' ने अपनी संगीत कला प्रदर्शनी के लिए विश्व-ख्याति पाई। लाइपज़िग ने जिन विभूतियों को विश्वव्यापी प्रसिद्धि प्राप्त करने में सहायता दी उनमें उल्लेखनीय हैं फेलिक्स मेनडेलसोन बार्टोल्डी, रिचार्ड वाग्नर, एलबर्ट लोर्टसिंग और रोबर्ट शूमान्न।

प्रसिद्ध जर्मन थियेटर सुधारक, कोरोलीन न्यूबर ने, अपने समय में, घटिया एवं निरुद्देश्य नाट्य-कला का विरोध लाइपजिग में ही शुरू किया और रंगमंच को एक नैतिक संस्थान में तबदील करने का प्रयास किया। इस प्रयास में लाइपजिग विश्वविद्यालय का स्नातक, कवि लेस्सिंग, कारोलीन न्यूबर के लिये नाटक लिखकर उसका हाथ बटाता था।

दूसरे महायुद्ध में इस नगर के शरीर पर तबाही के जो भयंकर घाव लगे उनको आसानी से भुलाया नहीं जा सकता। इस तबाही में लाइपज़िग के १ लाख से अधिक लोग काल का ग्रास हुये। यहां के ४६ प्रतिशत से अधिक उद्योग, सभी थियेटर तथा कान्सर्ट हाल नष्ट हुये और यहां के ५० प्रतिशत मकान ध्वस्त हुये।

लेकिन आज, नव-निर्माण के बाद, ज. ज. ग. कुल मुद्रण-व्यापार का ४२ प्रतिशत हिस्सा लाइपज़िग में पुनः कायम हुआ है। यहां के औजार, परिवहन तथा ढुलाई के यंत्र, खदान उपकरण और इलेक्ट्रानिक सामान विश्व-ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। प्राचीन वास्तुकला के अमूल्य अवशेषों को यथावत खड़ा किया गया है, और नये मकान, दुकानें एवं फैक्ट्रियां तामीर की गयी हैं।

लाइपज़िग, जर्मन जनवादी गणतन्त्र के भौतिक और आध्यात्मिक नव-निर्माण का एक आदर्श उदाहरण है।

भारत···वसन्त मेले में

(पृष्ठ ८ का शेष)

गया था। मण्डप में प्रदर्शित हिन्दुस्तान मशीन टूल्स के लगभग सभी मशीनी औज़ार और निजी क्षेत्र की अन्य वस्तुयें भी, वहीं बिक गयीं। इसके अलावा मशीनों एवं इंजीनियरी उत्पादन की बिक्री से सम्बन्धित व्यापारिक समझौते भी हुये। इनके अनुसार "प्रागा टूल्स" के यन्त्र, मोटर तथा संपीडक यन्त्र, छपाई की मशीनें, टेक्सटाइल-मशीनें, तथा उनके अतिरिक्त पुर्जे, शल्य-क्रिया तथा प्रयोग शालाओं के उपकरण, नल सामान, लोहे के तार इत्यादि जैसे भारतीय उत्पादन ज.ज.ग. को बेचे जायेंगे। भारत से ७० लाख रूपये की केबल की सप्लाई के बारे में हो रही बातचीत भी काफी आगे बढ़ चुकी है। प्राप्त संकेतों से पता चला है कि गैर-पारम्परिक वस्तुओं से सम्बन्धित १ करोड़, २५ लाख रूपये से भी ज्यादा रकम के अनुबन्ध किये गये हैं। व्यापार की बातचीत भी हो चुकी है। यह रकम, पारम्परिक भारतीय वस्तुओं जैसे वस्त्र, चाय, हस्तकला-वस्तुऐं और पटसन के उत्पादनों आदि की बिक्री की रकम से अलग है। मेले में भाग लेने वाले कुछ व्यापारियों द्वारा उपलब्ध की गई सूचना के आधार पर गैर-पारम्परिक वस्तुओं में किये गए व्यापार के अनुमानित आंकड़े नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं :

वस्तुऐं		लाख रुपयों में
मशीनी औजार	...	१.२०
'प्रागा टूल्स' के यन्त्र	...	१.२०
शल्य एवं प्रयोगशाला उपकरण		२.००
छपाई की मशीनें	...	२.००
नल सामान	...	१५.००
टेक्सटाइल मशीनें और अतिरिक्त पुर्जे	...	५.००
लोहे के तार	...	१५.००
खुश्क बैटरियां	...	६.००
पिसी हुई हड्डियां	...	२०.००
केबल	...	७०.००
पेय	...	२.००
कागज़ और तत्संबन्धी उत्पादन		०.५०

१९६६ का शरदकालीन मेला...

(पृष्ठ ७ का शेष)

हैं चमड़े, रसायन, टेक्सटाइल, वाद्य-यन्त्र, कैमरे. कागज इत्यादि।

मूल-सामग्री उद्योग के उत्पादन और बातचीत ब्यूरो

लाइपज़िग के उक्त व्यापार मेले में, ज. ज. ग. के मूल-सामग्री उत्पादन करने वाले उद्योग, और पश्चिमी जर्मनी, पश्चिम बर्लिन तथा अन्य देशों की प्रमुख व्यापार-फर्में क्रय-विक्रय की बात चीत और समझौते आदि करने के लिये एक ब्यूरो खोलेंगे।

मूल-सामान पैदा करने वाले उद्योगों का यह बातचीत ब्यूरो, लगभग २५,००० वर्ग-मीटरों अर्थात् २७०,००० वर्ग फुट क्षेत्रफल घेर लेगा। इस ब्यूरो के लिये "लाइपज़िगेर मेस्सेआमट" नामक मेला दफतर ने, तकनीकी मेला-मैदान में स्थित अनेक मेला-हालों एवं मण्डपों में कई सुविधाएं उपलब्ध की हैं।
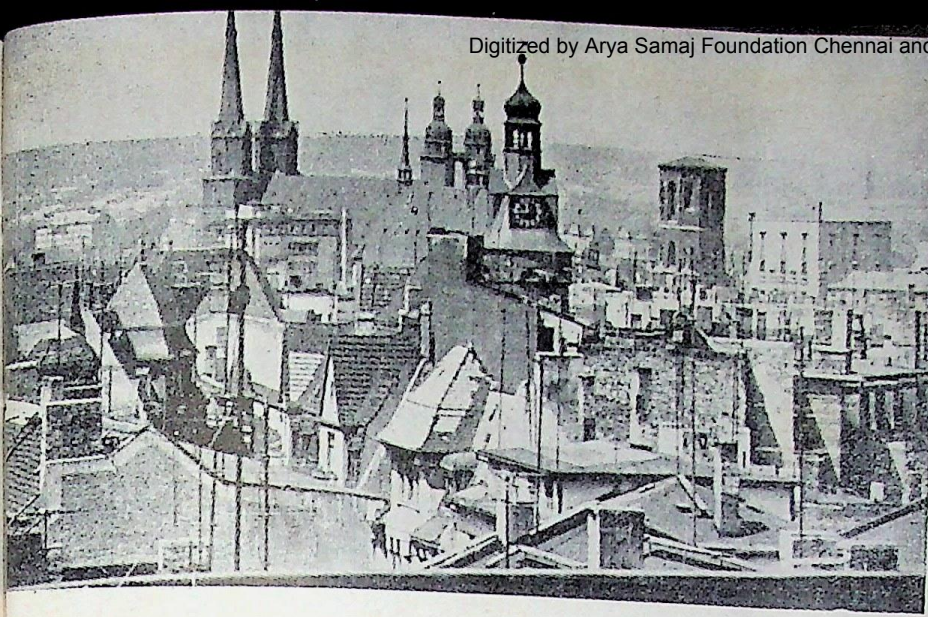
हाल्ले में बौद्ध-धर्म का अध्ययन-केंद्र

हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के हाल्ले नामक नगर में "बौद्ध-धर्म अध्ययन-केन्द्र" का उद्घाटन समारोह आयोजित हुआ। ज. ज. ग. के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों के प्रतिनिधियों के अलावा पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य और ज. ज. ग. में दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के राष्ट्रीय संगठनों के अतिथि भी इस भव्य समारोह में उपस्थित थे। इस 'अध्ययन केन्द्र' का संचालन-कर्ता है हाल्ले विश्वविद्यालय का 'प्राच्य पुरातत्व संस्थान' का 'प्राच्य प्राक-इतिहास विभाग' और इसके निदेशक हैं प्रोफेसर हाइंज़ मोडे जो ज. ज. ग. के "जर्मन दक्षिणपूर्व एशिया संघ" के अध्यक्षमण्डल के एक सदस्य हैं। इस 'संघ' के उपाध्यक्ष, डा० कुर्ट ह्यूबर ने "बौद्ध धर्म अध्ययन-केन्द्र" की स्थापना पर हर्ष प्रकट किया, और 'केन्द्र' को 'संघ' की ओर से हर प्रकार की सहायता देने का आश्वासन दिया।

बौद्ध धर्म अध्ययन केन्द्र" के दो प्रमुख उद्देश्य हैं: एक, बौद्ध कालीन इतिहास के प्रारम्भिक युगों में भाषा-विज्ञान, इतिहास, संस्कृति और कला के क्षेत्रों के गहरे अध्ययन एवं अनुसन्धान को प्रोत्साहन देना। दूसरा, दक्षिण-पूर्व एशिया के उन सभी देशों के आधुनिक विकास का अध्ययन प्रस्तुत करना जो प्रमुख रूप से आज भी बौद्ध-धर्म की महान सांस्कृतिक परम्पराओं से परिचालित हैं। इसके अतिरिक्त, यह बौद्ध-केन्द्र, इस क्षेत्र में कार्य करने वाले ज.ज.ग. के सभी विद्वानों के अनुसन्धान-कार्य में ताल-मेल पैदा करेगा। इस प्रकार 'केन्द्र' उनके शोध को व्यापक और शोध-परिणामों को समस्त ज. ज. ग. में लोकप्रिय बनाने में सबसे बड़ा सहायक तत्व सिद्ध होगा। बौद्ध-धर्म से सम्बंधित विषयों पर शोध-कार्य को प्रकाशित करके, यह 'केन्द्र' उन प्रकाशनों को इच्छुक संस्थानों एवं व्यक्तियों को भी उपलब्ध करेगा।

हाल्ले-विश्वविद्यालय जैसे प्राचीन विद्या केन्द्र में स्थापित होना इस बात की गारंटी है कि उक्त 'बौद्ध-धर्म अध्ययन-केन्द्र' के निर्देशन में जो शोध कार्य होगा वह केवल (शुद्ध) अकादमी स्तर का होगा। वे संस्थान और व्यक्ति जो धार्मिक अथवा भावनात्मक लगाव के कारण बौद्ध-धर्म से हमदर्दी रखते हों, वे भी 'केन्द्र' के इन सत्-प्रयासों का स्वागत करेंगे। इन प्रयासों का उद्देश्य है उन तमाम सांस्कृतिक एवं प्रगतिशील प्रवृत्तियों को विकसित करना जो बौद्ध-धर्म के भव्य इतिहास का अंग हैं।

उक्त 'केन्द्र' एक वार्षिक पत्र **बौद्ध-धर्म वार्षिक** भी प्रकाशित करेगा। इसमें, ज. ज. ग. में बौद्ध-धर्म सम्बंधी अनुसन्धान की पूरी जानकारी प्रकाशित हुआ करेगी। इसके अतिरिक्त इस वार्षिक-पत्र में नई शोध-सामग्री, विषय-सूचियां और उन शोधार्थियों तथा विद्वानों का जीवन-परिचय प्रकाशित हुआ करेंगे जो बौद्ध-धर्म के अनुसन्धान में लगे हुये हैं।

'बौद्ध धर्म अध्ययन-केन्द्र' के निदेशक डा० मोड ने 'प्राच्य पुरातत्व संस्थान' में एक वृहत् **बौद्ध-धर्म पुस्तकालय** को संगठित किया है जहां उन्होंने कई प्राचीन प्रकाशित ग्रन्थ भी एकत्रित किये हैं। यहां एक एसा विशिष्ट अध्ययन-कक्ष भी होगा जहां अन्य देशों से आय हुये विद्वानों तथा मेहमानों की आवश्यकतायें पूरी की जायेंगी।

डा० मोडे, पिछले २० वर्षों से हाल्ले विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर आसीन हैं। भारतीय पुरातत्त्व के विषय पर ये व्याख्यान देते और लेख आदि प्रकाशित करते रहे हैं। इसके अलावा, प्रोफेसर मोडे बौद्ध धर्म एवं दर्शन में तब से रूचि ले रहे हैं जब से वे श्रीलंका और बंगाल में एक विद्यार्थी थे।

लाइपज़िग मेले का स्वर्णपदक

लाइपज़िग मेले में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सर्वोच्च उत्पादनों को 'लाइपजिगेर मेसेक्ट' ग्रौर ज. ज. ग. के माल ग्रौर वस्तु नियंत्रण संस्थान की ग्रोर से स्वर्ण-पदक दिया जाता है। विश्व प्रसिद्ध व्यावसायिक संस्थाएं, जैसे पेरिस की फर्म रेनाल्ट अपने व्यावाहारिक प्रकाशनों को संसार के सबसे पुराने ग्रौर सबसे बड़े व्यापारिक मेले के इस पदक के चित्रों से सजाते हैं ग्रौर अनेक ख्याति प्राप्त निर्माता व्यावसायिक फर्में, जैसे ब्रुसेल्स एस. ए. ग्रोप्टि-बल अपने लेटर पैडों पर इस पदक को ग्रंकित करते हैं।

मेला खतम होने का समय नजदीक ग्राता है तो किसी एक दिन पुरस्कार वितरण होता है। उस दिन मेले के सभी मण्डपों ग्रौर भवनों में एक-सा वातावरण होता है। उस दिन प्रदर्शक ग्रौर उत्पादक मेले के पदक ग्रौर प्रमाण पत्र प्राप्त करते हैं, प्रैस फोटो-ग्राफरों के फ्लैश बल्व चमकने लगते हैं, बधाइयां, धन्यवाद ज्ञापनों ग्रौर गिलासों की टकराहट के साथ खुशी के जाम पिये जाते हैं। १९६५ के वसन्त मेले में ७० मण्डपों में इसी तरह खुशी के जाम पिये गये ग्रौर ग्रंग्रेजी, रूसी, फ्रेन्च, इटालियन, हंगेरीयन ग्रौर कई दूसरी भाषाग्रों में एक दूसरे को बधाइयां ग्रौर शुभकामनाएं दी गयीं।

उस मेले में २२ देशों के ३७३ प्रदर्शकों ने इस उच्च पुरस्कार की प्रतियोगिता में भाग लिया जिनमें १९४ प्रदर्शक ज. ज. ग. के बाहर के थे। लेकिन सिर्फ ७० प्रतियोगियों को यह वांछित स्वर्ण पदक मिल सका यद्यपि प्रतियोगिता में शामिल की गयी सभी वस्तुएं उच्च कोटी की थीं। लेकिन लाइपजिग मेले का स्वर्ण-पदक जीतने के लिए किसी उत्पादन की कोटि ही काफी नहीं है। सर्व-श्रेष्ठ कोटि की केवल ऐसी वस्तुग्रों को पदक पाने का ग्रवसर रहता है जिनका उपयोगिता मूल्य, किस्म ग्रौर डिज़ाइन, सर्वोच्च वैज्ञानिक ग्रौर तकनीकी मानक पर खरी उतरती हैं।

इस सिलसिले में, कम-से-कम जहां तक ज. ज. ग. की १६७ वस्तुग्रों का सवाल है, प्रतियोगिता में शामिल की गयी वस्तुग्रों की कुल संख्या ३७३ है। ऐसा इसलिए है कि ज. ज. ग. में निर्मित वस्तुग्रों को प्रतियोगिता में दाखिल होने के पहले राष्ट्रीय स्वामित्व वाले उद्योगों के संघ या जिला ग्रार्थिक परिषद के सामने पेश किया जाता है जहां से वे राष्ट्रीय ग्रार्थिक परिषद को भेजी जाती हैं। ग्रौर इन दो परीक्षणों में खरी उतरने के बाद ही ज. ज. ग. में निर्मित वस्तुएं प्रति-योगिता में शामिल की जाती हैं।

प्रतियोगिता की पुरस्कार समिति को उच्च ग्रधिकार प्राप्त हैं ग्रौर उसके निर्णय ग्रन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त जर्मन माल ग्रौर वस्तु नियंत्रण संस्थान के निर्णयों से सम्बद्ध होते हैं क्योंकि वस्तुग्रों की प्रारम्भिक जांच इस संस्थान द्वारा ही की जाती है ग्रौर पुरस्कार समिति के ग्रधिकांश सदस्य भी इस संस्थान के ही लोग होते हैं। इस संस्थान के ग्रध्यक्ष प्रोफेसर, डाक्टर हेलमूट साइड्ल पुरस्कार समिति के भी ग्रध्यक्ष हैं।

ग्राइये हम ग्रापका परिचय डाक्टर हेलमूट साइड्ल से करायें जो माप ग्रौर वस्तु नियंत्रण संस्थान के वाद्य-यंत्र विभाग के प्रधान हैं। पुरस्कार निर्णय के लिए प्रारम्भिक परीक्षणों के दौरान हम उनकी परीक्षण-टोली के साथ हो लिये। जिस तरह के वाद्य-यंत्रों का परीक्षण उन्हें करना होता है वे उसके विशेषज्ञों को भी ग्रपनी टोली में ग्रामंत्रित करते हैं। वसंत मेले में उनकी परीक्षण टोली प्यानो वादक एन्नेरोज़ शिमड्ट भी थीं, जिन्होंने प्रतियोगिता में दाखिल किये गये हर प्यानो पर ग्रपना एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस बार के शरद्कालीन मेले में फिव्स फ्लाइ-शर, जो ज. ज. ग. के एक सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य ग्रार्केस्ट्रा के निर्देशक हैं, परीक्षण टोली के सदस्य थे। ग्रनेक वर्षों के ग्रनुभवी वादक होने के नाते उन्होंने ग्रपने विशेष वाद्ययंत्रों के स्वरों ग्रौर उनके गुण-दोषों की परख की। यह करते हुए पर उनके माहिर हाथों ने ग्रचानक ही सुनने वालों की भारी भीड़ इकट्ठा कर ली। लाइपज़िग के गेवाण्डहाउस ग्रार्केस्ट्रा के एक वादक ग्रार्केस्ट्रा में ग्रपनी जगहें बिलनोत हाल के ग्रनुभवी वाद्ययंत्र निर्माता ग्रपने काम की जगहें बदल कर मेले में वाद्य यंत्र निर्माताग्रों के मण्डप में पहुंच गये। यहीं कलैरिनेट की परख हो रही है, कहीं एकार्दियन

के तार झनझनाये जा रहे हैं और स्वर गूंज रहे हैं। हर जगह वाद्य यंत्रों के निर्माताओं और प्रदर्शकों पर प्रश्नों की झड़ी लग गयी।

और ये प्रश्न आसान नहीं थे क्योंकि उन मण्डपों में जाने के पहले ही एक महत्वपूर्ण काम पूरा हो चुका था। वह यह कि उन वाद्य यंत्रों को बनाने वाली फर्मों से उन वाद्य यंत्रों के बारे में और विश्व बाजार में उनके सर्वश्रेष्ठ मानक के बारे में सारी सूचनाएं प्राप्त की जा चुकी थीं और उनका मूल्यांकन भी किया जा चुका था। और इस जानकारी के साथ निर्णायक अब प्रतियोगिता में दाखिल वाद्य यंत्रों की परख कर रहे थे और अपने निर्णय दे रहे थे।

निर्णायकों के अभ्यस्त और पारखी आंख, कान वाद्य यंत्रों की ज़रा-सी भी खराबी या कमी को पकड़ लेते थे। वाद्य-यंत्रों के निर्णायक-मण्डल को विशेषकर ७ वाद्ययंत्रों पर अपनी राय देनी थी, जिसमें से सिर्फ चार उनकी परख की कसौटी पर खरे उतरे और उन्हें अगली समिति में भेज दिया गया।

इस तरह की हर समिति के अध्यक्ष, माप और वस्तु नियंत्रण संस्थान के एक उपाध्यक्ष होते हैं। इनमें से तीन समितियों ने, जो हलके उद्योगों, खाद्य और रसायन उद्योग तथा मशीनों और विद्युत इन्जीनियरिंग के लिये थीं, काम शुरू किया।

इस बार हमें हल्के उद्योगों की समिति की कार्रवाई में उस समय भाग लेने की अनुमति मिली जब स्वर्णपदक की प्रतियोगिता में दाखिल किये गये सामानों की जांच का दूसरा दौर चल रहा था। वस्तुओं पर अपनी राय देने वाले निर्णायक-मंडलों के प्रधान, अपने क्षेत्र के उच्चकोटि के विशेषज्ञ थे। नई-नई पोशाकों की डिज़ाइनों और दूसरी विशेषताओं का प्रदर्शन करने के लिये फैशन मॉडल लड़कियां बुलाई गई थीं। लिनेन के नये जनाने वस्त्र अत्यधिक फैशनेबुल डेडेरन मोजे और उच्च कोटि के तैयार जनाने कपड़े प्रतियोगिता में शामिल किये गए थे जिनकी अच्छी तरह
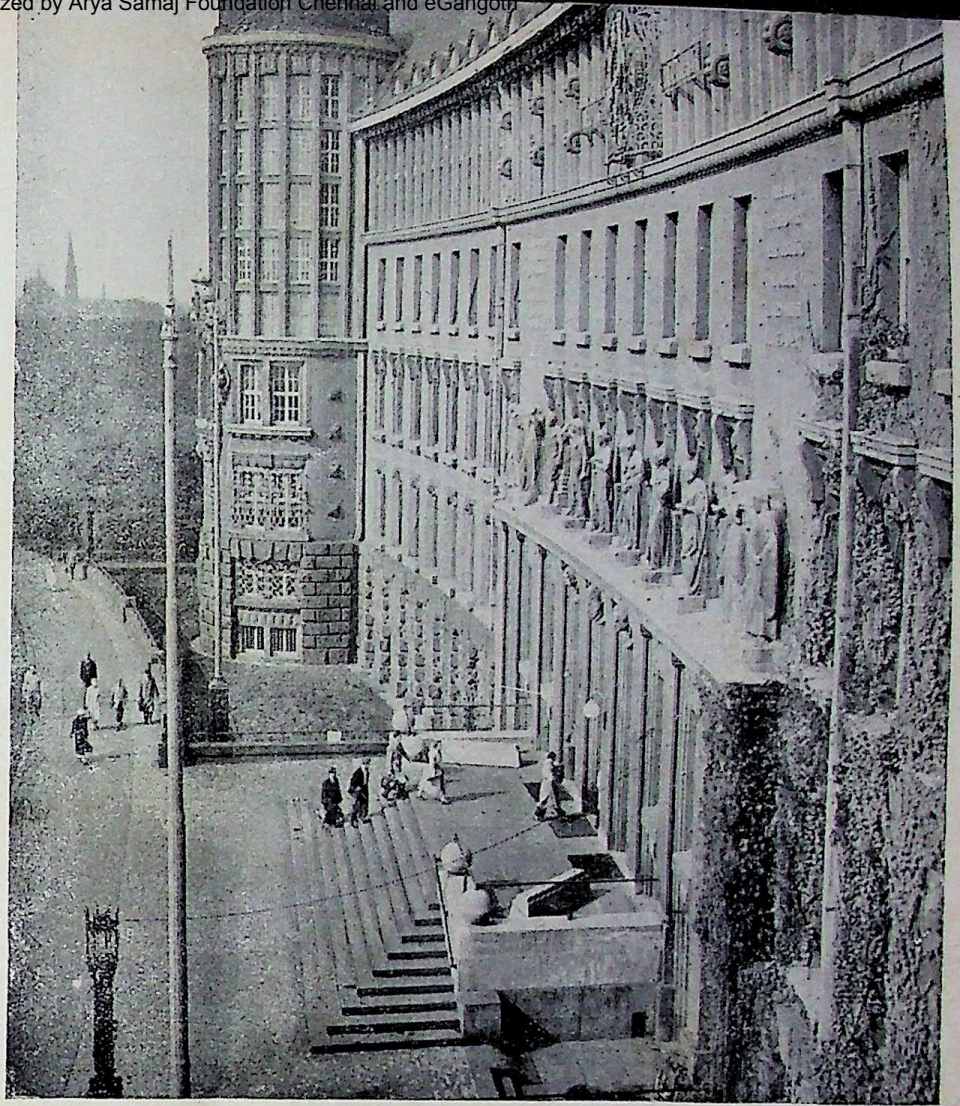
लाइपजिग में जर्मन पुस्तकालय

परख की गई। सोवियत फर, हंगरी के रेशमी कपड़ों और पश्चिमी जर्मनी के चमड़े के सामानों की कड़ी जांच की गई। कई घन्टों के विचार के बाद पुनः परीक्षण समिति ने निर्णायक मंडल द्वारा भेजे गये सामानों में से आधे को रद्द कर दिया। इस तरह विभिन्न स्तरों पर होनेवाली जांचों म खरे उतरते हुए दो वस्तुएं पुरस्कार समिति तक पहुंच पायीं, जिनमें से एक हमारे अपने देश की बनी हुई और दूसरी एक विदेशी वस्तु थी। दोनों ही वैज्ञानिक और तकनीकी विकासके उच्चतम स्तर का प्रतिनिधित्व करती थीं लेकिन इनमें से भी सिर्फ एक—विदेश में बनी वस्तु—अन्ततः अन्तिम मंजिल पर पहुंच पाई। और वह सिर्फ इसलिए कि उस वस्तु की ऊपरी डिज़ाइन दूसरी से कुछ बेहतर थी। सचमुच पुरस्कार केवल सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय वस्तुओं को ही प्राप्त हो सकता है।

लेकिन, अभी अन्तिम फैसला नहीं था। अन्तिम निर्णय पुरस्कार समिति ही देती है। यह समिति, जिसके संयोजक ज. ज. ग. के योजना आयोग के अध्यक्ष होते हैं, देश के प्रमुख विशेषज्ञों की होती है।

यहीं अन्तिम निर्णय दिया जाता है। लेकिन इसके पहले प्रत्येक वस्तु पर आई हुई रायों की विस्तृत रूप से समीक्षा की जाती है। जिन चीजों के बारे में कोई सन्देह होता है उनकी दुबारा परीक्षा होती है और उन्हें सभी बाधाओं को पार करते हुए दुबारा पुरस्कार समिति तक पहुंचना पड़ता है। और जब कहीं जाकर किसी वस्तु को यह वांछित स्वर्णपदक मिल पाता है।

ज.ज.ग. की यात्रा ... कुछ अनुभव

नवीन टी. खाण्डवाला

दूसरे महायुद्ध के बाद की स्थिति के परिणामस्वरूप जर्मनी का विभाजन हुआ। बर्लिन नगर दो भागों में बटा हुआ है: पूर्व बर्लिन और पश्चिम बर्लिन। पूर्व बर्लिन, और जर्मनी का वह भाग जो रूस के अधिकार में था, मिलकर जर्मन जनवादी गणतंत्र बन गया है और पिछले १७ वर्षों से यह एक स्वाधीन राज्य के रूप में मौजूद है।

मैं बर्लिन की वह दीवार भी देखने गया जिसके बारे में, मैं बहुत कुछ सुन चुका था। यह दीवार आदम-कद से ज्यादा ऊंची नहीं है और वह भी दो एक जगह पर हीं। शेष सारी सीमा कांटेदार तार से बांध दी गई है। दीवार के सम्बंध में मुझसे राय पूछी गयी। मैंने कहा कि मैं जिस भारत देश से आया हूं उसने भी बंटवारे के दुख उठाये हैं। इसलिये मैंने आशा व्यक्त की कि विभाजित लोगों के बीच अलग करने वाली दीवारों के स्थानों पर जल्दी सद्भावना पैदा हो। जर्मन राष्ट्र को अपने मतभेद मिल बैठकर बात-चीत के द्वारा निपटा लेने चाहियें।

पूर्व बर्लिन के **पयोनियर-भवन** में, जहां स्कूल और कालेज के सभी विद्यार्थियों को मुफ्त दाखिला मिलता है, बच्चे और जवान के व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी विकास के लिये हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है। वहां कई प्रकार के कार्यों जैसे नाटक, आपेरा, बैले, वाद्यवृन्द गान, इलेक्ट्रानिकी, ट्रैफिक-नियन्त्रण, पोत-निर्माण, ज्योतिष-शास्त्र और अनेक अन्य विषयों में व्यस्त रहते हैं। ये सब काम वे अपने फालतू समय में करते हैं ताकि उनके अध्ययन में बाधा न पड़े। मैंने ५० बच्चों का एक वाद्य-वृन्द भी देखा जिसका संचालन एक १४ वर्षीय लड़का कर रहा था, और देश के एक विख्यात एवं अनुभवी वाद्य-वृन्द संगीतज्ञ के हाथों में इसकी देख-रेख थी। ... **शिक्षक-भवन** को देखकर भी मैं काफी प्रभावित हुआ। इसमें मुख्यतः शिक्षकों को ही प्रवेश मिलता है। शिक्षक यहां मिलते हैं, बहस करते हैं, गप्पें लड़ाते और नाटक, फिल्में आदि देखते हैं। १२ मंजिलों की यह इमारत बहुत सुन्दर है। इसमें अनेक कमरे हैं और प्रत्येक मंजिल में कैंटीन, थियेटर आदि है। 'शिक्षक भवन' शिक्षकों के लिये सचमुच एक स्वर्ग है, और उनको ज. ज. ग. के नये समाज में वास्तव में एक सम्मानपूर्ण स्थान दिया गया है।

मेरे विचार में, किसी राष्ट्र की सफलता तथा शक्ति का मापदण्ड यह है कि इसके बच्चे कितने स्वस्थ तथा खुश हैं, और सामान्य जीवन में इसके नर तथा नारियां कैसा व्यवहार करती हैं। मैंने ज. ज. ग. में बच्चों तथा नौजवानों को काफी स्वस्थ देखा, और मैंने वहां के नर-नारियों को बहुत परिश्रमी होने के साथ-साथ हंसते खेलते तथा व्यंग्य-विनोद करते हुए भी देखा। विलास-सामग्री उनको भले ही इफरात से उपलब्ध न हो, लेकिन जीवन की मूल आवश्यकतायें उनको निश्चित रूप से प्राप्त हैं। माध्यमिक कक्षा से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा मुफ्त मिलती है, छात्रवृत्तियां आम हैं, और डाक्टरी सहायता (दवाइयां इत्यादि) भी बिलकुल मुफ्त हैं। रिहायशी मकानों की समस्या भी सुलझाई जा रही है। कुछ रिहायशी-फ्लैटों को मैंने देखा भी। ये खूब आरामदेह थे और किराया भी उचित ही था। पूर्व जर्मनी में कुछ ही लोगों के पास अपनी मोटरकारें हैं, और टैक्सियां आसानी से नहीं मिलतीं।

मैंने यह भी देखा कि राज्य (सरकार) ने, (आर्थिक) प्रोत्साहन प्रदान करने की आवश्यकता को भी पहचान लिया है।

(शेष २० पृष्ठ पर)

श्री नवीन टी. खाण्डवाला, 'भारतीय विद्या भवन' बम्बई के सचिव हैं। इस वर्ष के आरम्भ में यूनेस्को (Unesco) के तत्वावधान में जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में जिस 'अन्तराष्ट्रीय बाल एवं युवक नाटक महोत्सव' का आयोजन हुआ, उसमें श्री खाण्डवाला भारत के प्रतिनिधि बन कर गये थे। श्री नवीन खाण्डवाला "यूनाइटेड एशिया" के सांस्कृतिक सम्पादक भी हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा से आप वहां से ये प्रभाव लेकर आये हैं।

दो जर्मन राज्यों का अस्तित्व : एक वास्तविकता

श्री कामराज की ज. ज. ग. यात्रा

हाल ही में, अखिल भारतीय कांग्रेस के प्रधान, श्री कुमारस्वामी कामराज, सोवियत–संघ तथा अन्य समाजवादी देशों की यात्रा करते हुये जर्मन जनवादी गणतंत्र पहुंचे। २ अगस्त के दिन वे, बर्लिन से चेकोस्लोवेकिया की राजधानी प्राग के लिये रवाना हुये।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा के दौरान श्री कामराज वहां के अनेक सरकारी अधिकारियों और सामान्य जनों से मिले। यात्रा की समाप्ति के दिन, विचारों के आदान प्रदान और बातचीत के लिये श्री कामराज बर्लिन स्थित मंत्रि-परिषद भवन में पधारे, जहां ज.ज.ग. के उप-प्रधान मंत्री, डा० गेरहार्ड वाइस्स ने उनका स्वागत किया। कांग्रेस प्रधान के साथ, मद्रास राज्य के उद्योग मंत्री, श्री वेंकटरमण और अन्य भारतीय अतिथि भी थे। इस अहम बातचीत में ज.ज.ग. के उप-विदेश मंत्री, श्री जार्ज स्टिबी; वहां के 'राष्ट्रीय मोर्चा' के उप-प्रधान, श्री किरखोफ, और भारत में जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री हरबर्ट फिशर भी शामिल हुये।

बातचीत के दौरान, ज.ज.ग. और भारत के बीच वर्तमान सम्बन्धों को और अधिक विकसित करने की संभावनाओं और एतद्सम्बन्धी प्रश्नों पर विशेषरूप से विचार किया गया। दोनों पक्ष इस बात पर एकमत थे कि दोनों देशों के लिये हितकर ऐसी अनेक संभावनायें अभी मौजूद और अछूती हैं जो दोनों देशों के विदेश-व्यापार एवं तकनीकी वैज्ञानिक सहयोग के सम्बन्धों को काफी विकसित करने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

ज.ज.ग. के इन उच्चाधिकारियों के अलावा, श्री कामराज ने वहां के कई राजनीतिज्ञों तथा अन्य अधिकारियों से भी बातचीत की। इनमें से विशेष उल्लेखनीय हैं: 'समाजवादी एकता पार्टी' के पोलिटकल ब्यूरो के सदस्य, प्रोफेसर नोरडन तथा श्री हरमान्न मार्टिन, ज.ज.ग. की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) के अध्यक्ष, प्रोफेसर डा० डीकमान्न, और वहां के उप-प्रधान मंत्री, डा० गेरहार्ड वाइस्स। इन महानुभावों के साथ अपनी बातचीत में, श्री कामराज ने यह बात स्पष्ट की कि भारतीय कांग्रेस पार्टी, प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी और सोवियत प्रधान

श्री कामराज, भारत स्थित. ज. ज. ग के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री हरबर्ट फिशर के साथ वार्तालाप कर रहे हैं

मंत्री कोसिगिन की, हाल ही की सह-विज्ञप्ति से पूर्णतः सहमत हैं और उसका समर्थन करती है। इस महत्वपूर्ण सरकारी दस्तावेज़ में (अर्थात सह-विज्ञप्ति में) यह घोषणा की गई है कि दो जर्मन राज्यों की ठोस वास्तविकता को नजरअन्दाज़ नहीं किया जा सकता और (यूरोप में) स्वीकृत वर्तमान सीमाओं को बदल देने के प्रयत्न खतरनाक परिणामों को जन्म देंगे। इसके अलावा सह-विज्ञप्ति में इस बात की आवश्यकता पर बल दिया गया है कि जर्मन समस्या को आपसी बातचीत और सुलह सफाई से हल करना चाहिये।

राज्य परिषद भवन में, ज.ज.ग. की संसद के अध्यक्ष, प्रोफेसर डीकमान्न ने श्री कामराज का स्वागत किया। इन दोनों नेताओं ने अन्तर्राष्ट्रीय वस्तु-स्थिति, शांति की सुरक्षा और भारत तथा ज.ज.ग के सम्बन्धों को अधिक विस्तृत एवं मजबूत करने पर बातचीत की। इस बात पर बल दिया गया कि दोनों राज्यों के वर्तमान सम्बन्धों को अधिक विकसित करना उपयोगी भी है और वांछनीय भी।

ज.ज.ग. के नेताओं एवं अधिकारियों से बातचीत की समाप्ति पर एक सरकारी घोषणा में श्री कामराज ने इस मत को प्रकट किया कि भारतीय कांग्रेस पार्टी, प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी की मास्को यात्रा के बाद वहां जारी की गई सह-विज्ञप्ति में, जर्मन प्रश्न के सिलसिले में व्यक्त विचारों से पूरी तरह सहमत है। . . .

श्री कामराज ने, ज.ज.ग. की राजधानी बर्लिन के निकट एक सहकारी-फार्म भी देखा। उनके साथ, ज.ज.ग. के भारतीय व्यापार दूतावास के प्रमुख श्री हरबर्ट फिशर भी थे। श्री कामराज, ज.ज.ग. की कृषि-प्रगति और विशेषकर सहकारी खेती की प्रगति से बहुत प्रभावित हुये। इस संबन्ध में उनको जो सूचना उपलब्ध की गयी, उसके लिये उन्होंने अपना आभार प्रदर्शन किया।

ज.ज.ग. में, "भारत–जर्मन मैत्री संघ" के एक आयोजन में, श्री कामराज की ओर से बोलते हुये, मद्रास राज्य के उद्योग मंत्री, श्री वेंकटरमण ने दोनों राज्यों द्वारा सामाजिक जीवन के सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अधिकाधिक सहयोग की आवश्यकता पर जोर डाला।

चेकोस्लोवाकिया के लिये रवाना होने के दिन, श्री कामराज को विदा करने के लिये ये महानुभाव हवाई अड्डे पर आये: ज.ज.ग. के 'राष्ट्रीय मोर्चा' के प्रधान, प्रोफेसर ई. कोरेन्स; ज.ज.ग. के उप विदेश मंत्री, जार्ज स्टिबी, और भारत में ज.ज.ग. के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री हरबर्ट फिशर।

जर्मन जनवादी गणतंत्र से पूर्ण सूती मिलें

कोकेट्ट--३ वार्प होजरी मशीन

कुछ ही सप्ताह पूर्व संयुक्त अरब गणराज्य के शेबिनएल कोम सूती मिल समूह के लिए अफ्रीका की धरती पर जब प्रथम मैलिमो मशीन उतारी गयी, तो समूह के संचालक कमाल वासेफ़ ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की टेक्सटाइल मशीनों के प्रति अपना पूर्ण संतोष व्यक्त किया। उनके जैसे विशेषज्ञ की राय का काफी वजन होता है। ज.ज.ग. की पांच सूत निकालने वाली मशीनों से जिनमें कुल १३८,००० तकलियां हैं--तथा तीन सूत शोधक प्लांट मंगाकर--जिनकी वार्षिक क्षमता ७५० लाख वर्ग मीटर कपड़ा बनाने की है--संयुक्त अरब गणराज्य ज. ज. ग. की मशीनों का, जिन्हें ७५ देशों का अनुभव हो चुका है, अच्छी तरह लाभ उठा रहा है।

ज. ज. ग. ने सोवियत संघ, हंगरी, क्यूबा, यूगोस्लाविया, चीन, ब्राजील तथा दूसरे देशों में ४६ विशाल सूती कारखाने खड़े किये हैं। प्राकृतिक धागों को परिष्कृत करने के लिए अब तक निर्यातित प्लान्टों के अलावा हाल ही में कृत्रिम धागों और कृत्रिम रेशम को परिष्कृत करने वाले प्लान्टों का भी निर्यात हुआ है।

पिछले दस वर्षों के दौरान ज. ज. ग. की टेक्सटाइल मशीनों का निर्यात तिगुने से ज्यादा बढ़ा है। इस उद्योग के उत्पादनों का ७० प्रतिशत से अधिक विदेश भेज दिया जाता है। साथ ही, मशीनों के डिजाइन के लाइसेन्सों की बिक्री व्यापक पैमाने पर होती है।
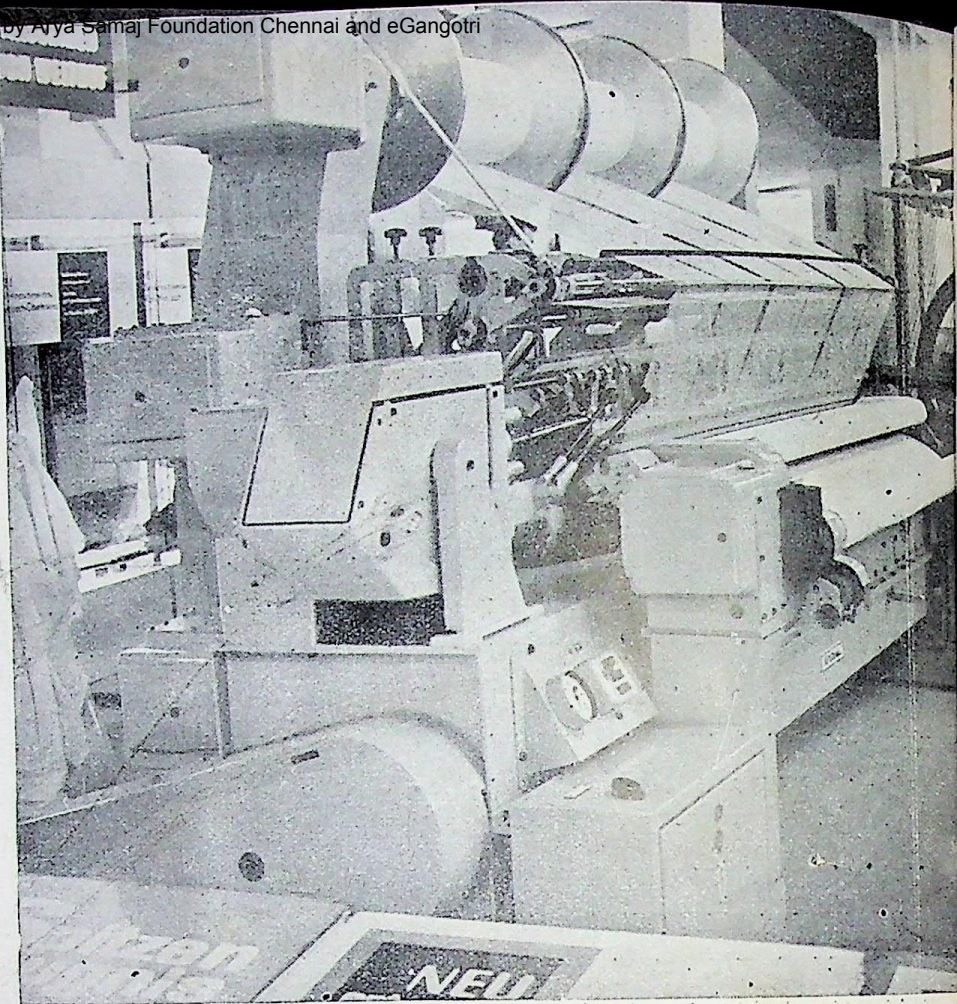
उदाहरण के लिए ब्रिटेन में बुनाई मशीनों के सबसे पुराने उत्पादक 'हैटरस्ली एन्ड सन्स' ज.ज.ग. के एक स्वचालित करघे ग्रिपिंग-शटल लूम की डिजाइन का लाइसेन्स खरीदने वाली पहली फर्म थी। इस मशीन द्वारा ऊनी धागों का उत्पादन अन्य मशीनों की तुलना में तिगुना अधिक है। मैलिमो लाइसेन्स की भी संसार भर में बहुत अधिक मांग है। अमरीकी फर्म 'काम्पटन एन्ड नोवलस' सीने और बुनने की तकनीक को खरीदने वालों में प्रथम थी।

बिक्री के लिए प्रस्तुत उत्पादनों में कृत्रिम रेशम और धागों का निर्माण करने वाली मशीनें, जो पाली-एक्रिलिनट्राइल धागों का निर्माण करती है, भी शामिल हैं। इन संयंत्रों से, जिनका प्रति मजदूर वार्षिक उत्पादन ६००० टन है, वर्ष भर में लगभग ४४०,००० मार्क का लाभ होता है। उत्पादन संयंत्रों के साथ ही ज. ज. ग. आसान उत्पादन वाली मशीनों की भी पूर्ति करता है, जो कृत्रिम रेशों तथा कपास और उन दोनों की मिलावट की प्रोसेसिंग करती हैं।

यह इस सामान्य प्रवृत्ति के अनुरूप है कि बाहरी पोशाकों के लिए कपड़ों की जगह बुने हुए कपड़े लेते जा रहे हैं। इसके लाभ: बुनाई मशीनें ज्यादा उत्पादन करती हैं, साथ ही सस्ती भी होती हैं। ज. ज. ग. में अनेक तरह की बुनाई मशीनों का उत्पादन होता है। ग्राहक छः माडलों और उनकी कुल चौदह किस्मों में से चुनाव कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए 'मल्टीप्लिक' नामक बुनाई मशीन में एक विशेष गुण-नियंत्रण उपकरण लगा है, जो खास तौर से पेचीदा डिजाइनों के निर्माण के लिए है। धागों की बुनाई में गलती होने पर मशीन रुक जाती है, संकेत लम्प बता देता है कि कहां पर गलती हुई है। चार रंग की बुनाई के लिए दूसरी बुनाई मशीनें बनाई गयी हैं।

(शेष पृष्ठ २१ पर)

ज. ज. ग. में जीवन-स्तर के ग्रांकड़े

सन् १९५९ तक, जर्मन जनवादी गणतंत्र में, कई बार वस्तुग्रों की क़ीमतों में कमी लाई गई, ग्रौर मूल्य-वक्र (प्राइस-कर्व) पर एक नज़र डालने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ग्राज तक क़ीमतें स्थिर रही हैं। इस संदर्भ में यह महत्वपूर्ण तथ्य ध्यान देने योग्य है कि १९६० से लेकर, स्थिर-कीमतों के साथ साथ यहां के उत्पादन गुणात्मक-दृष्टि से बहुत बेहतर हुये हैं। इसका ग्रर्थ है कीमतों में एक "ग्रदृश्य" कमी।

क़ीमतों की स्थिरता के साथ साथ, मज़दूरी में हर साल, वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

विभिन्न क्षेत्रों में मासिक ग्रौसत मज़दूरी (मार्कों में)

उद्योग	१९५५	१९६१	१९६२
	४५९	५९५	६१३
निर्माण	४४६	६२२	६३९
कृषि (सरकारी क्षेत्र)	३५७	५३२	५२५
परिवहन	४३३	६१६	६२३
यातायात	३४५	५३६	५५८
व्यापार	३६५	४९८	५०४
कुल ग्रौसत	४३२	५७८	५९२

विभिन्न वृत्तियों वाले लोगों की ग्रौसत मज़दूरी तथा वेतनों के निम्न ग्रांकड़े भी काफी दिलचस्प हैं। ये ग्रांकड़े सन् १९६४ के हैं, ग्रौर इनमें ग्राय-कर एवं समाज-बीमा भी सम्मिलित हैं जो प्रति मास लगभग १३ प्रतिशत होता है :

	प्रति मास ग्राय मार्कों में
इंजन चालक	६००— ८००
बस संवाहक;	४५०— ५५०
डाकिया	४१५— ५१५
टर्नर	६५०— ७००
मिल मशीनों के चालक	६००— ६५०
बिजली फ़िट्टर	६००— ७५०
मोटर मिस्त्री	४८०— ५७०
खदान मज़दूर	७२०— ८२०
सचिव	४५०— ५३०
विक्रेता (ग्रौरत)	३५०— ४५०
फोरमैन (मेटलर्जी)	६००— ०४०
इंजीनियर (मेटलर्जी)	७१५—१,७००
स्थानिक शल्य चिकित्सक	१,२००—१,६००
गोदी मज़दूर	६२०— ७२०

बढ़ता हुग्रा उपयोग

उत्पादन वृद्धि ग्रौर मूल्यों तथा मज़दूरी की स्थिरता के साथ साथ, उपभोग में भी वृद्धि होती रही। यह प्रवृत्ति, जीवन-स्तर के बढ़ने ग्रौर विकसित होने का विश्वस्त लक्षण है। ग्राज ज. ज. ग. के लोग, ग्रालू (जो उनका मुख्य ग्राहार है) कम ग्रौर मांस तथा मछली एवं शराब ग्रधिक खाते पीते हैं (शराब यूरोप के लोगों के खान पान का एक ग्रभिन्न ग्रंग है, हमारे यहां की चाय तथा काफी की तरह——सं.)। ज. ज. ग. के लोगों के, उपभोग सम्बन्धी ग्रांकड़ें उनके बढ़ते जीवन-स्तर का एक ग्रौर प्रमाण है :

प्रति व्यक्ति उपभोग (क़िलो ग्रामों में)

खाद्य-पदार्थ	१९५५	१९५८	१९६३
मांस ग्रौर सासेंज	४५.०	५०.२	५६.०
ताज़ी ग्रौर डिब्बा बन्द मछली	१२.२	११.७	१३.७
मक्खन	९.५	११.७	१२.३
ग्रालू	१७४.६	१६७.९	१५८.८
शराब ग्रौर शैम्पेन	१.७	१.९	४.०
बियर	६८.५	७६.५	७६.९

सन् १९६३ में, ज.ज.ग. में, चार व्यक्तियों का एक परिवार विभिन्न मद्दों पर ग्रपना खर्च इस प्रकार बांटता था:

खाद्य	४१.९ प्रतिशत
कपड़े तथा जूते	११.९ ,,
ग्रौद्योगिक उत्पादन	१५.८ ,,
किराया	३.९ ,,
परिवहन	१.३ ,,
बिजली, पानी, गैस	१.४ ,,
कर, बीमा इत्यादि	१७.२ ,,

सन् १९६४ में, ज. ज. ग. में २६२ ००० कपड़े धोने की मशीनें (प्रति ५ परिवारों में १) ग्रौर ५३५,००० टेलीविजन (प्रति ३ परिवारों में १) थे। मोटर कारों की संख्या भी निरन्तर बढ़ रही है। सन् १९५५ में ज. ज. ग. में केवल २२,००० मोटर कारें थीं। सन् १९६५ में इनकी संख्या बढ़कर ८२,००० तक पहुंच चुकी थी।

नये और सुन्दर रिहायशी मकान . . .
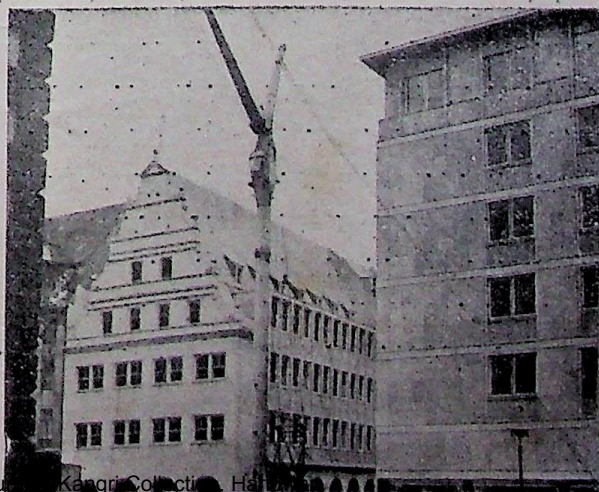
भारत-ज.ज.ग. सहयोग का प्रतीक

केरल में प्रीमियर केबल कारखाना

हांस विक्टर क्राइपे

(नई दिल्ली स्थित ज.ज.ग. के रेडियो तथा टेलीविजन के विशेष संवाददाता)

कारुकुट्टी, केरल के प्रीमियर केबल कारखाने के उद्घाटन समारोह की टेलीविजन फिल्म तैयार करने के लिए मुझे जुलाई के प्रारम्भ में मानसून के समय एर्नाकूलम जाने के लिए कहा गया तो मुझे थोड़ी घबड़ाहट हुई। आप जानते होंगे, फिलमों की शूटिंग के लिए तेज़ रोशनी की जरूरत होती है और जब लगातार वर्षा हो रही हो तो सब कुछ चौपट हो जाने का खतरा रहता है। इसीलिए अपने इस अभियान के सफल होने की मुझे ज़रा भी उम्मीद नहीं थी। और सचमुच, केरल के उस हिस्से में मैं जितने दिन रहा लगातार बारिश होती रही, सिर्फ उस दिन को छोड़कर जिस दिन उद्घाटन होने वाला था। उस दिन सात जुलाई थी।

उस दिन कारुकुट्टी में, जो एर्नाकूलम से २५ मील दूर एक छोटी सी जगह है, आसमान एकदम साफ और चमकीला था। जैसे उद्घाटन समारोह में बाधा न पहुंचाने के लिए सारे बादल थोड़ी देर के लिए छंट गये थे। कारखाना स्थल वास्तव में सुन्दर है। कारखाने का मुख्य उत्पादन-कक्ष लगभग ३०० फुट लम्बा है और आधुनिक स्थापत्य शैली में अर्थात् ऐसी डिज़ाइन में बना है जिससे वह वायु और वर्षा से अप्रभावित रहे। वर्कशाप, गोदाम और कार्यालय भवन भी इसी शैली में बने हैं जो ताड़के पेड़ों और चावल तथा टेपिओ के हरे खेतों की सुन्दर पृष्ठ भूमि में जैसे एकाकार हो जाते हैं।

मुख्य हाल के अन्दर मशीनों के रखने के अभिनव और दक्षतापूर्ण ढंग से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा जा सकता। तार खींचने वाली मशीनों के पहले समूह से लेकर तारों को बटने वाली मशीनों तक और उन पर खोल चढ़ाने वाली तथा पी. वी. सी. कोटिंग करनेवाली मशीनों से लेकर उनका परीक्षण करनेवाली मशीनों तक सारे हाल में अबाध गति से माल पहुंचता रहेगा, और उसकी ढुलाई के लिए अलग से व्यवस्था नहीं करनी पड़ेगी।

ज. ज. ग. का कोई भी पत्रकार उस कारखाने की—पी.वी. सी. कोटिंग विभाग की तीन मशीनों को छोड़कर—सारी मशीनों पर जर्मन जनवादी गणतंत्र में निर्मित सूचना पट्ट लगा देख कर गर्व का अनुभव करेगा। मागडेबुर्ग (ज.ज.ग.) अर्न्स्ट थेलमान नामक भारी इंजीनियरिंग कारखाने ने इस केबल कारखाने की अधिकांश मशीनों की पूर्ति की है। सारे कारखाने की डिजाइन और उसका निर्माण मेसर्स प्रीमियर केबल कम्पनी और ज. ज. ग. के बर्लिन स्थित केबल ओबरस्प्री अनुबंध के आधार पर किया गया। इस अनुबंध के अनुसार बर्लिन के कारखाने ने १० भारतियों को प्रशिक्षित भी किया और अब ये कारुकुट्टी कारखाने के विभिन्न विभागों के प्रधान हैं।

कारुकुट्टी कारखाने का उद्घाटन करते हुए भारत के गृह-मंत्री श्री गुलजारी लाल नन्दा ने केरल के अनेक प्रमुख अधिकारियों और एर्नाकुलम के गणमान्य लोगों के समक्ष कहा कि भारत-ज. ज. ग. के सहयोग का यह नमूना इसलिए विशेषरूप से स्वागत के योग्य है कि यह केरल के लोगों को काम देने का एक नया साधन होगा। केरल में जनसंख्या का भार, भारत में सबसे अधिक है और वहां बेकारी भी सब से ज्यादा है। श्री नन्दा ने यह भी कहा कि यह कारखाना भारत की चौथी पंचवर्षीय योजना को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा, क्योंकि उस योजना में देश की विद्युत उत्पादन क्षमता को दूना करने तथा १ लाख और अधिक गांवों तक बिजली पहुंचाने का लक्ष्य है।

प्रीमियर केबल के प्रबन्धकारी संचालक श्री पेरीवाल ने इस अवसर पर उन सब लोगों को धन्यवाद दिया जिनके अथक परिश्रम से इस कारखाने की स्थापना संभव हुई। उन्होंने ज. ज. ग. के विशेषज्ञों का विशेष रूप से उल्लेख किया। उन्होंने, जैसा कि श्री पेरीवाल ने बताया, निर्माण कार्य के हर कदम पर पूर्ण सहयोग दिया और कारखाने के शिलान्यास के बाद बीस महीने की अल्पावधि में ही उसका निर्माण-कार्य पूरा कर दिखाया। उन्होंने केबल वर्क्स ओबरस्प्री, बर्लिन के संचालक श्री पोहलर को, जो उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित थे, विशेष रूप से धन्यवाद दिया, क्योंकि उन्होंने प्रारम्भ से ही कारखाने में अत्यधिक रूचि दिखायी थी।

ज. ज. ग. के व्यापार-प्रतिनिधि और वाणिज्य दूत हांस लेमनिट्ज़र ने आश्वासन दिया कि ज. ज. ग. इस कारखाने के विस्तार में भी सहयोग करने के लिए हमेशा तैयार रहेगा। कारखाने के विस्तार पर बातचीत चल भी रही है, और उसमें ज. ज. ग. का सहयोग इस सच्ची बात का कि भारत ज. ज. ग. मैत्री के मूल्यवान फल निरंतर उग रहे हैं, एक और उदाहरण होगा।

श्री नन्दा ने बटन दबाकर जब कारखाने का कार्य शुरू होने का संकेत दिया तो लोग मुख्य उत्पादन-कक्ष में गये जहां अलमुनियम के कच्चे तारों से उच्च क्षमता वाले बिजली के तार बन रहे थे और उन पर लाल, काली, नीली, पीली या हरी पी. वी. सी. कोटिंग हो रही थी।

प्रबंध संचालक पेरीवाल, बर्लिन से आये महानिदेशक पोहलर और सभी दूसरे मेहमानों के होठों पर संतोष की मुस्कान थी। और मैं भी संतुष्ट था, क्योंकि साफ आसमान मुस्करा रहा था और टेलिविजन फिल्म बनाने के लिए अच्छी रोशनी थी।

चिट्ठी-पत्री

मान्यवर महोदय,

वर्तमान युग में विज्ञान ने इतनी उन्नति कर ली है कि स्थानों की दूरी का कोई भी महत्व नहीं रहा है । विश्व के किसी भी भाग में आज के आधुनिक जैट कुछ ही समय में पहुंच सकते हैं । लेकिन विज्ञान दिलों की दूरी को अभी समाप्त नहीं कर सका है । महान् शक्तियां आपस में शांतिपूर्वक नहीं रहतीं । एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश कर रही हैं । यह बड़े ही दुःख की बात है । मगर हमें यह देखकर अतीव प्रसन्नता है कि भारतीय जनता की तरह आपके महान देश की वीर जनता भी शांति में पूर्ण विश्वास रखती है । भारत और पूर्वी जर्मनी के बीच मित्रता और सच्चा प्रेम है । हमें आशा है कि दो महान् राष्ट्रों की यह मित्रता दिन प्रतिदिन बढ़ती रहेगी । श्रीमान जी मैंने सुना है कि आपके महान् देश में अनेक विदेशी युवक उच्च शिक्षा तथा श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं । मेरी भी हार्दिक कामना आपके महान् देश में ज्ञान तथा शिक्षा प्राप्त करने की है । मैं आपके सुन्दर देश तथा वीर जनता के दर्शन करना चाहता हूं । मैंने सुना है कि आपके सूचना विभाग से हिन्दी, अंग्रेजी भाषाओं में कई पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं, जिनसे आपके महान् देश तथा वीर जनता के दर्शन होते हैं । कृपया ऐसी कोई पत्रिका मेरे पास भी भेजने की कृपा करें । पत्र का उत्तर जल्दी देवें ।

आपका
बृजमोहन शर्मा
पानीपत (**पंजाब**)

प्रिय सम्पादक जी,

पिछले एक वर्ष से मैं 'इन्फमशन बुलेटिन' प्रति माह पढ़ता रहा । घर में छोटे भाई भी इस पत्रिका में काफी दिलचस्पी लेने लगे और वे इसके हिन्दी संस्करण की मांग करने लगे । सो उनके लिये **सूचना पत्रिका** मंगानी पड़ी ।

जुलाई ६६ से अब तक 'सूचना पत्रिका' पढ़ रहा हूं । भूगोल और इतिहास का विद्यार्थी होने से मुझे तथा मेरे परिवार को यह पत्रिका बहुत ही पसन्द आई । जर्मन जनवादी गणतंत्र का सच्चा रूप हमें प्राप्त हो जाता है ।

जुलाई अंक में "आज विद्यार्थी को क्या सीखना चाहिये" प्रोफेसर डा० मोएले का लेख, ज. ज. ग. में शिक्षाप्रणाली के सुन्दर रूप को प्रस्तुत करता है जो अनुकरणीय है ।

मेरा एक सुझाव है कि 'सूचना पत्रिका' में एक ऐसा भी कालम हो जिस में हम पाठकगण आपसे प्रश्न पूछ सकें और आप उत्तर दे सकें ।

यू० एस० पाठक
बिलासपुर (**म० प्र०**)

प्रिय सम्पादक जी,

सूचना पत्रिका प्राप्त हुई । बहुत अच्छी है । प्रो० कार्ल यासपर्स का 'पश्चिमी जर्मनी किधर जा रहा है' तथा मानुस एन्सेवसबर्ग की 'जर्मन प्रश्नोत्तरी' पश्चिमी जर्मनी की राजनैतिक गतिविधियों का पहलू प्रकट करती है । पश्चिमी जर्मनी के विषय में दोनों लेखों में पाठक को बहुत कुछ प्राप्त होता है ।

भवदीय
पंजाबराव माकोड़े
डूंगरिया (**म० प्र०**)

मान्यवर महोदय,

आपकी **सूचना पत्रिका** देखने का शुभअवसर मिला । वास्तव में यह पत्रिका जर्मन जनवादी गणतंत्र की गतिविधि से परिचय कराती है । ग्रामीण अंचल में रहने वाले हम लोग यह आदर्श पुस्तकालय स्थापित किये हैं । हम लोगों की प्रबल इच्छा है कि हम जर्मन जनवादी गणतंत्र के साहित्य व संस्कृति का अवलोकन करें तथा जर्मन लेखकों व कवियों की विचारधारा से अवगत होयें । यह तभी संभव है, जब आप भी हमें सहयोग देकर कृतार्थ करें ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन **सूचना पत्रिका** तथा अन्य पत्रिकायें हमें निरन्तर भेजते रहें । आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप अपने साहित्य को समय पर भेज कर कृतार्थ करेंगे । विशेष कृपा होगी ।

भवदीय
अमर लाल शाह
मंत्री, आदर्श पुस्तकालय,
सिजुवा बाजार, (**नेपाल**)

सम्पादक जी,

हिन्दी में प्रख्यात साहित्यकार श्री शिवमोहन लाल वास्तव की निजी लाइब्रेरी में आपकी **सूचना पत्रिका** पढ़ी । पत्रिका मुझे बहुत अच्छी लगी । मैं इसका ग्राहक बनना चाहता हूं ।

भवदीय
डब्लू लाल 'निडर'
दतिया (**म० प्र०**)

'सूचना पत्रिका'

जो पाठक, मासिक **सूचना पत्रिका** को प्राप्त करना चाहते हों, वे **दो रुपये** वार्षिक चन्दा **भेज दें** । इसके बाद **पत्रिका** नियमित रूप से उनको मिलती रहेगी । चन्दे की दर इस प्रकार है :

वार्षिक	:	२)
अर्ध वार्षिक	:	१)

लाइपज़िग व्यापार मेला

परिणाम : एक नज़र में

१९६६ के वसन्तकालीन लाइपज़िग मेले में ७० देशों के १०,५५५ प्रदर्शकों ने भाग लिया। इन प्रदर्शकों के प्रदर्शन-मण्डप ३५२,००० वर्ग मीटर (लगभग ३,७९१,००० वर्गफुट) के क्षेत्रफल पर फैले थे।

यह मेला देखने के लिये ६९०,५०० दर्शक तथा खरीदार लाइपज़िग आये, जिनमें ९०,५०० व्यक्ति दुनिया के अन्य देशों से आये।

सत्रह देशों ने अपने सरकारी प्रतिनिधि - मण्डल लाइपज़िग के इस मेले में भेजे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के 'चेम्बर आफ टेक्नालोजी' ने विचार-गोष्ठियों का एक विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किया जिस में मेले में आये हुये हज़ारों प्रदर्शकों, इंजीनियरों, उत्पादन एवं अर्थतंत्र के विशेषज्ञों ने और वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

ज. ज. ग. के मण्डपों ने प्रदर्शन-मैदान का २३२,००० वर्ग मीटर (लगभग २,४९७,००० वर्गफुट) स्थान घेर लिया था। इन मण्डपों में ज. ज. ग. ने अन्य वस्तुओं के अलावा, अपनी १५,००० नव-विकसित चीज़ें भी प्रदर्शित की थीं।

सोवियत संघ से ३२७ औद्योगिक उद्यम और २० विदेश व्यापार संगठन, मेले में भाग लेने आये थे। इनके प्रदर्शन-मण्डप १३,००० वर्गमीटर (लगभग १४०,००० वर्गफुट) क्षेत्रफल पर फैले थे।

यूरोप के पूंजीवादी देशों के प्रदर्शकों ने, अपनी वस्तुओं को प्रदर्शित करने के लिये, प्रदर्शन मैदान की ३८,५०० वर्ग मीटर (लगभग ४१४,००० वर्गफुट) जगह घेर ली थी।

पश्चिमी जर्मनी की १,०७१ व्यापार-फर्मों ने ३१,४०० वर्ग मीटर (लगभग ३३८,००० वर्गफुट) जगह ले ली थी।

पश्चिम बर्लिन से, इस मेले में, १४८ फर्में भाग लेने आई थीं, और उन्होंने अपने प्रदर्शन-मण्डपों के लिये लगभग ५,००० वर्ग मीटर की जगह घेर ली थी।

समुद्रपार देशों से ३५ देश मेले में भाग लेने आये थे। इन्होंने प्रदर्शन-मैदान के ७,००० वर्ग मीटर (लगभी ७६,००० वर्गफुट) क्षेत्रफल पर अपने मण्डप फलाये थे।

समुद्रपार देशों में, इस बार भी भारत सबसे बड़ा प्रदर्शक था। भारतीय प्रदर्शन-मण्डप १,४७० वर्ग मीटर (लगभग १६,००० वर्गफुट) पर फैला था।

सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शित वस्तुओं पर ११८ स्वर्ण-पदक और डिप्लोमा दिये गये।

मेले के 'अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस केन्द्र' के आंकड़ों के अनुसार, लाइपज़िग के इस व्यापार मेले में १,४८५ पत्रकार आये थे। इनमें पश्चिमी जर्मनी, पश्चिम बर्लिन और अन्य देशों के ८९९ विदेशी पत्रकार भी शामिल थे।

ज.ज.ग. यात्रा . . .

(पृष्ठ १४ का शेष)

ज. ज. ग. में ऐसी भी योजनायें और उद्यम हैं जिनमें राज्य (सरकार) और व्यक्तियों का साझा है। वस्तुओं के दाम एक हैं, चाहे आप डिपार्टमेन्ट-भण्डार से लीजिये अथवा किसी बाज़ार की किसी दुकान से।

पिछले ८०० वर्षों से, लाइपज़िग में हर साल विश्व-व्यापार मेले लगते आये हैं। यह एक रिकार्ड है। ज. ज. ग. का यह नगर विश्व-व्यापार तथा उद्योग का एक मिलन-स्थल बन चुका है। यहां के शानदार प्रदर्शन मण्डपों में दुनिया के विभिन्न देशों के उत्पादन रखे गये हैं। सोवियत संघ का मण्डप सबसे प्रभावशाली था। प्रदर्शित वस्तुओं के साथ-साथ, अन्तरिक्ष यात्रियों के प्रदर्शन ने इस मण्डप को मानव भावना का स्पर्श प्रदान किया था। लाल चीन के मण्डप में प्रदर्शित वस्तुएं देखने से पता चलता है कि उसने न केवल बड़े उद्योगों में ही बल्कि ट्रांसिसटर जैसी छोटी-छोटी चीज़ें पैदा करने में भी बहुत उन्नति की है। भारतीय प्रदर्शन-मण्डप तो दर्शकों से खचाखच भरा था। वे भारत की वस्तुओं विशेषकर, हस्तकला की वस्तुओं में बहुत रुचि ले रहे थे। मैंने यह महसूस किया कि मूर्तियों को (सड़ियां) ओढ़ाने के बजाय यदि सुन्दर भारतीय नारियों को ही साड़ियां ओढ़ा कर साड़ियों का प्रदर्शन किया जाता तो अधिक लाभदायक होता। इससे वहां नया फैशन शुरू हो जाता और इस तरह भारतीय साड़ी के लिये नया बाज़ार मिल जाता।

ज. ज. ग. में नारियां पुलिस, ट्रैफिक-नियन्त्रण, रेल-गार्ड, और टैक्सी-चालकों जैसे असामान्य क्षेत्रों में भी काम करती हैं। वहां धार्मिक कार्यों पर भी कोई प्रतिबन्ध नहीं है। मैं स्वयं एक चर्च में उपासना (सर्विस) के लिये गया। युद्ध में क्षतिग्रस्त ५४ गिरजा-घरों की मरम्मत हो चुकी है, और इस मरम्मत के लिये सरकार तथा लोगों ने धन दिया है।

ज. ज. ग. में कच्चे माल तथा पूंजी की कमी है। और नाकाफी जन-बल (मैन पावर) के कारण वहां कुछ कठिनाइयां भी हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र आज, यूरोप और दुनिया के औद्योगिक देशों में क्रमशः पांचवें और दसवें स्थान पर आसीन है। वहां कीमतें स्थिर हैं, और रहन सहन के मूल्यों में कमी आती जा रही है।

भारतीय बच्चे :
ज. ज. ग. की सद्भाव-यात्रा पर

१४ जुलाई (१९६६) के दिन, भारत के चार बच्चे जर्मन जनवादी गणतंत्र के लिये रवाना हुये। ये बच्चे, ज.ज.ग. के पायोनियर बाल संगठन के निमंत्रण पर वहां गये। यह निमंत्रण 'अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक फोरम' नामक भारतीय बाल संगठन को भेजा गया था।

ये चार खुशकिस्मत बच्चे और उनकी नेत्री कुमारी पूर्णिमा जायसवाल, ज. ज. ग. के एक अन्तर्राष्ट्रीय पायोनियर बाल शिविर में ३५ दिन बिताकर स्वदेश लौटेंगे।

ज. ज. ग. की यात्रा पर रवाना होने से पहले ये बच्चे भारत के उप-राष्ट्रपति, डाक्टर ज़ाकिर हुसैन; प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी; रक्षा मन्त्री यशवन्तराव चौहान; रेलमन्त्री एस.के. पाटिल, और कई राज्यों के राज्यपालों तथा मुख्यमन्त्रियों से मिले और इनसे आशीर्वाद प्राप्त किये। इस तरह भारत के बालक, न केवल भारतीय बच्चों की शुभकामनायें लेकर ही रवाना हुये बल्कि वे भारत के इन अनेक महानुभावों एवं नेताओं का शुभ-आशीर्वाद लेकर भी ज.ज.ग. गये हैं।

अपनी इस प्रथम विदेश यात्रा में, ये भारतीय बच्चे नये अनुभव प्राप्त कर रहे हैं। यात्रा पर जाने से पहले इन बच्चों ने भारत के अनेक गीत याद किये थे ताकि वे जर्मन बच्चों को भारतीय संस्कृति की एक झलक दिखा सकें।
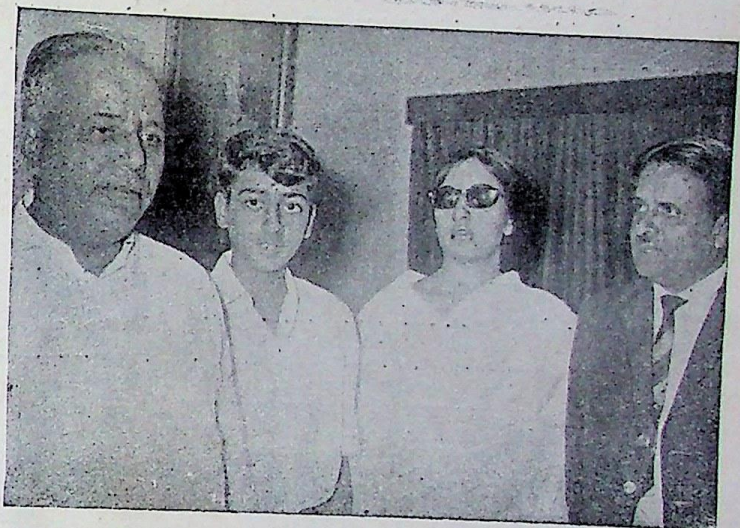
ज. ज. ग. के उक्त बाल-शिविर में भारत के इन नन्हें मेहमानों का बहुत अच्छा स्वागत हुआ।

ज.ज.ग. से पूर्ण सूती मिलें

(पृष्ठ १६ का शेष)

साथ ही, ये मशीनें उन रंगों को कई तरह से बुन सकती हैं।

ज. ज. ग. की ताना बनाने वाली होजरी मशीनें सर्वाधिक बहुउद्देशीय मशीनों में से हैं। 'कोकेट्ट'-क्रम में से इस तरह की मशीनों को लाइपज़िग मेले तथा अन्तर्राष्ट्रीय ब्रनो मेले के स्वर्णपदक प्राप्त हो चुके हैं। वे विभिन्न प्रकार के रेशा और कपास के धागों से महिलाओं के अण्डर वियर, पुरुषों की कमीजें, पर्दे, तकनीकी कपड़ तथा सजावट की वस्तुओं इत्यादि को निर्मित करती हैं। 'कोकेट—२' मशीन एक घंट में २,३६२ मिली-मीटर चौड़ाई का ३५ मीटर कपड़ा तयार करती है।

संभवत: तकनालाजी के महान प्रयोगों में से एक का जन्म ज. ज. ग. में हुआ, जहां कि ५०० वर्ष पुराने बुनाई के तरीके को तुलनात्मक रूप से अधिक उत्पादक 'माली' नामक सिलाई और बुनाई की तकनीक द्वारा सुधारा गया। १९६६ से ज. ज. ग. द्वारा नई तकनीकों के अनेक तरह से उपयोग के लिए निर्मित मशीनों की डिजाइनें बुनियादी तौर पर एक समान होती हैं। इस डिजाइन का निर्माण इकाइयों के आधार पर किया गया है। सभी तरह की मशीनों के ढांचे में पुर्जों का ९१ प्रतिशत एकरूप किया जा चुका है।

'मालिमो' सिलाई और बुनाई की मशीनें इतनी अधिक आधुनिक हैं कि वे पूर्णतया कृत्रिम रेशों को एसे धागों में प्रासेस करने में सक्षम हैं, जिनसे पोशाकें तैयार की जा सकती हैं। एक कनफक्सन-प्लांट प्रत्येक ढाई मिनट में एक महिला की पोशाक तैयार कर देता है।

'मालिमो' तथा 'मलिवाट्ट' मशीनें एक घंटे में १८० मीटर धागा तैयार कर देती हैं। जबकि एकदम शुरू में 'मलिवाट्ट' मशीनें मात्र इन्सुलेटिंग पदार्थ और अस्तर तैयार कर पाती थी, अब यह गाउनों, ब्लाउज़ों और फ्राकों के कपड़े भी तैयार कर देती हैं।

वियतनाम के साथ ज. ज. ग. की एकता

१९६५ के मध्य से ज. ज. ग. की अफ्रीकी एशियाई एकता समिति के वियतनाम एकता कोष को ७० लाख मार्क जनता से दान के रूप में प्राप्त हो चुका है। यह सूचना समिति के मंत्री विली जाह्लबान ने दी है। ज. ज. ग. की जनता ने वियतनामी जनता के खिलाफ अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके पिछलग्गुओं की मुजरिमाना आक्रामक कार्रवाइयों का जवाब वियतनाम के साथ एकता प्रदर्शन की शक्तिशाली कार्रवाइयों से दिया है। यह एकता प्रदर्शन विरोधी प्रस्तावों और प्रदर्शनों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सामानों और वस्तुओं की सहायता के रूप में है। साम्राज्यवाद के विरुद्ध वियतनाम और ज. ज. ग. की जनता का संयुक्त संघर्ष १० हजार किलोमीटर दूर के दो राष्ट्रों को जोड़ता है।

पिछले मार्च में वियतनाम एकता सप्ताह के दौरान ६५ लाख ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं ने १७ लाख मार्क एकत्र किया, जो पिछले वर्ष इसी माह में एकत्र धन-राशि से अधिक था। इसके अतिरिक्त उन्होंने एक जल-शुद्धि-करण प्लांट, दो एम्बुलेन्स गाड़ियां, धातुविद खादें, हल्के रेडियो सेट, सायकिलें और दूसरे बहुत से सामान भी भेजे।

ज. ज. ग. के अस्पतालों ने ३ लाख मार्क के चिकित्सा सम्बंधी औज़ार भेजे। ५३ हज़ार लोगों ने, जिनमें ३० हज़ार युवक थे वियतनाम के लिए रक्त दान किया।

ज. ज. ग. के समाजवादी युवक संघ की प्रत्येक शाखा ने किसी-न-किसी प्रकार अमरीकी आक्रामकों से युद्ध कर रही बहादुर वियतनामी जनता के साथ अपने एके का प्रदर्शन किया। इस वर्ष के पहले तीन महीनों में उन्होंने जनता से १ लाख ४६ हज़ार मार्क चंदा एकत्र किया लेकिन मई के अंत तक वह राशि बढ़ कर साढे चार लाख मार्क हो गयी। एरफुर्द जिले के युवक पायनियरों ने कबाड़ बेच कर ३८ हज़ार ५०० मार्क इकट्ठा किया और उसे वियतनाम फण्ड को दे दिया। ड्रेसडेन जिले के युवक पायनियरों ने वियतनाम में अमरीकी आक्रमण तुरंत खत्म करने की मांग के साथ १ लाख ७ हज़ार ६१ व्यक्तियों का हस्ताक्षर इकट्ठा किये। ज. ज. ग. के दस्तकारों ने एकता प्रदर्शन की इस कार्रवाई में १० लाख मार्क इकट्ठा करके हिस्सा लिया। चित्रकारों और कलाकारों ने अपने चित्रों की बिक्री से हुई आय और संगीतज्ञों और अभिनेताओं ने अपने अतिरिक्त कार्यक्रमों से हुई सारी आय वियतनाम एकता कोष को दे दी।

इस एकता कार्रवाई की एक मुख्य बात थी अनेक नगरों में युवकों की सभाएं। जब एक वक्ता ने रोस्टोक की सभा में ५७ सायकिलों का चंदा प्राप्ति होने की घोषणा की तो एक युवक ने उठकर उन्हें ५८ वीं सायकिल के लिए इकट्ठा किया गया चंदा दे दिया।

वस्तुओं के रूप में जनता ने १ करोड़ मार्क का दान अब तक दिया है जिसमें ज.ज.ग. के स्वतंत्र ट्रेड यूनियन संघ और दूसरे जन संगठनों का भी चंदा शामिल है। इसके साथ ही सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने वियतनाम की स्वतंत्रता की लड़ाई का सीधे-सीधे समर्थन किया है।

तथ्य और आंकड़े

वृद्धि के आंकड़े

१९६८ के प्रथम छः महीनों में जर्मन जनवादी गणतंत्र की राष्ट्रीय आर्थिकी से सम्बंधित, "सांख्यकी का केन्द्रीय प्रशासन" ने, हाल ही में, कुछ दिलचस्प आंकड़े प्रकाशित किये हैं। उनमें से कुछ ये हैं:

उद्योग: उद्योग के क्षेत्र में वस्तुओं का उत्पादन ६.६ प्रतिशत बढ़ा, और श्रम-उत्पादकता में ६.६ प्रतिशत की वृद्धि हुई। इससे मुनाफा भी बहुत अच्छा हुआ।

निर्यात: ज. ज. ग. के निर्यात में ४ प्रतिशत की वृद्धि हुई। निर्यात वस्तुओं में विशेषकर मशीनों और उपकरणों का अधिक निर्यात हुआ।

पशु उत्पादन के लक्ष्य में ४.७ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

पिछले वर्ष की तुलना में राज्य-सहायता प्राप्त फैक्ट्रियों के उत्पादन में १११ प्रतिशत की, और निजी उद्यमों के उत्पादन में १०७ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

दस्तकारों ने भी अपनी वस्तुओं के उत्पादन में १०८ प्रतिशत की वृद्धि की।

स्कूल और शिक्षक

सन् १९४५ (दूसरे महायद्ध की समाप्ति पर), जर्मनी के वर्तमान, जर्मन जनवादी गणतंत्र के भाग में ७८ प्रतिशत शिक्षकों को मुअत्तल किया गया। ये शिक्षक सक्रिय नात्सी थे। ... १९४५-४६ के स्कूल वर्ष में १५,००० "नये शिक्षक" भरती किये गये। ये मजदूर वर्ग से आये थे और इनको चन्द हफ्तों की ट्रेनिंग देकर शिक्षण का कार्य सौंप दिया गया था। सन् १९४६-४८ के शिक्षा-सत्र में २५,००० और नये शिक्षक भरती किये गए।

सन् १९४९ में, जब जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना हुई, जर्मनी के इस भाग में कुल ६५,२०७ शिक्षक थे जिनमें ४५,२४४ "नये शिक्षक" थे।

आज, जर्मन जनवादी गणतंत्र में कुल १२८,८७७ प्रशिक्षित शिक्षक हैं। इनमें ९३ प्रतिशत शिक्षकों को सन् १९४५ से ट्रेनिंग दी गई है।

दूसरे महायुद्ध की समाप्ति पर, ज. ज. ग. की ११,००० स्कूल-इमारतों को भारी क्षति पहुंची थी या वे तबाह हुई थीं। उदाहरण के लिए लाइपजिग के कुल १०५ स्कूलों में से केवल २० स्कूल तबाह होने से बचे थे, और बर्लिन के ६०८ स्कूलों में से १२४ स्कूल बिलकुल नष्ट हुए थे।

आज जर्मन जनवादी गणतंत्र में स्कूलों के लिये इमारतों का निर्माण, मांग के अनुसार व्यापक रूप से बढ़ता जा रहा है। ...

सन् १९५१ तक जर्मन जनवादी गणतंत्र में, बुनियादी शिक्षा की अवधि आठ साल थी (६ से १४ वर्ष की आयु तक), और केवल १६ प्रतिशत विद्यार्थी ही इसके बाद शिक्षा पाते थे। सन् १९६० तक, ६५ प्रतिशत छात्र छात्रायें ९ या १० लाख तक की शिक्षा प्राप्त करते थे। आज यह अनुपात ७२ प्रतिशत तक पहुंच चुका है।

भारत—ज. ज. ग. निर्माण के सहयोगी

उड़ीसा में ज. ज. ग. की दी हुई एक चावल मिल का उद्‌धाटन...

अपनी ज.ज.ग. यात्रा में, श्री तुषार कांति घोष, ज.ज.ग. की संसद के अध्यक्ष, प्रोफ़ेसर डीकमान से मिले

...चावल मिल के उद्‌घाटन के बाद भारत सरकार के खाद्य-उप मंत्री, श्री ए. शिन्दे भाषण कर रहे हैं

बर्लिन में आयोजित, कलकत्ता के चित्रकार श्री निखिल विश्वास के चित्रों की प्रदर्शनी ...

रजि० नं० डी-१३३०
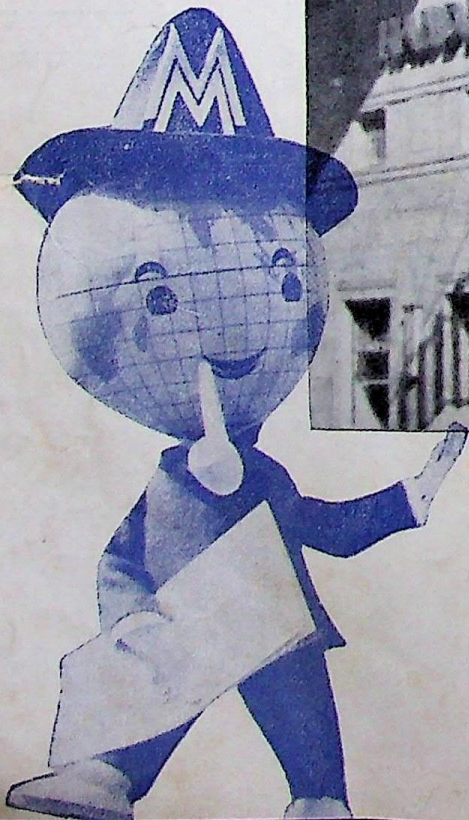
संपर्क

लाइपज़िग : व्यापार का माध्यम है

सूचना पत्रिका

७, अक्तूबर
१९६६
के दिन
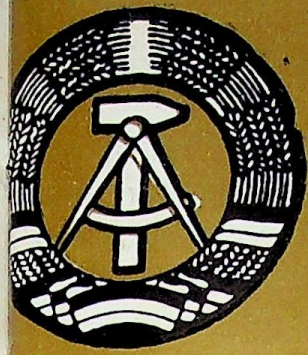
जर्मन
जनवादी
गणतंत्र
ने
१७ वर्ष
पूरे
किये

जर्मन
जनवादी

१०

वर्ष ११
अक्तूबर
१९६६

…व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ११
अंक १०
२० अक्तूबर, १९६६

संकेत

मुख पृष्ठ : श्री हरबर्ट फिशर, जो गांधीजी के साथ वर्धा-आश्रम में कई साल रहे हैं, निस्तौली गांव में चरखा कात रहे हैं

अंतिम पृष्ठ : निस्तौली ग्राम-वासियों के सामने श्री फिशर भाषण दे रहे हैं . . . और ग्रामवासियों का एक प्रतिनिधि उनका स्वागत कर रहे हैं . . .

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १/१९, कौटिल्य मार्ग नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस बहादुर शाह जफर मार्ग, नयी दिल्ली, द्वारा मुद्रित। सम्पादक: ब्रूनो मे

ज. ज. ग. की १७वीं वर्षगांठ

७ अक्तूबर, १९६६ के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने अपने जीवन के १७ साल पूरे किये और १८ वें वर्ष में पदार्पण किया। एक स्वस्थ और सबल नौजवान से उसकी तुलना की जा सकती है। आज से १७ वर्ष पहले, सन् १९४९ में जब जर्मन जनवादी गणतंत्र का जन्म हुआ था तो उस समय तथाकथित अनेक "पंडितों" ने यह भविष्यवाणी की थी कि कुछ महीनों में ही इस नवजात शिशु की मृत्यु होना निश्चित है। भविष्यवाणी को मनवाने के लिये इन "पंडितों" ने न जाने कहां से ढेरों "तथ्य" एवं "आंकड़े" प्रमाण के तौर पर इकठ्ठे किये। विनाश के इन भविष्यवेत्ता पंडितों की पीठ के पीछे खड़े थे नवजात समाजवादी राज्य—अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र के घोरतम शत्रु, यानी पश्चिमी साम्राज्यवादी एवं सैनिकवादी शक्तियां। इन शक्तियों का यदि बस चलता तो वह निश्चित रूप से, जर्मन भूमि पर और जर्मन इतिहास में उदय हुये इस प्रथम शांतिप्रिय समाजवादी जर्मन राज्य को गला घोंट कर मार डालते लेकिन इस नये जर्मन राज्य की रक्षा कर रही थीं समस्त समाजवादी शिविर की बलिष्ट भुजायें, और ज. ज. ग. की अथाह श्रमिक जनता का धैर्य, लगन और दृढ़ संकल्प।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता ने अपनी कड़ी मेहनत और अनन्त लगन से, तथाकथित पंडितों की उल्लिखित भविष्यवाणियों को एक बहुत बड़ा झूठ और भ्रम साबित कर दिया है। और १७ वर्षों के इसी कठोर एवं अनवरत श्रम की साधना के परिणामस्वरूप, ज. ज. ग. आज यूरोप के औद्योगिक राज्यों में पांचवा और विश्व के औद्योगिक राज्यों में दसवां स्थान प्राप्त कर चुका है।

जर्मन भूमि पर, इस प्रथम शांतिप्रिय एवं समाजवादी राज्य की यह स्थिति किसी जादुई करिश्मे का नतीजा नहीं है। जर्मनी के इस पूर्व भाग अर्थात् ज. ज. ग. में इस अद्भुत सामाजिक एवं आर्थिक क्रांति को साकार करने के मार्ग में अनेकानेक कठिनाइयाँ, बाधायें और संकट

ज.ज.ग. में खुशहाल जीवन का उल्लास . . .
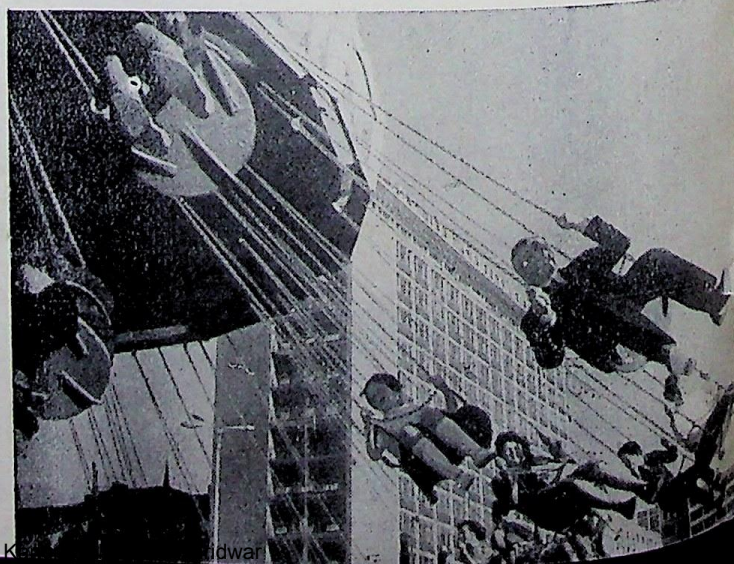
आये। लेकिन, जैसा कि ऊपर कहा गया है, समाजवादी राष्ट्रों की बिरादराना सहयोग और ज. ज. ग. की जनता के अदम्य श्रम एवं दृढ़ संकल्प से इन बाधाओं को लांघ कर इस नवजात शिशु को एक स्वस्थ तथा सशक्त नौजवान बना दिया।—यही कारण है कि आज, ज़ेबरस्टियां हाफ्फनर जैसे बूर्जुआ पत्रकार एवं टिप्पणीकार भी, ज. ज. ग. के भव्य निर्माण को "...जर्मनी के इतिहास में एकमात्र सफल क्रांति..." कहने पर मजबूर हो रहे हैं।

राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं अन्य क्षेत्रों में सर्वतोमुखी प्रगति का यह परिणाम निकला है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र आज अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी एक महत्वपूर्ण रोल अदा कर रहा है।

सत्रहवें वर्ष के अपने अस्तित्व के दौरान, ज. ज. ग. ने, जर्मनी और यूरोप में तनाव कम करने से सम्बन्धित कई सुझाव पेश किये हैं। उदाहरण के लिये इस शांतिप्रिय राज्य ने यूरोप के सभी राज्य-प्रमुखों का एक सम्मेलन बुलाने का सुझाव दिया जिसका उद्देश्य हो यूरोपीय सुरक्षा के लिये रास्ते तलाश करना। न केवल यूरोप के समाजवादी देशों ने ही इस सुझाव का समर्थन किया, बल्कि यूरोप के गैर समाजवादी देशों के अनेकानेक नेताओं एव राजनीतिज्ञों ने भी इसका स्वागत किया। अपने इस सुझाव में ज. ज. ग. ने इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया था कि यूरोप की वर्तमान स्थिति को तनावपूर्ण बनाने के लिये प० जर्मनी की सैन्यवादी और प्रतिशोधवादी नीति ज़िम्मेदार है। जब तक वह सम्पूण जर्मनी का मात्र प्रतिनिधि होने का गलत दावा छोड़ नहीं देता और जब तक वह परमाणविक शस्त्रास्त्रों को किसी भी तरह हस्तगत करने के खतरनाक प्रयत्नों को छोड़ नहीं देता, तब तक पूर्वी और पश्चिमी यूरोप के देशों में रहने वाले लोग,तनाव एवं युद्ध के भय से छुटकारा नहीं प्राप्त कर सकते।

इस वर्ष मार्च के महीने में ज. ज. ग. ने संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बनने के लिये आवेदन-पत्र दिया। इस आवेदन में, जर्मन

ज. ज. ग. की स्थापना के बाद निर्मित एक नये शहर का दृश्य

भूमि पर स्थित इस प्रथम शांतिप्रिय राज्य ने घोषित किया कि वह राष्ट्र संघ प्रपत्र (चार्टर) के सिद्धान्तों पर अमल करता आ रहा है और भविष्य में भी ऐसा ही करेगा। संयुक्त राष्ट्र संघ में ज. ज. ग. की सदस्यता का आवेदन इस दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि पश्चिमी जमनी ने राष्ट्र संघ की सदस्यता के लिये अर्जी नही दी है।

सदस्यता के लिये दिये गये अपने आवेदन-पत्र के सिलसिले में, हाल ही में ज. ज. ग. ने,

प्रत्येक पहलू पर (दोनों जर्मन राज्यों म अपने-अपने वक्ता आदि भेज कर) सार्वजनिक संवाद और बहस शुरू करना। संवाद शुरू करने की इस पहल के पीछे 'समाजवादी एकता पार्टी' की यह समझ काम कर रही थी कि उक्त पार्टियां न केवल जर्मनी की दो सबसे बड़ी पार्टियां हैं, बल्कि मजदूरवर्ग की सशक्त पार्टियां भी हैं और इस नाते य जमनी के भविष्य को सुरक्षित करने में निर्णायक सहयोग दे सकती हैं। 'समाजवादी एकता पार्टी'

...१८ वें वर्ष में पदार्पण

संयुक्त राष्ट्र संघ और दुनियाके राज्यों को एक स्मरण-पत्र भी भेज दिया। इसमें इस ग़लत दलील का खण्डन किया गया है कि राष्ट्र संघ में दोनों जर्मन राज्यों के प्रविष्ट होन से जर्मनी का विभाजन स्थाई बन जायगा।

जर्मन जनवादी गणतन्त्र के लिये, जमनी की जटिल समस्या, गहरी चिन्ता और चिंतन का विषय रहा है। इसका एक बहुत बड़ा प्रमाण है, ज. ज. ग. की सबसे बड़ी पार्टी की, हाल ही की वह पहल, जो अब "जर्मन संवाद" (जर्मन डायलाग) के नाम से विश्व विख्यात बन चुकी है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य है 'समाजवादी एकता पार्टी' और पश्चिम जर्मनी की सबसे बड़ी पार्टी 'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' के बीच जमन समस्या के

की इस पहल में न केवल पूर्व और पश्चिम जर्मनी के लोगों ने ही गहरी दिलचस्पी दिखाई, बल्कि विश्व में भी इसकी अच्छी प्रतिक्रिया हुई। 'संवाद' की इस पहल से, जर्मनी के एक छोर से दूसरे छोर तक, एक बहस छिड़ गई है। विभाजित जर्मनी के लोग आपस में सीधा सम्बन्ध स्थापित करें, यह धारणा दिन-प्रतिदिन ज़ोर पकड़ती जा रही है। लोग यह महसूस कर रहें हैं कि जर्मन समस्या को हल करने का एकमात्र रास्ता यही है कि दो जमन राज्यों के बीच समझदारी तथा सद्भावना और सामान्य रिश्ते कायम हों।

भारत और ज. ज. ग. के सम्बन्ध

हमें इस बात से बहुत प्रसन्नता हो रही

(शेष १९ पृष्ठ पर)

समाजवादी एकता पार्टी की महत्वपूर्ण बैठक

जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के १३वें पूर्ण अधिवेशन की बैठक पिछले महीने में हुई। इस अधिवेशन में कई महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार किय गया। पोलिटिक्ल ब्यूरो के मुख्य रिपोर्ट और श्री उल्ब्रिख्त के भाषण पर दुनिया भर के अखबारों में जगह मिली।

ज. ज. ग., यूरोपीय सुरक्षा और दो जर्मन राज्य

श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त के उक्त भाषण का विषय था: "जर्मन जनवादी गणतंत्र, यूरोपीय सुरक्षा और दो जर्मन राज्यों के बीच तनाव का शिथिलन"। उन्होंने कहा कि वियतनाम के खिलाफ, अमरीकी साम्राज्यवादी युद्ध का विस्तार, यूरोप में तनाव कम होने नहीं देगा। इसलिये यूरोप के लोगों को, शांति की सुरक्षा के लिये अधिक प्रयत्न करने होंगे।

श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, यूरोप की सुरक्षा के लिये एक सम्मेलन बुलाने का सुझाव दिया जिसमें यूरोप के सभी देश भाग लें। यूरोप की शांति और सुरक्षा के लिये, यूरोप के तमाम राज्यों के बीच सामान्य सम्बन्धों का होना अनिवार्य है, विशेषकर दो जर्मन राज्यो के बीच। श्री उल्ब्रिख्त ने कहा कि दो जर्मन राज्यों के बीच सामान्य सम्बन्धों के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि पश्चिम जर्मनी अन्तर्राष्ट्रीय कानून की अवहेलना न करे, वह बदला लेने की प्रतिशोधवादी-नीति को त्याग दे, और पूरे जर्मनी का एकमात्र प्रतिनिधि होने के गलत दावे को तिलांजलि दे। पश्चिम जर्मनी का यह गलत दावा ही यूरोप में तनावों का मुख्य कारण है। श्री उल्ब्रिख्त ने पश्चिम जर्मन सरकार से अपील की कि यूरोप की सुरक्षा के हित के लिये उसको अन्य देशों की सीमाओं पर अपना अधिकार जताने का गतल रवैया त्याग देना चाहिए।

आजकल पश्चिम जर्मनी के हर क्षेत्र में—सरकार, सेना, आर्थिकी, विदेश-नीति आदि में, चारों ओर संकट की बातें हो रही हैं। इस सिलसिले में श्री उल्ब्रिख्त ने कहा: "वहां विशेष व्यक्तियों को लेकर आजकल जो झगड़े हो रहे हैं, वे वास्तव में वहां के वर्तमान अन्तर्विरोधी और संकट जैसी स्थिति की ही अभिव्यक्ति है।..."

पश्चिम जर्मनी का चान्सलर एरहार्ड, वहां मध्य-मार्गी नीति अपनाने के इच्छुक थे। लेकिन, अपनी शासक पार्टी 'क्रिश्चियन डेमोक्रैटिक यूनियन' के दक्षिण पन्थियों के दबाव से और 'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' की पिच्छ-लग्गू नीति अपनाने के कारण, श्री एरहार्ड दक्षिण-पन्थ की ओर धकेले गये। पश्चिम जर्मन सरकार द्वारा, मध्य-मार्गी नीति अपनाना अच्छा रहता, क्योंकि इस नीति का उद्देश्य था यूरोप में यथावत स्थिति को कायम रखना और जर्मनी की सन् १९३७ की सीमाओं को पुनः प्राप्त करने के गलत अधिकार को त्याग देना।

जर्मन जनता के कल्याण के लिये एक ही रास्ता है, और वह है एक ऐसी नई एवं अच्छी नीति अपनाना जिसका उद्देश्य हो परमाणविक शस्त्रास्त्रों को प्राप्त न करना, युद्ध की तैयारी एवंप्रतिशोध का परित्याग करना, सद्भावना तथा समझदारी पैदा करना, और कामगार जनता को लोकतंत्री अधिकार देना।

श्री उल्ब्रिख्त ने अपने भाषण में यह बात स्पष्ट शब्दों में कही कि दो जर्मन राज्यों के बीच समझदारी एवं सम्बन्धों का सामान्य हो जाना, ठोस वास्तविकताओं को मानना, और उसकी समानता को मान्यता देना ही विकट जर्मन समस्या को सुलझा सकता है।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की कड़ी आलोचना

'समाजवादी एकता पार्टी' की केन्द्रीय कमेटी को पेश किये गये मुख्य रिपोर्ट में, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा अपनाई गई नीति की कड़ी आलोचना की गई है। इस सिलसिले में कहा गया है: "हमारी पार्टी, बहुत ही गहरी व्याकुलता एवं भय के साथ, तथाकथित सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के परिणामों को देख रही है।—" इस सम्बन्ध में रिपोर्ट में आगे कहा गया है:

"यह तथाकथित सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति, चीनी नेताओं के एक दल का, चीन में पूंजीवाद से समाजवाद की ओर संक्रमण की समस्याओं को हल करने का एक निष्फल प्रयास है, जिसमें समाजवादी निर्माण के नियमों मार्क्सवाद-लेनिनवाद, पार्टी जीवन के लेनिनवादी सिद्धान्तों, जनवादी-केन्द्रीकरण के असूलों, समाजवादी लोकतंत्र और समाजवादी विधान का घोर उल्लंघन करके, इनको (संक्रमण की समस्याओं को—स०) समस्त समाज का शुद्ध सैनिक प्रशासनिक नियंत्रण और संगठन द्वारा सुलझाने का प्रयत्न किया जा रहा है।...

"चीनी नेताओं के बयानों और अमल से यह बात साफ हो रही है कि उनमें से कुछ एक, सोवियत संघ और अमरीका के बीच सीधे सैनिक संघर्ष के इच्छुक हैं, और वे दूर बैठकर इन दो शेरों के बीच इस भयावह लड़ाई का तमाशा देखना चाहते हैं।...

भारत के खिलाफ हथियार उठाये

"चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं ने, सीमा-विवाद के सवाल पर भारत के खिलाफ अपने हथियार उठाये। इसी प्रकार, चीन की सरकार ने, काश्मीर के सवाल पर, भारत पर पाकिस्तान की लड़ाई में घी डाल कर,

लड़ाई की आग को तेज़ कर दिया और ताशकन्त समझौते को बदनाम किया।...

"सोवियत संघ से, अन्य समाजवादी देशों को अलग करने की चीनी नेताओं की भेदयुक्त नीति के तमाम प्रयत्न असफल हुये हैं।...

"आज चीन में, वहां की सेना, अनुशासन का आदर्श और माओत्से तुंग के विचारों के प्रति वफादार घोषित हुई है। लेनिन की शिक्षा के विरूद्ध, राज्य को नहीं बल्कि सेना को वहां समाजवादी निर्माण का मुख्य साधन बना दिया गया है।...

"इसीलिये, सेना के नेतृत्व के आधीन तथाकथित माओ-दस्ते (माओ-ब्रिगेड्स), अर्थात् सांस्कृतिक क्रांति की कमेटियां, अगले दस्ते की सैन्य टुकड़ियों के तौर पर कायम की गयीं, जिनका गलत इस्तेमाल करके उन से हर तरह की ज्यादतियां कराई जाती हैं। उदाहरण के लिये ये टुकड़ियां क्रूर दमन द्वारा सक्रिय कार्य-कर्त्ताओं, मज़दूरों तथा किसानों को संत्रसित करने के लिये और मूर्ति-भंजन अभियानों के लिये खास-तौर से इस्तेमाल की जाती हैं। चीन के अखबारों और वहां के नेताओं के भाषणों में ऐसी घोषणाओं की कमी नहीं जिनमें ये संगठन तथा कमेटियां, चीनी जनवादी गणतंत्र की 'सबसे क्रांतिकारी शक्ति' घोषित न हुई हों।...

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं की यह नीति, विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के लिये एक बड़ा बोझ है, और यह समस्त समाजवादी व्यवस्था को नुकसान पहुंचाती है।...

"चीनी नेताओं की यह नीति साम्राज्य-वाद-विरोधी मोर्चों को कमज़ोर बना देती है। यह समाजवाद को और खास तौर से साम्राज्यवाद-विरोधी राज्यों को बदनाम करती है। यह नीति साम्राज्यवादी प्रचार को अधिक बल पहुंचाती है और साम्राज्य-वादियों को यह कहने का बहाना मिल जाता है कि चीन में जो कुछ हो रहा है वह सब, दक्षिण-पूर्वी एशिया में अमरीका की उप-स्थिति की अनिवार्यतः को प्रमाणित करता है।..."

पश्चिम जर्मनी में नव-फासिस्तवाद

यहूदी-समुदाय द्वारा कड़ी निन्दा

हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतंत्र में रहने वाले यहूदी-समुदायों के एक संघ के अध्यक्ष-मण्डल नें, पश्चिम जर्मन संसद के अध्यक्ष, श्री गेर्स्टेन-मायर के उस भाषण पर अपना एक बयान जारी किया है जो उन्होंने ब्रुसेल्स में "विश्व यहूदी कांग्रेस" के सामने दिया था। इस बयान में इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है कि पश्चिम जर्मनी में जहां एक ओर तपे हुये फासिस्त-विरोधियों पर आये दिन, जाली मुकदमे चलाये जाते हैं और उनको जेलों में कैद किया जाता है, वहीं दूसरे फासिस्त कातिलों को और युद्ध-अप-राधियों को वहां न केवल आज़ाद छोड़ा गया है बल्कि उन्हें ऊंचे पदों पर भी बिठाया जा रहा है। बयान में आगे कहा गया है:

"पिछले कई वर्षों से लगभग हर रोज़ हम यह सुनते आ रहे हैं कि पश्चिम जर्मनी में यहूदी–विरोधी गन्दा प्रचार किया जा रहा है और उनके गिरजाघरों की तौहीन की जा रही है। समझदार और सद्भावना वाले लोगों के लिये, पश्चिम जर्मनी में ऐसे यहूदी विरोधी कुकृत्य (जिनकी संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है) एक और गंभीर चेतावनी है। लेकिन पश्चिम जर्मनी के बुण्डेज़टाग (संसद) के अधिकारिक प्रतिनिधि, श्री गेर्स्टेन-मायर ने, इस नव-नात्सीवाद के बढ़ते हुये खतरे को अपने भाषण में एकदम नज़रन्दाज़ कर लिया।..."

बयान में यह सवाल भी पूछा गया है: "पश्चिम जर्मन सरकार अपने यहूदी नागरिकों को, उक्त यहूदी-विरोधी कुकृत्यों से और अपमानों से बचाने के लिये क्या करती है?...

"यहूदी समुदाय के लिये, दो जर्मन राज्यों की नीतियों को परखने की मात्र कसौटी है इन दो राज्यों का यहूदी-विरोध, फासिस्त-वाद, प्रति-शोधवाद और सैन्यवाद के प्रति उनका रवैया। पश्चिम जर्मन संघीय गण-राज्य में इन महत्वपूर्ण प्रश्नों के प्रति गलत और भयावह रवैये को देखते हुये जर्मन जनवादी गणतंत्र में रहने वाले हम यहूदी नागरिक इस बात से सन्तुष्ट हैं कि यहां उस अन्धेरे, क्रूर अतीत (हिटलरी फासिस्तवाद युग) को हमेशा के लिये दफनाया गया है।"

बयान के अन्त पर कहा गया है: "ज. ज. ग. में हम, अन्य नागरिकों की तरह समानता, आज़ादी और शांति के वातावरण में रह रहे हैं, और अपने समुदाय के अधूरे सपनों को साकार कर रहे हैं।..."

राटेनो :

प्रकाशीय उद्योग का केन्द्र

ऊरज़ूला रोट

जर्मनी के प्रकाशीय (ग्रोपटि:ल) उद्योग का मुख्य केन्द्र है राटेनो नामक क़स्वा। ग्रागामी मास में, बर्लिन के पश्चिम में ६० किलोमीटर दूर ग्रौर हावेल नदी के तट पर बसा हुग्रा यह छोटा क़स्वा, ग्रपनी ७५० वीं वर्षगांठ मनायेगा।

ज़मीन के एक सुन्दर टुकड़े पर ईंटों से तामीर हुग्रा गाथिक-वास्तुकला का एक भव्य गिरजाघर खड़ा है। इसके पास ही वह पुराना पादरी-निवास भी स्थित है जहां सन् १८०१ में, **पादरी योहान्न हाइनरिख आगस्ट डुण्कर** ने, चश्मों के लेन्सों को तराशने ग्रौर घिसने का यन्त्र चालू किया था। यह यन्त्र उसका ग्रपना ग्राविष्कार था। उस दिन एक नये उद्योग का जन्म हुग्रा। तब से लेकर लगभग चार दशकों की ग्रवधि में, राटेनी नाम का यह कस्वा न केवल जर्मनी में ही प्रसिद्ध हुग्रा, बल्कि इसकी ख्याति दूर-दूर के देशों जैसे रूस, प्रौलैंड, स्वीडन, ग्रौर स्विटज़रलैंड तक भी फैल गई। डुण्कर द्वारा बनाये गये चश्मों के लेन्सों की मांग कई देशों में बहुत बढ़ने लगी। इसके परिणाम-स्वरूप रोटेनो की एक फ़र्म ने यूरोप के २९५ नगरों में ग्रपनी शाखायें क़ायम कीं।

लेकिन ग्राप शायद यह सवाल पूछेंगे कि एक धार्मिक पादरी को इस ग्रजीब धन्धे में ग्राने की क्यों ज़रूरत पड़ी? इसका सीधा-सा ज़वाब यही है कि 'ग्रावश्यकता ग्राविष्कार की जननी' है। पादरी डूण्कर ने धर्मशास्त्र के ग्रलावा, हाल्ले में प्राकृतिक विज्ञानों का ग्रध्ययन किया था। ग्रपने राटेनो के छोटे गिरजा-घर से उसको कम ग्रामदनी होती थी। इसलिए उसने ग्रामदनी का कोई ग्रच्छा स्रोत तलाश करना शुरू किया। इसी तलाश का नतीजा लेन्स तराशने-घिसने का उक्त यन्त्र था।

प्रकाशीय उद्योग में रोज़गार

दूसरे महायुद्ध के पहले राटेनो में प्रकाशीय वर्कशापों एवं इस उद्योग से सम्बन्धित उद्यमों की संख्या लगभग २५० तक पहुंच चुकी थी। लेकिन युद्ध के दौरान, ग्रौर विशेषकर इस युद्ध के ग्रन्तिम वर्ष ग्रर्थात सन् १९४५ में, इस कस्बे का ६० प्रतिशत भाग तबाह हुग्रा, ग्रौर इस तबाही की लपेट में कस्बे का प्रमुख उद्योग ग्रर्थात प्रकाशीय-उद्योग भी नष्ट हुग्रा। यही उद्योग इस कस्बे की खुशहाली का ग्राधार था।

युद्ध के बाद, यहां के मज़दूरों ने मलबे के ढ़ेरों में से खोज खोज कर, यन्त्रों ग्रौर मशीनों ग्रादि के भाग्नावशेष निकाले। उद्योग के पुनर्निमाण के साथ ही साथ, यहां के परिश्रमी लोगों ने नये, रिहायशी मकान भी तामीर किये। इसी तामीर का यह सद्-परिणाम है कि ग्राज राटेनो में हर तीसरा परिवार नये फ्लैटों में रह रहा है।

ग्राज तक राटेनो ने ग्रपनी खोई प्रसिद्धि पुनः प्राप्त कर ली है। यहां के प्रकाशीय उद्योग की वस्तुयें, जैसे चश्मे, कैमरा लेन्स, द्विनेत्री (बाइनाक्यूलर), सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) ग्रौर ग्रन्य प्रकाशीय सामान तथा सूक्ष्म उपकरण, ५५ देशों को निर्यात किये जाते हैं। निर्यात करने वाले कारखानों में ग्रव्वल नम्बर पर है कस्बे का 'रोटेनोवेर ग्रोपटिशे वेरके' नामक सरकारी कारखाना। इसमें २,७०० मज़दूर काम करते हैं। १९५० से इस कारखाने ने ग्रपना उत्पादन लगभग ६.५ गुना बढ़ाया है।

वर्कशापों का एक ग्रादर्श सहकारी संघ

दूसरे महायुद्ध के पहले, जर्मनी में, (प्रकाशीय उद्योग के) लगभग २५० निजी वर्कशाप एवं लघु ग्रौद्योगिक उद्यम थे। लेकिन तकनीकी प्रगति की दौड़ के साथ ये ग्रपनी गति को क़ायम नहीं रख सके। इसलिये इनको बचाने के लिये, ग्राठ वर्ष पहले, ऐसे २६ वर्कशापों को एक साथ मिलाकर एक सहकारी-संघ की स्थापना की गई। कालान्तर में ३५ ग्रन्य वर्कशाप भी इसमें ग्रा मिले।

ग्राज इस वर्कशाप सहकारी संघ में ८०० वर्कशाप सदस्य हैं, ग्रौर यह जर्मन जनवादी गणतंत्र में दूसरा सबसे बड़ा सहकारी संघ है। इस संघ के उत्पादन में ५.५ गुना वृद्धि हुई है, ग्रौर इसका निर्यात (ग्रन्य देशों को) १७ गुना बढ़ गया है। वर्कशापों का यह संघ, 'राटेनोवर ग्रापटिशे वेरके' के सरकारी कारखाने ग्रौर विश्वप्रसिद्ध कार्ल साइस्स येना के कारखाने को ग्रपना सहयोग देता है ग्रौर इन कारखानों के साथ तकनीकी जानकारी एवं ग्रनुभवों का विनिमय भी करता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के इस महत्वपूर्ण प्रकाशीय उद्योग के केन्द्र राटेनो के यन्त्र ग्राज दुनिया भर के कारखानों में इस्तेमाल होते हैं। उदाहरण के लिये, ब्रिटेन में बिरमिंघम का धातु-कर्मी, धातुग्रों का जो परीक्षण यन्त्र, चल-स्पेकट्रोस्कोप इस्तेमाल करता है वह राटेनो में ही बनता है। इसी प्रकार, कोलम्बिया ग्रौर लेबनान में, चट्टानों का परीक्षण करने के लिये वहां के भू-वैज्ञानिक राटेनो में निर्मित यन्त्रों का इस्तेमाल करते हैं।
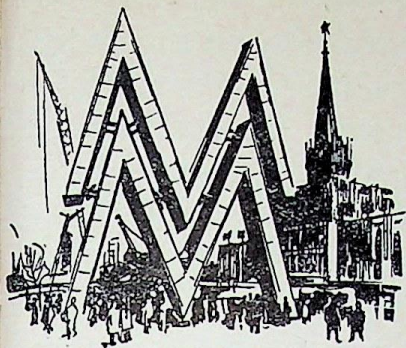
इस वर्ष का

शरद्कालीन लाइपज़िग व्यापार मेला

हर साल की तरह इस वर्ष भी सितम्बर ४ से ११ सितम्बर तक, लाइपज़िग का शरद्कालीन मेला लगा । मेले में भाग लेने वाले देशों, प्रदर्शकों और दर्शकों की दृष्टि से, इस व्यापार मेले ने एक नया रिकार्ड कायम किया । कुल मिलाकर ६० देशों के ६,४८६ प्रदर्शकों ने, मेले की ३० विभिन्न शाखाओं में अपनी वस्तुयें प्रदर्शित की थीं । ८७ देशों के २३३,६६० दर्शकों ने इस मेले को देखा, जिनमें ५३,६६० दर्शक अन्य देशों, पश्चिम जर्मनी और पश्चिम बर्लिन से आये थे ।

भारतीय प्रदर्शन मण्डप में ज.ज.ग. की दिलचस्पी

लाइपज़िग के इस व्यापार मेले में जर्मन जनवादी गणतंत्र के वरिष्ठ नेता एवं अधिकारी भी आये । इनमें विशेष उल्लेखनीय हैं ज. ज. ग. की राज्य-परिषद् के अध्यक्ष श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त और वहां के प्रधान मन्त्री, श्री विल्ली स्टोप । श्री स्टोप भारत के प्रदर्शन मण्डप में भी पधारे और भारतीय मण्डप के अधिकारियों से उन्होंने, ज. ज. ग. और भारत के पारस्परिक सम्बन्धों के बारे में विचार-विनिमय किया । भारतीय प्रदर्शन- मण्डप देखने के लिये, ज. ज. ग. की उप-प्रधान मन्त्री, श्रीमती ग्रेटे विट्टकोव्स्की भी आईं, जो कई बार भारत की सरकारी यात्रा कर चुकी हैं ।

५३ स्वर्ण पदक दिये गये

इस वर्ष के उक्त शरद्कालीन मेले में, उपभोक्ता वस्तु उद्योग के सर्वश्रेष्ठ उत्पादनों पर, १८ देशों के प्रदर्शकों को ५३ स्वर्ण-पदक और डिप्लोमा दिये गये । इन में से २५ स्वर्ण-पदक, ज. ज. ग. के सर्वश्रेष्ठ उत्पादनों को प्रदान किये गये । शेष पदकों में से ७ सोवियत संघ को और बाकी कई देशों के उपभोक्ता उद्योग की श्रेष्ठ वस्तुओं को दिये गये । इन शेष देशों के नाम हैं : चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड, हंगरी, बलगेरिया, रूमानिया, यूगोस्लाविया, मंगोलिया, संयुक्त अरब गणराज्य, फ्रांस, इटली, स्वीडन, प. जर्मनी, और पश्चिम बर्लिन ।
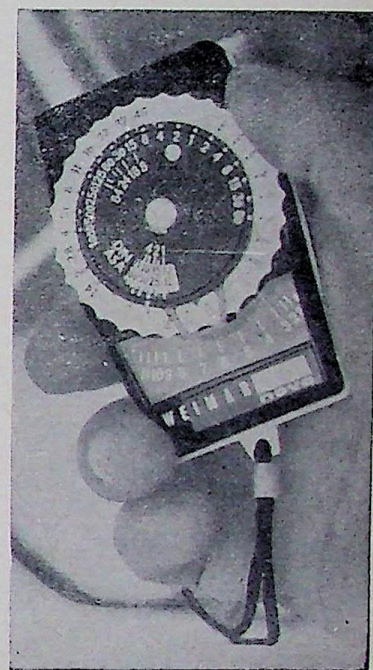
मेले में भाग लेने वाले भारतीयों को बधाई

अच्छे परिणाम

लाइपज़िग शरद् मेले के अन्त पर एक अधिकारिक विज्ञप्ति जारी की गई, इसमें कहा गया है :"...हाल ही के वर्षों में ज. ज. ग. और विकासशील देशों के बीच आर्थिक सम्बन्ध कितने व्यापक और गहरे हो गये हैं, इस वर्ष का शरद्कालीन मेला इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है । मेले में आये हुये इन देशों के प्रतिनिधियों ने विभिन्न प्रकार की ऐसी अनेक वस्तुओं में गहरी दिलचस्पी दिखाई जो उनके राष्ट्रीय अर्थ-तंत्र के निर्माण में सहायक सिद्ध होंगी।..."

(शेष अगले पृष्ठ पर)
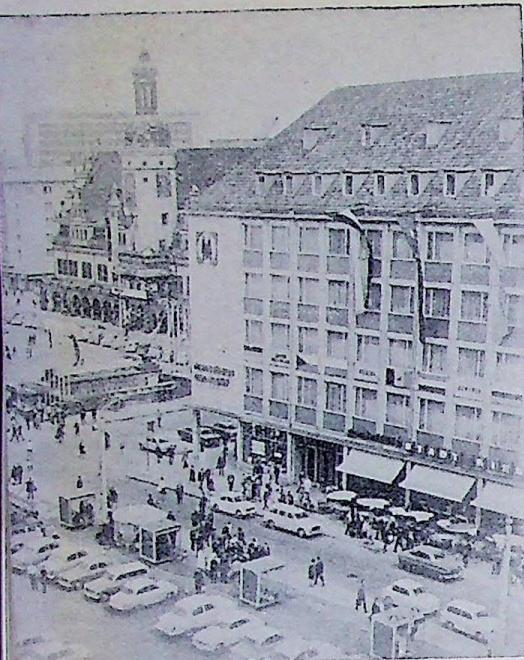
इस विज्ञप्ति में यह भी कहा गया है कि ज. ज. ग. के प्रतिनिधियों ने ७६ देशों की अनेक व्यापार-फर्मों के साथ आयात एवं निर्यात् के कई समझौते किये। ज. ज. ग. की फर्मों ने जिन वस्तुओं की खूब बिक्री की वे ये हैं: कांच तथा चीनी मिट्टी के बर्तन वस्त्र उद्योग के उत्पादन, लोहे की वस्तुयें, धातु की चादरें तथा धातु उत्पादन, बिजली का घरेलू सामान, वाद्य-यन्त्र, खिलौने, रिहायशी सामान, सूक्ष्म यन्त्र, प्रकाशीय वस्तुयें और मुद्रण-कला के यन्त्र इत्यादि।

←मेले के स्थान, लाइपज़िग का एक दृश्य

पर, बेलजियम की 'कोमोगेक्स' नामक-सुप्रसिद्ध फर्म के वरिष्ठ संचालक, श्री सिलवरमैन ने, बेलजियम और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सम्बन्धों को गहराने पर बल दिया। इस सिलसिले में उन्होंने, बर्लिन में एक बेलजियम व्यापार मिशन कायम करने को एक अनिवार्य आवश्यकता बताया। इस व्यापार-मिशन की स्थापना से, ज. ज. ग. की मण्डी का अध्ययन करना बहुत आसान होगा और दोनों देशों के पारस्परिक सम्बन्ध गहरे और व्यापक बन जायेंगे।

४ दिन में ९० मिलियन का व्यापार

१९६६ के शरद्कालीन लाइपज़िग व्यापार मेले में भाग लेने वाले सोवियत संघ के उद्यमों एवं फर्मों ने, केवल ४ दिनों में, ९० मिलियन रूबल (१ मिलियन = १० लाख) के निर्यात-आयात समझौते किये। पिछले साल सोवियत संघ के ऐसे ही समझौतों का मूल्य ६२ मिलियन रूबल था।

...और ५ दिन में १,००० अनुबन्ध

जर्मन जनवादी गणतंत्र की एक व्यापार-संस्था "ग्लास सेरामिक" ने लाइपज़िग शरद्-मेले में केवल ५ दिनों में, अन्य देशों के साथ लगभग १,००० अनुबन्ध किये। इन अनुबन्धों के अनुसार डेनमार्क को कांच तथा चीनी मिट्टी के बर्तन, बेलजियम को चीनी मिट्टी के बर्तन तथा थर्मोमीटर, और इटली को चीनी मिट्टी का रूप-सज्जा एवं घरेलू सामान, ज. ज. ग. द्वारा निर्यात होगा।

१,२०० अनुबन्ध :

इसी प्रकार, ज. ज. ग. के टेक्सटाइल और विराटेक्स फर्मों ने, ४ दिनों में, २० देशों के ग्राहकों के साथ १,२०० व्यापार-अनुबन्धों पर दस्तखत किये।

४५० अनुबन्ध :

ज. ज. ग. की रासायनिक वस्तुओं की एक व्यापार-फर्म ने, ३६ देशों के ग्राहकों के साथ, ४ दिनों की अवधि में ही, निर्यात एवं आयात के ४५० अनुबन्ध किये।

शरद् मेला... कुछ सम्मतियां, कुछ आंकड़े

साल में दो मुलाकातें

पश्चिम बर्लिन के एक प्रदर्शक, श्री सी. सी. एफ. बोलमान ने, लाइपज़िग शरद् मेले के बारे में यह मत प्रकट किया "मेरी डायरी में हर साल, लाइपज़िग व्यापार मेले की दो तिथियां दर्ज रहती हैं। इन मेलों में भाग लेने से हमें हर बार लाभ हुआ है। विश्व व्यापार के इस केन्द्र (लाइपज़िग) में हम न केवल जर्मन जनवादी गणतंत्र को अपनी वस्तुयें बेच देते हैं, बल्कि हम यूरोप तथा समुद्रपार देशों से आये हुये ग्राहकों से भी व्यापारिक संपर्क बढ़ाते हैं।..."

पाकिस्तान और ज.ज.ग. का व्यापार

लाइपज़िग शरद् मेले के दौरान, पाकिस्तान में 'लाइपज़िग मेस्सेआमटे' के एजन्ट और कराची स्थित 'जाति-विज्ञान अनुसंधान केन्द्र' के निर्देशक, श्री ज़ेड. ए. तमन्नाई ने पत्रकारों से बात-चीत करते हुये कहा: "पाकिस्तान के औद्योगिक और व्यापारिक क्षेत्र जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ आर्थिक सम्बन्धों को बढ़ाने तथा सामान्य बनाने के लिये बहुत उत्सुक हैं। अब इस बात की आवश्यकता है कि दोनों देश ठोस प्रयत्न करें और कदम उठायें..."। श्री तमन्नाई ने, ज. ज. ग. द्वारा उर्दू और बंगला भाषाओं के टाइपराइटरों के निर्माण का विशेषरूप से उल्लेख किया। पाकिस्तान के शिक्षा मन्त्री ने भी इन टाइपराइटरों की बहुत प्रशंसा की है।

मेरे पिता पहले से लाइपज़िग आते रहे हैं

हालैण्ड के एक व्यापारी, श्री वाल्टर फ्लोरिस ने ये शब्द कहे: "मेरे पिता जी, लाइपज़िग व्यापार मेलों में नियमित रूप से आते रहे हैं। भयावह महायुद्ध के बाद, १९४७ से हम आपके इन मेलों में भाग लेते और आपके साथ व्यापार करते रहे हैं। इस बीच हमारा पारस्परिक व्यापार इतना अच्छा चल निकला कि मैं लाइपज़िग के दोनों व्यापार मेलों में वसन्त और शरद् मेलों में भाग लेने आता हूं।—हमारा व्यापार परिमाण, वर्ष प्रति वर्ष बढ़ता रहा है।"

ज.ज.ग. एक लाभदायक मण्डी

लाइपज़िग शरद् व्यापार मेले के अवसर

लाइपज़िग व्यापार मेले में

भारत की रजत जयन्ती

इस वर्ष के शरद्कालीन लाइपज़िग व्यापार मेले में, भारत २५ वीं बार शामिल हुआ और उसने यहां अपनी रजत जयन्ती मनाई। इस शुभ अवसर पर, "भारतीय सामूहिक प्रदर्शनी" के महा-निदेशक, श्री आर. करण को, जर्मन जनवादी गणतंत्र के जिन अधिकारियों ने बधाइयां दीं, उनमें विदेश एवं अन्तर व्यापार के उप-मन्त्री, श्री एरिख वाखटर; व्यापार कौंसिलर, श्री कुर्ट श्माइज़र, और 'विदेश व्यापार चैम्बर' के अध्यक्ष, कौंसल-जनरल हान्स बार भी शामिल थे। रजत जयन्ती के इस महोत्सव में भारत-स्थित ज. ज. ग. व्यापार-दूतावास के उप-प्रमुख, व्यापार कौंसिलर हांस-योआखिम लेमनित्सर, जर्मन-दक्षिण पूर्व एशिया संघ के प्रतिनिधि और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

महा-निदेशक श्माइज़र ने, समुद्र-पार देशों में सबसे बड़ी व्यापार प्रदर्शनी—अर्थात् भारतीय प्रदर्शनी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यह बात काफी सन्तोषप्रद है कि 'भारतीय सामूहिक प्रदर्शनी' जहां पहले अपनी स्थानीय वस्तुओं का ही प्रदर्शन करती रहती थी, वहां आज इसमें तकनीकी उपभोक्ता सामान और औद्योगिक वस्तुओं की काफी संख्या नज़र आती है। श्री श्माइज़र ने, भारतीय व्यापारियों को, "लाइपज़िगेर मेस्सेआम्ट" (लाइपज़िग मेला दफ्तर) की ओर से एक बधाई-पत्र प्रदान किया।

उप-मन्त्री वाखटर और अध्यक्ष बार ने, रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर यह हार्दिक कामना व्यक्त की कि आने वाले वर्षों में भारत और ज. ज. ग. के बीच, व्यापार अधिक व्यापक तथा परस्पर हितकारी बने और भारतीय व्यापारी, लाइपज़िग व्यापार मेले में "स्वर्ण जयन्ती" मनायें।

अपने प्रत्युत्तर भाषण में, निदेशक करण ने लाइपज़िग मेले को शांतिपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का केन्द्र कह कर पुकारा।—सन् १९५४ में लाइपज़िग व्यापार मेले में केवल छः फर्मों ने भाग लिया था, जबकि इस वर्ष के इस मेले में ४२ भारतीय व्यापार-फर्में शामिल हुई थीं। ज. ज. ग. ने तकनीकी सहायता देकर और पूर्ण तथा तैयार कारखाने उपलब्ध करके भारत के औद्योगीकरण में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।

रजत जयन्ती के अवसर पर, भारतीय व्यापारियों को अपने भारत देश से भी बधाइयों के अनेक तार प्राप्त हुये। 'विदेश व्यापार की भारतीय परिषद्' के अध्यक्ष ने अपने ऐसे एक तार में, लाइपज़िग मेले में भाग लेने वाले भारतीय व्यापारियों को बधाई दी और मेले में उनकी अधिक सफलताओं की शुभकामना की।

यूरोपीय चैम्पियनशिप में ज.ज.ग. की सफलतायें

बुडापेस्ट में हुये यूरोपीय खेलकूद चैम्पीयनशिप में, जिसमें कई देशों ने भाग लिया, ज. ज. ग. ने ८ स्वर्ण पदक, ३ रजत और ६ ताम्रपदक हासिल किये। इस तरह गणतंत्र की टीम पोलैण्ड और सोवियत संघ के बाद सर्वाधिक सफल टीम के रूप में सामने आई।

स्कोरिंग प्वाइंट्स के अनाधिकारिक वर्गीकरण के आधार पर (प्रत्येक मुकाबले की गणना में प्रथम ६ स्थान से) सोवियत संघ विजयी टीम रही, जिसके बाद पश्चिमी जर्मनी और ज. ज. ग. का स्थान आया।

चैम्पियनशिप के पहले से आखिरी दिन तक ज.ज.ग. ने पदक प्राप्त करने में अगुआई की है। निम्नलिखित मुकाबलों में इसके खिलाड़ियों ने यूरोपीयन चैम्पियनशिप प्राप्त की:

(१) २० किलोमीटर की दौड़—दीतर लींडर ६:२८:२५ घण्टे में
(२) १०,००० मीटर की दौड़—युर्गेन हास (२६) २८.२६ मिनट में
(३) औरतों की डिसकस थ्रो—क्रिस्टाइन स्पेलवर्ग ५७.७६ मीटर से
(४) पुरुषों का डिसकस थ्रो—देतलेव थोरित ५७.४२ मीटर से

(इस मुकाबले में रजत और ताम्रपदक ज. ज. ग. को मिले)

(५) ८०० मीटर दौड़—मनफ्रेड माचुसोवस्की ९:४५,६ मिनट में
(६) औरतों की ८० मीटर बाधा दौड़—कारिन बाल्जर ९०.७ सेकेंड में

अन्तर्राष्ट्रीय शौकिया एथेलेटिक्स फडरेशन के एक निर्णय के अनुसार जर्मन खिलाड़ियों ने इस वर्ष की चैम्पियनशिप में पहली बार दो जुदा टीमों में भाग लिया। एक टीम ज. ज. ग. से और दूसरी पश्चिमी जर्मनी से। व्यक्तिगत मुकाबलों के बाद जो समारोह हुआ, उसमें, विजयी जर्मन राज्य का झण्डा फहराया गया और उसका राष्ट्रीय गान भी हुआ।

यूरोपीय नाव-दौड़ चैम्पियनशिप में ज.ज.ग. ने ३ स्वर्णपदक जीते

अमेस्टेडर्म में हुये यूरोपीय महिलाओं की नाव-दौड़ चैम्पियनशिप में ज. ज. ग. सर्वाधिक सफल देश रहा, जिसने ३ स्वर्णपदक और २ ताम्रपदक जीते। ज. ज. ग. की लड़कियां ८ की पाली, डबल फोर, डबल स्कल्स, सिंगिल स्कल्स की फिनिस्ड थर्ड और काक्स्ड फोर में विजयी रहीं।
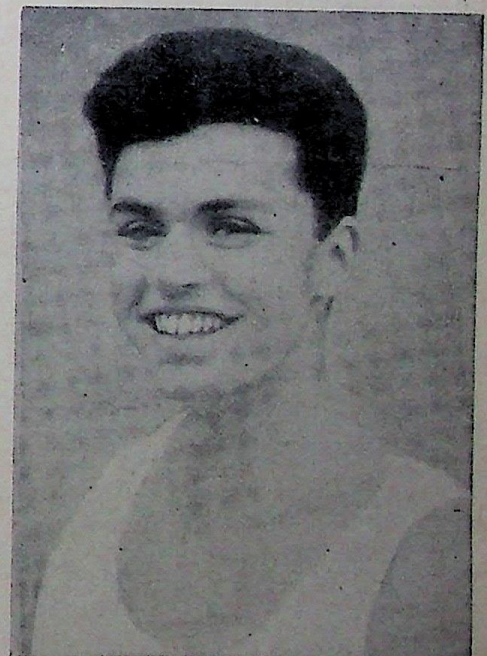
उन्होंने अपने सोवियत प्रतिद्वन्दियों को हराया, जो वर्षों से यूरोपीय नाव-दौड़ पर छाये रहे और इस साल केवल दो स्वर्णपदक जीते। परिणाम इस प्रकार था १. ज. ज. ग. ३७ अंक, २. सोवियत संघ ३६.५ अंक, रूमानिया ६८.५ अंक।

एक्केहार्ड शाल्ल :

ब्रेख्त का योग्य शिष्य

| इंग्रिड जेफार्ट

एक्केहार्ड शाल्ल

एक्केहार्ड शाल्ल का जन्म सन् १९३० में हुआ। दूसरे महायुद्धोत्तर काल के प्रथम वर्षों में जब कि वह स्कूल का विद्यार्थी ही था, उसने माग्देबुर्ग रंगमंच पर अभिनय करना शुरू किया। कई छुटपुट रंगमंचों पर काम करने के बाद, अन्त में सन् १९५२ में शाल्ल "बर्लिनेर एनसाम्ब्ल" में शामिल हो गया, और इसी रंगमंच से इसने, अभिनय वृत्ति को नियमित रूप से अपना लिया। यहां, शाल्ल ने सब से पहले, ब्रेख्त के दो नाटकों "श्रीमती कारा की बंदूक" और "साहस मां" में क्रमशः 'जोज़े' तथा 'आइलिफे' का अभिनय किया। इसके बाद इसको विभिन्न एवं अनेकों रोल खेलने को दिये गये। उदाहरण के लिये, शाल्ल ने, स्ट्रिमाटर के सामायिक नाटक "काट्सग्राबेन" में एक नौजवान किसान 'हर्मन' की, ब्रेख्त के नाटकों "काकेशिया का सफेद दायरा" में एडे ज़ालवा तथा "गैलीलियो का जीवन" में एण्ड्री की और ज़िग्गे के नाटक "पश्चिमी जगत का अय्याश" में 'शान केओग' की भूमिकायें अदा कीं।

एक्केहार्ड शाल्ल को देखकर, आप उसके अभिनेता होने का अनुमान नहीं लगा सकते। उसका क़द नाटा, शरीर गठा हुआ, उसकी चुभती हुई आंखें और चुन्दियाता हुआ सिर—एक ख़ूबसूरत आदमी की आ.ति नहीं है। पहली नज़र में यह अभिनेता आपको आकर्षित नहीं करेगा। लेकिन रंगमंच पर आते ही शाल्ल बदल जाता है। अपने अभिनय से वह दर्शकों को जकड़ लेता है, अपनी भाव भंगिमाओं से वह अभिभूत कर लेता है।

लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि "बर्लिन एनसाम्बल" के रंगमंच पर, एक्केहार्ड शाल्ल का प्रत्येक अभिनय (रोल) हर बार दोषमुक्त या आलोचना के बिना ही रहा है। उदाहरण के लिये, "साहस मां" में 'आइलिफे' और "शिशर युद्ध" में 'योहान्नेस हार्डर' के उसके अभिनय को देख कर, दर्शकों और आलोचकों ने जहां उसमें एक अच्छे अभिनेता के अंकुर देखे, वहां उन्होंने शाल्ल के अभिनय पर यह आलोचना भी की कि उसका अंग-संचालन दोष युक्त है, और उसकी अभिनयकला "बर्लिन एनसाम्बल" की भव्य अभिनय परम्पराओं से अभी पूर्ण रूप से एकाकार नहीं हुई है।
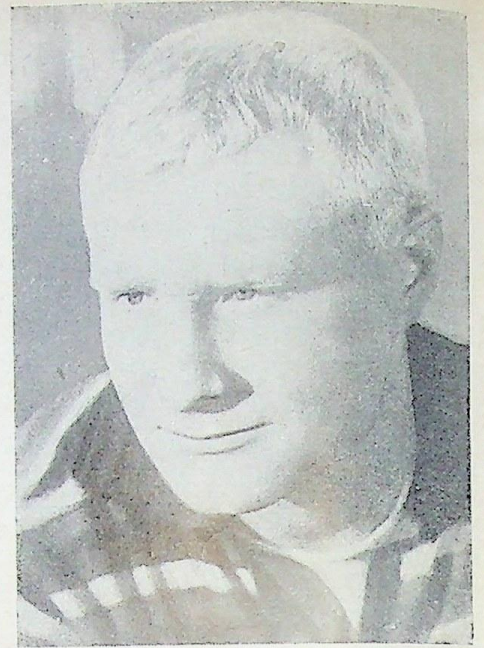
'आरतूरो ऊई' की भूमिका में शा.ल अभिनेत्री रूथ ड्रेवसल के साथ

उसके अभिनय कला की दाद देने वालों में एक, स्वयं ब्रेख्त भी थे, जिन्होंने कई प्रतिभाशाली अभिनेताओं को खोजकर सामने लाया था। ब्रेख्त, शाल्ल को समझते थे और इसीलिये उसका समर्थन करते थे। शाल्ल में छुपी अभिनय कला के अंकुरों को ब्रेख्त पहचान गये थे। इसीलिये गुरू ने अपने शिष्य में कुछ त्रुटियां देखने के बावजूद अपने नाटकों में बार-बार उसको अवसर दिया। गुरू की अनथक परिश्रम और अपने शिष्य में अडिग विशवास से आखिर एक दिन एक्केहार्ड शाल्ल की अभिनय कला चमक उठी। "अरतूरी ऊइ" के नाटक में शाल्ल के अभिनय को देखकर सब दंग रह गये, और यूरोप के उच्चतम कोटि के अभिनेताओं में उसकी

गणना होने लगी ।—"बर्लिन एनसाम्बल" ने पेरिस में, "राष्ट्रों का रंगमंच" (थियेटर आफ नेशन्स) पर जब ब्रेख्त का "आरतूरी ऊई" नाटक पेश किया तो वहां के कला-आलोचकों ने, शाल्ल के अभिनय को देखकर मुक्त कण्ठ से उसकी प्रशंसा की। उन्होंने लिखा कि चार्ले चैपलिन के बाद, एक्केहार्ड शाल्ल दूसरा ऐसा अभिनेता है जो विभिन्न भाव-भावनाओं को इतनी अच्छी तरह से अभिव्यक्ति कर सका है। इसके बाद, सन् १९५६ के यूरोप के दौरे में, 'बर्लिन एनसाम्बल' और इसके प्रमुख अभिनेता शाल्ल की अभिनय कला का अपूर्व स्वागत हुआ।

"आरतूरो ऊई" में उसकी भूमिका एक ऐसे आदमी की थी जिसका नाम हिटलर था और जिसके बारे में अनेक दन्त-कथायें गढ़ी गयी थीं। इस आदमी ने अपने तथाकथित "विलक्षण आकर्षण" के बल पर निकट अतीत में, पूरे राष्ट्र (जर्मन राष्ट्र) को अन्धकार के गर्त में धकेल दिया था। "आरतूरो ऊई" में एक्केहार्ड शाल्ल को इसी आदमी (हिटलर) के बारे में गढ़ी गयी दन्त-कथाओं के जाल को काट कर उसको उसके असली शैतानी रूप में लोगों के सामने लाना था। इस बहुत कठिन भूमिका को सफलता से निबाहने के लिये शाल्ल ने, हिटलर की अनेक दस्तावेज़ी फिल्मों, न्यूज़-रीलों इत्यादि का गहरा अध्ययन किया। इस अध्ययन के बाद उसने मदारी हिटलर के रोल की इतनी अच्छी नक़ल उतारी कि उसके इर्द-गिर्द बुना गया दन्त-कथाओं का जाल छिन्न-भिन्न हो गया और हिटलर का असली शैतानी रूप नंगा होकर सामने आया। कालान्तर में अपने इस रोल को एक्केहार्ड शाल ने इतना अतिरंजित और विकसित किया कि उस से हिटलर एक विदूषक लगते हुये भी, इन्सानी आकार में एक क्रूर बर्बर दरिन्दा बना रहा (जो कि वह वास्तव में था)।

इसी प्रकार, एक्केहार्ड शाल्ल ने शेक्सपियर के "रोमियो-जुलियट" नाटक में 'कोरियोलानस' का सफल अभिनय भी किया।

खेलों का इतिहास

'ओलम्पिया और उसके खेल'

अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक कमेटी के बुलेटिन नं० ८३।१९६६ के अनुसार : "पांडित्यपूर्ण तथ्यों से पूर्ण अपनी पुस्तक में लेखक ने प्राचीनकाल की क्रीड़ाओं और उस समय के खेलों के परूषोचित प्रकारों को पुनर्जीवित किया है, इससे वह इतिहासकार का दर्जा प्राप्त कर लेता है, लेकिन कभी-कभी कवि सरीखा भी लगता है। इस पुस्तक के बिना कोई भी ओलम्पिक पुस्तकालय अधूरा रहेगा।"

जिस आदमी की ऐसी तारीफ की गई है वह हैं जर्मन जनवादी गणतंत्र की राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के अध्यक्ष, डा० हांइज़ शोबेल जिन्होंने "ओलम्पिया और उसके खेलों" का इतिहास लिखा है।

पुरातत्व की सैर

ओलम्पिया में सबसे पहले हमारी नज़र उस जगह पड़ती है, जहां एक स्तम्भ में जड़ा हुआ, कूबरटिन का हृदय अन्तिम विश्राम ले रहा था। यह व्यायामशाला से भी बड़ी जगह थी जहां पुराने ज़माने में सघन शारीरिक शिक्षण चलता था और खिलाड़ी कड़े मुकाबले की तैयारी करते थे। हम इस पवित्र स्थल पर कुछ देर ठिठक गये और उस व्यक्ति की याद में खो गये, जिसने आधुनिक युग के ओलम्पिक खेलों का गठन किया और खेल-जगत के इतिहास में विश्व-व्यापी नामावरी हासिल की। इसके बाद हमने चारों ओर निहारा। जिमनासियम के बगल में उसके दक्षिण भाग से मिला हुआ खम्भों का एक सुरक्षित स्वाक्यर है, जिसे पार्लेस्ट्रा कहते हैं। दोनों स्थानों को आज भी शारीरिक शिक्षण के लिये उपयोग में लाया जा सकता है। इनमें ओलम्पिया आज भी उतना ही प्राणवान है, जितना प्राचीनकाल में था।

"ऐसा लगता है कि ओलम्पिया के निवासी लोकप्रिय खेलों के बारे में कम ही जानकारी रखते हैं। आधुनिक प्रतियोगी खेलों के बारे में तो उनकी जानकारी और भी कम है। हमने कुछ किसानों से, गांव के कुछ बालक और बालिकाओं से बातचीत की। पता चला कि वे भाला या डिसकस फेंकने में पूरी तौर से अनभिज्ञ हैं।"

आज के आदमी की दृष्टि से प्राचीनकाल के जीवन की झांकी, प्राचीन ओलम्पिया और हमारे युग के ओलम्पिक खेलों की तुलना, जो एक विशेषज्ञ ने परख कर की है यही सब इस पुस्तक की मोहक विशेषता है।

पुस्तक को पढ़ने से लगता है जैसे २,००० साल पहले की दुनिया की आंखों देखी रिपोर्ट को खूबी से पकड़ा गया है, फिर इसका मानवीय सन्देश अमिट ओज के साथ दिया गया है। यद्यपि हांइज शोबेल ने प्राचीन क्रीड़ाओं के वर्णन में रोचक शैली का सहारा लिया है, तथापि यह पुस्तक वैज्ञानिक मानदण्डों पर खरी उतरती है। लेखक ने जिन स्रोतों का सहारा लिया है वे विश्वसनीय हैं। विषय-वस्तु में वह सब कुछ है, जो इस सम्बन्ध में दिलचस्प हो सकता है : 'पुराकाल में ओलम्पिक खेलों का ऐतिहासिक सर्वेक्षण', 'खेलों का गठन और उसकी कार्यविधि', ओलम्पिक, प्रतियोगिताओं के विविध रूप', 'खुदाई', 'पियरी द कोबरटीन और आधुनिक ओलम्पिक खेलों की स्थापना।' पुस्तक ९० चित्रों से सुसज्जित है।

अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक कमेटी के अध्यक्ष, एवरे ब्रन्डेज ने पुस्तक पर टिप्पणी करते हुये कहा है : "इस पुस्तक के प्रकाशन का मैं स्वागत करता हूं और यह कामना करता हूं कि यह अधिकाधिक लोगों के हाथ में पहुंचे, खासतौर से नौजवानों के पास।"

प्रोफेसर वेरनर क्लेमके

२४ सितम्बर के दिन, नई दिल्ली में ग्राल इण्डिया फाइन ग्रार्टस एण्ड क्राफ्टस सोसाइटी के हाल में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के भारत-स्थित व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री हरबर्ट फिशर ने ज. ज. ग के सुप्रसिद्ध ग्राफ चित्रकार प्रोफेसर वेरनर क्लेमके के ग्राफ चित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में इस सिद्धहस्त चित्रकार के अनेक ग्राफ-चित्र प्रदर्शित किये गये थे जिनमें फिल्मी-पोस्टर, पुस्तक-सज्जा, काष्ठ-कला आदि के ग्राफ-चित्र सम्मिलित थे। पुस्तक-सज्जा के चित्रों में ग्रिम की परी-कथायें और कैंटरबरी-कथायें विशेषकर उल्लेखनीय हैं। इन पृष्ठों पर हम, सूचना पत्रिका के अनेकानेक पाठकों के लिये, इस सुन्दर एवं सफल प्रदर्शनी की एक झांकी प्रस्तुत कर रहे हैं। यह ग्राफ-चित्र प्रदर्शनी चार दिन तक खुली रही।

प्रोफेसर वेरनर क्लेमके ने पिछले २० वर्षों से पुस्तक-सज्जा और पुस्तक-चित्रांकन कला की अनथक साधना द्वारा, विश्व-ख्याति प्राप्त कर ली है। इस कला में उनका क्षेत्र कितना भिन्न और फैला हुआ है इसका अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि प्रो. क्लेमके ने जिन लेखकों की कृतियों की रूप-सज्जा तैयार की और उनका चित्रांकन किया, उनमें से कुछ के नाम ये हैं: डिडेरो, वोल्टेयर, मोन्टेस्क्यू, बोक्कासियो, केरवाण्टे, हारियेट बीखर-स्टोवे, एरनाल्ड स्वाइग, मायाकोव्स्की और हाज़ेक। इन विश्वविख्यात लेखकों की कृतियों के अतिरिक्त चित्रकार क्लेमके ने कई जर्मन लोक-कथाओं का चित्रांकन एवं रूप-सज्जा भी की।——लाइपजिग में आयोजित हर वर्ष की पुस्तक-प्रदर्शनियों में प्रो. क्लेमके द्वारा रूप-सज्जित एवं चित्रांकित पुस्तकों को कई बार, "वर्ष की सर्व सुन्दर पुस्तक" के पदक से विभूषित किया गया है। बड़े बड़े प्रकाशक और पुस्तक संकलन संघ, उनका सहयोग पारकर अपने आपको धन्य समझते हैं।

सन् १९६१ में, बर्लिन स्थित "कलाओं की जर्मन अकादमी" ने प्रो. क्लेमके को पूर्ण सदस्य बनाया, और इसके बाद उनको 'अकादमी' के 'ललित कला विभाग' का सचिव बना दिया। सन् १९६२ में उनको, जर्मन जनवादी गणतंत्र के 'राष्ट्रीय पारितोषिक' से विभूषित किया गया।

◄ प्रदर्शनी में
दो नन्हे दर्शक
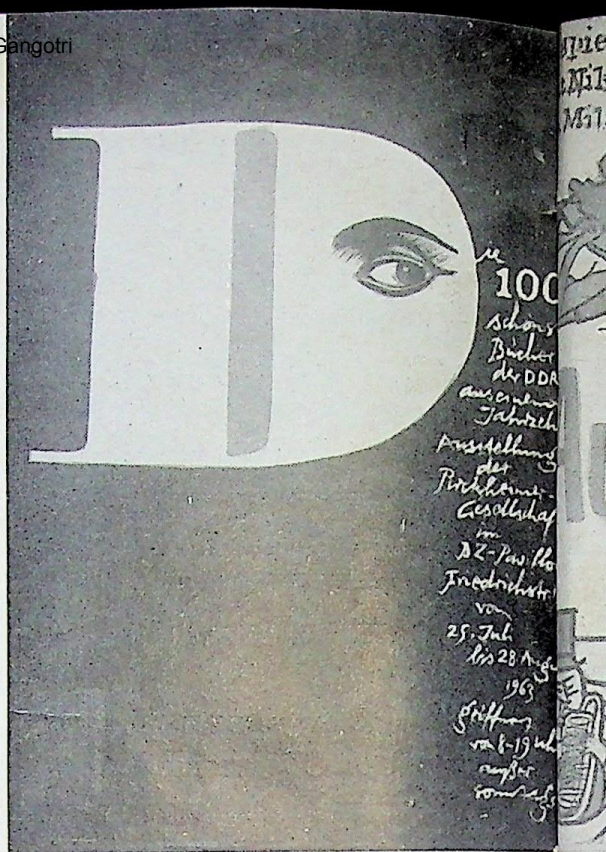
जर्मन ग्राफ
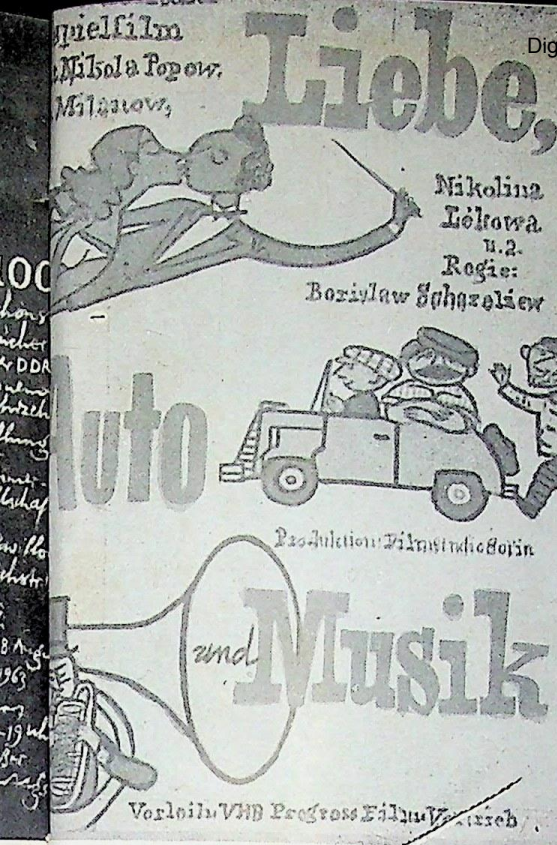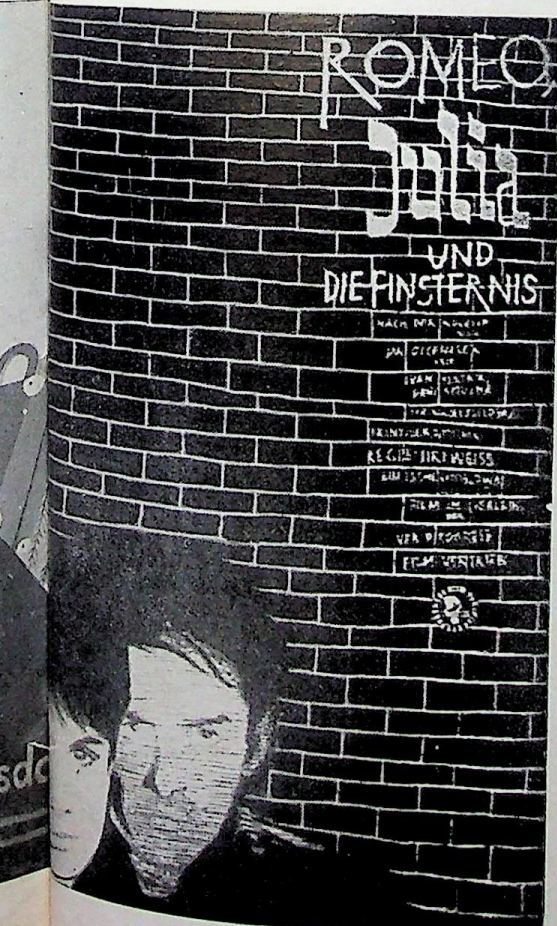
'वर्ष की १०० सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें' नामक प्रदर्शनी का एक पोस्टर ...और एक फिल्म-पोस्टर : प्रेमकार और संगीत...

परीक्षा

इस माहन ग्राफ-चित्रकार ने केवल विश्व की क्लासिकी कृतियों को ही अपनी कला का केन्द्र नहीं रहने दिया, बल्कि ज. ज. ग. की लोकप्रिय पत्र-पत्रिकाओं में समय समय पर प्रकाशित होने वाले इनके रेखा-चित्रों, फिल्म पोस्टरों, रंगमंच कार्यक्रम पुस्तिकाओं और ऐसी ही अन्य कला-विधाओं में भी इनकी बहुमुखी प्रतिभा के दर्शन होते हैं। देश का लगभग प्रत्येक बच्चा प्रो. क्लेमके के रेखा-चित्रों से परिचित है। १६वीं शताब्दी के 'लुडविग रिखटर' के बाद, संभवतः प्रो. वेरनर क्लेमके ही एक ऐसे जर्मन ग्राफ-चित्रकार हैं जो नन्हें बच्चों के कोमल दिलों में, बहुत बड़े पैमाने पर अपनी जगह बना सके हैं। ज. ज. ग. में शायद ही कोई ऐसा बच्चा हो जो ग्रिम-बन्धुओं की परी-कथाओं को न जानता हो। इनका चित्रांकन प्रो. क्लेमके ने किया है।

प्रोफेसर क्लेमके एक कला-प्रशिक्षक भी हैं पिछले १५ वर्षों से। इसलिये अपने अनुभवके आधार पर वह, पुस्तकों में चित्रांकन के मूल्य एवं महत्व को जानते हैं। अपने आधीन, आज तक उन्होंने, अनेक नौजवान कलाकारों को प्रशिक्षित करके मैदान में उतारा है। इस कलाकार की रचनायें कला और प्रतिभा का अद्भुत संगम प्रस्तुत करती हैं।

प्रथम विश्व-युद्ध क अन्तिम दिनों में प्रो. क्लेमक का जन्म हुआ एक दरिद्र परिवार में। उनका बचपन बीता उत्तर-पूर्व बर्लिन को एक गन्दी मज़दूर बस्ती में। जवानी में कदम रखते ही उनके पिता का देहान्त हुआ, और क्लेमके को कला-शिक्षक बनने का सपना अधूरा छोड़ना पड़ा। इसके बाद एक विज्ञापन फर्म में वह नौकर हो गये। इस तरह वह अपने परिवार का पेट पालने लगे। तीन वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद क्लेमके फर्म के कार्टून-फिल्म विभाग के प्रमुख पद पर पहुंचे। यह १६३६ का वर्ष था जिसमें हिटलर ने दुनिया को दूसरे महायुद्ध में झोंक दिया। क्लेमके को, जर्मन सेना में जबरन भरती किया गया।

प्रो. वेरनर क्लमके को कभी भी किसी कला-कालज में, नियमित रूप से अध्ययन करने का अवसर नहीं मिला। अपने अनवरत परिश्रम से अखबारों और पत्रों में रेखा-चित्र भेजते छापते वह स्वयं-सिद्ध कलाकार बन गये। कला-शैलियों में विभिन्न प्रयोगों ने उनको एक माहन एवं प्रतिभाशाली ग्राफ-चित्रकार बना दिया। ग्राफ-चित्रकला की सभी विधाओं तथा शैलियों में प्रो. क्लेमके, काष्ठ-कला को सबसे अधिक पसन्द करते हैं। इस कला विशेष की ओर कुछ ही समय देकर, वे काष्ठ-कला के भी एक सिद्धहस्त कलाकार बन गये हैं।...

िला प्रदर्शनी

ज ज.ग. के व्यापार दूतावास के प्रमुख, श्री हरबर्ट फिशर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं
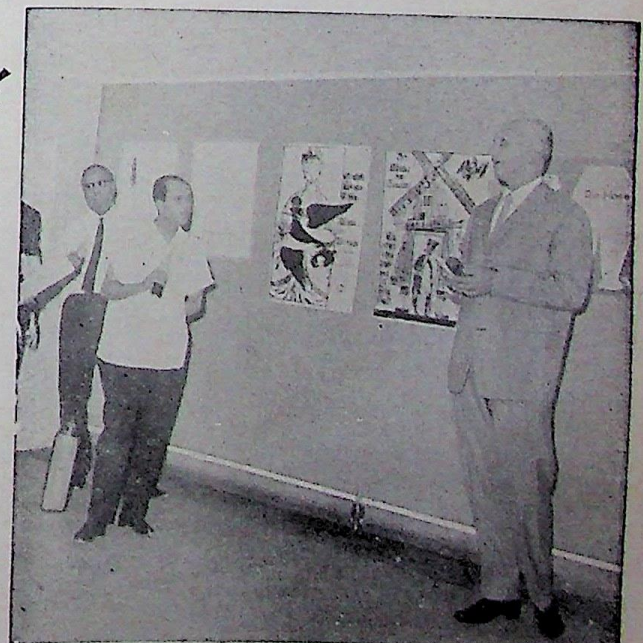
दो फिल्म-पोस्टर : "बोमन्-डोर्फ की यात्रा"...और "रोमियो, जूलिया और अन्धकार..."

दो देशों में गहरे संबंध

वाल्टर उल्ब्रिख्त की यूगोस्लाव यात्रा...

यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति जोज़फ टीटो के निमंत्रण पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य-परिषद् के अध्यक्ष ने २६ सितम्बर से २ अक्तूबर (१९६६) तक यूगोस्लाविया की राजकीय यात्रा की ।

यह महत्वपूर्ण यात्रा, यूगोस्लाविया और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच, दिन प्रतिदिन बढ़ते और गहरे होते हुए सम्बन्धों की साकार अभिव्यक्ति थी, और इस यात्रा ने यूरोप में ज. ज. ग. की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया है । श्री उल्ब्रिख्त की यह यात्रा न केवल यूरोप में ही टिप्पणियों का विषय बनी, बल्कि यह तटस्थ देशों में भी काफी दिलचस्पी का केन्द्र बनी । इन देशों में इस बात पर एक बार फिर जोर डाला गया कि पं. जर्मनी का यह दावा कि केवल वही सम्पूर्ण जर्मनी का प्रतिनिधि है, आजकल की वास्तविकताओं से कोसों दूर है ।

पश्चिम जर्मन सरकार की अब यह एक आदत बन गई है कि वह हर उस देश को धमकी देती है जो ज. ज. ग. के साथ गहरे सम्बन्ध जोड़ने की कोशिश करे । धमकियों का आधार पश्चिम जर्मनी का यह भौंडा दावा है कि केवल वही सम्पूर्ण जर्मनी का एकमात्र प्रतिनिधि है । लेकिन, जैसा कि श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने हाल ही में कहा "जीवन के ठोस, वास्तविक तथ्य तथाकथित हाल्ज़टाइन सिद्धान्त से अधिक मज़बूत हैं ।..."

यूगोस्लाविया वह एक देश है जिसने बड़ी सफलता से, अपने मामलों में पश्चिम जर्मनी के हस्तक्षेप और दबाव का मुंहतोड़ जवाब दिया है । सन् १९५६ में, यूगोस्लाविया ने पश्चिम जर्मनी की धमकियों की परवा न करते हुए ज. ज. ग. के साथ, लेगेशन स्तर पर राजनयिक सम्बन्ध स्थापित किये । अब इन दोनों देशों, यूगोस्लाविया और जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, अपने इन राजनयिक सम्बन्धों को दूतावासों के स्तर तक बढ़ाने का फैसला किया है । इस फैसले से भी पश्चिम जर्मनी बौखला उठा और उसने, अपनी आदत से मजबूर होकर, इस बार भी यूगोस्लाविया पर धमकियों की वर्षा की । लेकिन पश्चिम जर्मनी के इस रवैये पर राष्टपति टीटो ने स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा की: "--हम किसी भी देश को, अन्य देशों के साथ अपने सम्बन्ध क़ायम करने के सम्बन्ध में, हस्तक्षेप करने और दबाव डालने की इजाज़त नहीं देंगे । मैंने बार बार इस बात को दोहराया है कि ज. ज. ग. का अस्तित्व एक माहन वरदान है, क्योंकि यह पश्चिम जर्मनी के प्रतिशोधवादी तत्वों के दबाव के खिलाफ एक मज़बूत क़िला है ।..." यह घोषणा, पश्चिम जर्मनी की धमकियों का सही और मुंहतोड़ जवाब है ।

यूगोस्लाविया की पूरी यात्रा में, श्री वल्स्टर उल्ब्रिख्त का बहुत अच्छा मैत्रीपूर्ण स्वागत हुआ । बेलग्राद, ज़ाग़रेब, ल्यूबलियाना अथवा अन्य उद्योग-पुरियों एवं कृषि फार्मों पर --जहां भी वे गये, श्री उल्ब्रिख्त और उनके अन्य साथियों का, शांति और मैत्री के सन्देशवाहक जर्मन राज्य के प्रतिनिधियों के रूप में उनका भव्य स्वागत किया गया ।

जर्मन-यूगोस्लाव संयुक्त विज्ञप्ति

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य-परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त और यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति, श्री जोसफ ब्रोज टीटो ने "प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय सवालों पर समान विचार" प्रकट किये हैं। यह बात उस जर्मन-यूगोस्लाव सह-विज्ञप्ति में कही गई है जिस पर, श्री उल्ब्रिख्त की यूगोस्लाविया यात्रा की समाप्ति पर (२ अक्टूबर को) दस्तखत हुए।

इस विज्ञप्ति में यह भी कहा गया है कि "मैत्री एवं सद्भावनापूर्ण वातावरण में हुई बात-चीत के दौरान, ज. ज. ग. और यूगोस्लाव समाजवादी संघीय गणतंत्र के बीच सम्बन्धों, अन्तर्राष्ट्रीय रिश्तों की समस्याओं और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन के बारे में विचार-विनिमय हुआ।..."

दोनों ओर से इस बात पर संतोष प्रकट किया गया कि दोनों देशों के आपसी सम्बन्धों में एक नया हितकारी मोड़ आया है और "इस दिशा की ओर बढ़ने के प्रयत्न जारी रखे जायेंगे।..."

साम्राज्यवादी-हस्तक्षेप

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में लगातार बल-प्रयोग एवं दबाव के इस्तेमाल से "दोनों देशों ने चिन्ता व्यक्त की है, जिस से अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति बिगड़ती जा रही है।..."

उनका यह निश्चित मत है कि "विदेशी साम्राज्यवादियों द्वारा स्वाधीन देशों, विशेषकर एशिया और अफ्रीका के देशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप की नीति बहुत बड़ा खतरा है।...

"यह बाहरी दबाव तथा हस्तक्षेप विकासशील देशों के पूर्ण आर्थिक एवं राजनीतिक उद्धार का मार्ग अवरूद्ध करता है और कंटकाकीर्ण बना देता है, उनकी आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति की गति को धीमा कर देता है, और इस प्रकारयह हस्तक्षेप, विश्व में लड़ाई-झगड़ों के लिये एक बहुत बड़ा कारण जाता है।..."

इस संयुक्त घोषणा में "वियतनाम की जनता का पूर्ण समर्थन करके, वियतनाम जनवादी गणतंत्र पर अमरीकी बमबारी को तुरन्त बन्द करने की" मांग की गई है। घोषणा में कहा गया है कि जनेवा संधि के आधार पर एक ऐसे हल को तलाश करना चाहिये "जिससे वियतनामी जनता के मुक्ति-संघर्ष के इस उद्देश्य की पूरी तरह पूर्ति हो कि बाहरी हस्तक्षेप के बिना अपने भाग्य का निर्णय करने की वह (जनता) स्वयं अधिकारी है।..."

शांतिपूर्ण-सहअस्तित्व

अध्यक्ष उल्ब्रिख्त और राष्ट्रपति टीटो समाजवादी तथा तटस्थ देशों और तमाम शांतिप्रिय देशों के बीच अधिक विस्तृत एवं अधिक सक्रिय सहयोग के लिये नये प्रयत्नों की आवश्यकता पर भी सहमत हो गये, क्योंकि "यह सहयोग शांति की सुरक्षा तथा वर्तमान प्रतिकूल विकास को रोकने के लिये, साम्राज्यवादियों द्वारा पैदा किये गये खतरों एवं उनके बलप्रयोग को रोकने के लिये, आर्थिक तथा राष्ट्रीय उद्धार के लिये जनताओं के संघर्ष के पुर असर समर्थन के लिये, और समानता के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिये एक निर्णायक तत्व है।..."

इस संदर्भ में उन्होंने इस बात को दोहराया कि शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति वह आधार है जिस पर ऐसे सम्बन्ध क़ायम किये जा सकते हैं।

विकासशील देश

दोनों ओर से अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धों पर काफी विचार किया गया, और वे इस नतीजे पर पहुंचे कि "विकासशील देशों के विकास को तीव्रतर करने के लिये और उनकी राष्ट्रीय स्वाधीनता को सुदृढ़ बनाने के लिये अधिक प्रयत्नों की आवश्यकता है।..."

दोनों देशों ने यह दृढ़ संकल्प व्यक्त किया कि वे विकासशील देशों को, शक्ति भर आर्थिक, तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहायता देते रहेंगे।..."

जर्मन समस्या

संयुक्त घोषणा में यूरोप के देशों के बीच अधिक विस्तृत और अधिक बड़े पैमाने पर

(शेष २२ पृष्ठ पर)

अध्यक्ष उल्ब्रिख्त और राष्ट्रपति टिटो 'संयुक्त विज्ञप्ति' पर दस्तखत कर रहे है

ज. ज. ग. में छुट्टियों की सैर

इस बार जुलाई और अगस्त के स्कूली छुट्टियों के दौरान जर्मन जनवादी गणतंत्र में पर्यटन और छुट्टियों की सैर की भारी चहल-पहल थी, जैसी की पहले कभी नहीं रही।

इस बार की छुट्टियों में ४००,००० मज़दूर और वैतनिक कर्मचारियों ने अपने परिवारों के साथ अपनी छुट्टियां विभिन्न प्रकार के अवकाश-गृहों में बितायीं। कारखानों की ओर से चलने वाले अवकाश शिविरों में ८००,००० बच्चों ने भाग लिया।

ज. ज. ग. के नौजवान संगठनों और स्कूलों द्वारा आयोजित कई अन्य शिविरों में प्रायः प्रत्येक यूरोपीय तथा गैर-यूरोपीय देश के नौजवानों और बच्चों ने अवकाश का आनन्द लिया। विदेशों से सैकड़ों और हज़ारों की संख्या में पर्यटक ज. ज. ग. में आये।

अवकाश-गृह

'फ्री जर्मन ट्रेड यूनियन फेडेरेशन' की अवकाश सेवा की ओर से ३१२ पर्वतीय, समुद्रतटीय और अन्य रमणीक स्थलों पर १,१७५ अवकाश-केन्द्र चलते हैं। पिछले वर्ष फेडरेशन ने मजदूरों को प्रायः कुल ११ लाख दिनों की छुट्टियाँ प्रदान कीं। दो सप्ताह का पूरा निवास-खर्चा प्रति व्यक्ति पर उसके मासिक वेतन के दस प्रतिशत से कम ही पड़ता है। यह रकम वेतन के अनुसार ३० मार्क से १०० मार्क तक पड़ती है। फेडरेशन के प्रबन्ध के अनुसार ज.ज.ग. के ७,००० से अधिक मजदूरों ने अन्य समाजवादी मुल्कों में अपनी छुट्टियां बिताईं। पर विदेशों में अवकाश बिताने का अधिकांश प्रबन्ध ज.ज.ग. के पर्यटन कार्यालय ने किया। पर्यटन कार्यालय से दुनिया भर की ११० एजेंसियों के करार समझौते हैं।

पर्यटन और आरोग्य

इस साल अनुमानतः ६३०,००० विदेशी पर्यटक ज. ज. ग. की यात्रा करेंगे। इसमें
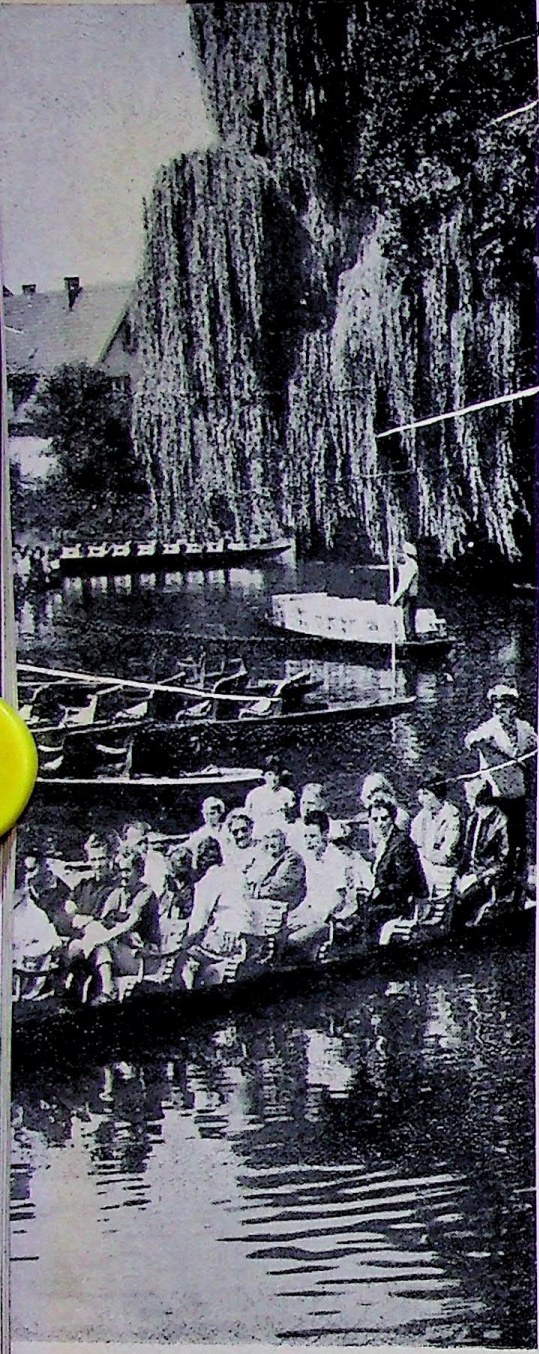
उन लोगों को शामिल नहीं किया गया है, जिन्हें एक दिन के विशेष प्रवेश की अनुमति दी जाती है ।

सुप्रसिद्ध रेडियम और अन्य खनिज पदार्थों से युक्त स्वास्थ्य प्रदायक स्थानों, आरोग्य-आश्रमों और स्पासों के उपयोगी वातावरण में ज. ज. ग. में चिकित्सा की

...का ...सौया रिकार्ड...

सुविधा उपलब्ध है । अफ्रीका और एशिया के प्रख्यात राजनीतिज्ञों ने ज. ज. ग. के आतिथ्य तथा इन आरोग्य-आश्रमों और स्पासों के डाक्टरों की कुशलता से लाभ उठाया है ।

नौजवान और शौकिया पर्यटन

लोकतांत्रिक नौजवानों के विश्व-फेडरेशन द्वारा प्रोत्साहित नौजवान पर्यटन के क्षेत्र में भी ज. ज. ग. सक्रिय भाग लेता है । इस तरह नौजवान पर्यटकों के लिये ३०० संभव यात्रा पथों के ७१ स्तरीय कार्यक्रम सुलभ किये जाते हैं ।

पर्यटन कार्यालय द्वारा प्रबन्धित शौकिया ट्रिपों में विशेष उत्साह देखा गया है । उदाहरण के लिये शौकिया छविकारों, कला-संग्रहालय के दर्शकों, भाषा शिक्षकों, थियेटर के शौकीनों और संगीत-प्रेमियों के लिये आयोजित ट्रिप विशेषकर सफल रहे हैं ।

सारी दुनिया से यात्री

अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया और अमरीका के दोनों भागों से आने वाले यात्रियों की संख्या दिन-पर-दिन बढ़ती जा रही है । नाइजीरिया, भारत, पाकिस्तान, जापान, श्रीलंका, बर्मा और अमरीका तथा कनाडा के कई यात्रियों के लिये ज. ज. ग. अवकाश बिताने का स्थान बन गया है ।

ज. ज. ग. की राजधानी बर्लिन अपने सांस्कृतिक स्थलों और समकालीन राजनीतिक महत्व के कारण ध्यान आकर्षित करने का स्थान बन गया है । गैर-यूरोपीय यात्री प्रथम समाजवादी राज्य के विकास में खास-तौर से गहरी रुचि प्रदर्शित कर रहे हैं, उस समाजवादी राज्य में जिसने साम्राज्यवाद, जातिवाद और उपनिवेशवाद का खात्मा कर दिया है ।

पश्चिम जर्मनी में नाज़ी जनरलों की रस्साकशी

पश्चिमी जर्मनी के जनरलों द्वारा गृह और विदेशी मामलों पर सीधा प्रभाव जमाने की स्थिति प्राप्त करने के लम्बे प्रयास से अगस्त के अन्तिम दिनों में एक खुले संघर्ष की शुरूआत हुई । पहला दर्शनीय परिणाम था सशस्त्र सेना के आला कमांडर इंस्पेक्टर जनरल हाइंज़ ट्रैटनर, हवाई सेना के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल पानिट्स्की और दूसरे प्रमुख अधिकारियों की मुआत्तलीया बरखास्तगी ।

सुरक्षा मंत्री काईवे फान हसेल सचमुच जनरलों के साथ इस बात पर सहमत हुए कि मतभेद का सम्बन्ध लक्ष्यों से नहीं बल्कि तरीकों से है जिनसे ये लक्ष्य प्राप्त किये जाने हैं । इन साधनों और तरीकों में सेनाओं के हथियार और सैन्य-मंत्रालय के संगठन सम्बन्धी तकनीकी ढंग की समस्यायें शामिल हैं ।

नाज़ियों को नाज़ियों ने हटाया

आक्रमण और प्रतिशोध की बोन नीति के जारी रहने का सबसे ताज़ा सबूत यह मिला है कि हिटलर के भूतपूर्व अधिकारी, युद्ध अपराधी ट्रैटनर और पानितज्की के स्थान पर दूसरे नाज़ी अधिकारियों की नियुक्ति हुई है ।

लेफ्टिनेंट जनरल उलरिख दे माइसीरे को इंस्पेक्टर जनरल (तीनों सेनाओं का आला कमांडर) नियुक्त किया गया है । ज.ज.ग. द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक में इसी माइसीरे का एक युद्ध अपराधी के रूप में भण्डाफोड़ किया गया है। पोलैण्ड के खिलाफ नाज़ी आक्रमण में उसने भाग लिया था । और जब हिटलर की सेनाओं ने सोवियत संघ पर चढ़ाई की तब वह जनरल स्टाफ अफसर था ।

फरवरी १९४५ में युद्ध समाप्ति के कुछ पहले माइज़ीरे को हिटलर का विश्वासपात्र होने के नाते उसके भूमिगत खुफिया कक्ष में भेज दिया गया । युद्ध के अन्तिम दिनों में माइज़ीरे हिटलर के उत्तराधिकारी, एडमिरल डोयनिट्स का तात्कालिक सहायक था ।

युद्ध अपराधी ह्यूज़िंगर और स्पाइडेल के साथ माइसीरे उन नाज़ी अधिकारियों की प्रथम पंक्ति में था जो नये पश्चिमी जर्मन बुंडेज़वेर (सशस्त्र सेना) के निर्माण में लगे हुये थे ।

भूतपूर्व नाज़ी अधिकारी लेफ्टिनेंट जनरल स्टाइनहाफ को पश्चिम जर्मनी की वायुसेना का नया इंस्पेक्टर बनाया गया है। इसके पहले वह मध्य-यूरोप में नाटो हवाई सेना का प्रधान था ।

लड़ाकू कमांडर के नाते, स्टाइनहाफ को गोईरिंग ने, युद्ध समाप्ति के कुछ ही दिन पूर्व, नाज़ियों की लड़ाकू जेट इकाई की स्थापना करने का आदेश दिया ।

पुराने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये नये साधन

ज. ज. ग. के प्रमुख पत्र "नूएस दूइ शलैण्ड" का कहना है कि बोन का खुला संघर्ष "बढ़ते हुय आन्तरिक और बाह्य अर्न्तविरोधों से त्राण पाने के लिये" सर्वाधिक प्रतिक्रियावादी सैन्य शक्तियों के प्रयासों की एक अभिव्यक्ति है ।

"समस्या है शासन-तंत्र को अधिक पेचीदा स्थिति के उपयुक्त बनाना" और इस तरह शासक सी. डी. यू पार्टी की टूटी-फूटी नीतियों का उद्धार करना । पत्र के अनुसार सैनिक नेताओं ने "गृह और विदेशी मामलों के निर्णयों में अधिक व्यक्तिगत प्रभाव (प्रत्यक्ष और परोक्ष) के लिय दबाव डाला । बोन की आक्रामक नीतियों की असफलता, नाटो का संकट, बुखारेस्ट में वारसा संधि के देशों द्वारा प्रसारित ताज़ी चेतावनी––इन सब ने बाध्य किया है कि बोन अपनी पुरानी राजनीतिक रफ्तार के लिये नये रास्तों की खोज करे ।"

पत्र ने अन्त में लिखा है कि पश्चिम जर्मनी की सभी शान्तिकामी और लोकतांत्रिक शक्तियों को चाहिए कि वे इन घटनाओं पर कड़ी नज़र रखें और तदनुसार कार्यवाही करें ।

सूचना पत्रिका के पाठकों से

'सूचना पत्रिका' के पाठकों को सूचित किया जाता है कि उनमें से कई एक का चन्दा समाप्त हो गया है, और कुछ ग्राहकों का चन्दा अगले मास में समाप्त हो रहा है । अपने इन पाठक बन्धुओं से प्रार्थना है कि वे जल्दी से जल्दी हमें अपना वार्षिक चन्दा (दो रुपये मात्र) भेज दें । अन्यथा हम उन्हें 'सूचना पत्रिका' भेजना बन्द कर देंगे ।

'सूचना पत्रिका' के कई एक पाठक ऐसे भी हैं जिन्होंने आज तक 'पत्रिका' का चन्दा दिया ही नहीं है । ऐसे पाठकों से भी हमारा निवेदन है कि वे अगले मास की १५ तिथि तक चन्दा भेज कर 'पत्रिका' के ग्राहक बन जायें । ऐसा न करने पर हम उन्हें 'सूचना पत्रिका' नहीं भेजेंगे ।

'सूचना पत्रिका' एक मासिक प्रकाशन है, और इसका चन्दा (२ रुपये वार्षिक) आप निम्न पते पर भेज सकते हैं :

सूचना अधिकारी
ज. ज. ग. का व्यापार दूतावास
१, कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली

लाइपज़िग में १४वां अखिल जर्मन मज़दूर सम्मेलन

९ सितम्बर को लाइज़िग में अखिल-जर्मन मज़दूरों का १४ वां सम्मेलन शुरू हुआ। इस परम्परागत सम्मेलन में भाग लेने के लिये पश्चिम बर्लिन के दो हजार मज़दूर इस सुन्दर महानगरी में आये थे। इस सम्मेलन में अपनी कार्य-स्थितियों के अनुभव और देश के भविष्य के सम्बन्ध में जर्मनी के दोनों राज्यों के मज़दूर विचार-विनिमय करते हैं। पश्चिम जर्मनी और पश्चिम बर्लिन से आये मज़दूरों में बहुत से 'सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी' के सदस्य थे।

इस साल के सम्मेलन की चर्चाओं में––६ श्रमजीवी टोलियों में––खास बात थी पश्चिम जर्मनी और पश्चिम बर्लिन के प्रतिनिधियों द्वारा अपनी बढ़ती हुई कठिन आर्थिक हालत पर दी गई रिपोर्ट। पश्चिम जर्मनी के अन्य क्षेत्रों की स्थिति पर विस्तृत चर्चा की गई, जहां पिछले कई महीनों से भारी असुरक्षा का विस्तार हुआ है। अब तक हज़ारों मज़दूरों की नौकरी छूट गई है। इस्पात उद्योग में मोटे तौर पर प्रतिदिन एक हज़ार मज़दूर बेकार हो जाते हैं। लेकिन खास तौर से पश्चिम जर्मनी के खदान उद्योग के मज़दूरों की हालत ज्यादा खराब है। सम्मेलन में अन्य क्षेत्र के एक मज़दूर ने कहा कि सालों से शासक सी. डी. यू. ऐसी नीति का अनुसरण करती रही है, जिससे इजारेदारों का हित सधा है और मज़दूरों के कंधों पर नये बोझ डाले गये हैं।

चर्चाओं में दूसरा महत्वपूर्ण विषय था जर्मनी की दो मजदूर पार्टियों एस. पी. डी. और एस. ई. डी. में संवाद। सम्मेलन में इस बात पर एक राय थी कि जर्मन राष्ट्र की समस्यायें ज. ज. ग. की जनता और पश्चिम जर्मनी की शान्तिप्रिय जनता के संयुक्त प्रयास से ही हल की जा सकती हैं। संक्षेप में सम्मेलन के प्रतिनिधियों की यह सर्वसम्मत राय थी कि "हम वार्ताओं, समझदारी और शान्ति की रक्षा करते हुये मिलजुल कर अपने समय के प्रश्नों का हल निकाल सकते हैं।"

एस. ई. डी. केन्द्रीय समिति प्रतिनिधि-मण्डल के वक्ता हार्स्ट सिंडरमान ने संवाद को जारी रखने की दिशा में प्रश्नों का उत्तर देते हुये कहा : "हमने संवाद की शुरूआत की है और हम चाहते हैं कि इसे जारी रखा जाये।" उन्होंने कहा कि प्रमुख प्रश्न है जर्मनी की भूमि से नियन्त्रित युद्ध को रोकना। इस काम की ज़िम्मेदारी समूची जर्मनी की जनता और यूरोप के दूसरे देशों की जनता पर है। जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधि ने बात समाप्त करते हुये कहा कि दोनों जर्मन राज्यों की संस्थाओं के बीच सरकारी वार्ताओं के रास्ते संवाद एक नये आधार और समझदारी की ओर ले जा सकता है।

बातचीत का नियंत्रण

सम्मेलन ने ज. ज. ग. और पश्चिमी जर्मनी के ट्रेड यूनियनों और अन्य जन-संगठनों और एस. ई. डी. और एस. पी. डी. के बीच "वार्ताओं का आवाहन" नामक प्रस्ताव स्वीकार किया। वियतनामी जनता के खिलाफ अमरीकी आक्रमण की समाप्ति और पश्चिम जर्मनी की सरकार से इस सम्बन्ध में समर्थन अपील का प्रस्ताव भी स्वीकार किया गया।

सम्मेलन में १३८ वक्ताओं ने भाग लिया। समय की कमी के कारण ४४ दूसरे वक्ता मंच पर नहीं बुलाये जा सके। ८ प्रस्तावों के जरिये वियतनामी जनता के प्रति अपनी एक-जूटता, दान के रूप में प्रकट करने का आवाहन किया गया। परिणामस्वरूप ज. ज. ग. से २६५८.६६ मार्क और पश्चिमी जर्मनी से १७२६.६६ मार्क और ६ डालर इकट्ठे हुये।

ज. ज. ग. ...१८ वें वर्ष में पदार्पण

(पृष्ठ ३ का शेष)

है कि भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के सम्बन्ध इस वर्ष और गहरे तथा मज़बूत हो गये हैं। इसमें, कांग्रस अध्यक्ष, श्री कामराज की अगस्त में ज. ज. ग. यात्रा न महत्वपूण योगदान दिया। ज. ज. ग. के लोगों ने श्री कामराज के इस बयान का हार्दिक स्वागत किया कि कांग्रेस पार्टी उस भारत-सोवियत संयुक्त-विज्ञप्ति का समर्थन करती है जिसमें दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व के यथार्थ को पुनः दोहराया गया है।

ज. ज. ग. ने अपने अस्तित्व के सत्रहवें वर्ष में, जर्मनी और यूरोप में अनुकूल एवं अच्छा वातावरण पैदा करने के सम्बन्ध में ही केवल पहल नहीं की। अपने घरेलू क्षेत्र में भी इसने और प्रगति की है। उद्योग एवं कृषि में बढ़े हुये उत्पादन के कारण जनता का जीवन-स्तर अधिक ऊंचा और खुशहाल बन गया है। इस वर्ष के अप्रैल मास में ज. ज. ग. में प्रति सप्ताह काम के घण्टे घटा कर ४५ कर दिये गये हैं। जो लोग तीन-पारी प्रणाली के अन्तर्गत काम करते ह उनको केवल ४० घण्टे प्रति सप्ताह काम करना पड़ता है। इससे ज. ज. ग. के लोगों को मनोरंजन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दिल बहलाने का अधिक समय और साधन उपलब्ध हुये हैं। हर दूसरे शनिवार की छुट्टी होती है। इस कारण, जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता ने अपना सत्रहवां गणतंत्र-दिवस––७ अक्टूबर, बड़ी धूमधाम से और बड़े उत्साह से एवं आत्मविश्वास के साथ मनाया।

चिट्ठी-पत्री

प्रिय महोदय,

गत कई वर्षों से आपकी उत्कृष्ट **सूचना पत्रिका** का नियमित पाठक हूं। रचनायें उच्च कोटिकी व रूचिकर होती हैं। प्रगति के पथ पर अग्रसर हम भारतीय आपके प्रगतिशील देश से बहुत कुछ प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। समय-समय पर ज. ज. ग. व भारत के औद्योगिक व सांस्कृतिक सम्बन्धों पर प्रकाशित होने वाले लेख प्रेरणादायक होते हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की एक लड़की पिछले पांच वर्षों से मेरी पत्र-मित्र है। हमने दोनों देशों के सामाजिक व सांस्कृतिक विषयों पर उन्मुख रूप से विचारों का आदान-प्रदान किया है। मेरे पत्र-मित्र ने मुझे बताया है कि उन्हें प्रगति के समान अवसर प्राप्त हैं। और सरकार उनके सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन में हस्तक्षेप नहीं करती। पश्चिम जर्मनी का यह कथन कितना हास्यास्पद व भ्रामक है कि ज. ज. ग. के निवासी बड़ी संख्या में अपने देश को छोड़कर पश्चिम-जर्मनी में प्रवेश करने का प्रयत्न करते हैं।

आशा है 'सूचना पत्रिका' सदैव पाठकों को श्रेष्ठ साहित्य व उपयोगी जानकारी प्रदान करती रहेगी। मेरी शुफकामनायें स्वीकार करें।

भवदीय
वीरेन्द्र शर्मा
जवाहर नगर (**दिल्ली**)

आदरणीय सम्पादक जी,
सादर नमस्कार।

सूचना पत्रिका का नया अंक २० अगस्त, '६६ का मिला। धन्यवाद। पहले के सभी अंक नियमित मिलते रहे हैं। मैं 'सूचना पत्रिका' को बहुत स्नेह और श्रद्धा के साथ आद्योपान्त इसलिय भी पढ़ता हूं कि यह पत्रिका भारतीय गणतंत्र एवं जमन जनवादी गणतंत्र के बीच एक अद्भूत अध्याय जोड़ती है। यह हमारी सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि सभी पहलुओं के सामयिक समन्वय की अटूट भावना की अद्वितीय सूचनिका सी है। इस महान् कार्य के लिये मैं जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास को बधाई देता हूं।

शुभकामनाओं सहित

आपका
सुरेश दुबे 'सरस'
शिक्षा विभाग (**बिहार**)

मान्यवर महोदय,

मुझे अपने घर के पास की एक लायब्रेरी में आपकी **सूचना पत्रिका** देखने का अवसर मिला और वह 'पत्रिका' में पढ़ने के लिये घर भी लाई। वास्तव में यह 'पत्रिका' जर्मन जनवादी गणतंत्र की गतिविधि से परिचय कराती है। घर में छोटे भाई-बहन भी इस 'पत्रिका' में काफी दिलचस्पी लेने लगे। इसलिये 'सूचना पत्रिका' मंगानी पड़ी।

भूगोल और इतिहास की छात्रा होने से मुझे तथा मेरे परिवार को यह 'पत्रिका' बहुत ही पसन्द आई। इसमें हमें जर्मन जनवादी गणतत्र का सच्चा रूप प्राप्त हो जाता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन 'सूचना पत्रिका' हमें निरन्तर भेजते रहें। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप अपने साहित्य को समय पर भेज कर कृतार्थ करेंगे। मैं आपकी 'पत्रिका' का ग्राहक बनना चाहती हूं।

आपकी
बी. के. मलहोत्रा
करोलबाग (**न्यू-दिल्ली**)

सम्पादक जी,

श्री कामराज की ज. ज. ग. यात्रा विवरण सहित अगस्त के **सूचना पत्रिका** से पढ़ी। यह लेख मुझे बहुत पसन्द आया। इस यात्रा विवरण के पढ़ने से हम जर्मन जनवादी गणतंत्र की शांतिपूर्ण नीति से परिचय पाते हैं।

मैं जर्मन भाषा भी सीखना चाहता हूं। आपकी 'सूचना पत्रिका' सदैव मिलती रहती है। शेष कुशल।

आपका
टी. ए. सैयद मुहम्मद
वेंल्लांकल्लूर (**केरल**)

महोदय,

मैंने आपकी **सूचना पत्रिका** और दूसरी पुस्तकें अपने पाठशाला की लायब्रेरी में देखीं, लेकिन स्कूल बन्द होने के कारण मैं उनको न पढ़ सकी। मैं बहुत समय से जर्मनी के बारे में जानना चाहती थी। आशा है कि आप इसमें मेरी सहायता करेंगे। कृपया सभी सुस्तकें जो आप हिन्दी या अंग्रीज़ी भाषा में प्रकाशित करते हैं, भेजें। और साथ ही 'सूचना पत्रिका' भी हर महीने भेजें।

आपकी
खेमा धर
श्रीनगर (**काश्मीर**)

प्रिय सम्पादक महोदय,

माह फरवरी १९६६ से **सूचना पत्रिफा** निरन्तर समय पर प्राप्त हो रही है, जिसके लिये मैं व मेरा परिवार आपका अत्यन्त आभारी है। मेरे परिवार के दो नन्हें सदस्य ज़हीर अहमद व जलील अहमद 'सूचना पत्रिका' के चित्रमय समाचारों को बड़ी उत्सुकता से देखते हैं और ज. ज. ग. के विषय में अनेकों प्रश्न करते हैं, जिसके फसलस्वरूप मेरा व मेरे परिवार की ज. ज. ग. के बारे में काफी मालूमात बढ़ गये हैं। 'सूचना पत्रिका' वास्तव में एक उत्कृष्ट पत्रिका है जिसका अध्ययन भारत और ज. ज. ग. के बीच मैत्री को बल दे रहा है।

क़दीर अहमद चिश्ती
ललितपुर (**उ० प्र०**)

समाचार

भारतीय साप्ताहिक के सम्पादक का ज.ज.ग. में सम्मान

बर्लिन : भारतीय साप्ताहिक पत्रिका "ब्लिट्ज" के सम्पादक आर. के. करंजिया को बर्लिन में एक विशेष समारोह में 'विभिन्न देशों की जनता के बीच मैत्री बढ़ाने के कार्यों के लिए' स्वर्ण पदक (नीडल आफ मेरिट) दिया गया। ज. ज. ग. के मैत्री संघ के अध्यक्ष डा० पाल वेण्डेल ने श्री करंजिया को उक्त पदक से विभूषित किया।

अपनी ज. ज. ग. यात्रा के दौरान श्री करंजिया ने प्रधान मंत्री विली स्टोप से जर्मन तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर और ज. ज. ग. एवं भारत के सम्बन्धों में अधिक विकास से सम्बन्धित समस्याओं पर बातचीत की। उन्होंने ज. ज. ग. की पांचों राजनीतिक पर्टियों के नेताओं से भी वार्ता की।

लंगूर का स्वर्ग

ड्रेसडेन का चिड़ियाघर, जो द्वितीय महायुद्ध में पूर्ण नष्ट हो गया था अब उसका पुर्ननिमाण पूरा हो गया है। उसके एक भवन में, जिसका निर्माण हाल में पूरा हुआ है, लंगूर और गर्म देशों के पक्षी रखे जायेंगे। गर्म देशों के मैमल और पेड़-पौदे भी उसमें लगाये जायेंगे।

इन भवन में प्रकाश की अत्यन्त उत्तम व्यवस्था रहेगी और उसमें ऐसे फौवारे लगाये जायेंगे जिससे पशुओं को उष्ण कटिबंधीय देशों के बनों में होने वाली वर्षा का अनुभव हो।

शिशुओं और बालक-बालिकाओं के लिए नए खिलौने

बर्लिन : लाइपज़िग के शरद्कालीन मेले में ज. ज. ग. ने खिलौनों के ३०० नये माडल-प्रदर्शित किये। कठपुतलियों के खेल, तिपहिया साइकिलें, माडल ट्रेन सेट, और लकड़ी तथा प्लास्टिक के खिलौने इनमें शामिल थे। खिलौना-निर्माताओं द्वारा उनके शिक्षात्मक मूल्य पर अधिक ध्यान दिया गया था। मिग-२१ विमान का माडल (जिसकी माप १:१०० है) और तीन लिटर की क्षमता वाला एक छोटा टैंकर इसके उदाहरण हैं।

ज. ज. ग. में खिलौनों के उत्पादन का ४० प्रतिशत, ५० से अधिक देशों में निर्यात किया जाता है।

पाण्डु-लिपियों का अजायबघर

बर्लिन : बर्लिन के राजकीय पुस्तकालय में दो हज़ार वर्ष पुरानी पाण्डुलिपियों और हस्ताक्षरों का एक अपूर्व संग्रह है। इस तरह की ५ हज़ार पाण्डुलिपियां और ८ हज़ार हस्ताक्षर हैं जो वर्तमान समय के आदिकाल से लेकर निकट अतीत तक की हैं। इस संग्रह में विगत शताब्दियों के प्रसिद्ध व्यक्तियों के १ लाख ६० हज़ार मौलिक चित्र भी हैं।

पुस्तकालय के अग्नि-निरोधक सेफों में बाइबिल का प्राचीनतम लैटिन अनुवाद भी सुरक्षित है। यह ईसा की चौथी शताब्दी का है। इसके अलावा कवियों, दार्शनिकों और विद्वानों की अनेक प्रसिद्ध पुस्तकों की पाण्डुलिपियां भी सुरक्षित रखी हुई हैं।

टेकनिकल पुस्तकालय का अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान

ड्रेसडेन : टेक्नीकल विश्वविद्यालय, ड्रेसडेन का धीरे-धीरे ज. ज. ग. के केन्द्रीय टेक्नीकल पुस्तकालय के रूप में विकास किया जा रहा है। इस समय इसमें ३ लाख पुस्तकें हैं और आशा है आगे चलकर उनकी संख्या १० लाख तक पहुंच जायेगी।

पुस्तकालय का एक प्रमुख कार्य होगा विशाल तकनीकी साहित्य को इस तरह रखना कि आवश्यकता पड़ने पर उसे आसानी से प्राप्त किया जा सके। इसके लिए पुस्तकों का चुनाव करने की विद्युतीय पद्धति लगायी जायेगी।

इस पुस्तकालय में जर्मनी के सभी पुराने पेटेन्ट, ज. ज. ग. और पश्चिमी जर्मनी के सभी पेटेन्ट और यहां तक कि अमरीका और आस्ट्रेलिया के भी बहुत से पेटेन्ट संग्रहीत हैं। इसमें देश-विदेश की वैज्ञानिक विषयों पर ३ हज़ार पत्र-पत्रिकायें भी आती हैं। इसके साथ ही सोवियत संघ में प्रकाशित सारा टैक्निकल साहित्य यहां संग्रहीत किया जाता है। पुस्तकालय में आने वाली नई पुस्तकों में एक चौथाई से अधिक दूसरे देशों की कुल ८०० पुस्तकालयों से नये प्रकाशनों के आदान-प्रदान में मिली पुस्तकें रहती हैं।

पश्चिम जर्मनी में देशभक्त को सजा :

बोन : पश्चिमी जर्मन देशभक्त एमिल बेख्तेल को कार्ल्सरूहे की एक विशेष राजनैतिक अदालत में मुकदमे का स्वांग रचा कर एक वर्ष के कैद की सज़ा दी गई है। कैद की सज़ा के अलावा एमिल बेख्तेल को तीन वर्ष के लिए नागरिक अधिकारों से जिसमें वोट देने और चुनाव लड़ने का अधिकार है, भी वंचित कर दिया गया है। मुकदमे के पहले उन्होंने रिमांड पर जो आठ महीने की कैद काटी है उसे जेल की सज़ा की अवधि से घटा दिया गया है। एमिल बेख्तेल इस समय अत्यन्त अस्वस्थ हैं इसलिए उनकी गिरफ्तारी का वारंट रद कर देना पड़ा, लेकिन सज़ा की बाकी अवधि उन्हें किसी समय भी काटनी पड़ेगी।

एमिल बेख्तेल पर चलाया गया यह मुकदमा न्याय का महज़ एक स्वांग था जिस पर अनेक देशों में तीव्र क्षोभ व्यक्त किया गया है। बेख्तेल पर, गैर-कानूनी घोषित कर दी गयी पश्चिम जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी का काम जारी रखने का आरोप लगाया गया और सबूत पक्ष अपने आरोपों का कोई प्रमाण पेश नहीं कर सका। गवाहों के रूप में पश्चिम जर्मनी की राजनैतिक-पुलिस (संविधान रक्षा विभाग के विशेषज्ञ) पेश किये गये और उन्होंने जो गवाही दी वह गुमनाम "सूचना देने वालों" की सूचनाओं पर आधारित थी। एक और मज़ाक यह था कि मुकदमे के जज, डा० रोटबर्ग थे। यह सज्जन नाज़ी शासन-काल में स्वयं हिटलर की गुप्त पुलिस "गेस्टापो" के सूचना देने वाले एक एजेन्ट थे। उस समय भी देशभक्त एमिल बेख्तेल को वीरता के साथ फासिस्ट विरोधी कार्रवाइयां चलाने के लिये दण्ड दिया गया था।

विचारों के लिए दण्ड

मुकदमे के प्रथम दिन से ही पता चल गया था कि एमिल बेख्तेल पर, किसी अपराध के लिए नहीं, बल्कि कम्युनिस्ट विचारों के लिए मुकदमा चलाया गया। इस फासिस्ट विरोधी नेता को इसलिए अदालत के कटघरे में खड़ा किया गया कि वह पश्चिम जर्मनी की वर्तमान आक्रामक और साम्राज्यवादी नीतियों के कट्टर विरोधी हैं। पश्चिम जर्मनी की सरकार को उनके ये विचार राज्य की सुरक्षा के लिए भयानक मालूम हुए और इसलिए बीमारी की हालत में भी इस महान देश-भक्त योद्धा पर मुकदमा चलाया गया।

विश्व-व्यापी निन्दा

बेख्तेल के मुकदमे और उन्हें दी गयी सज़ा की विश्व भर में निन्दा की गई है। ज. ज. ग. की मानव अधिकार रक्षा समिति ने कहा है कि यह मुकदमा पश्चिम जर्मनी के सभी शांतिप्रिय और जनतांत्रिक लोगों के खिलाफ एक साज़िश है। पोलैण्ड के न्यायाविदों के संघ, अन्तर्राष्ट्रीय छात्र यूनियन, ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया की ट्रेड-यूनियनों, फासिस्ट आक्रमण के समय प्रतिरोध की लड़ाई लड़ने वालों के संघ ने भी बेख्तेल को दण्ड दिये जाने की निन्दा की है। इस विरोध आन्दोलन में ब्रिटिश पार्लियामेन्ट के ६ सदस्य और नोबेल पुरस्कार विजेता लार्ड बायड भी शामिल हो गये हैं। ज. ज. ग. से हज़ारों लोगों ने विरोध पत्र भेजें हैं।

"बर्लिनेर ज़ाइतुंग" नामक ज.ज.ग. के पत्र ने इस मुकदमे के बारे में यह टिप्पणी की है कि "यह एक पक्षीय फैसला बे-मिसाल है, फिर भी यह पश्चिम जर्मनी में जो अमानवीय व्यवस्था है उसका प्रतिनिधित्व करता है और उस स्वतंत्रता और न्याय की पोल खोल देता है जिसकी पश्चिम जर्मन शासक दुहाई देते हैं। इस शर्मनाक मुकदमे के कलंक से वे बच नहीं सकते।..."

...संयुक्त विज्ञप्ति (पृष्ठ १५ का शेष)

सहयोग का उल्लेख करते हुये कहा गया है कि "जर्मन संघीय गणतंत्र (पश्चिम जर्मनी—सं०) का शासक-गुट यूरोप में ऐसे सहयोग का कटु विरोध करता है। इस गुट द्वारा स्थापित सीमाओं को मान्यता न देना, प्रतिशोधवादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देना, परमाणविक शस्त्रों को प्राप्त करने के प्रयत्न करना और घिसे पिटे हाल्स्टाइन सिद्धान्त की दुहाई देना—ये सभी यूरोप में शांति एवं सुरक्षा के प्रयत्नों में ज़बरदस्त रूकावटें हैं..."

"जर्मन समस्या को हल करने का एक ही रास्ता है, वह है दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व की ठोस वास्तविकता को मान लेना, पश्चिम बर्लिन की अप्राकृतिक स्थिति को सामान्य बना देना, और इस तरह यूरोप की स्थिति को बेहतर बनाना।..."

संयुक्त विज्ञप्ति में, संयुक्त राष्ट्र संघ की योग्यता को बढ़ाने के लिये इसकी सार्व-भौमता की इच्छा की गई है। इस सार्व-भौमता के अनुसार "ऐसे सभी राज्यों को सदस्य बनाना चाहिए जो, जर्मन जनवादी गणतंत्र की तरह, राष्ट्र संघ में शामिल होने की प्रार्थना करें।..."

अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर आन्दोलन

दो नेताओं ने, जर्मनी की 'समाजवादी एकता पार्टी' और 'यूगोस्लाव कम्युनिस्टों की लीग' के बीच सहयोग के प्रश्न पर, और अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर आन्दोलन की वर्तमान समस्याओं पर भी विचार-विनिमय किया। उन्होंने दोनों पार्टियों में सहयोग के विस्तार पर संतोष प्रकट किया, और समाजवाद के निर्माण से सम्बन्धित अपने अनुभवों का विनिमय चालू रखना स्वीकार किया।

ज. ज. ग. की 'समाजवादी एकता पार्टी' के प्रथम सचिव, श्री उल्ब्रिख्त और 'युगोस्लाव कम्युनिस्टों की लीग' के महा सचिव, श्री टीटो ने, अपनी-अपनी पार्टी के इस फैसले की तसदीक की कि "वे (पार्टियां) समाजवाद के विचारों के अधिक प्रसार प्रचार के लिये हर प्रकार का प्रयत्न करेंगी। (ये पार्टियां) अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर आन्दोलन तथा तमाम जनवादी एवं प्रगतिशील शक्तियों के बीच समानता और पार्टियों तथा आन्दोलनों की आज़ादी के आधार पर हर तरह सहयोग देंगी, और वे विशिष्ट स्थितियों का एवं समाजवाद तथा शांति के संघर्ष के लिये अपनाये गये भिन्न मार्गों का आदर करेंगी।..."

सचित्र समाचार
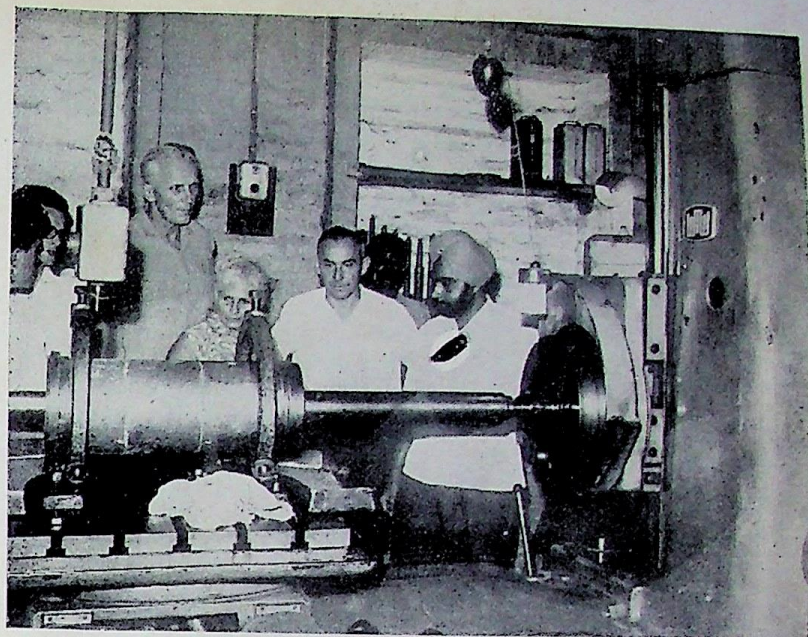
जज. ज. ग. की १७वीं वर्षगांठ की पुण्य-तिथि के अवसर पर, गाज़ियाबाद तहसील (मेरठ जिला) के निस्तौली ग्राम के लोगों के निमन्त्रण पर, भारत-स्थित जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री हरबर्ट फिशर अपनी धर्म-पत्नी और अपने कुछ सहयोगीयों के साथ वहां (निस्तौली) गये। श्री फिशर और उनके सहयोगियों का, वहां के ग्रामवासियों ने जो हार्दिक एवं भव्य स्वागत किया, उसके कुछ चित्र हम इस पृष्ठ और मुख-पृष्ठ तथा अन्तिम पृष्ठ पर प्रस्तुत कर रहे हैं।*

गाज़ियावाद में, श्री फिशर कुछ कारखाने भी देखने गये जहां ज. ज. ग. की मशीनें लगी हुई हैं।

*छायाकार : वीरेन्द्र कुमार

रजि० नं० डी-१३३०
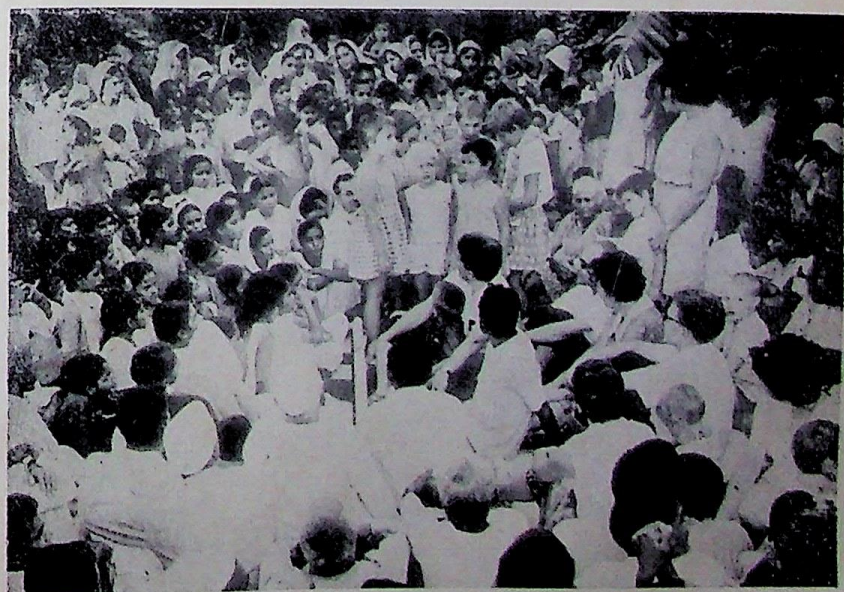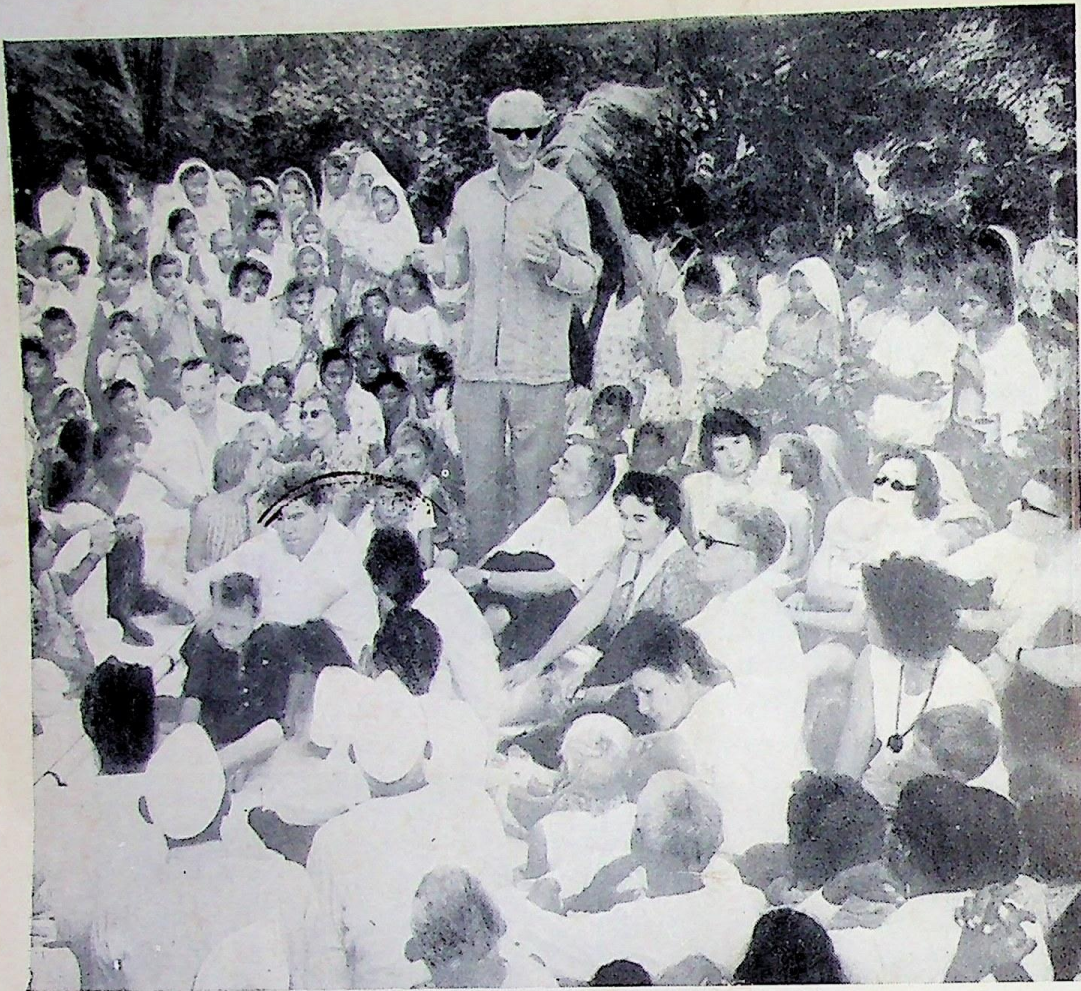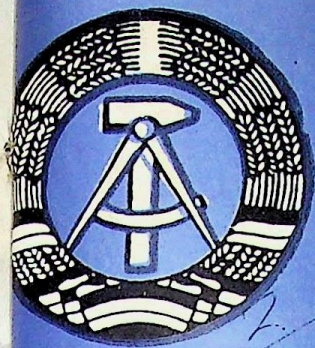
सूचना पत्रिका

भारत-जर्मन जनवादी गणतंत्र मैत्री संघ का सम्मेलन

जर्मन जनवादी

के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ११
अंक ११ | २० नवम्बर, १९६६

संकेत

मुख पृष्ठ : 'भारत–ज. ज. ग. मैत्री संघ' के अखिल भारतीय सम्मेलन का चित्र। दायें से बायें : श्री जगजीवन राम, श्रीमती वायलेट आलवा, श्रीमती सुभद्रा जोशी और श्री हरबर्ट फिशर

अंतिम पृष्ठ : ज. ज. ग. के एक सहकारी-फार्म की एक गाय जो हर साल ५,००० लिटर दूध देती है

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १/२६, कौटिल्य मार्ग नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस बहादुर शाह जफर मार्ग, नयी दिल्ली, द्वारा मुद्रित। सम्पादक: ब्रूनो मे

संयुक्त राष्ट्र संघ में

पिछले महीने में, संयुक्त राष्ट्र संघ के १२१ सदस्य-देशों के प्रतिनिधियों को, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार के वे तीन वक्तव्य पढ़ने का अवसर मिला जो राष्ट्र संघ ने अपने आधिकारिक दस्तावेजों के रूप में वितरित किये थे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की नीति पहले से ही इस सिद्धान्त पर पाबन्द रही है कि वह ऐसे विभिन्न प्रश्नों पर अपना स्पष्ट मत एवं रवैया व्यक्त करती है जो विश्व जनता की चिन्ता के कारण बने हों। इस तरह से, ज. ज. ग. ने शांतिप्रिय देशों में एक सम्मानित स्थान प्राप्त कर लिया है। ये देश इस जर्मन राज्य को विश्व-शांति एवं सुरक्षा के लिये एक महत्वपूर्ण तत्व समझने लगे हैं और राष्ट्र संघ का सदस्य बनने के इसके अधिकार का समर्थन करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा को भेजे गये, ज. ज. ग. सरकार के उक्त तीन व्यक्व्यों में महत्वपूर्ण सामयिक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है।

मानव-अधिकार

इन तीन में पहले वक्तव्य में ज. ज. ग. सरकार के "मानव अधिकारों" से सम्बन्धित विचार प्रकट किये गये हैं, और कहा गया है कि ज. ज. ग. मानव अधिकारों से सम्बंधित अनेक संगमनों को स्वीकार करने के लिए तैयार है। इस संदर्भ में वक्तव्य में घोषणा की गई है कि ज. ज. ग., निम्न अभिसमयों (कानवेन्शनस्) पर तुरन्त अमल करने के लिये तैयार है :

—दासता, दास-व्यापार और दासता की तरह अन्य संस्थाओं तथा तौर-तरीकों को खत्म करने से सम्बन्धित अनुपूरक अभिसमय.

—बेगार के उन्मूलन, वृत्ति तथा रोज़गार में भेदभाव, समान काम के लिये, स्त्री तथा पुरूषों को समान उजरत, और साहचर्य एवं संगठन की स्वतंत्रता से सम्बन्धित अन्तराष्ट्रीय संगठन के अभिसमय.

—शिक्षा के क्षेत्र में भेदभाव विरोधी, यूनेस्को के अभिसमय.

—नर-संहार के अपराध को रोकने और दण्डित करने से सम्बन्धित अभिसमय.

—नारियों के राजनीतिक–अधिकार का अभिसमय.

—प्रत्येक प्रकार का जातिभेद मिटाने से सम्बन्धित अर्न्तराष्ट्रीय अभिसमय.

मनाव अधिकार के क्षेत्र में, जल्द से जल्द कानून पास करने से सम्बन्धित राष्ट्र रांघ के प्रयासों का, ज. ज. ग. समर्थन करता है,

जर्मन जनवादी गणतंत्र के तीन वक्तव्य

क्योंकि "...ज. ज. ग. की अपनी स्वराष्ट्र और पर-राष्ट्र नीति उन सिद्धान्तों के पूर्ण अनुकूल है जो इन अन्तर्राष्ट्रीय दस्तावेज़ों (अभिसमयों) में प्रतिपादित हुए हैं..."

अणु-शस्त्रों के प्रसार पर प्रतिबन्ध

ज. ज. ग. द्वारा २१वीं महासभा को भेजे गये दूसरे वक्तव्य में, अणु-शस्त्रों के प्रसारन और उनके प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाने की चर्चा की गई है। राष्ट्र संघ के सचिवालय ने यह वक्तव्य, संघ के सदस्य देशों के पास भेज दिया है।

वक्तव्य में कहा गया है कि बोन (पश्चिम जर्मन) सरकार की शस्त्रीकरण तथा प्रतिशोधवादी नीति ने यह मांग अनिवार्य बना दी है कि जर्मन भूमि से अब कभी भी युद्ध शुरू होना नहीं चाहिये। निरस्त्रीकरण जर्मन जनता के राष्ट्रीय हितों के अनुरूप है, और इसलिये अणु-शस्त्रों के प्रसार पर प्रतिबन्ध लगाना जर्मन जनता और यूरोपीय शांति के लिये प्राथमिक महत्व रखता है। पश्चिम जर्मनी द्वारा अणु-आयुधों पर अधिकार प्राप्त करना, यूरोप में शांति तथा सुरक्षा सम्बन्धी प्रयासों पर एक ज़बरदस्त प्रहार होगा।

ज. ज. ग. के विभिन्न सुझावों पर अमल करना, यूरोपीय सुरक्षा की गारंटी की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। वक्तव्य में, ज. ज. ग. ने, अणुशस्त्रों के तमाम भूमिगत परीक्षणों को रोकने के अपने समर्थन को एक बार फिर दोहराया है, और राष्ट्र संघ को इस बात का आश्वासन दिया है कि वह वास्तविक निशस्त्रीकरण एवं अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को कम करने के लिये हर संभव प्रयत्न करेगा।

उपनिवेशवादी व्यवस्था का उन्मूलन

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने अपने तीसरे वक्तव्य में इस बात की मांग की कि साम्राज्यवादी-उपनिवेशवादी व्यवस्था को पूरी तरह खत्म किया जाय। अन्य दो वक्तव्यों की तरह ही, राष्ट्र संघ ने इस वक्तव्य को भी, २ नवम्बर के दिन, अपने आधिकारिक दस्तावेज के रूप में सदस्य देशों में वितरित किया।

इस वक्तव्य में कहा गया है कि साम्राज्यवादी उपनिवेशवादी नीति "विश्व की शांति एवं सुरक्षा के लिये एक गंभीर खतरा बनती जा रही है..."

दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका, दक्षिणी रोडेशिया, पुर्तगाल अधिकृत क्षेत्रों, अदन का ब्रिटिश उपनिवेश तथा अन्य पराधीन देशों एवं लोगों को स्वतन्त्रता देने की सिफारिश करने वाली, राष्ट्र संघ की विशिष्ट कमेटी ने इस सम्बन्ध में जो भी फैसले किये, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने उनका समर्थन किया। इस सिलसिले में ज. ज. ग. ने महासभा को, उपनिवेशों को स्वाधीनता प्रदान करने की, एक निश्चित अवधि निर्धारित करने की अपील की। इस संदर्भ में उक्त वक्तव्य में कहा गया है: "प्रत्येक जन-गण को पूर्ण स्वराज्य देने से ही, साम्राज्यवादी उपनिवेश-व्यवस्था के अवशेषों को खत्म किया जा सकता है।...

"जनता को, कहीं भी आत्म-निर्णय के अधिकार से वंचित रखने से, जैसा कि अमरीकी आक्रमण वियतनाम में कर रहा है, दुनिया की शान्ति के लिये गंभीर खतरा पैदा हो जायेगा। वियतनामी जनता के खिलाफ संयुक्त राज्य अमरीका का क्रूर युद्ध, उपनिवेशवादी एवं नव-उपनिवेशवादी नीति की सबसे भंयकर अभिव्यक्ति है। इसलिए यह (आक्रमक) नीति संयुक्त राष्ट्र संघ के सिद्धान्तों और उद्देश्यों का खुले आम उल्लंघन है।..."

पश्चिम जर्मन संघीय गणराज्य, इस आक्रामक युद्ध में, आक्रमणकारियों को खुले आम सहायता दे रहा है। इस समय तक इसने (दक्षिण वियतनाम) की 'की' सरकार को २५० मिलियन मार्क की रक़म (१ मिलियन = १० लाख) सहायतार्थ दे दी है। इसके अलावा, जहरीली गैसें बनाने के लिये, पश्चिम जर्मनी ने दक्षिण वियतनाम में एक कारखाना लगाने में भाग लिया है।

वक्तव्य के अन्त में कहा गया है कि "ऐसे प्रमाण मौजूद हैं (जो झुठलाये नहीं जा सकते) जिनसे यह बात स्पष्ट हो गई है कि पश्चिम जर्मनी के यान-चालक (पायलेट) और अन्य सैनिक, दक्षिण-पूर्व एशिया में संयुक्त राज्य अमरीका के आक्रामक कार्यों एवं कुकृत्यों में उनका साथ दे रहे हैं।..."

कौटिल्य का अर्थशास्त्र जर्मनी में अनुसन्धान

कौटिल्य का अर्थशास्त्र, प्राचीन भारत के ज्ञान का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्रोत है। यह ग्रन्थ धर्मनिरपेक्ष पाठों, अर्थात् अर्थशास्त्र, और धार्मिक पाठों, अर्थात् धर्मशास्त्र, का एक अद्‌भुत मिश्रण प्रस्तुत करता है। अर्थ-शास्त्र की खोज से, प्राचीन भारत से सम्बन्धित ज्ञान में अपूर्व वृद्धि हुई। यह ग्रन्थ, प्राचीन भारतीय राज्य के प्रशासन, अर्थतंत्र, गुप्तचर-व्यववस्था, विजय एवं संधि की राजनीति इत्यादि जैसे विषयों पर सविस्तार सूचना का एक अक्षय भण्डार है। सन् १९०५ में अर्थशास्त्र की प्राप्ति एक सनसनीखेज खोज थी। तब तक यह महत्वपूर्ण ग्रन्थ अन्य ग्रन्थों में कुछ उद्धरणों एवं उल्लेखों द्वारा ही ज्ञात था।

अर्थशास्त्र की प्रथम पाण्डु-लिपि और अन्य सामग्री

मैसूर गवर्नमेंट ओरियन्टल लायब्रेरी के पुस्तकालय–अध्यक्ष के पद पर काम करने के दौरान, **पण्डित आर. एस. श्यामशास्त्री** को, तैन्जोर जिले के एक पण्डित से अर्थशास्त्र के एक भाग पर **भट्टस्वामिन्** द्वारा लिखी गई **टीका** की एक पाण्डु-लिपि सहित, **कौटिल्य के अर्थशास्त्र** की एक पाण्डु-लिपि प्राप्त हुई। इन दो अमूल्य (और तब तक अप्राप्य) रचनाओं की सामग्री के आधार पर श्री श्यामशास्त्री ने, सन् १९०५ और बाद के वर्षों में **इण्डियन एनक्वयेरी** में, धारावाहिक रूप से अर्थशास्त्र का एक **अंग्रेजी अनुवाद** प्रकाशित किया। पं. श्यामशास्त्री ने, यह अनुवाद और अर्थशास्त्र तथा अर्थशास्त्र का **प्रथम पाठ** सन् १९०९ में प्रकाशित किया। भारत-विद्या, और प्राचीन भारत के अध्ययन के लिये यह सामग्री अमूल्य थी, इसमें कोई सन्देह नहीं।

जर्मन भारत विद्या-विदों द्वारा अर्थशास्त्र का अध्ययन

इसलिये यह स्वाभाविक ही लगता है कि उस समय के अधिकांश भारत-विद्या के पण्डितों ने, जिनमें जे. जोल्ली, आर. श्मित्, एच. जाकोबी, एच. ओल्डनबर्ग और ए. हिल्लेब्राण्त जैसे जर्मन भारत-विद्या-विद भी शामिल हैं, तुरन्त अर्थशास्त्र का अध्ययन शुरू किया और उन्होंने अपने कई खोजपूर्ण अध्ययन प्रकाशित किये। इस लेख में हम कौटिल्य के अनुसंधान में जर्मन भारत-विद्या-विदों की देन का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण प्रस्तुत करेंगे। प्राचीन भारत के सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास को जानने के लिये, आज कल इस अनुसंधान का महत्व बढ़ता जा रहा है।

अर्थशास्त्र का पाठानुसंधान

अर्थशास्त्र की पाण्डु-लिपि की प्राप्ति के बाद, अनुसंधान के प्रथम चरण में मुख्यतः पाण्डु-लिपि के पाठ, अनुवाद एवं पाठ की टीका-टिप्पणियों पर काम हुआ। पं. श्याम शास्त्री द्वारा प्रकाशित किया गया प्रथम-पाठ चूंकि केवल एक ही पाण्डु-लिपि के आधार पर तैयार किया गया था, इसलिये इसमें कई त्रुटियां रह गयी थीं। इस पाठ के दूसरे संस्करण में इन त्रुटियों का संशोधन न हो सका। लेकिन इन त्रुटियों के बावजूद इस पथ-प्रदर्शक कार्य का महत्व निर्विवाद है, और इस प्रथम-पाठ से संलग्न अनुक्रमणिका अर्थशास्त्र के शोधार्थियों के लिये आज तक भी अनिवार्य (सहायक) सिद्ध हुई है।

सन् १९२४ में **पण्डित गणपति शास्त्री** द्वारा तैयार किया गया अर्थशास्त्र का **दूसरा पाठ** प्रकाशित हुआ। तब तक अर्थशास्त्र की कुछ नई पाण्डु-लिपियां भी प्राप्त हुई थीं, और दूसरे पाठ के सम्पादन में इन पाण्डु-लिपियों का भी अच्छा उपयोग किया गया था। इस नये पाठ के साथ दो अच्छी और उपयोगी टीकायें भी संलग्न थीं। एक में भट्टस्वामिन् की टीका से भी सहायता ली गई थी, और दूसरी टीका मलयाली भाषा में लिखी गई थी। इसी समय के आस पास दो जर्मन विद्वानों, सर्वश्री जे. जोल्ली और आर. श्मित ने भी, अर्थशास्त्र का एक पाठ प्रकाशित किया। इस पाठ के तैयार करने में भी इन विद्वानों ने कई पाण्डु-लिपियों का उपयोग किया था।

अर्थशास्त्र के अनुवाद

प्रथम अनुवाद: 'अर्थशास्त्र' के पाठानुसंधान के तुरन्त बाद इसके अनुवाद प्रकाशित होने लगे। इसके **प्रथम अनुवादक** भी पण्डित श्यामशास्त्री ही थे। पथ-पदर्शक कार्य होते हुये भी इस अनुवाद में भी वही त्रुटियां आ गई जो श्री शास्त्री द्वारा संपादित 'अर्थशास्त्र' के प्रथम पाठ में थीं। इसके बावजूद यह अनुवाद आज भी एक संदर्भ-ग्रन्थ के रूप में इस्तेमाल होता है। संभवतः इसका कारण यह है कि निकट अतीत तक भी यह अनुवाद 'अर्थशास्त्र' का एक मात्र अंग्रेजी अनुवाद था। इसलिये जर्मन तथा रूसी अनुवादों, और पं. गणपति शास्त्री की संस्कृत टीका की तुलना में, एक काफी विस्तृत पाठक-वृन्द इस अनुवाद का अध्ययन करता रहा।

प्रथम जर्मन अनुवाद: सन् १९२६ में 'अर्थशास्त्र' का प्रथम जर्मन अनुवाद प्रकाशित हुआ। इसके संपादक थे प्रसिद्ध जर्मन भारत-विद्या शास्त्री **श्री जे. जे. मेयर**। इस अनुवाद की विशेषता है इसकी बृहत संपादकीय टीका। यह महत्वपूर्ण टीका आज भी 'अर्थशास्त्र'

के शोधार्थियों के लिये संदर्भ-सामग्री का काम देती है ।

इन दोनों अनुवादों की एक विशिष्ट त्रुटि यह है कि इनके दोनों अनुवादक इतिहासकार नहीं थे । इसलिये इन्होंने अपने अनुवादों में विषय के अनुरूप, स्पष्ट एवं ऐतिहासिक शब्दावली का प्रयोग नहीं किया है । इसके बदले इन्होंने, पूंजीवाद एवं सामन्तवाद के लिये प्रयुक्त यूरोपीय इतिहास की शब्दावली को, प्राचीन भारत की परिस्थितियों के उल्लेख के लिये भी, अव्यवस्थित ढंग से इस्तेमाल किया है ।

अर्थशास्त्र का रूसी अनुवाद

सन् १९५४ में 'अर्थशास्त्र' का **रूसी भाषा में अनुवाद** प्रकाशित हुआ । लेकिन इसमें भी वही त्रुटियां थीं जो उक्त दो अनुवादों में मौजूद थीं । इन दो अनुवादों की तुलना में इस रूसी अनुवाद में बुनियादी रूप से कुछ नवीन था, ऐसा नहीं कहा जा सकता । बल्कि ऐसे अनुवाद की एक अतिरिक्त हानि यह है कि रूसी भाषा के माध्यम से 'अर्थशास्त्र' का अध्ययन करने वाले शोधार्थियों के सामने (मौलिक पाण्डु-लिपि जिनको अप्राप्य है) एक गलत तस्वीर आती है ।

सन् १९६० में **श्री आर. पी. कांगले** द्वारा 'अर्थशास्त्र' का प्रथम टीका-सहित पाठ, और सन् १९६३ में उसका एक और अंग्रेजी अनुवाद छपा। प्रगति की दिशा में यह एक और कदम था । इन दो कृतियों की मुख्य विशेषता यह थी कि इनकी तैयारी में, 'अर्थशास्त्र' की सभी उपलब्ध पाण्डु-लिपियों, इनकी प्राचीन भारतीय टीकाओं, पं. गणपति शास्त्री की टीका, पं. श्यामशास्त्री तथा श्री मेयर के अनुवादों, और जर्मन भारत-विद्या शास्त्री श्री बर्नहार्ड ब्रेलोएर के 'अर्थशास्त्र' सम्बन्धी खोजपूर्ण सामग्री **कौटिल्य अध्ययन** (कौटिल्य स्टड्डीज़) तथा अन्य सामग्री को इस्तेमाल किया गया था ।

(शेष १५ पृष्ठ पर)

जर्मन सैन्यवाद और पश्चिम जर्मनी के पड़ोसी

नीचे हम, बेलजियम के एक सुप्रसिद्ध मासिक 'सिनथाइसिस' के ख्यातिनाम संपादक श्री मारिस लाम्बिलियोते के एक लेख के कुछ अंश साभार छाप रहे हैं । यह लेख एक अन्य सुप्रसिद्ध अंग्रेज़ी मासिक 'इण्टरनेशनल एफ़ियर्स' के अंक ९, १९६६ में प्रकाशित हुआ है ।

—संपादक

हिटलर द्वारा शुरू किये गये, इतिहास के अत्यन्त भंयकर युद्ध की समाप्ति के बीच (२०) साल बाद भी आज, जर्मन समस्या यूरोपीय सुरक्षा एवं शांति का केन्द्रबिन्दु बनी हुई है । युद्ध समाप्त होने के बाद इस बात की आशा थी कि नाज़ियों के अमानुषिक अपराधों को एक दिन इतिहास में दफन कर दिया जायेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ है । इस का कारण यह है कि पश्चिम जर्मनी के कुछ तत्व, यूरोप में भय एवं आंतक को बनाये रखने के लिये हर संभव प्रयत्न कर रहे हैं। इससे निस्सन्देह यूरोपीय महाद्वीप की राजनीतिक एकता में बाधा पड़ रही है ।

पश्चिम जर्मनी पर आज तक रखी गई कड़ी नज़र, और सोवियत संघ तथा इसके सहयोगियों द्वारा अपनाई गई मज़बूत नीति का ही यह सद्परिणाम है कि यूरोप में यथावत् स्थिति बनी रही है और पश्चिम जर्मनी धीरे-धीरे यह हक़ीकत समझ चुका है कि उसको अपनी प्रतिशोधवादी भूख को त्यागना होग। ।

इस सम्बन्ध में जनरल द गाल भी श्रेय के अधिकारी हैं जिन्होंने सबसे पहले एटलांटिक एकता की सफलता एवं लाभ पर सन्देह प्रकट किया ।

अब दिन प्रति दिन इस बात को दोहराना और मान लेना बहुत कठिन होता जा रहा है कि नाटो की हलचल एवं गतिविधि, युद्धोत्तर यूरोप में शांति कायम रखने में सहायक सिद्ध हुई । पश्चिमी देशों के अखबारों में, सबसे पहले हमारे अखबारों ने, शीतयुद्ध से उत्पन्न इस झूठे प्रचार का खण्डन और विरोध किया कि सोवियत संघ पश्चिम पर आक्रमण करके अपने प्रभाव क्षेत्रों का विस्तार करेगा । इतना ही नहीं, हमें इस बात का भी पूर्ण विश्वास था (और हमेशा रहेगा) कि ऐसी कपोल कल्पनायें, उन पश्चिमी राजनीतिज्ञों के दिमाग की उपज है जो साम्यवाद के खिलाफ़ एक अन्धा जहाद करने का बहाना तलाश करना चाहते हैं ।

पूर्व में सीमा-विस्तार की पश्चिम जर्मनी की महत्वकांक्षाओं के प्रति सोवियत संघ का मज़बूत रवैया, पं. जर्मनी की सीमाओं के बारे में जनरल द गाल की दृढ़ एवं स्पष्ट दृष्टि, पश्चिमी यूरोप के छोटे छोटे देशों की बढ़ती हुई जागरूकता, और मध्य तथा पूर्वी यूरोप के राज्यों की अपने लालची पड़ोसी पश्चिम जर्मनी के विस्तारवाद के आंतक के प्रति जागृति—इन सब बातों ने मिलकर पश्चिम जर्मनी को अपनी विदेश नीति सुधारने पर मजबूर कर दिया।

पश्चिम जर्मनी के प्रति अपनाई गई यह दृढ़ नीति फलीभूत होने लगी है । इस नीति का मात्र उद्देश्य है पश्चिम जर्मनी की युद्ध-प्रिय एवं लड़ाकू नीति को चरम-पथ से हटा कर सही रास्ते पर लाना । कुछ साल पहले ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता था ।

लेकिन इसके बारे में किसी तरह के भ्रम में पड़ना भी अच्छा नहीं होगा।

यह बात सहज ही मानी जा सकती है कि अपने पश्चिमी पड़ोसी देशों के साथ पश्चिम जर्मनी के सहकारी रिश्ते अच्छे हैं, हालांकि इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि उसके अवास्तविक दावों से इन देशों का जनमत चिन्तित है। यह भी एक निर्विवाद तथ्य है कि पश्चिम जर्मनी के प्रति लोगों का काफी अविश्वास है, भले ही उसने बहुत कम समय में, आश्चर्य में डालने वाली अपनी आर्थिक शक्ति का निर्माण किया हो।

पश्चिम जर्मनी यदि आर्थिक क्षेत्र में अपनी शक्ति का विस्तार करे तो उससे किसी का विरोध नहीं। लेकिन जब वह, इस आर्थिक शक्ति के बलबूते पर, धमकियां देना और अभिमान-प्रदर्शन शुरू करता है, तब लोग चिन्तित हो उठते हैं। और लोगों तथा देशों की यह चिन्तायें जब काफी बढ़ जाती हैं तो पश्चिम यूरोप के देशों की सरकारें किसी न किसी रूप में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिये मजबूर हो जाती हैं।

फ्रांस पहला देश था जिसने, जर्मन समस्या की उक्त खतरनाक प्रवृत्तियों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया, हालांकि वह पश्चिम जर्मनी के साथ पक्के समाधान का इच्छुक था। ब्रिटेन का जनमत भी पश्चिम जर्मनी के साथ पक्के समाधान का इच्छुक था और वहां का जनमत भी पश्चिम जर्मनी के बारे में आश्वास्त नहीं है।

हालैण्ड के लिये भी यही कहा जा सकता है। इसका स्पष्ट प्रमाण है (हाललैण्ड की) राजकुमारी बियाट्रिस की एक जर्मन सामन्त से विवाह। यह सामन्त हिटलर-यूगेण्ड (हिटलर नवयुवक संघ) का सदस्य था (लेखक का संकेत उन विरोध प्रदर्शनों की ओर है जो इस विवाह के खिलाफ हुये--सं)।

इस संदर्भ में बेलजियम का एक अलग स्थान है। बेलजियम दोनों विश्वयुद्धों में, जर्मन आक्रमणों और आधिपत्य का--सन् १९१४, और १९४० से ४५ तक--शिकार हुआ। हालैण्ड पहले विश्वयुद्ध में इस विपदा से बच गया। यह सच है कि बेलजियम की नीति में, पश्चिम जर्मनी के प्रतिशोधवादियों के तात्कालिक खतरे के बारे में, अभी चिन्ता के चिन्ह प्रकट नहीं हो रहे हैं। लेकिन इतना निश्चित है कि यदि पश्चिम जर्मनी, सशस्त्र संघर्ष शुरू करने का ज़रा भी प्रयत्न करेगा, तो बेलजियम का जनमत एकदम खतरे की घण्टी बजायेगा।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि नाटो संधि पर पहले दस्तखत करने वाले देशों में बेलजियम एक था, और श्री स्पाक, जो नाटो के महासचिव थे, काफी समय तक शीत-युद्ध के समर्थक थे। लेकिन १९६१ के आरम्भ से, जब वह नाटो के इस पद से हट गये तो श्री स्पाक शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के समर्थक हो गये। आज वह इस नीति को ठोस अभिव्यक्ति देने की आवश्यकता को खूब समझते हैं, क्योंकि इस नीति का मुख्य उद्देश्य है व्यापक अन्तर्रराष्ट्रीय सहयोग को विकसित करना।

बेलजियम के पर-राष्ट्र मन्त्री, श्री हारमेल और यहां के प्रधान मंत्री ने भी, बार बार यह घोषणा की है कि वे प्रत्येक उस कदम का समर्थन करेंगे जो पूर्व और पश्चिम के बीच तनाव कम करने में सहायक हो। जब नाटो के कुछ कार्यालय बेलजियम में ले जाने का सवाल सामने आया तो हमारे पर-राष्ट्र मंत्री ने स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा की : "बेलजियम की नीति पूर्ण रूप से स्वाधीन रहनी चाहिये। और विशेषकर, पूर्व के साथ तनावों को कम करने की दिशा में काम करने के लिये यह स्वाधीनता अनिवार्य है।..."

स्कैण्डिनेविया के देशों का रवैया बिलकुल साफ है। ये देश भी पश्चिम जर्मनी की ओर से आश्वस्त नहीं हैं, और उस पर इनका अविश्वास एक बार फिर काफी ज़ोर पकड़ रहा है। इसीलिय ये देश पश्चिम जर्मनी द्वारा, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से, परमाणु-शस्त्र प्राप्त करने का डट कर विरोध करते हैं। वे (यूरोप में) एक ऐसा परमाणु-मुक्त क्षेत्र स्थापित करने के पक्ष में हैं जिसमें नार्वे, डेनमार्क, स्वीडन और यदि संभव हो तो फिनलैण्ड भी शामिल हो। नाटो परिषद् के पिछले अधिवेशन में, डेनमार्क के पर-राष्ट्र मंत्री श्री पेर हायक्के रूप ने, पूर्व-पश्चिम के तनाव को कम करने वाले प्रश्नों को विचाराधीन लाने का समर्थन किया और दोनों गुटों का एक संयुक्त सम्मेलन बुलाने की सिफारिश की।

मेरा यह निश्चित मत है कि पश्चिम जर्मनी के प्रतिशोधवादी इरादों को रोकने में आज तक जो कड़ी नज़र रखी गई, उसको किसी भी कीमत पर शिथिल नहीं करना चाहिये। यह भी बहुत जरूरी है कि यूरोप के देशों को--खासतौर से इसके पूर्व तथा पश्चिम के छोटे देशों को--रचनात्मक अमल शुरू करना चाहिये और इस तरह उनको शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का विचार अधिक समृद्ध तथा व्यापक बनाना चाहिये।

पश्चिम यूरोप यदि अपने मिशन के महत्व को महसूस करेगा तो वह अद्‌भुत प्रगति प्राप्त करेगा। मेरे विचार में उसका मिशन यह होना चाहिये : प्रथम, सोवियत संघ तथा समाजवादी शिविर के अन्य देशों के साथ अधिक सक्रिय सह-अस्तित्व; दूसरा, संयुक्त राज्य अमरीका के प्रति बिना किसी शत्रुता के इसके प्रभुत्व से स्वाधीनता की ओर बढ़ना; और तीसरा, अणु-आयुधों का बिल्कुल परित्याग। यह एक ऐसा कदम है जिससे आम निरस्त्रीकरण के लिये रास्ता हमवार होगा, और दुनिया के ज़रूरतमन्द देशों को काफी मात्रा में और प्रभावोत्पादक सहायता (आर्थिक) प्राप्त हो सकेगी।
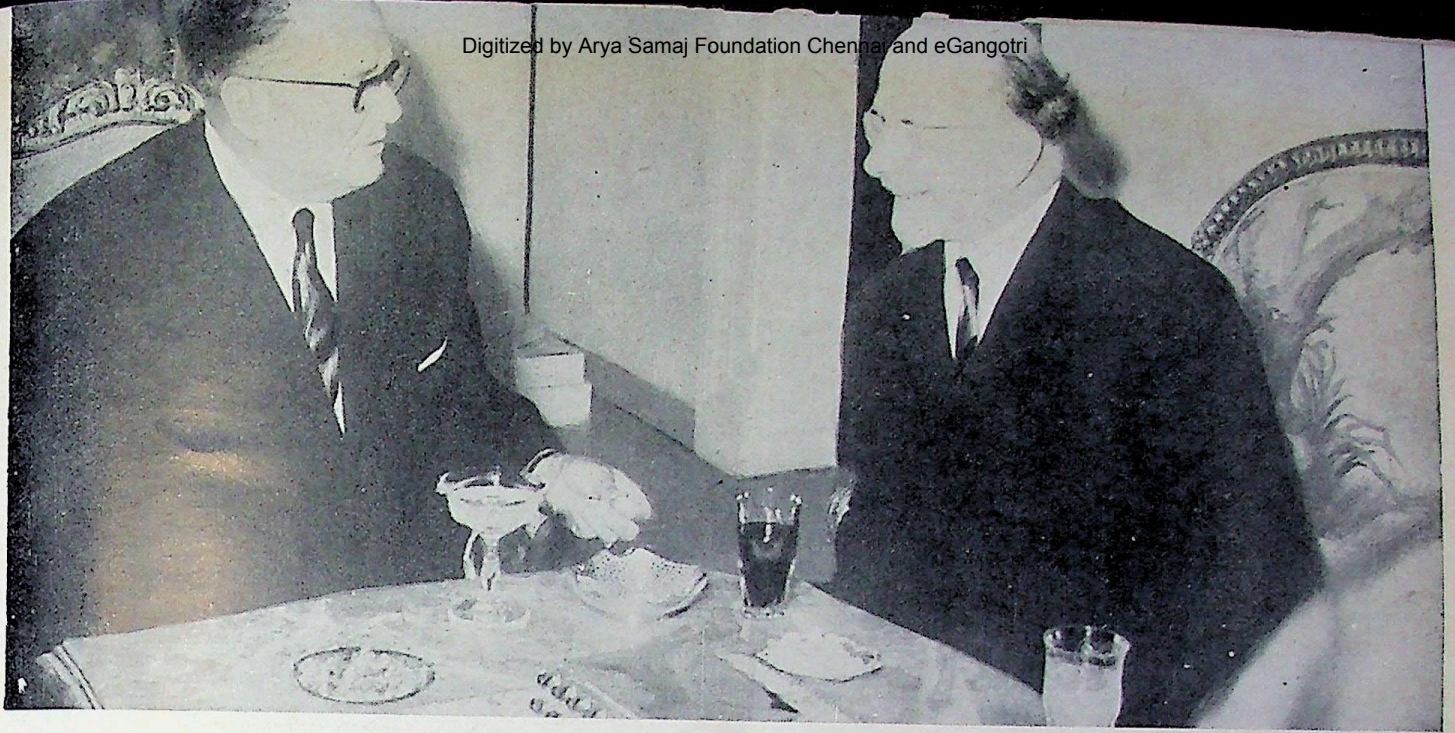
राष्ट्रपति टिटो का भाषण

ज.ज.ग. की प्रतिष्ठा बढ़ रही है

पिछले कुछ वर्षों में, यूरोप में, तनाव को कम करने और भिन्न समाज व्यवस्थाओं वाले राज्यों में पारस्परिक सहयोग को विकसित करने की प्रवृत्तियां उभर कर सामने आई हैं। लेकिन फिर भी वहां कुछ ऐसी शक्तियां मौजूद हैं जो इन अच्छी प्रवृत्तियों का समर्थन नहीं करतीं (बल्कि वे इनका विरोध करती हैं)। बहरहाल, जहां तक जर्मन जनवादी गणतंत्र का सवाल है, इस राज्य ने, इन सद्-प्रवृत्तियों को अपनी शांतिप्रिय नीति एवं सक्रिय पहलों द्वारा एक महत्वपूर्ण देन प्रदान की है। हम ज. ज. ग. के इस रवैये की प्रशंसा और स्वागत करते हैं।

जर्मन समस्या के बारे में हमारे विचार बिल्कुल स्पष्ट और सर्वविदित हैं। लेकिन यदि हम से एक बार फिर इस समस्या के बारे में पूछा जाये तो हम निस्संकोच यह कहेंगे कि समस्त विश्व में यह धारणा बढ़ती जा रही है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र, न केवल एक महत्वपूर्ण आर्थिक-भागीदार ही है जिसको नज़र-अन्दाज़ नहीं किया जा सकता, बल्कि यह शांति का एक मज़बूत कारक भी है। राजनीतिक-यथार्थ की दृष्टि से हीन लोग ही ऐसे जर्मन राज्य के महत्व को नहीं देख सकते (खासतौर से यूरोप के देशों के लिये), जिसने बड़े साहस के साथ अतीत की गलत परम्पराओंको तोड़ा है और जो अब शांति की नीति एवं शांतिपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के रास्ते पर चलकर आगे बढ़ रहा है।

हमें इस बात का पूर्ण विश्वास है कि यूरोप के राज्यों में आपसी सहयोग के अधिक से अधिक विकास से, उक्त बाधक शक्तियां अलग और कमज़ोर पड़ जायेंगी, और वे दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व की ठोस हक़ीक़त को मान लेने पर मजबूर हो जायेंगी। इसलिये यह एक अनिवार्य आवश्यकता है—जैसा कि जर्मन जनवादी गणतंत्र मांग करता है—कि दो जर्मन राज्यों के बीच ऐसे सम्बन्ध क़ायम हों जो सह-अस्तित्व के सिद्धांतों पर आधारित और शांति एवं शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के हितानुकुल हों।

इसमें कोई शक नहीं कि यूरोप के देशों में सहयोग को बढ़ाने और यूरोप तथा विश्व के वातावरण को बेहतर बनाने के लिये किये जा रहे प्रयत्न अधिक सफल होंगे यदि संघीय जर्मन गणराज्य (पश्चिम जर्मनी—स०) भी उन प्रयत्नों में शामिल हो जाये। लेकिन आज तक, इन प्रयत्नों में बाधा डालना ही उसकी नीति रही है।

संघीय जर्मन गणराज्य की रूकावटें डालने वाली उक्त नीति—विशेषकर परमाणविक प्रसार को रोकने से सम्बन्धित समझौता होने में बाधा डालना (क्योंकि वह अणु-शस्त्रों को चाहता है)—और यूरोप की वर्तमान सीमाओं के प्रति उसका गलत रवैया, न केवल तनाव को बढ़ा देता है, बल्कि उसकी यह नीति एवं रवैया हमारे इस महाद्वीप पर अनुकूल वातावरण पैदा करने के मार्ग में सबसे बड़ी रूकावट है। इस अनुकूल वातावरण के पैदा होने से आपसी सहयोग को बढ़ाना और यूरोपीय सुरक्षा की समस्याओं को एक-एक करके सुलझाना संभव हो जाता।

हमारे विचार में, संयुक्त राष्ट्र संघ, अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने में इसलिये कम सफल हुआ क्योंकि इसने सार्वभौमता (सदस्यता के मामले में—स०) के सिद्धान्त की आज तक अवहेलना की है। हमारा यह मत है कि अब ऐसी स्थिति आ गई है कि तथाकथित विभक्त देश, यदि वे चाहें तो, राष्ट्र संघ के सदस्य बन सकते हैं।

जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी, अगले वर्ष (१९६७) के अप्रैल मास में अपनी सातवीं कांग्रेस का आयोजन करेगी । इस महत्वपूर्ण कांग्रेस की तैयारी के सिलसिले में, 'पार्टी' ने, पिछली कांग्रेस (१९६३) से आज तक की जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रगति पर विचार किया । इस अवधि में, ज. ज. ग. की प्रगति के जो तथ्य और आंकड़े उपलब्ध हुये हैं, वे इस प्रकार हैं :

सन् १९६६ के अन्त पर, ज. ज. ग. का औद्योगिक उत्पादन, सन् १९६२ के कुल उत्पादन से ३१ हज़ार मिलियन मार्क (१ मिलियन = १० लाख) अधिक होगा—अर्थात् २४ प्रतिशत अधिक ।

—सन् १९६३ से लेकर १९६६ तक, उद्योग की निम्न शाखाओं में उत्पादन-क्षमता में इस प्रकार से वृद्धि हुई :

विद्युत् ऊर्जा में . . .	३,७६० मेगावाट
खनिज तेल शोधन में . . .	४,००० किलो टन प्रति वर्ष
सीमेंट में . . .	१,२०८ किलो० टन प्रति वर्ष

—सन् १९६२ से १९६६ तक अनुसन्धान और विकास पर कुल खर्च में ५५ प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

—केन्द्र द्वारा संचालित धातु-उद्योग के उत्पादन में ५५ प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

कृषि

कृषि में मानव-शक्ति (मैन-पावर) ५ प्रतिशत कम होने पर भी, उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है । निम्न तालिका इस तथ्य का प्रमाण है :

डेसि-टनों में प्रति हैक्टर उत्पादन

	१९६२	१९६६ अनुमानित आंकड़े	प्रतिशत वृद्धि
अनाज	२६.४	२८.७	८.९
आलू	१७९.०	१८९.८	६.०
चुकन्दर	२१३.८	१८५.६	३३.१

१९६२ में जहां ५०.७ प्रतिशत फसल की कटाई-गहाई कम्बाइनों से की गई, वहां सन् १९६६ में यह भाग बढ़कर ८०.३ प्रतिशत हो गया । चुकन्दर-फसल की कम्बाइनों द्वारा कटाई-गहाई, १९६२ में ७२ प्रतिशत से बढ़कर, १९६५ में ८५.५ प्रतिशत हो गई ।

तथ्य और आंकड़े

प्रगति के चार साल
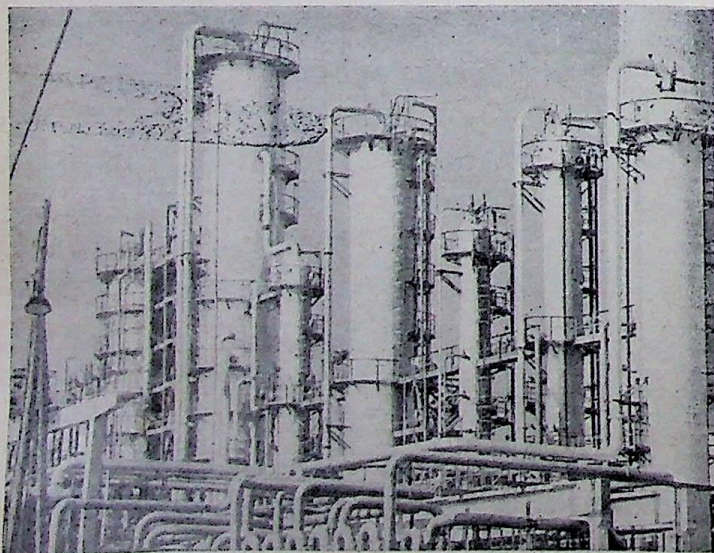
वार्षिक उत्पादन

	१९६२	१९६५	प्रतिशत वृद्धि
गोश्त के लिये पशु	९९९ कि. टन	१,३३३ कि.टन	३८.०
दूध	४,६३० ,,	५,६९३ ,,	२३.०
मुर्ग गोश्त	३६.१ ,,	५१.४ ,,	४२.४
अण्डे (१० लाख में)	२,०६१.९ ,,	२,९०८.५ ,,	४१.१

—कुल फुटकर-व्यापार में, सन् १९६२ से १९६५ तक ८.१ प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

—मज़दूरों और कर्मचारियों की मज़दूरी तथा वेतनों में १९६२ से १९६६ तक ९.८ प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

सन् १९६२ से १९६५ तक पेन्शनों की रकम में १९ प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

सन् १९६२ से १९६६ तक, शिशु-गृहों के (३ मास से लेकर ३ वर्ष तक के शिशु के लिये) स्थानों में २३ प्रतिशत की, और किण्डर-गार्टेन-स्कूलों के स्थानों में २१ प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

उद्योग

प्रति १०० परिवारों में औद्योगिक उपभोक्ता सामान की खपत :

	प्रतिशत वृद्धि
टेलिविजन सेटों में	४६.४
कपड़े धोने की मशीनों में	१०६.७
रेफ्रिजेरेटरों में	११२.३
मोटर कारों में	४६.४

खाद्यान्न एवं औद्योगिक वस्तुयें

	प्रतिशत वृद्धि
मांस एवं तत्सम्बन्धी वस्तुऐं	१२.९
मछली एवं तत्सम्बन्धी वस्तुऐं	५.४
मक्खन	४.९
अण्डे	२३.४
दूध	१९.३
फल और गिरीदार फल	५८.९
काफी	१९.८
मर्दाने कपड़े	१५.९
ज़नाने कपड़े	१२.०
बच्चों के कपड़े	१८.५
जूते	९.५

निम्न क्षेत्रों में, खर्च की राशि में इस प्रकार की वृद्धि हुई :

शिक्षा	१०.४ प्रतिशत
स्वास्थ्य तथा समाज-कल्याण	१३.५ प्रतिशत
संस्कृति तथा कलायें	२७.० प्रतिशत

सन् १९६२ में जहां प्रति १० हज़ार व्यक्तियों पर ज. ज. ग. में ९.१ डाक्टर थे, वहां सन् १९६५ में यह दर बढ़कर ११.५ (डाक्टर) हो गई ।

१९७० तक कृष्य-भूमि का १वां भाग सिंचित होगा

खेती के लिये कृत्रिम वर्षा

आर्थर बोएक

पिछले पन्द्रह सालों में जर्मन किसानों ने अनाज की उपज दुगुनी कर दी है। यह फलदायी विकास उर्वरक पौधों के पर्याप्त उत्पादन तथा आजकल खनिज उर्वरकों के अधिक व्यापक उपयोग के कारण संभव हुआ है। इसके अलावा आधुनिक तकनीकी विकास ने सभी तरह से किसानों को इस योग्य बनाया है कि वे जुताई के कार्यों को उन्नत बना सकें और उसमें गति ला सकें। आजकल फसलों का क्रम बढ़ते हुये पैमाने पर, वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर चालित किया जाता है।

फिर भी जर्मन किसानों की अपनी कुछ दिक्कतें हैं। पानी का प्रबन्ध जो खनिज उर्वरक की अपेक्षा वनस्पति उर्वरकों के लिये ज्यादा जरूरी है, पिछले पचास वर्षों में या तो नहीं या बहुत ही कम आसान हुआ है। इसका आंशिक कारण उद्योगों में व्यापक वृद्धि है, जो कि उपलब्ध जल-पूर्ति के ८.९० हिस्से की खपत कर लेता है। दूसरा दसवां अंश पीने के काम आता है, और इस तरह ज. ज. ग. की कृषि के लिये केवल अंतिम दसवां अंश ही रह जाता है।

सूखा पर नियंत्रण

फिर भी आगामी वर्षों में अनाज की पैदावार में वृद्धि, जलपूर्ति पर पहले से ज्यादा निर्भर करेगी।

"जहां इस शताब्दी के प्रथमार्द्ध में खनिज उर्वरकों का उपयोग प्रमुख था, इसके द्वितीय-अर्द्ध में सिंचाई को प्राथमिकता दी जायेगी।" सुप्रसिद्ध जर्मन कृषि-वैज्ञानिक थ्योडर रोएमर का यह कथन कृषि उत्पादन के समूचे क्षेत्र में उत्पादन को और अधिक बढ़ाने में ज. ज. ग. के सहकारी किसानों के प्रयास का ब्रह्मवाक्य बन गया है, लगभग ७००,००० हैक्टर (१ हैक्टर = १०,००० वर्गमीटर) में सिंचाई की आवश्यकता है। अर्थात् ज. ज. ग. की सम्पूर्ण कृषि योग्य भूमि का दसवां हिस्सा। १९७० तक कम-से-कम ४९०,००० हैक्टर क्षेत्र में पर्याप्त सिंचाई कार्य होगा, ताकि प्रकृति के प्रतिकूल प्रभावों से त्राण पाया जा सके। इस तरह भविष्य में इस क्षेत्र में सूखे का डर अब नहीं रह जायेगा।

जलागार

इस देश के किसानों ने ऐसी योजनाओं के कार्यान्वियन के लिये अनुकूल पूर्व-शर्तों की नींव डाल दी है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि पिछले ६ वर्षों से वे सहकारी आधार पर जमीन में काम करते रहे हैं, भूतकाल में नदियों, नालों और मीलों फैली चरागाहों के समान और प्रभावकर प्रबन्ध में इस तथ्य के कारण बाधा पहुंचती थी कि किसानों का व्यक्तिगत हित केवल उनके पांच या दस हैक्टर ज़मीन तक ही सीमित था। जबकि आज समूचे गांव और आस-पास की आबादी के किसान सिंचाई योजनाओं को कार्यान्वित करनेमें अपने प्रयास को एकजुट करते हैं। इसका एक नमूना ज. ज. ग. के दक्षिण में स्थित फ्रीमार में "ग्रोस्से वेण्डे" नामक कृषि उत्पादन सहकार है।

इस सहकार के सदस्य, सहकारी आधार पर १,१०० हैक्टर भूमि की जुताई करते हैं। इस साल मई से ४०० हैक्टर का क्षेत्र पूरी तौर से सींचित हो उठेगा। १९६१ के बाद के वर्षों में, थुरिजियन वन - प्रदेश के क्षेत्र की सूखी जलवायु में स्थित इस गांव के किसानों ने कुछ खेतों के लिये पानी की कमी को दूर करने की कोशिश पाइप व्यवस्था के सहारे फिलहाल कर ली है। फिर भी नेसे खाड़ी, जिसमें गर्मियों में बहुत मामूली जल रहता है, से इस उद्देश्य से लिया गया पानी केवल तीस से चालीस हैक्टर भूमि के लिये पर्याप्त होता था। इस तरह से अतिरिक्त सिंचाई साधन का उपयोग खासतौर से चुकन्दर के लिये किया गया, जो ज. ज. ग. में पैदा किये जाने वाली पैदावार में, प्रति हैक्टर सर्वाधिक पोषक उपज है। इस तरह वर्षाहीन हफ्तों, या महीनों के असर को मेटना संभव हुआ और सर्वोपरि अतिरिक्त श्रम और ज्यादा लाभप्रद हुआ, क्योंकि सिंचित क्षेत्र में प्रायः

फ्रीमार जलाशय का आंशिक दृश्य
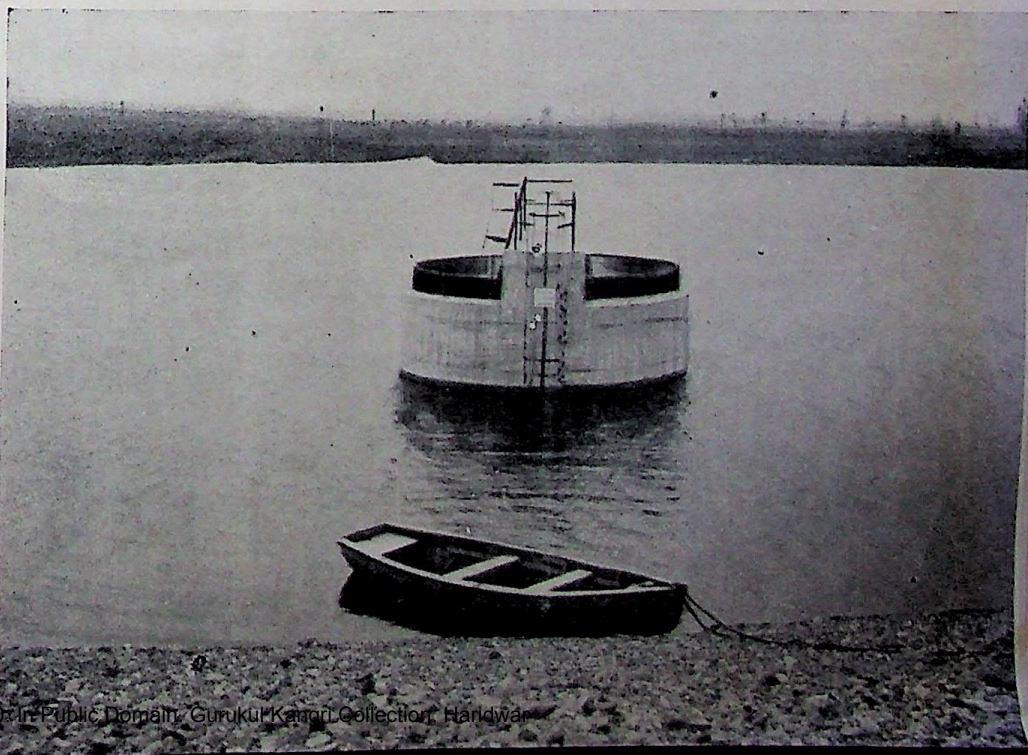
प्रति हैक्टर पर ६०० फ्रेंच क्विन्टल (१ फ्रेंच क्विन्टल बराबर है २२० पौंड के) चुकन्दर की पैदावार हुई। (१९६५ में राष्ट्र की प्रति हैक्टर उपज औसतन प्रायः २८० फ्रेंच क्विटल रही)। उसी कृषि-सहकार में शरद के अनाज की उपज पिछले वर्ष प्रति हैक्टर ७५ फ्रेंच क्विटल तक थी, जो मोटे तौर पर असिचित क्षेत्रों की पैदावार की दुगुनी है, जहां अनाज की पैदावार आमतौर से, राष्ट्र के औसत पैदावार के समान ही हुई।

इन अच्छे नतीजों से स्थानीय किसानों को नये विचार सूझे। १९६५ के पतझड़ में उन्होंने एक जलागार शुरू किया। उन्होंने २८ हैक्टर भूमि पर एक कृत्रिम तालाब का निर्माण किया, जिसमें ५१०,००० घन मीटर पानी समा सकता है। यह सब उस जल के कारण संभव हुआ, जिसे वसंत में बर्फ पिघलने के समय में सबसे पहले एकत्रित किया गया था और जिससे ४०० हैक्टर क्षेत्र की पैदावार में दुगुनी और कभी-कभी तिगुनी वृद्धि संभव हुई। यह वृद्धि असिंचित कृषियोग्य और गोचर भूमि की पैदावार की तुलना में संभव हुई। केवल ८ महीने के निर्माण कार्य के बाद ही पानी के बहाव को नियंत्रित करने के लिये एक पंपिग स्टेशन निर्मित किया गया और अचल तथा चल सिंचाई पाइपों की व्यवस्था की गई। इस साल मई के मध्य से इस पाइप-व्यवस्था से खेतों में फलदायी सिंचन हो रहा है। तालाब के अपने क्षेत्र में ही अब "अच्छी पैदावार" जसे शफरी (कार्प) और सिंघाड़ा मछलियों की पैदावार होने लगेगी, जो इस देश में काफी लोकप्रिय हैं।

अनाज की बढ़ी पैदावार के प्रदर्शित ये लाभ संकेत करते हैं कि ३५ लाख मार्क या मोटे तौर से ८०००,००० डालर की लगी रकम जल्दी ही अपना फल देने लगेगी। यह रकम सहकार से तथा सहकारी अनुदान से, आधे आधे के आधार पर देय ऋण के रूप में उगाही गयी थी। येना के निकट ही स्थित फ्रीडरिक शिलर विश्वविद्यालय के कृषि-वैज्ञानिकों ने लाभ का अनुमान लगाया है कि "आसे वेण्डे" कृषि उत्पादन सहकार के किसान प्रतिवर्ष १० लाख मार्क या २५०,००० डालर कीमत की पैदावार कर सकेंगे, जो पहले से ज्यादा है। येना के इसी विश्वविद्यालय के कृषि-शास्त्रियों ने विशेष अनाज-उपज क्रम व्यवस्था की स्थापना में फ्राइमर के किसानों की मदद की थी।

केवल चार वर्ष बाद ही पूरा खर्च निकल आयेगा। आधुनिक सघन खेती कुछ ऐसी ही है।

कृषि की पूर्णता

न केवल फ्राइमर के बल्कि ज. ज. ग. के सभी सहकारी किसानों के लिये अधिक कृषि उत्पादन एक प्रमुख चुनौती है। इस देश की जलवायु में, मिसाल के लिये आलू के उत्पादन में, एक किलोग्राम सूखे सार (जिसमें आदमी और जानवर के लिये सभी पोषक तत्व मिल जाते हैं) के हेतु २६० से ५७५ किलोग्राम तक पानी की आवश्यकता होगी। यदि सूखे सार तत्व की उपजको बढ़ाना है, तब निश्चय ही पौधों को और पानी देना होगा। जो कुछ बादलों के पानी से संभव नहीं है या जो कुछ वे पर्याप्त मात्रा में साल-दर-साल गारण्टी नहीं कर सकते, उसे आधुनिक मानव ने निचली सिंचाई से—पम्पिग-गृह में बटन दबाने की क्रिया से "निर्मित" और नियंत्रित कृत्रिम वर्षा से—संभव बना दिया है।

जर्मनी के कृषि-विज्ञान के पिता अल्ब्रेख्त डैनियल ताएर ने १५० वर्ष से भी पहले यह सच ही कहा था : "फलदायी कृषि यथासमय पानी की व्यवस्था और उसका सिंचन, अपनी पूर्णता के महत्तम विन्दु पर पहुंच चुका है।"

देश-दर्शन

रोस्टोक का ७ बुर्जों वाला पुराना टाउन हाल

क्षेत्रफल : ७,०७१ वर्ग किलोमीटर

जन-संख्या : ८३४,९५०

राजधानी : रोस्टोक

महत्वपूर्ण नगर : विज़मार (आबादी ५७,०००), स्ट्रालजुण्ड (६९,०००), ग्राइफ्स्वाल्ड (४८,०००)

भूगोल : रोस्टोक प्रान्त के उत्तर में बाल्टिक सागर, पूर्व में पोलैण्ड का जनतंत्र, दक्षिण में न्यूब्राण्डेनबुर्ग तथा श्वेरिन के प्रान्त और पश्चिम में प० जर्मन संघीय गणराज्य है।

मान-चित्र का काला भाग रोस्टोक प्रान्त दर्शाता है

रोस्टोक प्रान्त

रोस्टोक के ७ गिरजा-घरों में से एक—सेंट मेरी का गिरजा

रोस्टोक प्रान्त, उत्तरी जर्मनी के निचले मैदानी क्षेत्र का एक भाग है, और रूगेन नामक द्वीप पर (जो एक पहाड़ी इलाका है) स्थित है। बाल्टिक सागर तट से थोड़ी दूर स्थित सबसे बड़े द्वीप हैं : रूगेन, ऊज़ेडोम, पोएल और हिडेनसी।

मिट्टी और बालू वाली भूमि का आधिक्य है। सागर तट पर अनेक तटवर्ती आरोग्य-आश्रम हैं, जिनमें से कुछ विश्वविख्यात भी हैं।

आर्थिकी : दूसरे महायुद्ध की समाप्ति से पहले, रोस्टोक एक पिछड़ा हुआ कृषिप्रधान इलाका था। लेकिन सन् १९४५ के बाद इस क्षेत्र का अपूर्व आर्थिक विकास हुआ। आज रोस्टोक में, अत्यन्त महत्वपूर्ण उद्योगों की ये शाखायें स्थित हैं : पोत-निर्माण, पोत-परिवहन, मछली पकड़ना, खाद्य सामग्री तथा तद्सम्बन्धी उद्योग, मेकानिकल इंजीनियरिंग और लकड़ी उद्योग। यहां के बन्दरगाह—विशेषकर रोस्टोक की बन्दरगाह, जहाज़रानी का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। इस प्रान्त के दो विश्वविद्यालय, रोस्टोक एवं ग्राइफ़स्वाल्ड नामक नगरों में स्थित हैं। यहां के कुल क्षेत्र-फल का ७०.७ प्रतिशत भाग कृषि-भूमि है। रेल-यातायात के द्वारा रोस्टोक प्रान्त डेनमार्क में गेडसर से और स्वीडन में ट्रेलेबोर्ग से मिला हुआ है।

छुट्टियां बिताने के लिये सुन्दर, आरामदेह अवकाश-गृह

ब्रेख्त-अभिलेखागार

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन के ठीक बीच में, पुराने ढंग का एक मकान है १२५, शाउस्सेट्रासे । यहां कभी, विश्वप्रसिद्ध जर्मन कवि-नाटककार, स्वर्गीय बर्तोल्त ब्रेख्त रहा करते थे । आज इस मकान को, एक विशाल **ब्रेख्त-अभिलेखागार** में बदल दिया गया है ।

तंग सीढ़ियां दर्शक को इस मकान की पहली मंजिल पर पहुंचा देती हैं । एक छोटा हाल और दो बड़े कमरे––यही था स्वर्गीय ब्रेख्त का घर जहां वे जीवनके अन्तिम दिनों तक रहे । इस मकान की खिड़कियों से डोरोटेनस्टेटिशे नामक कब्रिस्तान भी दिखाई देता है जहां यह महान् कवि, नाटककार एक कब्र में विश्राम ले रहा है ।

हाल में दर्शकों के लिये एक बड़ी गोल मेज रखी हुई है । इसके अलावा यहां एक बेंच चमड़े की बनी एक आराम कुर्सी और वह सुप्रसिद्ध झूला-कुर्सी भी रखी हुई है जो स्व० ब्रेख्त को बहुत प्रिय थी । लेखक की वह लिखने की मेज़ आज भी उसी खिड़की के पास रखी हुई है जहां वह उनके जीवनकाल में रखी हुई थी । कमरे के बीच में रखी हुई अलमारियां और सन्दूक (जिनमें ब्रेख्त की रचनायें और उन पर लिखा गया साहित्य, दस्तावेज़ इत्यादि) ही इस बात की गवाही देते हैं कि यह कमरा अब ब्रेख्त-अभिलेखागार बन चुका है ।

ब्रेख्त की सम्पूर्ण रचनायें

इस अभिलेखागार में २,००० फोल्डर है जिनमें स्व० बर्तोल्त ब्रेख्त की सम्पूर्ण रचनायें १७०,००० पन्नों में संग्रहीत करके रखी गई हैं । इनमें से ८०,००० से १००,००० पन्ने लेखक की रचनाओं की पाण्डुलिपियां हैं । इनमें से अधिकांश पांडुलिपियां टंकित हैं, और स्व० ब्रेख्त के हाथ से शुद्ध की हुई हैं । लेकिन नाटककार के दो प्रसिद्ध नाटकों "तीन पेन्नी आपेरा" (थ्री पेन्नी आपेरा) और "मागोनी नगर का उत्थान और पतन" (दी राइज़ एण्ड फाल आफ दी सिटी आफ मागोनी) की पाण्डुलिपियां यहां नहीं रखी है । व हिटलर के नात्सी-काल के दौरान कहीं खो गई ।

वैज्ञानिक ढंग से तैयार की गई एक विषय-सूची की सहायता से कोई भी व्यक्ति यहां संग्रहीत किसी भी वांछित दस्तावेज़ को तुरन्त प्राप्त कर सकता है । इसी सूची को आधार बनाकर, ब्रेख्त के शेष दस्तावेज़ों का भी वर्गीकरण किया गया है । आजकल, अभि-लेखागार के कर्मचारी, बर्तोल्त ब्रेख्त पर समस्त उपलब्ध सामग्री की एक बृहत् ग्रन्थ-सूची तैयार करने में लगे हैं ।

ब्रेख्त की रचनाओं का पूर्ण संस्करण

ब्रेख्त-अभिलेखागार का मुख्य काम है, ऐतिहासिक परिपार्श्व में और आलोचनात्मक टिप्पणी सहित, स्व० बर्तोल्त ब्रेख्त की सभी रचनाओं का एक पूर्ण संस्करण का सम्पादन करना । इस महान् कार्य में, और अपने अन्य उद्देश्यों में भी, अभिलेखागार अवश्य सफल होगा, इसकी गारण्टी यह तथ्य है कि ब्रेख्त की (विधवा) पत्नी और स्व० बर्तोल्त ब्रेख्त के विश्व प्रसिद्ध रंगमंच "बर्लिनेर एनसेम्ब्ल" की निर्देशिका, प्रोफेसर हेलेन वाइग्ल ने

स्व. ब्रेख्त की पत्नी हेलेन वाइग्ल (आगे) एक नाटकीय अभिनय में

बर्तोल्त ब्रेख्त पर सामग्री का स्रोत

ब्रेख्त-अभिलेखागार की जिम्मेदारी भी स्वयं संभाली है।

ब्रेख्त-अभिलेखागार की सहायता से अब तक स्व० ब्रेख्त का **शरणार्थियों के वार्तालाप** (रिफ्यूजी कोनवरसेशनस्) नामक काव्य-संग्रह और उनकी लगभग एक हजार कवितायें प्रकाशित करके पाठकों को उपलब्ध की गयी हैं कवि की कविताओं का एक संस्करण उनके जीवन काल में ही प्रकाशित किया गया था।

श्री वेरनर हेख्त नामक एक जर्मन भाषा-विद् ने अभिलेखागार की सामग्री के आधार पर स्व० बर्तोल्त ब्रेख्त की कृतियों का, निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत सम्पादन किया है: "रंग-मंच पर रचनायें" (सात भागों में) "साहित्यिक रचनायें" (दो भागों में), और "राजनीतिक रचनायें।" लेखक की अन्य दो अपूर्ण रचनायें, "टुरानडो" नामक एक नाटक और पद्यबद्ध "कम्युनिस्ट घोषणापत्र" अभी अप्रकाशित हैं।

"कम्युनिस्ट घोषणापत्र" को कविता में बांधने का काम स्व० ब्रेख्त ने सन् १९४५ में शुरू किया था। इस काव्य-कृति के प्रथम भाग का सम्पादन अब पूरा हो चुका है, और यह जल्द ही प्रकाशित होगा। इसके अलावा कवि-नाटककार की डायरियां, चिठ्ठियां और साहित्य से सम्बन्धित उनकी टिप्पणियां भी सम्पादित होकर प्रकाशित करने की योजना है। इस प्रकाशन से स्व० ब्रेख्त की साहित्य सम्बन्धी मान्यतायें तथा विचार लोगों के सामने आयेंगे।

ब्रेख्त अनुसंधान का केन्द्र

ब्रेख्त-अभिलेखागार न केवल देशी रंगमंच विशेषज्ञों का ही बल्कि नाट्य-कला में रूचि रखने वाले विदेशी विद्वानों तथा अन्य-लोगों के लिये भी नाट्य-शिल्प और ज्ञान अर्जन करने का एक संस्थान बन चुका है। पिछले पांच वर्षों में, ९५४ विदेशी मेहमान ब्रेख्त-अभिलेखागार का दर्शन करने आये। इनमें कनाडा, अमरीका, फ्रांस, सीरिया और स्वीडन आदि देशों के नाट्य-कला मर्मज्ञ, अभिनेता, भाषा-विद् इत्यादि शामिल थे। ऐसा होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि पिछले दशक में ब्रेख्त के नाटकों का प्रदर्शन, ५३ देशों में १४९६ बार हुआ है।

अभिलेखागार, नाट्य प्रदर्शनों और एतद्-सम्बन्धी पोस्टर, टिप्पणियां, कार्यक्रम और अखबार-कतरनें भी संकलित करता है। स्व० ब्रेख्त की अनेक पाण्डुलिपियों की माइक्रो-फिल्में तैयार की गई हैं जो शोधार्थियों को इस्तेमाल करने के लिये दी जाती हैं। इस तरह मौलिक पाण्डुलिपियां खराब और जाया होने से बचाई जाती हैं।

स्व. ब्रेख्त के घर का एक कमरा जिसकी खिड़की से डोरोटेन्स्टेशे का कब्रिस्तान दिखाई देता है। यहीं कवि-नाटककार दफन किये गये हैं
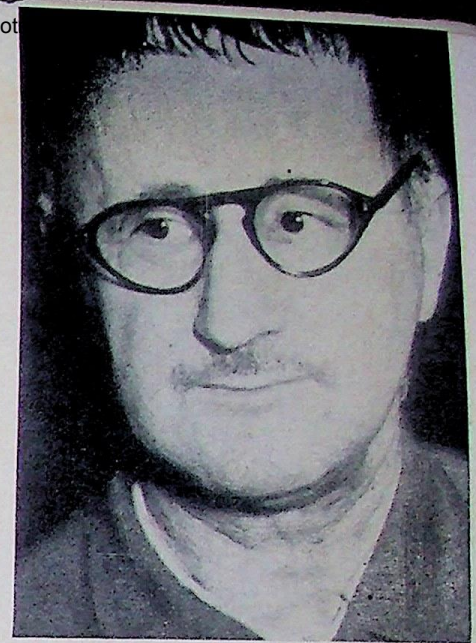
कई दस्तावेजों और पाण्डुलिपियों के आधार पर, ब्रेख्त की १० वीं मृत्यु-तिथि पर जर्मन जनवादी गणतंत्र के दो विद्वानों ने, इस वर्ष १४ अगस्त के दिन दो विश्लेषनात्मक अध्ययन प्रकाशित किये। एक का नाम है "ब्रेख्त का नाट्य-शिल्प" जिसकी लेखिका हैं डा० काएटे रुइलिके-वाइलर* और दूसरे अध्ययन का नाम है "नाट्य-शिल्प और इतिहास"। इसके लेखक हैं एरनस्त शूमाखर।

रंगमंच के साथ सम्बन्ध

ब्रेख्त-अभिलेखागार ने, ज. ज. ग. के विश्वप्रसिद्ध रंगमंच "बर्लिनेर एनसाम्ब्ल" स्व० बर्तोल्त ब्रेख्त जिसके स्वयं संस्थापक थे—के साथ निकटतम सम्बन्ध जोड़े हैं। "बर्लिनेर एनसाम्ब्ल", चाउस्सेसट्रा से—जहां ब्रेख्त भवन स्थित है—से ज्यादा दूर नहीं है। 'एनसाम्ब्ल' के निर्माताओं और अभिनेताओं के लिये, ब्रेख्त-अभिलेखागार एक अनिवार्य-सहायक है, और ब्रेख्त के किसी नाटक को दर्शकों के सामने प्रस्तुत करने से पहले वे यहां आकर तैयारी के दौरान ब्रेख्त द्वारा पहले लिखे गये नोटों आदि को देखते पढ़ते हैं। प्रायः अन्य देशों के रंगमंच भी, 'बर्लिनेर एनसाम्ब्ल' द्वारा खेले गये ब्रेख्त के नाटकों को उधार लेते हैं। १९६५–६६ के दौरान २५ विदेशी रंगमंचों ने ऐसा किया।

*पाद-टिप्पणी: अक्तूबर मास में नई दिल्ली में आयोजित 'पूर्व-पश्चिम रंगमंच गोष्ठी' में, डा० रुइलिके वाइलर जर्मन जनवादी गणतंत्र का प्रतिनिधित्व कर रहीं थीं।

हेनरी बूएट्टनर के हास्य-चित्र

माउगेरी

जर्मन जनवादी गणतंत्र के लगभग सभी अखबार नियमित रूप से हेनरी बूएट्टनर, के व्यंग्य-चित्र छापते हैं । उनके लगभग सभी चित्र बगैर शीर्षक के होते हैं, और इन हास्य चित्रों का मुख्य पात्र होता है एक दुबला पतला, लम्बा और बड़ा टोप (हैट) धारी आदमी ।

बूएट्टनर का यह पात्र, एक साधारण जर्मन टुटपूंजिया (पेट्टी-बुर्जुआ) का प्रतीक है, जो एक विशेष साहित्यिक पांडित्य का प्रदर्शन करता है और जो अपनी प्रवृत्ति तथा स्वभाव को अपने समकालीन परिवेश के अनुकूल ढालने का प्रयास करता है । वह जो कुछ भी करता है बहुत ही गंभीरता से करता है—भले ही कोई काम कितना ही अजीबो गरीब और विवेकशुन्य ही क्यों न दिखे । इस आकृति (व्यंग्य-चित्रों के मुख्य पात्र) की चारित्रिक विशेषता है एक व्यवस्थित, अनुशासित और नपा तुला, कटा-छटा जीवन क्रम ।

इस संदर्भ में, उक्त पात्र, हेनरी बुएट्टनर का ही दूसरा रूप है । हास्य-चित्रकार (बुएट्टनर) स्वयं, सैक्सोनी प्रान्त के एक छोटे गांव में रहे हैं । दस वर्ष पहले भी वह अज्ञात थे और स्वयं भी इस बात से अनभिज्ञ थे कि वह एक व्यंग्य-चित्रकार है । तब श्री बुएट्टनेर, कार्ल मार्क्स श्टाट के एक डिपार्टमेंट स्टोर में, चीज़ों के दाम-पट्टिकायें लिखने और उनके पोस्टर, विज्ञापन आदि बनाने का काम करते थे । यही काम करते-करते एक दिन इन व्यंग्य चित्रकार ने एक घोड़े का स्केच खींचा जिसके बगल में मोटर-साइकिल की एक साइड-कार का चित्र भी खींचा गया था । घोड़े की पीठ पर एक पतिदेव और साइड-कार में उनकी पत्नीजी विराजमान थीं । यह हास्य-चित्र, जर्मन जनवादी गणतंत्र के सुप्रसिद्ध व्यंग्य-चित्र साप्ताहिक "आइलेन-श्पाइगेल" में प्रकाशित हुआ । यहीं से, श्री बुएट्टनर की हास्य-चित्रकला ख्याति के राजमार्ग पर निकल पड़ी ।

उस दिन के बाद से, श्री बुएट्टनर, ज.ज.ग के लगभग सभी अखबारों में, हर महीने, औसत एक सौ हास्य-चित्र प्रकाशन के लिये भेजते हैं । कई वर्षों से वह प्रति दिन तीन

व्यंग्य-चित्र बना रहे हैं। इनके व्यंग्य-चित्रों में आश्चर्यचकित करने वाली है इनकी चित्रांकन शैली। इनकी बनाई आकृति में आपको एक विशेष क्रम, रेखाओं का एक खास नपा-तुला अन्दाज़ मिलेगा जो दर्शक का ध्यान आकर्षित किये बिना नहीं रहता।

उदाहरण : एक आदमी (वही दुबला-पतला आदमी) है जो अपने जूते के तस्मे बांध रहा है, लेकिन वह यह काम दीवार पर लगे एक नक्शे के क्रम के अनुसार कर रहा है। इसी प्रकार वह जब निर्देशक के बंद द्वार से गुजराता है तो अनायास ही वह सिर से अपना टोप उठा लेता है (अभिवादन के लिये)। बहुत साधारण और छोटी-मोटी चीज़ें को भी, वह, बड़ी गंभीरता के साथ 'खोई सम्पत्ति दफ्तर' में जमा करने जाता है, और जब उस की मोटर दूसरी मोटर कार के साथ टकराती है तो वह बड़े इतमीनान के साथ अपनी टूटी हुई कार से एक 'सीट' निकाल कर उस सिपाही के लिये जगह बना लेता है जो दुर्घटना की रिपोर्ट लेने आता है।

इस प्रतिभाशाली हास्य-चित्रकार का कहना है कि वह, दैनिक जीवन में होने वाली व्यंग्य-विनोद पूर्ण घटनाओं को, अपने अनुभव का अभिन्न अंग मान कर उनको, रेखाओं के द्वारा आकार देता है। इस तरह की अभिव्यक्ति से उनको मानसिक शांति मिलती है।
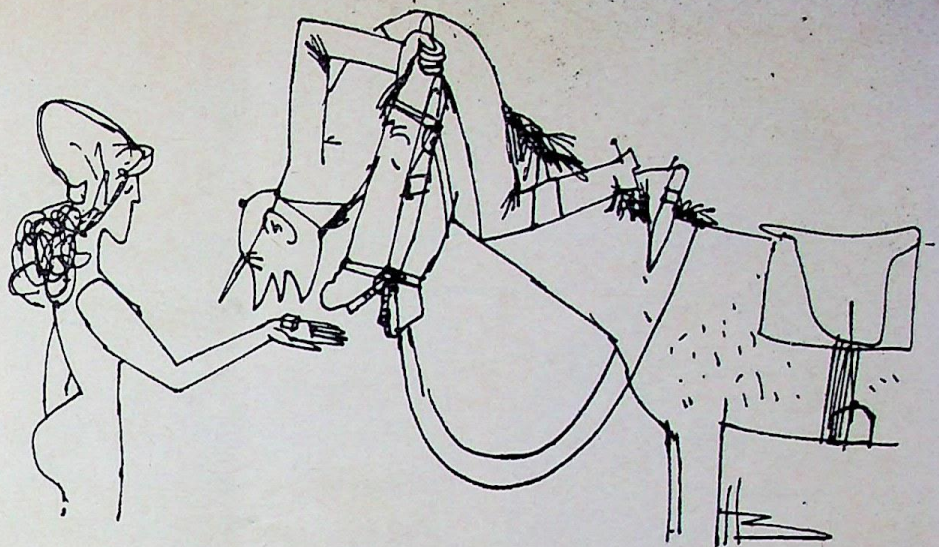
अर्थशास्त्र...

(पृष्ठ ५ का शेष)

'अर्थशास्त्र' और जर्मन भारत-विद्या-विद्

उल्लिखित पाठों एवं अनुवादों को आधार बना कर, आज तक 'अर्थशास्त्र' पर बहुत शोध कार्य किया गया है। इस कार्य के अनेक विषय हैं। इन विभिन्न विषयों के अध्ययन में भारतीय विद्वानों के साथ-साथ जर्मन भारत-विद्या शास्त्रियों का सबसे अधिक हिस्सा है।

जैसा कि हम ऊपर कह आये हैं, कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' की प्रथम पाण्डु-लिपि प्राप्त होने पर, इस महान रचना के अध्ययन के पहले कई वर्ष इसके पाठानुसंधान में लगाये गये। इस प्रसंग में, ए. हिल्लेब्राण्त, एच. जेकोबी, एच. ओल्डनबर्ग और जे. जोल्ली जैसे कई जर्मन विद्वानों का नामोल्लेख करना आवश्यक है। पाठानुसंधान के साथ साथ, 'अर्थशास्त्र' की पाण्डु-लिपि की प्रामाणिकता और इसके रचना–काल के सम्बन्ध में (जिस पर आज भी भिन्न मत हैं) बहस चली। यद्यपि 'अर्थशास्त्र' की प्रामाणिकता आज असंदिग्ध है, लेकिन इसके रचनाकाल के सम्बन्ध में विद्वान, आज भी एकमत नहीं हो सके हैं। कोई विद्वान इसका रचना-काल मौर्य-काल (ईसा के पूर्व दूसरी से तीसरी शताब्दी तक) मानता है, तो कोई विद्वान इसको गुप्त-काल (ईसा पश्चात् ४०० से ५०० वर्ष) का मानता है। लेकिन अधिकांश विद्वान भारतीय परम्परा को ही सही मानते हैं, और विद्वानों का यह बहुमत 'अर्थशास्त्र' को कौटिल्य की रचना, और रचनाकार को चन्द्रगुप्त मौर्य (३२२ से-२८५ ई. पू. तक) का एक मन्त्री मानता है।

(शेष अगले अंक में)

नूरेम्बर्ग...

(पृष्ठ १७ का शेष)

यंत्रणा-शिविर के लिये नाज़ियों को ज़हरीली गैस प्रदान करती थी, वह आज वियतनाम के अमरीकी हवाई फौज के लिए रासायनिक ज़हरों की पूर्ति कर रही है। पश्चिम जर्मनी के पैसे से दक्षिण वियतनाम में एक रासायनिक कारखाना स्थापित होने वाला है, जो ज़हरीली सामग्रियों का उत्पादन करेगा। पश्चिम जर्मनी का अस्पताली-जहाज "हेगोलैण्ड" वैसे ही "मानवतावादी" या "शांतिवादी" उद्देश्यों की पूर्ति के लिये है, जैसे युद्ध के पहले नाज़ी "अवकाश-जहाज़" थे, जिनका निर्माण सैनिकों के यातायात के लिये किया गया था।

फिर भी, दुनिया में सभी देशों की जनता शांति और सुरक्षा चाहती है। इसी कारण वियतनाम के खिलाफ अमरीकी हमले से सारी दुनिया में क्रोध की एक लहर व्याप्त हो गई है। नूरेमबर्ग फैसलों की याददिहानी का आज सिर्फ यह मतलब नहीं है कि जिन नाज़ी अपराधियों को अबतक दण्ड दिया गया है, उनसे जबावतलब किया जाय, बल्कि इसका अभिप्रेत यह भी है कि उनसे जबाव तलब किया जाये जिन्होंने एक बार फिर अमरीकी, जर्मन संघीय गणतंत्र और दक्षिण-पूर्व एशिया में शांति के खिलाफ अपराध, युद्ध-अपराध और मानवता के खिलाफ अपराध को चालू रखने की तैयारी की है।
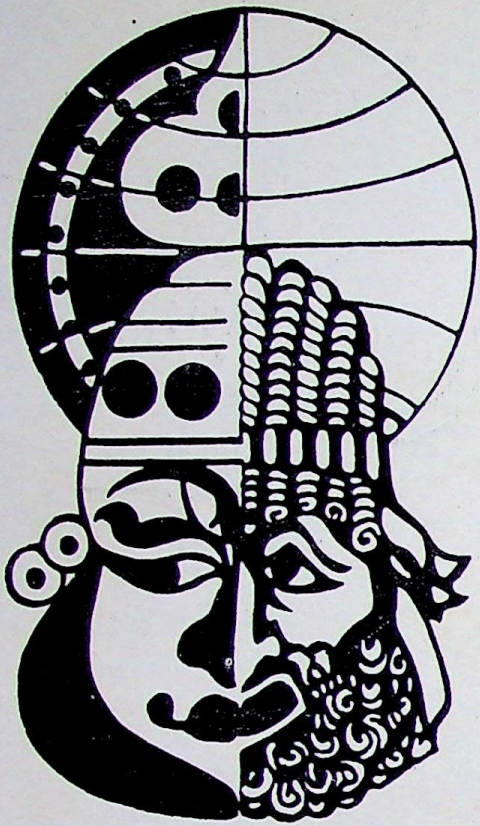
पूर्व-पश्चिम रंगमंच गोष्ठी में

'समग्र रंगमंच' पर ब्रेख्त-विशेषज्ञ के विचार

पिछले महीने में दिल्ली में आयोजित पूर्व-पश्चिम रंगमंच गोष्ठी में जर्मन जनवादी गणतंत्र के दो प्रति-निधियों ने भाग लिया। गोष्ठी में डा. (श्रीमती) काएटे रूलिके वाइलर के द्वारा 'समग्र रंगमंच' (टोटल थियेटर) पर पढ़े गये लेख के अंश प्रकाशित करते हुये हमें खुशी हो रही है। श्रीमती काएटे रूलिके वाइलर जर्मनी के विश्व प्रसिद्ध नाटककार बर्तोल्त ब्रेख्त की घनिष्ठ सहयोगिनी रहीं हैं। इन्होंने "ब्रेख्त की नाट्यकला" नामक एक पुस्तक भी लिखी है। आजकल आप ज.ज.ग. के टेलिविजन कार्यक्रमों की मुख्य नाट्य-निर्माता हैं और इन्होंने पूर्व-पश्चिम रंगमंच सेमिनार पर टेलिविजन अन्तर्राष्ट्रीय का एक विशेष संस्करण भी प्रस्तुत किया। उनके योगदान के कुछ अंश यहां दिये जा रहे :

——संपादक

जब मैंने इस बात पर विचार किया कि रंगमंच पर पूर्व-और पश्चिम के समग्र प्रभाव की दृष्टि से ब्रेख्त के रंगमंच की व्याख्या की जाय, तब मेरे सामने सबसे बड़ी कठिनाई यह पेश हुई कि स्वयं ब्रेख्त ने कभी भी अपने रंगमंच के लिये इस शब्द (टोटल या समग्र प्रभाव) का इस्तेमाल नहीं किया है।

ब्रेख्त के रंगमंच कार्य पर निर्णायक परम्पराओं और प्रभावों को देखा जाय, तो उनकी गणना मात्र से विविधता स्पष्ट हो जायेगी: ब्रेख्त शेक्सपीयर के रंगमंच से प्रभावित थे। लेकिन वह पुराकाल से भी, मध्ययुग के लोप्रिय यूरोपीय रंगमंच से तथा पूर्व के रंगमंच से भी प्रभावित थे। लेन्स, शिलर, गेटे, बुएखनर, आदि के प्रभाव को मां का प्रभाव कहा जा सकता है। वैसे ब्रेख्त पर युवा सोवियत क्रांतिकारी रंगमंच और पिस्काटर के रंगमंचीय प्रयासों, आरम्भिक दिनों के मूक-चलचित्रों, जर्मन सर्वहारा के रंगमंच टोलियों और दक्षिण जर्मनी के उसके अपने लोक क्षेत्र के वार्षिक मेलों के रंगमंच का स्पष्ट प्रभाव है।

इन सभी प्रभावों ने——और केवल ये ही नहीं——ब्रेख्त के नाटकों और उनके प्रस्तुतिकरण के सौंदर्यात्मक अर्थों पर भी अपनी छाप छोड़ी है। लेकिन किसी भी रूप से ये उनके रंगमंच की व्यवस्था के अंग नहीं हैं।

फिर ब्रेख्त के रंगमंच का सारतत्व क्या है?

अपनी पुस्तक "रंगमंच की द्वन्द्वात्मकता में अन्तिम बार उन्होंने कहा था और उनका यह विचार कई दशकों तक बना रहा: "मैं रंगमच में इस वाक्य को चरितार्थ करना चाहता था कि मुख्य वस्तु जगत की व्याख्या नहीं है, बल्कि इसको बदलना है।" कार्लमार्क्स के इस प्रसिद्ध वाक्य को प्रयुक्त कर ब्रेख्त "प्रदर्शित वास्तविकता की सक्रिय समझदारी के लिये जनता को सुयोग्य बनाना" चाहते थे, जैसाकि उन्होंने कहा है

इसके लिये सचमुच ही सबसे पहले समाज को गति प्रदान करने वाले नियमों की जानकारी और लोगों के व्यवहार की जानकारी आवश्यक है, अर्थात वह ज्ञान जिसकी जानकारी कई दशकों में ब्रेख्त ने हासिल की। समाज में परिवर्तनों के प्रकाश में उन्होंने सदैव इस जानकारी को नये ढंग से हासिल किया।

यहां हो रहे विचार-विमर्श में जो प्रश्न बार-बार उठाया जा रहा है वह यह है कि रंगमंच में किस बात की प्रधानता है। इस प्रश्न का उत्तर ब्रेख्त के रंगमंच की दृष्टि से इस प्रकार दिया जा सकता है: कला के सभी साधनों की समग्रता——भाषा, अभिनय, भाव-भंगिमायें गीत, मास्क, सज्जा, वस्त्रालंकार——आदि समाज की समग्रता को उपस्थित करने के उद्देश्य के आधीन और यह दिखलाने के लिये हैं कि सभी चीज़ें परिवर्तनशील हैं। और सर्वोपरि इन साधनों का उद्देश्य है दर्शकों को इस परिवर्तन के लिये प्रेरणा देना। ब्रेख्त के रंगमंच का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उन्होंने रंगमंच के लिये कोई लकीर नहीं खींची

उन्होंने रंगमंच के लिये कोई लकीर नहीं खींची है, वरन् उन्होंने एक ऐसा तरीका बतलाया है जिससे लगातार आगे बढ़ा जा सकता है ।

यह आकस्मिक नहीं है कि दर्शक, ब्रेख्त के रंगमंच और पूर्व के रंगमंच में समानता पा लेते हैं । पहली और स्वाभाविक बात है वह ढंग या भाव-भंगिमा जिससे किसी घटना को प्रदर्शित किया जाता है । यह विदित है कि ब्रेख्त ने अपना नाटक "टैनिकों" के आधार पर लिखा । अपनी जवानी में उन्होंने टैगोर का अध्ययन किया, खासतौर से उनके नाटक "विसर्जन" का । इस शताब्दी के द्वितीय दशक में ही ब्रेख्त ने एशियाई रंगमंच में प्रयुक्त मुखौटों (मास्क) का उपयोग किया, जिनका प्रयोग मध्यकालीन यूरोपीय लोक-प्रिय रंगमंच में भी होता था । और कार्नवाल जैसे समारोहों में जिनका उपयोग आज भी होता है । पर इन मुखौटों का काम हमेशा भिन्न भिन्न रहता है । मिसाल के लिये ब्रेख्त के "काकेशियन चाक सर्किल "में कई पात्र मुखौटे (मास्क) पहने थे ।

शासक (राजे महाराजे) पूरा मुखौटा धारण करते थे: चेहरों की विलक्षण विकृति, न केवल शासन काल में विकृत चेहरे, बल्कि शासन कार्य के बोझ से भी विकृत । कुछ सेवक भी मुखौटे धारण करते थे । क्योंकि शासित किये जाने में भी एक शारीरिक विकृति या तनाव आता है । लोग––महिला गुचे, जो बच्चा संभालती है, फौजी सीमोन और जनता का जज अजदक, ये सभी अपने वास्तविक मानवीय स्वरूप में सामने आते हैं ।

मैं इस बात का बहुत स्वागत करती हूं, कि हमने समग्र रंगमंच को परिमार्जित करने की चेष्टा की । लेकिन जैसा कि हमारे विचार-विमर्श से प्रकट है, मुझे भय है कि हम रंगमंच को इतिहास से लग्रग कर रहे हैं, कि हम सामाजिक और राष्ट्रीय विशेषताओं को नज़रअन्दाज़ कर रहे हैं, और यह कि हम रंगमंच की अपेक्षित विविधता को विकसित और प्रोत्साहित करने की अपेक्षा रंगमंच कलाओं को संकुचित कर रहे हैं ।

आज का नूरेमबर्ग

डा. हाइनरिख टोएपलिट्स
ज. ज. ग. के उच्चतम न्यायालय के प्रधान

नूरेमबर्ग के मुकदमों में प्रमुख नाज़ी युद्ध अपराधियों के लिये फैसले की घोषणा हुये २० वर्ष हो गये हैं । इसकी याद दिलाने के पीछे क्या बात है ? इसका जवाब देने के लिये भूतकाल की एक झांकी लेना आवश्यक है । द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान भी हिटलर-विरोधी गठबंधन की मित्र-शक्तियां इस बात पर सहमत थीं कि नाज़ी अपराधियों को न्याय-संगत दण्ड मिलना चाहिए और सचमुच ये दण्ड उन देशों द्वारा दिये जाने चाहिये जहां इन्होंने अपराध किये थे । शिखर-अपराधियों, जिनके अपराध किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र तक सीमित नहीं थे, पर अन्तर्राष्ट्रीय सैनिक न्यायाधिकरण, जिसका गठन ८ अगस्त १९४५ मे लन्दन चौ-राष्ट्र संधि द्वारा किया गया था, के अन्तर्गत मुकदमा चलाया जाना चाहिये । इस इकाई (न्यायाधिकरण) का कार्यकलाप चौ-राष्ट्र संधि द्वारा स्थापित लन्दन-नियमावली पर आधारित था । अन्तर्राष्ट्रीय-कानून में इस दस्तावेज़ ने भारी महत्व प्राप्त किया है ।

लन्दन-नियमावली का अनुच्छेद ६ प्रसिद्ध हो चुका है । यह इस दृष्टि से अभूतपूर्व था कि इसने अन्तर्राष्ट्रीय कानून के खिलाफ जिन अपराधों को परिभाषित किया, उनमें शांति के विरूद्ध अपराध, युद्ध अपराध और मानवता के खिलाफ अपराध शामिल हैं । अन्तर्राष्ट्रीय कानून के लिये वैसे यह नई बात नहीं थी । हुआ यह कि अन्तर्राष्ट्रीय-कानून द्वारा व्यक्त कई कानूनों को, जो पहले हुई संधियों का परिणाम थे, फिर से एक अन्तर्राष्ट्रीय संधि में संयोजित और परिभाषित किया गया । सबसे पहली बार २४ प्रमुख नाज़ियों के खिलाफ़ नुरेमबर्ग के फैसले में अनुच्छेद ६ का प्रयोग किया गया । लोकतांत्रिक अन्तर्राष्ट्रीय कानून के निर्माण में यह मील का पत्थर था क्योंकि इसके द्वारा आक्रामक युद्धों के आयोजकों, तैयारी करने वालों और इसे क्रियान्वित करने वालों को दण्ड देकर जनता के शांति के अधिकार को प्रस्थापित किया जा सका ।

नूरेमबर्ग के मुकदमों के दौरान भी सभी पक्षों पर यह बात साफ थी कि यह केवल भूतकाल का परीक्षण और भयानक नाज़ी अपराधों के लिये पर्याप्त दण्ड की तलाश मात्र का प्रश्न नहीं है । नुरेमबर्ग के फैसले को "भविष्य की चिन्ता करनी" चाहिये, जैसा कि मुकदमे में एक अमरीकी अभियोग-कर्ता ने कहा था । जाहिर है कि इस संदर्भ में वह अमरीकी केवल जर्मन सैन्यवाद को मद्देनजर रख रहा था । उस समय भी सैन्यावाद के फिर से उभरने का डर पश्चिमी ताकतों के नुमाइन्दों को परेशान कर रहा था । उनके लिये उस समय यह विश्वास करना असंभव था कि कुछ वर्षों बाद उनकी अपनी ही सरकारें

पराजित हिटलरी जनरलों को अपना मित्र बना लेंगी।

नूरेमबर्ग के फैसले के बीस वर्ष बाद ही इसके उद्देश्यों की अहमियत साफ-साफ दिखने लगी। नूरेमबर्ग के सिद्धान्तों के आज के प्रयोग का अर्थ होता है लन्दन-नियमावली के अनुच्छेद ६ द्वारा परिभाषित अपराधों के समान ही दक्षिण-पूर्व एशिया में हो रहे अपराधों को मानना। दक्षिण वियतनाम की जनता और वियतनामी जनवादी गणतंत्र के खिलाफ अमरीकी और उसके मित्रों का हमला, शांति के विरुद्ध एक अपराध है, उसी प्रकार का जिस की नुरेमबर्ग में निन्दा की गई थी। आबादी वाले इलाकों, बांधों और सिंचाई प्रतिष्ठानों पर बमबारी, ज़हरीली गैसों और नापाम बमों का उपयोग, रासायनिक घोलों द्वारा फसलों की बरबादी तथा युद्ध-बन्दियों के साथ अभद्र व्यवहार और उनकी हत्या—ये सभी कुकृत्य, जो अमरीकी और उसके मित्रों द्वारा किये जा रहे हैं, उसी तरह के अपराध हैं जिनकी नुरेमबर्ग में निन्दा की जा चुकी है। जो लोग इसके लिये जिम्मेदार हैं और जो ऐसी अपराधी आज्ञाओं का पालन करते हैं, वे अन्तर्राष्ट्रीय कानून की नज़र में अपराधी हैं। विश्व जनमत की अदालत में वैसे भी वे सैनिक नैतिक रूप में अपराधियों के कटघरे में खड़े हैं।

इस अपराधी युद्ध को पश्चिम-जर्मन संघीय गणतंत्र द्वारा दिये जा रहे समर्थन में वाशिंटन और बोन का गठबन्धन समुचित अभिव्यक्ति प्राप्त करता है। पश्चिम जर्मनी के समाचार पत्रों में प्रकाशित मृत्यु समाचारों ने इस तथ्य की पुष्टि की है कि पश्चिम जर्मनी के कई नागरिक वियतनाम की हवाई लड़ाई में मारे गये हैं।

पश्चिम जर्मनी के सैनिक विशेषज्ञ एक बड़ी तादाद में "तकनीकी सलाहकारों" के नाम से दक्षिण वियतनाम में तैनात हैं। ये अपने कार्यकलाप के वास्तविक स्वरूप की कहानी अपने आप कह रहे हैं। पश्चिम जर्मनी की आइ० जी० फारबेन् फर्म, जो आउश्वित्स

(शेष पृष्ठ १५ पर)

ज. ज. ग. में कानून और कचहरी

जोसेफ स्टाइट

ज.ज.ग. के प्रधान अभियोक्ता

एक जमाना था—और पश्चिम जर्मनी में अब भी है—जब बहुत से मज़दूर कचहरियों और विधि-दर्शन के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। आज ज. ज. ग. में स्थिति में परिवर्तन आ गया है, क्योंकि यहां कानून और शांति की समाजवादी व्यवस्था, लोकतंत्र, न्याय और समानता की अभिव्यक्ति बन गई है।

पिछले कई वर्षों से समाजवादी न्याय व्यवस्था का निर्णायक तत्व रहा है—विधि-दर्शन में सामाजिक शक्तियों का बढ़ता हुआ सहयोग। १९६४ तक २६०,००० नागरिक स्वेच्छा से अपने उन बन्धु-नागरिकों की सहायता में लगे रहे, जो कानून के शिकंजे में आये। वे उन्हें अपना तौर-तरीका सुधारने, अपना पाठ सीखने और समाज के उपयोगी सदस्य बनने और काम करने में सहायता देते रहे।

केवल ग्राम कचहरियों में ही १९६५ में ३५,००० सदस्यों की कार्यरत टोलियां थी, जिनमें कानून तोड़कों ने काम किया था, गवाहियां दी थीं। इसी अवधि में ५००० से अधिक "सामाजिक कार्यकर्त्ता" और प्राय: ३००० "सामाजिक बचाव-कर्ता" थे। कचहरियों के काम में मज़दूरों को एकजूट करने की व्यवस्था के अच्छे नतीजे भी हासिल हुये। जो काम अब भी शेष है, वह है सभी क्षेत्रों में कानून तोड़कों पर शैक्षणिक प्रभाव डालना। प्रमुख कार्य है कानून भंग करने वालों को सामाजिक शिक्षा की गारन्टी देना और शैक्षणिक व्यवस्था की खाई पाटना।

शिक्षा की यह प्रणाली अक्सर संकुचित और संशलिष्ट रही है और निश्चय ही यह मुकद्दमों या एक विवाद आयोग की बहस से समाप्त नहीं हो जाती ("विवाद आयोग" फैक्ट्री-नयायाधिकरण है, जो कानून के मामूली उलंघन की वारदातों को अधिकाधिक हाथ में लेते रहे हैं—स०)। मुकदमे की कारवाई और दण्ड के बाद उल्लंघनकर्ता को

समाज में फिर से प्रतिष्ठित करने की दिशा में एक नये और निर्णायक चरण का आरम्भ होता है।

अपराध के सफल प्रतिरोध के लिए दूसरा चरण यह है कि कानून भंग के कारणों का विश्लेषण अवश्य किया जाना चाहिये। कुछ लोग अब भी उल्लंघन करने वालों के प्रति बहुत अधिक सहिष्णु रहते हैं, जैसे युवक खुराफातियों के प्रति, शराब के नशे में अपराध करने वालों के प्रति और उन के प्रति जो सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाते या उसे चुराते हैं। अपराध के खिलाफ अपने संघर्ष में हमने महान सफलतायें प्राप्त की हैं, लेकिन अब भी अपराध हमारे समाज में एक निषेधात्मक तत्व है। अपराध-दर में तब तक कमी नहीं आ सकती जब तक हम इसे दूर करने में सक्रिय हिस्सा नहीं लेते। शांति और व्यवस्था के लिये हरेक को अपनी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी महसूस करनी चाहिये।

एक समाजवादी राज्य में न्याय का प्रशासन सर्वोपरि व्यक्ति की देखभाल करने का प्रश्न है। कानून का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति का भाग्य हम सभी से सम्बद्ध है। इसलिये हम चाहते हैं कि वह समाज की मुख्य-धारा में वापस लौट आये। हमारी शांति और सुरक्षा की व्यवस्था से प्रतिशोध, अपमान और शारीरिक उत्पीड़न की प्रवृत्तियों को बहुत दूर कर दिया गया है।

यह सब हमारे गणतंत्र में हुये क्रांतिकारी विकास की अभिव्यक्ति है। न्याय के समाजवादी प्रशासन के कार्यों और लक्ष्यों से हमारे नागरिक अपने को एकाकार कर सकते हैं और उन्हें करना चाहिये। वे इन्हें प्रभावकारी बना सकते हैं और खुद इसकी रूप-रेखा बना सकते हैं।

१९६५ में ज.ज.ग. में १५,७६५ कानून भंजकों को कचहरियों ने कैद की सज़ा दी और २८,०७८ को ऐसी सज़ायें दी गई जिनमें कैद गैर-जरूरी है। विवाद-आयोगों के ज़रिये छोटे-मोटे २८,०५० मामले निपटाये गये। ये आंकड़े दिखलाते हैं कि हमारा कानून अपनी सफलता की कहानी आप कह रहा है।

परन्तु अपराध की दर में कमी करने के लिये अपराधों के खिलाफ हमें और ज्यादा सर्वसम्मत कदम और शांति-व्यवस्था की समस्याओं के प्रति उत्तरदायित्व की एक वास्तविक सह-अनुभूति की आवश्यकता है। यह केवल पुलिस और कचहरियों की समस्या नहीं है। कई स्थानीय अधिकारियों ने कानून-भंजकों के खिलाफ संघर्ष के लिये कार्यक्रम बनाये हैं।

आज, पहले से कहीं अधिक, हम मार्क्स के इन शब्दों को याद करते हैं: "बुद्धिमान विधायक अपराध का प्रतिरोध करेगा, ताकि इसके लिये उसे सज़ा निश्चित न करनी पड़े।" संभवतः इसका अभिप्राय यह नहीं है कि अपराधों पर दण्ड की व्यवस्था न हो। इसके विपरीत कानून भंजकों को यह विश्वास करने का कोई कारण न रह जाये कि वह हमसे बच सकते हैं। सामाजिक शैक्षणिक कदम नये अपराधों को रोक सकते हैं, लेकिन भूतकाल की तरह हिंसा, खास तौर से उनके लिये जो पश्चिमी षड्यंत्रकारी संगठनों की सेवा में हमारे राज्य के खिलाफ सिर उठाते हैं, जैसे अपराधों के लिये दृष्टान्त स्वरूप दण्ड की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिये।

हाल ही में पश्चिम जर्मनी की अपराध-स्थिति के आंकड़े प्रकाश में आये हैं। ये आंकड़े दिखलाते हैं कि वहां के लोग समाज में बढ़ती हुई अपराध-दर की समस्या से आक्रान्त हैं। १९६५ में पश्चिम जर्मनी के अपराध दर में २.४ प्रतिशत की वृद्धि हुई, अर्थात् ९,७८९,३९८ अपराध हुये। इनमें यातायात नियमों में उल्लंघन की घटनायें शामिल नहीं हैं। नर-हत्या की घटनाओं में भयानक वृद्धि हुई है। १९६५ में हत्याओं और नर-हत्याओं की जो घटनायें हुईं, इनमें हत्या के प्रयास भी शामिल हैं। पूंजीवाद के जंगली कानूनों वाली सरकार के तहत मानवीय सम्बन्धों के पाशविक रूप का यह इज़हार है।

पूंजीवाद आदर्शों की अभिव्यक्ति के रूप में आंकड़ों से यह भी मालूम होता है कि लालच और हड़पने की भावना नित्यप्रति के दिन का मूल अंग हो गया है। क्योंकि पहली बार चोरी की संख्या ९० लाख मार्क से अधिक हो गई।

दोनों जर्मन राज्यों में अपराध के लिये सामाजिक कारणों में इतना फर्क है कि उक्त आंकड़ों से हमारी तुलना की दृष्टि नहीं है। फिर भी हमने इनका उल्लेख किया है। लेकिन ये आंकड़े साफ-साफ यह दिखलाते हैं कि हमने कैसा ऐतिहासिक अग्रगामी कदम उठाया है। अपराध के खिलाफ और जोर से लड़ने में ये हमारे लिये प्रेरक हो सकते हैं और इसकी प्रेरणा से इस कार्य के लिये हम ज्यादा हिस्से को तैयार कर सकते हैं।

'सूचना पत्रिका'

'भारत–ज. ज. ग. मैत्री संघ' के सम्मेलन का एक दृश्य

भारत-ज. ज. ग. मैत्री संघ का अखिल भारतीय सम्मेलन

अक्टूबर की ५ तथा ६ तिथियों के दिन, नई दिल्ली में "भारत-जर्मन जनवादी गणतंत्र मैत्री संघ" का अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित हुआ। भारत के विभिन्न राज्यों से आये हुये अनेक प्रतिनिधियों ने, इस सम्मेलन में ज. ज. ग. और भारत के लोगों को एक दूसरे को अधिक निकट लाने के बारे में विचारों एवं अनुभवों का आदान प्रदान किया।

इस अखिल भारतीय सम्मेलन का उद्घाटन किया राजसभा की उपाध्यक्ष, **श्रीमती वायलेट आलवा** ने। अपने उद्घाटन भाषण में, श्रीमती आलवा ने कहा कि इस सम्मेलन के साथ, ज. ज. ग. के साथ मैत्री बढ़ाना जिसका उद्देश्य है, अपने आप को सम्बद्ध करते हुए उसको काफी प्रसन्नता होती है। उन्होंने उत्साहपूर्ण शब्दों में कई वर्ष पहले की गई अपनी ज. ज. ग. यात्रा का भी स्मरण किया।

भारत सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्री **श्री जगजीवन राम** ने, इस अवसर पर दिये गये अपने भाषण में, विश्व के जन-गण की मैत्री एवं सहयोग पर बल देते हुये कहा कि शांति और मैत्री, भारत की नीति की आधार-शिलायें हैं।

सम्मेलन में, **सोशलिस्ट कांग्रेसमैन** के सम्पादक और वरिष्ठ कांग्रेसजन **श्री हर्षदेव मालवीय** ने जहां ज. ज. ग. की सर्वतोमुखी प्रगति का बखान किया, वहां उच्चतम न्यायालय के सीनियर एडवोकेट **श्री ए. एस. आर. चारी** ने कहा कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की एक सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उसने अपनी भूमि से जर्मन सैन्यवाद की अस्वस्थ एवं क्रूर परम्परा को आमूल नष्ट कर दिया है और इस तरह अपनी जनता को जर्मनी की स्वस्थ, मानवीय परम्पराओं—अर्थात् लोकतंत्र, शांति एवं समाजवाद के राजमार्ग पर पुनः लाया है।

भारत में, ज. ज. ग. के व्यापार दूतावास के प्रमुख, **श्री हरबर्ट फिशर** ने अपने भाषण में कहा कि ज. ज. ग. और भारत में बहुत कुछ समान है, और यदि ये दोनों देश अपने अनुभवों तथा प्रयासों को एकत्र करें, तो यह (एकत्रीकरण) समझदारी तथा शांति के लिये एक महत्वपूर्ण देन होगी।

'भारत–ज. ज. ग. मैत्री संघ' के इस अखिल भारतीय सम्मेलन ने एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी पास किया, जिसमें भारत सरकार द्वारा जर्मन जनवादी गणतंत्र को पूर्ण राजनयिक मान्यता प्रदान करने की मांग की गई है। प्रस्ताव में कहा गया है: "...हमें इस बात से काफी संतोष है कि १२ वर्षों की लघु अवधि में ही, भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार में दसगुना से भी अधिक वृद्धि हुई है।...यह सम्मेलन इस बात को रेखांकित करता है कि सन् १९५६ में ज. ज. ग. सबसे पहला देश था जिसने हमारी मुद्रा, रुपये को, व्यापार में विनिमय का आधार मान लिया। ...सैकड़ों भारतीय विद्यार्थी आज तक, ज. ज. ग. में अध्ययन एवं प्रशिक्षण प्राप्त करके स्वदेश लौटे हैं।...गंभीर तथा महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्नों पर, ज. ज. ग. की सरकार ने बिना किसी झिझक के भारत का पक्ष लिया है।...

"इस सम्मेलन का यह निश्चित मत है कि ज. ज. ग. का उक्त रवैया (भारत के प्रति) आकस्मिक नहीं है। इस रवैये का आधार यह ठोस हक़ीकत है कि दोनों देशों की विदेश नीतियों में बहुत कुछ समानता है।

"फासिस्तवाद-विरोधी परम्पराओं के अनुरूप भारत का, ज. ज. ग. की जनता एवं विश्व की समस्त शांतिप्रिय जनता के प्रति यह कर्तव्य है कि वह ज. ज. ग. की मान्यता को अब भी ख़टाई में न डाले रखे। हमारे दो देशों के बीच, अत्यन्त आवश्यक सहयोग के अधिक विकास और नये क्षेत्रों में सहयोग की खोज के रास्ते में आज सबसे बड़ी रूकावट है भारत और ज. ज. ग. के बीच राजनयिक सम्बन्धों का अभाव, और इस अभाव में गलत तथा गैर-दोस्ताना दबाओं के सामने झुकने का आभास मिलता है।–"

ज.ज.ग. की औषधियों और चिकित्सा सम्बन्धी सामानों में विश्व के हृदयरोग विशेषज्ञों की दिलचस्पी

हृदयरोग विशेषज्ञों की पांचवीं विश्व-कांग्रेस नई दिल्ली में ३० अक्टूबर से ५ नवम्बर तक हुई। भारत के लिये यह वैज्ञानिक और सामाजिक दोनों प्रकार का समारोह था और इसका प्रभाव आर्थिक क्षेत्र पर भी पड़ेगा।

जिस प्रकार ४१ देशों के वैज्ञानिकों ने हृदय और रक्तप्रवाह सम्बन्धी रोगों की पहचान और चिकित्सा पर अपने अनुभवों और ज्ञान का परस्पर विनिमय किया, वैसे ही उन्हें औषधियों तथा मेडिकल-तकनीकी यंत्र और औज़ारों की प्रदर्शनी से हृदय और रक्तप्रवाह प्रणाली की सामान्य गति को बनाये रखने और उसे पुनः प्राप्त करने के काम आने वाले विज्ञान और टेकनोलाजी के नवीनतम विकास से परिचित होने का अवसर भी मिला।

प्रदर्शनी में ज. ज. ग. के दो स्टाल थे। एक में ज. ज. ग. में तैयार की गई ऊंचे किस्म की औषधियां प्रदर्शित हुई थीं। वैज्ञानिकों की खास दिलचस्पी रही हृदय ग्लाइकोसाइड तथा रक्त-प्रवाह औषधियां, जिसमें दुनिया की सर्वथा नवीनतम औषधियां भी शामिल थीं।

दूसरे स्टाल में हृदय रोग के निदान-उपकरण (हार्ट डाइग्नोस्टिक्स) और हृदय की शल्यक्रिया का एक नवीन उपकरण प्रदर्शित किया गया था। इन उपकरणों की यह प्रदर्शनी ज.ज.ग. की "फाइनमेकानिक-ओप्-टिक" नामक विदेश-व्यापार संगठन ने, अपने भारती एजण्ट "ट्वाण्ड्स्वेन इलेक्ट्रानिक्स" के सहयोग से संगठित की थी। कई नालियों वाले विद्युत-कार्डियोग्राफ और उनके पुर्जे विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे।

इस कांग्रेस के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ने प्रदर्शकों को कई ज़रूरतमन्द व्यापार पार्टियों से संपर्क स्थापित करने का मौका दिया। इस सम्पर्क से, सम्मेलन के बाद भी व्यापारिक सम्बन्धों में मजबूती और व्यापकता आ जायेगी। कांग्रेस में भाग लेने वाले ज. ज. ग. के वैज्ञानिक, दवाईयां बनाने वालों और मेडिकल-यन्त्र उत्पादकों के साथ विचार-विमर्श और प्रदर्शनी का मूल्यांकन करेंगे ताकि उत्पादनों को और अधिक उन्नत किया जा सके।

समाचार

ज. ज. ग. टेलिविजन-टीम ने ताजमहल फिलमाया

ज. ज. ग. की एक टेलिविजन-दल ने ताजमहल और फतेहपुर सीकरी पर एक लम्बी फिल्म बनाई है। इसी दल ने पिछले दिनों नई दिल्ली में आयोजित तीन राष्ट्रों—भारत, संयुक्त अरब गणराज्य, और यूगोस्लाविया—के प्रधानों के सम्मेलन का भी फिल्म लिया है।

ताज पर बनी फिल्म को क्रिसमस की संध्या में ज. ज. ग. के टेलिविजन पर प्रदर्शित किया जायेगा। इस तरह से टेलिविजन के लाखों दर्शक अपनी आंखों से आगरा तक की यात्रा करते हुये प्रेम और अराधना के इस रमणीक प्रतीक की सराहना का अवसर प्राप्त करेंगें।

प्रधान सूचना अधिकारी भारद्वाज ज. ज. ग. में

प्रेस इन्फार्मेशन ब्यूरो के प्रधान सूचना अधिकारी श्री एम. एल. भारद्वाज ने ज. ज. ग. के सूचना तकनीक का अध्ययन करने के लिये २ से ९ नवम्बर तक ज. ज. ग. की यात्रा की। श्री भारद्वाज ने भारत की संचार व्यवस्था और अपने देश की वर्तमान नीतियों पर व्याख्यान दिये। उन्होंने लाइपज़िग विश्वविद्यालय के पत्रकारिता संकाय का निरीक्षण किया और जर्मन पत्रकारों के संघ द्वारा आयोजित ज. ज. ग. के पत्रकारों के एक फोरम में भाषण दिया।

शंकर पिल्लै प्रतियोगिता में सोलह बच्चों ने पुरस्कार जीते

प्रसिद्ध भारतीय व्यंग्य-चित्रकार, शंकर पिल्लै द्वारा आयोजित बच्चों की १९६५ की अंतर्राष्ट्रीय चित्रकला और लेखन प्रतियोगिता

वार्टबूर्ग का प्राचीन चर्च, जहां मार्टिन लूथर ने बाइबल का अनुवाद किया था। चर्च-सुधार की ४५० वीं वर्षगांठ पर इस गिरजे में अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे

में जिन ४०७ बच्चों ने पुरस्कार जीते, उनमें सोलह बच्चे ज. ज. ग. के हैं। विजेताओं के चुनाव के लिये निर्णायक मण्डल को अस्सी से अधिक देशों से भेजे गये १००,००० चित्रादि का परीक्षण करना पड़ा।

नेहरू पुरस्कार के २४ विजेताओं में ज. ज. ग. की एक आठ वर्षीय स्कूली लड़की भी है।

ज. ज. ग. के ईसाइयों ने सुधार-दिवस मनाया

३१ अक्तूबर को ज. ज. ग. के एवाँजलिक ईसाइयों ने सुधार-दिवस मनाया । इसी दिन ४४६ साल पहले मार्टिन लूथर ने विटेनबर्ग चर्च में स्वर्गयात्रा के लिये आज्ञापत्र बिकने के खिलाफ १५ निबन्धों की घोषणा की ।

ज. ज. ग. में एवाँजलिक बहुसंख्या वाले प्रान्तों में, ३१ अक्टूबर सार्वजनिक छुट्टी का दिन होता है ।

ज. ज. ग. में सुधार-आन्दोलन के ४५० वें साल के उत्सवों की शुरूआत, रीति के अनुसार, आराधना और चर्च संगीत से हुई । इस साल के उत्सव में कई कार्यक्रम होंगे । बर्लिन के क्रिश्चियन–डेमोक्रेटिक पत्र "न्यू-जेत्" ने मार्टिन लूथर पर धार्मिक और मार्क्सवादी दोनों दृष्टियों से नये लेखों के प्रकाशन की घोषणा की है ।

ज. ज. ग. के ४५० व साल के समारोहों की तैयारी समिति की बैठक हाल ही में बिटनबर्ग में हुई । बैठक ने आगामी वर्ष के लिये प्रमुख समारोहों का कार्यक्रम तय किया ।

ज. ज. ग., पश्चिम जर्मनी और विदेशों के चर्च नेताओं तथा प्रमुख सार्वजनिक और सांस्कृतिक विभूतियों को भी निमंत्रित करेगा ।

बैठक में समिति के अध्यक्ष गेरहार्ड गोटिंग राज्य परिषद के उपाध्यक्ष और क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन के अध्यक्ष; और प्रान्त सेकसोनी के बिशप, डी. जोन्स जेनिक; सांस्कृतिक मन्त्री, लांस गिसी; थुरीजियन बिशप, डा. मोरिज मिजेन्हेम और विटनबर्ग के मेयर मर्कर ने भाषण दिये ।

सूचना पत्रिका के पाठकों से

'सूचना पत्रिका' के पाठकों को सूचित किया जाता है कि उनमें से कई एक का चन्दा समाप्त हो गया है, और कुछ ग्राहकों का चन्दा अगले मास में समाप्त हो रहा है । अपने इन पाठक बन्धुओं से प्रार्थना है कि वे जल्दी से जल्दी हमें अपना वार्षिक चन्दा (दो रुपये मात्र) भेज दें । अन्यथा हम उन्हें 'सूचना पत्रिका' भेजना बन्द कर देंगे ।

'सूचना पत्रिका' के कई एक पाठक ऐसे भी हैं जिन्होंने आज तक 'पत्रिका' का चन्दा दिया ही नहीं है । ऐसे पाठकों से भी हमारा निवेदन है कि वे अगले मास की १५ तिथि तक चन्दा भेज कर 'पत्रिका' के ग्राहक बन जायें । ऐसा न करने पर हम उन्हें 'सूचना पत्रिका' नहीं भेजेंगे ।

'सूचना पत्रिका' एक मासिक प्रकाशन है, और इसका चन्दा (२ रुपये वार्षिक) आप निम्न पते पर भेज सकते हैं :

सूचना अधिकारी
ज. ज. ग. का व्यापार दूतावास
१, कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली

सचित्र समाचार
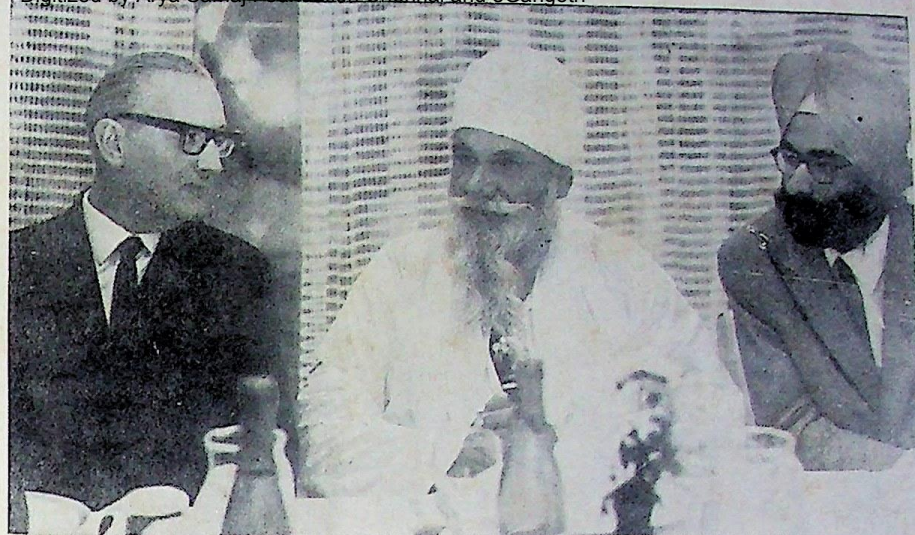
▲पिछले महीने में अकाली नेता संत फतेहसिंह ज. ज. ग. को यात्रा पर गये। यहां वे ज. ज. ग. के उप प्रधानमंत्री श्री माक्स सेफ्फरिन से विचार विनिमय करते दिखाई दे र से हैं

◄बर्लिन में आयोजित 'अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकार संगठन सम्मेलन' का एक दृश्य। भारत की प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस सम्मेलन को अपना शुभकामना सन्देश भेजा था

चण्डीगढ़ के 'भारत-ज. ज. ग. मैत्री-संघ' के प्रतिनिधियों के साथ श्री हरबर्ट फिशर (दायें से चौथे) और व्यापार-दूतावास के सांस्कृतिक सलाहकार श्री जोमबर्ग (बायें कोने पर)▼

◄हाल ही में, ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के प्रमुख श्री हरबर्ट फिशर, कांग्रेस के प्रधान श्री कामराज से उनके निवास स्थान पर मिले

रजि० नं० डी-१३३०
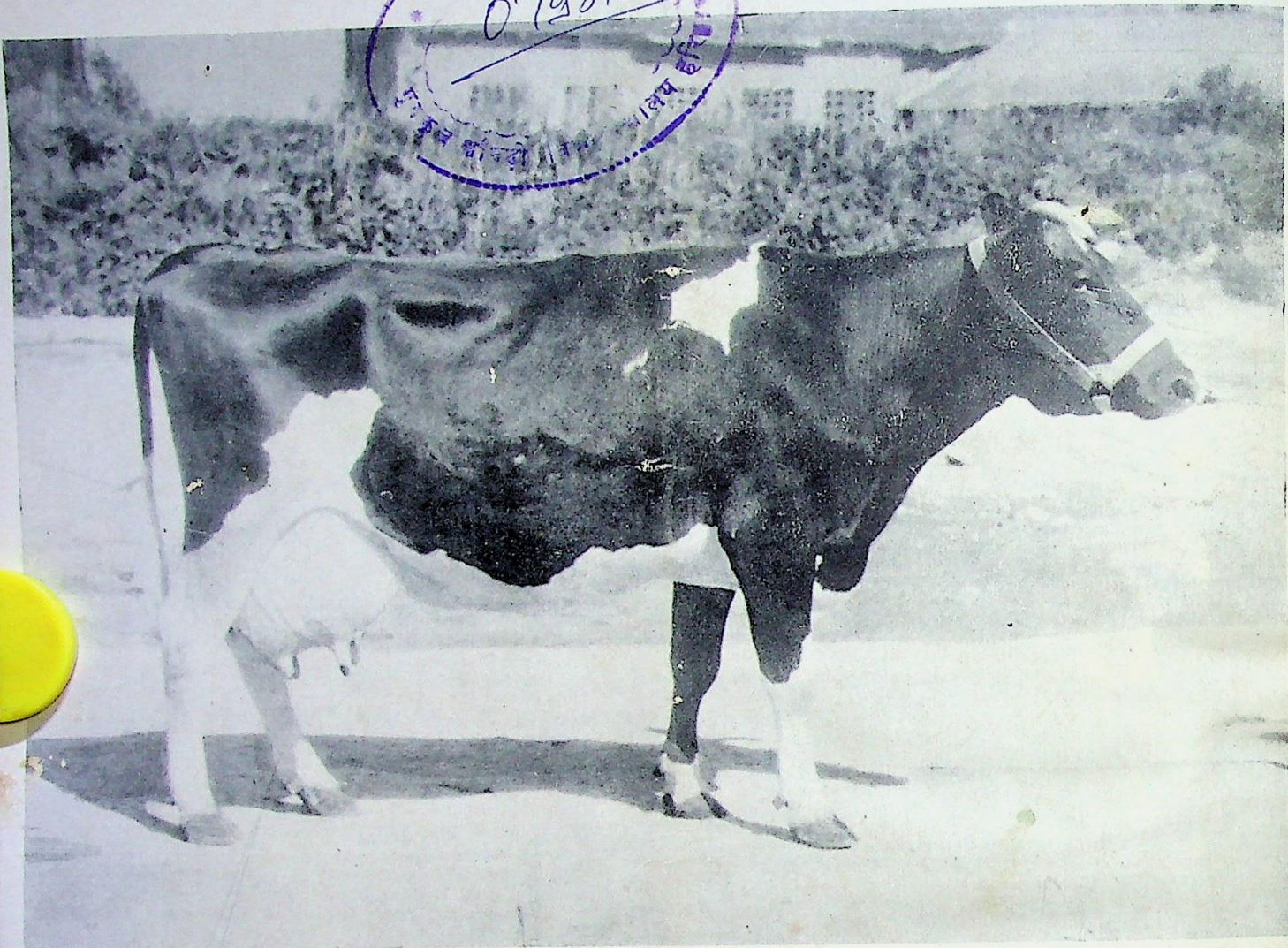
१. ज.ज.ग. में प्रति १०० हेक्टर कृष्य भूमि पर पशुधन के आंकड़े

	१९५४	१९६५
२. पशु	५८.८	७४.९
३. गायें	३१.४	३४.१
४. सुअर	१११.९	१३९.६
५. मुर्गियाँ	२७६.२	४०८.९